पक्का कदम

तुर्कमिनिस्तान में जीवन-मरण के
संघर्ष की लोमहर्षक कहानी



मूल लेखक: बर्दी केबर्बाएव,

हिंदी: यशपाल

पक्का कदम

तुर्कमानिस्तान में जीवन-मरण के संघर्ष की लोमहर्षक कहानी

मूल लेखक

बर्दी केर्बाबायेव

अनुवादक

यशपाल

विप्लव कार्यालय, लखनऊ की ओर से

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

PAKKA KADAM (NOVEL)

Viplava Karyalaya, 21, Shivaji Marg, Lucknow, INDIA

लोकभारती प्रकाशन,
इलाहाबाद द्वारा
विप्लव कार्यालय, शिवाजी मार्ग,
लखनऊ
की ओर से प्रकाशित

विप्लव प्रकाशन सं० १७

प्रथम प्रकाशन १९४९

मूल्य : १० रुपया

साथी प्रेस
२१ शिवाजी मार्ग
लखनऊ द्वारा मुद्रित

समर्पण

मानवता की मुक्ति और उत्थान के कार्य में
सक्रिय भाग लेने वाले साथियों को
सादर—

यशपाल

परिचय

गत फरवरी मास (१९४९) में हमारी राष्ट्रीय सरकार ने कोई भी कारण या अपराध बताये बिना मुझे राजनीतिक बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया। यही अनुमान करना पड़ा कि हमारी राष्ट्रीय सरकार की दृष्टि में मेरे विचार, सार्वजनिक कार्य और प्रयत्न राष्ट्रहित के विरुद्ध हैं।

इस प्रसंग में यह कहना धृष्टता न होगी कि इस देश की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय भावना के लिये विदेशी सरकार के हाथों से जितना दण्ड और क्रोध हम लोगों ने (मैंने और मेरे साथ पुन: जेल में डाल दिये गये साथियों ने) पाया है*, उतना शायद उन लोगों ने नहीं पाया होगा जिन्हें ब्रिटिश सरकार अपने भरोसे का समझ कर इस देश के राष्ट्रीय हित का उत्तरदायित्व सौंप गई।

सन् १९३७ में मुझे जेल से मुक्त करने के प्रश्न पर अंग्रेज गवर्नर के विरोध करने के कारण यू० पी० की कांग्रेस सरकार को बहुत परेशानी उठानी पड़ी थी। मेरी रिहाई का प्रश्न सिद्धान्त की रक्षा का प्रश्न बन गया था क्योंकि उस कांग्रेसी सरकार को विश्वास था कि मेरे प्रति अंग्रेज गवर्नर का रोष, मेरी राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रहित के कार्यों के कारण ही था। आज मेरे विचार, प्रयत्न और सार्वजनिक कार्य राष्ट्रीय सरकार की दृष्टि में राष्ट्र के लिये अहित हो गये हैं।

मैं इस देश के हजारों लोगों में से एक उदाहरण हूं। मेरी और मेरे समान हजारों की यह स्थिति, राष्ट्रीय सरकार के दृष्टिकोण में पैदा हो गये अन्तरविरोधों का एक उदाहरण है। विश्वास से कह सकता हूं, यदि भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद आज जिन्दा होते, यही बात उन के साथ भी होती; वे भी किसी जेल में होते।

---

* चौदह वर्ष का कारावास

इस बार राष्ट्रीय सरकार द्वारा जेल में बन्द कर दिये जाने पर Decisive Step पढ़ते समय राष्ट्रीय हित के सम्बन्ध में पुस्तक के पात्रों के दृष्टिकोण में अन्तर और विरोध देख इच्छा हुई कि इस का अनुवाद अपनी भाषा में कर डालूं।

'पक्का कदम' की कहानी अपना पूरा परिचय स्वयं देगी। संक्षेप में इतना पर्याप्त है :

जार के शासन में तुर्कमानिस्तान पूर्णतः रूसी साम्राज्य के आधीन था। समाजवादी क्रान्ति से जार का तख्ता पलट गया; समाजवादी सोवियत ने शासन की शक्ति अपने हाथों में ले ली, सोवियत ने राष्ट्रीय समता के सिद्धान्त के अनुसार रूसी साम्राज्य के आधीन सभी गुलामदेशों को रूसी राष्ट्र के समान और स्वतंत्र घोषित कर दिया। इन देशों को आधीनता के बंधन से मुक्त कर आत्मनिर्णय से सहयोग का अधिकार दिया।

अक्टूबर १६१७ में जार के शासन का अंत हो जाने पर तुर्कमानिस्तान में विचित्र स्थिति पैदा हो गई। जार के शासन से दबी और कुचली मजदूर और किसान जनता रूस की समाजवादी सोवियत व्यवस्था के अनुसार खेती की भूमि का राष्ट्रीयकरण और उद्योग-धन्धों और व्यापार पर मजदूरों और मेहनत करने वाली सर्वसाधारण जनता का अधिकार चाहती थी। दूसरी ओर जारशाही का अंग बन कर तुर्कमानी जनता के खून से समृद्ध और पुष्ट तुर्कमानी सरदारों, जागीरदारों और व्यापारियों के लिये जारशाही का तख्ता पलटना और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न उनके अन्त की सूचना के समान हो गया। इस शोषक वर्ग के साथ ही मध्यम श्रेणी का वह भाग था जो देश को जारशाही के शोषण के बन्धनों में बांधने वाली नौकरशाही का अंग बन कर जारशाही की तनखाहों पर पल रहा था और इस अधिकार की धांधली से जनता को लूट कर अपना स्वार्थ पूरा करता आया था।

जारशाही के पतन से अव्यवस्था हो जाने पर तुर्कमानिस्तान के सरदार और खान स्वतंत्र राजा बन जाने के स्वप्न देखने लगे। उन्होंने तुर्क-

मानिस्तान की मजदूर-किसान जनता द्वारा कायम किये सोवियत शासन (पंचायती राज) के विरुद्ध हथियार उठा लिये। उन्होंने जनता को इस्लाम और राष्ट्रीय-स्वतंत्रता के नाम पर बहका कर सोवियत शासन से विद्रोह आरम्भ किया। सोवियत-विरोधी तुर्कमानी सरदारों और खानों की सहायता के लिए सोवियत शासन के विरुद्ध लड़ने वाले जारशाही के बड़े-बड़े जनरल तुर्कमानिस्तान में आ पहुंचे। क्रान्ति की लाल सेना ने इन जारशाही जनरलों को हरा कर रूस से भगा दिया था। अन्य पूंजीपति राष्ट्र इन जनरलों को पूरी सहायता दे रहे थे। तीसरी बड़ी सोवियत विरोधी शक्ति थी ब्रिटिश साम्राज्यशाही जो संसार में समाजवाद के फैलने की आशंका को निर्मूल कर देने के लिये उसके जन्मस्थान रूस में ही कुचल देना चाहती थी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने अरबों रुपया, असंख्य शस्त्र और हिन्दुस्तान से काफी सेना भी सोवियत-विरोधी मोर्चे पर तुर्कमानी खानों, सरदारों और जारशाही के जनरलों की सहायता के लिये तुर्कमानिस्तान में पहुंचा दी थी। यह तीनों शक्तियां परस्पर एक-दूसरे को छल कर भी अपने स्वार्थ साधने में समाजवादी सोवियत और लाल सेना के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाये थीं।

तुर्कमानिस्तान समाजवादी लाल सेनाओं और साम्राज्यवादी सफेद सेनाओं के संघर्ष का अखाड़ा बन गया था। उस अवस्था में तुर्कमानिस्तान की देहाती और नागरिक जनता के किसी भी व्यक्ति के लिये निष्पक्ष और निरपेक्ष बने रहना सम्भव न था।

केर्बाबायेव ने उपरोक्त संघर्ष में भाग लिया था। उसने इसी वातावरण को लेकर तुर्कमानी भाषा में एक युवक अरतैक के इस संघर्ष के दुविधापूर्ण वातावरण में एक पक्का कदम उठाने की कहानी लिखी है। अरतैक आरम्भ में जारशाही के शोषण और दमन के विरोध में राष्ट्रीय भावना से विद्रोही अजीजखां के साथ जान की बाजी लगाने मैदान में उतरा था। कुछ समय वह राष्ट्रीयता का दम भरने वाली सोवियत-विरोधी सफेद सेना का अफसर भी रहा और फिर सोवियत के

पक्ष में ही अजीजखां और उस की संरक्षक ब्रिटिश सेनाओं से लोहा लेता हुआ जंग के मैदान में आहत हुआ।

'पक्का कदम' का नायक अरतैक तुर्कमानिस्तान के कृषि-प्रधान समाज का प्रतिनिधि व्यक्ति है। अरतैक को किसी भी दृष्टि से विशेष परिस्थितियों या विशेष घटना की उपज नहीं कहा जा सकता। वह अपने समाज के अन्य साधारण व्यक्तियों की भांति जीवित रहना चाहता है और जीवित रहने का प्रयत्न करता है। उस से भूल भी होती है और वह भूल को पहचान कर सही राह अपनाने का यत्न करता है। उस का लक्ष बहुत सीधा है—जीवित रहने के अवसर की इच्छा और जीवित रह सकने के लिये सामूहिक रूप में प्रयत्न। अरतैक की कहानी मृत्यु और जीवन के प्रश्न पर लड़ने वाले समाज की कहानी है। अरतैक के समाज के सामने प्रश्न था—अपना भविष्य साम्प्रदायिकता से रंगी राष्ट्रीयता में मान कर सामन्तवादी और पूंजीवादी दासता के जुये में फंसा रहे या स्वतंत्र मनुष्य बनने के लिये समाजवादी व्यवस्था को अपनाये।

स्वभावतः ही अरतैक के जीवन की कहानी जीवन-मरण के विकट संघर्ष की कहानी है।

मैं साहित्य का मार्ग अपनाने के समय से मौलिक ही लिखता आया हूं। मेरा विचार है कि अन्य समाजों की अनुभूतियों और परिस्थितियों को अपनी भाषा में प्रतिबिम्बित करने की अपेक्षा स्वयं हमारे अपने समाज में ही देखने और कहने के लिये पर्याप्त सामग्री है परन्तु दूसरे समाज और देशों में अपने देश जैसी ही परिस्थितियां और समस्यायें दिखाई देने पर तुलनात्मक दृष्टि से उन की ओर देख लेना भी उपयोगी हो सकता है। इसीलिये मैं 'पक्का कदम' के अनुवाद के लिये श्रम को उपयोगी समझता हूं।

११ नम्बर बैरक
जिला जेल, लखनऊ
६ मार्च, १९४९

यशपाल

१

तुर्कमानिया का देश अब समाजवादी रूसी सोवियत संघ का भाग है। इस समय तुर्कमानिया नहरों की सिंचाई से खूब सर-सब्ज बन गया है। वहां बहुत बड़े पैमाने पर साझी खेती होती है। बड़ी-बड़ी मिलें मजदूरों की अपनी सम्पत्ति है। इन में बहुत अधिक पैदावार हो रही है। तुर्कमानिया का प्रजातंत्र राज्य पूर्ण स्वतन्त्र है, चाहे रूसी समाजवादी सोवियत संघ में रहे या उस से अपना सम्बन्ध तोड़ ले।

चालीस-पचास वर्ष पूर्व तुर्कमानिया का देश प्रायः मरुभूमि था। लोग डेराबासी ढंग से रहते थे। भेड़, बकरियां और ऊंट उन की सम्पत्ति थे। खेती थोड़ी बहुत जहां-तहां होती थी। रूस के जार ने तुर्कमानिया को अपने साम्राज्य में जोड़ लिया था। स्थानीय पैदावार का कच्चा माल ले जाने के लिये एकाध रेल लाइन भी बना दी गई थी। नहरें बहुत कम थीं। तुर्कमानी जनता जीवन का डेराबासी ढंग छोड़ खेती करने और स्थायी बस्तियां बनाकर रहने लगी थी परन्तु पुराने रिवाज अभी छूटे न थे। लोग प्रायः ही छोलदारियों में रहते थे। छोलदारियों के ही गांव बस जाते थे। उस समय इस देश के रिवाज और पोशाक प्रायः ईरान और अफगानिस्तान से मिलते-जुलते थे।

जार के शासन के समय तुर्कमानिया में उद्योग-धंधे और कला-कौशल की उन्नति नहीं की गई। रूस के साम्राज्यवादी शासक तुर्कमानिया को अपने लिये कच्चे माल की मंडी बनाये रखना चाहते थे। तुर्कमानी लोग दुःखी और असंतुष्ट थे। १६१६ में तुर्कमानिया की जनता का असंतोष

देख एक तुर्कमानी सरदार अजीजखां जार के विरुद्ध बगावत कर अपना स्वतंत्र शासन जमाना चाहता था परन्तु उस की बगावत असफल रही ।

सन् १६१७ के साल तुर्कमानिया में भयंकर सूखा पड़ गया । जाड़ों भर आकाश से जल की एक बूंद न गिरी । बसंत आया तो धरती से घास का एक कल्ला न फूट सका । नहरें, नाले, सोते सब सूख गये ।

गरमी के दिन आये । झुलसी हुई धरती पर तपी धूल भरी आंधियां चलने लगीं । सूखे और जाड़े से शिशुओं के शरीर ठठरी भर रह गये थे । सिर लटकाये, घास के लिये तरसी आंखें भूमि पर जमाये पशु भटकते फिरते परन्तु घास कहां थी ! बसन्त जाते-जाते पशुओं में बीमारी फैल गई ।

किसानों ने समय पर वर्षा की आशा से खेत जोत कर बीज डाल लिये थे । जुते हुये खेत धूल से भर गये और बीज के लिये डाला गया अन्न धूल में मिल गया । किसान अपने रहे-सहे पशुओं को अपनी आंखों के सामने सूख कर मरते देख रहे थे । उन के कलेजे मुंह को आकर रह जाते परन्तु बेबस थे । पशुओं को क्या देते ? बच्चों के लिये, अपने लिये ही कुछ न था ।

'कोश' गांव के एक गलियारे में बहुत से दुर्बल, निढाल किसान दीवारों की छाया में धरती पर आ बैठते थे । चार आदमी धरती पर लकीरें बना बत्तीसी खेल रहे थे । कुछ लोग नित्य नये आते दुःखों की बातें कह-सुन रहे थे । कुछ चुपचाप उदास बैठे थे । कई रूस के सम्राट जार के हुक्म से रूसी सेना में मजदूरी के लिये जबरन भरती कर लाम पर भेज दिये गये अपने सम्बन्धियों की चर्चा कर रहे थे । हवा के झोंके इन लोगों पर तपी धूल फेंक जाते । इन लोगों के सिर पर आकाश में धूल का बादल घिरा हुआ था ।

एक किसान अपनी धूल भरी सफेद दाढ़ी मुट्ठी में थाम, सूजी हुई नाक फुला, भूख से रूखे निर्बल स्वर में बोला—"ऐसे दिन तो भाई कभी देखे-सुने न थे, अल्लाह खैर करे !"

दूसरे बूढ़े किसान ने अपनी झुकी हुई पलकें जवार के खेत की ओर उठाईं। खेतों में धूल का बवंडर उठ रहा था। किसान के कलेजे से एक आह उठ आई। उधर से आंखें फेर वह बोला—"भैया, अपनी उम्र में काल देखा है और जाड़ा भी देखा है पर ऐसे दिन नहीं देखे थे। पूरा बरस बीत गया और एक बूंद पानी नहीं। जाने क्या होने को है? मौलवी लोग कहते हैं—कयामत से पहले ऐसा सूखा पड़ेगा कि धरती पर कहीं हरियाली नहीं रह जायगी। अल्लाह खैर करे!" किसान ने अपनी बात से डर कर अपनी दाढ़ी थाम ली।

समीप बैठे लोगों का ध्यान इन दोनों की बातचीत की ओर न था परन्तु नहर का मुंशी अभी दूर ही था कि सब का ध्यान उस ओर खिन्च गया।

मुंशी पोखीवाला अपनी बढ़ी हुई तोंद का बोझ सम्भाले धीमे-धीमे इन लोगों की ओर चला आ रहा था। समीप आ कर पोखीवाला ने भीड़ की ओर देख पुकारा—"अरे सुना है तुमने! लोग क्या कह रहे हैं··· रूस के जार की गद्दी छिन गई!"

मुंशी की बात से लोग भौंचक्क रह गये। बत्तीसी खेलने वाले हाथ के गोटे लकीरों पर रखना भूल गये। भूजी हुई नाक वाले किसान ने विस्मय से अपनी दाढ़ी खींच ली और उसका मुंह खुला रह गया। सब लोग पोखीवाला की ओर मौन देखते रह गये।

पोखीवाला अफसरी ढंग में बोला—"लोग कह रहे हैं कि रूस में रेवलूशा हो गया है।"

किसान लोग समझ नहीं पाये कि 'रेवलूशा' क्या होता है। अभी कोई रेवलूशा का मतलब पूछ भी नहीं पाया था कि पोखीवाला स्वयं ही बोल उठा—"किसी को क्या कहें; सभी जानते हैं दुनिया में कैसे-कैसे पापी पड़े हैं। लोगों के दिमाग फिर गये हैं। चाहते हैं दुनिया भर हड़प जायं।···जार के राज जैसा न्याय पहले कभी देखा था? तुर्कमान लोग कभी चैन से नहीं रहे। एक-दूसरे का सिर काटते रहे परन्तु जार के

राज में यहां भी कैसा अमन रहा ! जार का राज गया तो देखना क्या होता है ! पिछले साल ही जार की सरकार के खिलाफ बगावत हुई थी तो क्या मिला ! अजीजखां और उस के दोस्त अरतैक के राज में क्या मिला…मिट्टी ही खराब हुई ? राजा बिन प्रजा ऐसे है जैसे बिन गड़रिये भेड़ों का गोल ! बाघ, भेड़िये का दांव लगे तो मार खायं; चोर-उचक्कों का मौका बने तो उठा ले जायं ।"

दूसरा बूढ़ा किसान माथे पर हाथ रख कर बोला—"भैया, मैं तो कह ही रहा था कि बड़े बुरे दिन आ रहे है…।"

सूजी हुई नाक वाले बूढ़े किसान ने उस की बात काट दी—"अरे तो हो क्या गया ! कहते हैं न कि घर की बुढ़िया मर गई तो क्या बिगड़ गया ; दही की हांडी लुढ़क गई तो क्या हो गया ? अरे जार मर गया, तो क्या हो गया ! गद्दी पलट ही गई तो अपने को क्या; क्या हो गया ! अपने देखते-देखते ही जार का राज आया और इतने ही दिन में क्या नहीं देख लिया हम ने !" बूढ़ा किसान मुंशी को कनखियों से देखता सुनाता गया, "दो-दो कौड़ी के आदमी तुर्रमखां बन बैठे…कैसे ? जार के जोर पर ही तो । भले आदमियों को डंडे के जोर हांकते रहे इस बुढ़ापे में ।" उसने अपनी दाढ़ी दिखा कर कहा, "घर में एक ऊंट रह गया था, सो भी छीन लिया ।" दूसरे बूढ़े किसान का कंधा ठेल कर वह बोला, "अरे तुम्हारा एक ही तो जवान लड़का था, बुढ़ापे की लाठी । जबरन भर्ती में पकड़ ले गये । जार को गरीबों की आह कैसे न लगती ! जार का जुल्म दूर हो तो अल्लाह चाहे तो मेंह भी बरस जाय । पिछड़ तो बहुत गया है पर क्या ?…बाल-बच्चों के मुंह के लिये चार दाने ही सही !"

मुंशी ने कई बार बात काटनी चाही परतु किसान ऊंचे स्वर में ही बोलता जा रहा था । उस की बात समाप्त होने पर मुंशी धमका कर बोला—"क्यों बे, सिर पर मौत नाच रही है ! होश में आओ, क्या बक रहे हो…अगर खबर गलत हुई तो !"

बूढ़ा किसान और भी जोर से बोला—"तो हम देहाती, गरीब लोग क्या जानें...तुम्हीं तो कह रहे थे !"

मुंशी समझाने लगा—"अरे भाई, अगर जार मर ही गया, रेवलूशा भी हो गया तो क्या ? जार के लड़के-पोते होंगे। उनमें से कोई न कोई गद्दी पर बैठेगा ही। यह बातें उस के कान तक पहुंचेगीं तो क्या होगा... सोच समझ कर बात करनी चाहिये ! अल्लाह जार का इकबाल कायम रखे !"

मुंशी अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था कि बस्ती की रेडियो उम्सागुल अपनी सलवार घुटनों तक उठाये, अपने मालिक अलनजर बे के घर की ओर भागती हुई, बिना रुके समीप से पुकारती गई—"अरे भले लोगो, सुना है, बादशाह जार मर गया !"

उम्सागुल की बात सुन सभी लोग बोलने लगे—"वल्लाह...क्या सच बात है...जार मर गया ?"

"सच नहीं तो लोग कहते क्यों ? कोई बात होगी तभी तो कहते हैं !"

"अरे भाई, यों ही न उड़ गई हो !"

"मुल्क में बादशाह नहीं रहेगा तो राज किसका होगा ?"

"राजा नहीं रहेगा तो लड़ाई कैसे होगी ?"

"लड़ाई चलेगी कैसे ? जब राजा सिपाही को लड़ने के लिये हुक्म नहीं देगा तो कोई लड़ेगा क्यों ? सिपाही को क्या जरूरत है लड़ने मरने की !"

मुंशी बीच में बोल उठा—"बस यही तो रेवलूशा है।"

गरीब किसान चरकेज चुप बैठा सब की बातें सुनता हुआ, समझ पाने का प्रयत्न कर रहा था। मुंशी की बात सुन वह पूछ बैठा—"मुंशी, यह रेवलूशा क्या होता है ?"

मुंशी ने सिर खुजाते हुये उत्तर दिया—"भैया, मैं क्या जानूं ? यह तो धरती फोड़ कर नया कुक्करमुत्ता निकला है। सौदागर कोतुर का

लड़का अंतेज कहता है, रेवलूशा इन्कलाब को कहते है।"

चरकेज बौखलाकर बोला—"वाह भाई वाह, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं! इन्कलाब क्या होता है? यह तो अंधे की आँख से देख कर पहचानने की सी बात है और क्या जानें भाई, रेवलूशा और इन्कलाब दोनों ही ज़ार के लड़के और पोते के ही नाम हों!"

एक दूसरा किसान हाथ फलाकर बोल उठा—"हां भाई, ठीक तो है। पहले भी एक बार सुना था कि फिरंगिस्तान में रेवलूशा और इन्कलाब हुआ है। सुनते हैं, रेवलूशा और इन्कलाब का चुनाव होता है जैसे अपने यहां मुंशी और पंच का चुनाव होता है।"

एक और किसान ने बेपरवाही से कहा—"तो क्या है, चुनाव होगा तो 'बे' और मालिक लोगों की ही बात चलेगी? जैसे अब बे और मालिक लोग अपने मन से मुंशी चुन लेते हैं।"

"तुम भी क्या कह रहे हो!" एक और किसान पुकार उठा, बे और मालिक लोग न रहें तो दुनिया कैसे चलेगी?"

"तो फिर क्या?" ऊंचे स्वर में कोई बोल उठा, "इन्कलाब हुआ तो अपने को क्या? गरीब आदमी की तो जैसे पहले मौत थी वैसे अब!"

"तुम्हारा दिमाग फिर गया है क्या?" मुंशी पोखीवाला ऊंचे स्वर में बोला, "सियार की मौत आती है तो गांव के आस-पास आ हूकने लगता है, गरीब के बुरे दिन आते हैं तो उस की जबान बहुत चलने लगती है।"

सिर हिलाकर चरकेज ने कहा—"ठीक है भाई मुंशी, तुम ठीक कहते हो! तुम आलिम आदमी हो!" दूसरे लोग चरकेज की बात पर हंस दिये। चरकेज तीखी जबान के लिये माना हुआ था।

क्रोध से मुंशी के नथुने और होंठ थिरक उठे। चेहरे पर से पसीना पोंछ उसने नसीहत की—"तुम लोगों में अब बुरे का ख्याल ही नहीं रह गया है। कूढ़मगज आदमी से सिर मारने से भला है कि आदमी दीवार से सिर पटक ले!"

उत्तर की प्रतीक्षा न कर मुंशी लौट पड़ा और अलनजर बे के तंबू की

ओर चल दिया परन्तु चरकेज पुकार उठा—"ठीक है भैया मुंशी, ठीक राह पर जा रहे हो! वे लोग ही तुम्हारी बात ठीक से समझ पायेंगे।" दूसरे लोग कहकहा लगा उठे। मुंशी तेजी से चलता हुआ घूम-घूम कर ऐसे पीछे देखता जा रहा था कि पीछे से कुत्ते के आकर टांग पकड़ लेने की आशंका हो।

मुंशी के चले जाने पर किसान बहस करने लगे कि ज़ार सचमुच ही मर गया है या नहीं; उस की गद्दी छिन गई है या नहीं और यदि ऐसा हो भी गया हो तो इससे देहात के लोगों का क्या बन-बिगड़ सकता है! चरकेज अपनी बात सुनाने के लिये फिर हाथ उठा कर बोल उठा—"भाई हम पूछते हैं, ज़ार के राज में भला किसका हुआ?...किसान का भला हुआ?...मजदूरों का हुआ?...सिपाहियों का भला हुआ? तुम्हारा भला हुआ? किस का भला हुआ?"

"अरे हमारा क्या भला हुआ?" एक के बाद दूसरा सभी लोग बोलने।

"तो फिर!" दोनों हाथ उठा चरकेज बोला, "ज़ार मर गया तो किस का नुकासन हुआ? अपने को क्या! जब सभी लोग ज़ार से दुखी है तो उस की गद्दी पलटेगी नहीं तो क्या! नुकसान हुआ तो बाबाखां और हाजी मुराद का हुआ। अब उन की हुकूमत नहीं चलेगी कि जिसे मन चाहा, चार जूते लगा दिये। अपने लोग जबरदस्ती भर्ती में पकड़े गये हैं, शायद वे बेचारे लौट आयें!"

"अल्लाह करे...... तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर पड़े!"

"अल्लाह चाहे अरतैक भी लौट आये!"

"दूसरे लोग लौटेंगे तो अरतैक भी लौटेगा!"

"इंशाअल्लाह!"

आकाश में अब भी गर्द का बादल छाया हुआ था और हवा के झोंके किसानों के चेहरों पर धूल डाल रहे थे परन्तु अब उन की गर्दनें ऊंची हो गईं और आंखों में आशा की चमक झलक आयी।

उन दिनों तुर्कमानिया के गवर्नर जनरल कुरोपात्किन थे। गवर्नर

जनरल ने प्रान्तीय गवर्नर कोल्माकोव और कमिश्नर कर्नल बेलानेविच को आदेश दिया था कि ज़ार के गद्दी से उतार दिये जाने और रूस में क्रान्ति होने का समाचार आम जनता में फैलने न पाये। उन्हें आशा थी कि ज़ार के समर्थक और उस की सेनायें क्रान्तिकारियों को हरा कर फिर से ज़ार का राजतन्त्र स्थापित कर लेंगे परन्तु तारघर में काम करने वाले लोगों से और शहरों से आने वाले पत्रों से देहात में समाचार फैल ही गये। बात जिलों से जिलों में, गावों से गावों में, छोटे-छोटे खेमों तक पहुंच गई। ऐना के घर भी खबर पहुंची।

उस समय ऐना अपने तम्बू में बैठी कसीदा काढ़ रही थी। तम्बू की छत में धुआं निकलने के लिये बनाये गये झरोखे से आती सूरज की किरणों में उस का रेशमी चोगा और उस के हाथ में थमा कसीदा भी चमक रहा था। ऐना ने खबर सुनी तो सोच रही थी, बादशाहों की गद्दियां कहीं ऐसे पलट सकती हैं और फिर रूस के बादशाह जार की गद्दी! सल्तनतें ऐसे पलटने लगें तो धरती ही पलट जाये। हो सकता है, जार लड़ाई में दूसरे बादशाह से हार कर कैद हो गया हो पर मकान गिरता है तो ईंटें भी बिखर जाती हैं। जार के साथ ही उस के हाकिम और पंच भी तो गिरेंगे और वह शैतान अलनजर बे भी मरेगा। इन सब जालिमों पर अल्लाह का कहर गिरे! जार नहीं रहेगा तो उस के हाकिम, अफसर, उस की पलटनें भाग जायेंगी। जेलखाने भी तो टूटेंगे। इंशाअल्ला अरतैक जान जेलसे छूट जाये······अरतैक मेरी आंखों का नूर! एक आह खींच कर उस ने सोचा—इन मीठे सपनों में क्या रखा है! छः महीने हो गये उसकी कोई खबर भी तो नहीं मिली। ऐसी मेरी किस्मत कहां कि वह आ जाये। लोग मुझे तसल्ली देने के लिये, बहलाने के लिये बताते रहते हैं, अरतैक अश्काबाद के जेलखाने में मजे में है परन्तु कोई उस से मिल नहीं सकता। दूसरे लोग मुझे जलाने के लिये कहने लगते हैं—अरतैक को लड़ाई में आगे के मोर्चे पर भेज दिये गया है। कोई कहते हैं कि जालिमों ने उसे गोली मार दी है। या अल्लाह, इन छः महीनों में क्या नहीं सुना···

क्या नहीं देखा···क्या नहीं सहा ! इतना दुख तो किसी पहाड़ पर गिरा होता तो चकनाचूर हो जाता । इतना गम किसी दरिया पर पड़ा होता तो दरिया सूख जाता ।

ऐना हजारों में एक थी । उसका रूप-रंग ऐसा था कि सारे चमन का जोबन समेट कर एक गुलाब खिल उठा हो परन्तु इस दुख में उसका चेहरा उतर गया और उसकी मनियारी, काली आंखों की चमक मद्धिम पड़ गई थी । वह गर्दन झुकाये रहती । पुकारे जाने पर आंखें उठाती भी तो पलकें झुकी रह जातीं । उस का सुडौल शरीर मुरझा गया था, कंधे झुक गये थे और चलती तो पांव लड़खड़ा जाते । अरतैक की कैद के छः मास में उस पर बीस बरस का बुढ़ापा आ गया । ऐना की सौतेली मां बत्तख की चाल झूलती हुई तम्बू में आई । वह सदा से बेपरवाह थी । उस पर न तो ऐना के दुख के पहाड़ का ही कुछ बोझ पड़ा और न तेजेन में सूखा पड़ने का ही कुछ प्रभाव पड़ सका था । उस के भरे हुये चेहरे पर चिकने पसीने की चमक जैसी की तैसी बनी थी । न ठोढ़ी के नीचे पड़ी लटों में और न उस की आंखों की चमक में ही अन्तर आया था । मामा ने सिर पर बंधे बड़े रूमाल के छोर से पसीना पोंछा और अपनी भारी-भारी निरपेक्ष पलकें उठा सौतेली लड़की की ओर देख पुकारा—"बिटिया, क्या हुआ है तुझे ? क्या उमर भर यों ही बिसूरती रहेगी ! भला अब क्यों रो रही है ! क्या जार को रो रही है ?"

ऐना बचपन से बहुत लजीली और भले स्वभाव की थी परन्तु दुख के इस असह्य बोझ का प्रभाव जैसे उस के शरीर और रूप पर पड़ा वैसे ही उस के स्वभाव पर भी हुआ । पल-पल दुखों और कष्टों से विरोध करती रहने के कारण वह चिड़चिड़ी और जिद्दी हो गई थी । सौतेली मां के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण ऐना मामा से प्रायः ही चिढ़ी रहती । उस ने गर्दन झुकाये ही उत्तर दिया—"जार क्या, मेरी बला से सारी दुनियां मर जाय, मुझ क्या ?"

"लाहौल बिलाकुव्वत ! देखो तो इस चुड़ैल को !" मामा चीख उठी ।

क्या जमाना आ गया है बाबा ! ऐसी डाइनें दुनिया में पैदा होगई हैं, तभी तो दुनिया यों तबाह हो रही है।"

ऐना की काली भवें सिकुड़ गईं। गर्दन नीचे डाले ही उसने तिर्छी निगाह से मामा की ओर देखा और आंखे झुका उत्तर दिया—"बात-बात में मेरे कलेजे में कटारी मारती हो। आज बड़ी भली बन रही हो ! किस ने मेरी जिन्दगी मुसीबत में फंसाई ? किसने मुझे बरबाद किया ?"

मामा की समझ भी उस के शरीर के अनुकूल ही मोटी थी। ताने और बोली-ठोली का असर उस पर कम ही होता था परन्तु इस समय ऐना की बात सुन उस ने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढांप लिया और अल्लाह को याद करने लगी—"अल्लाह, पनाह दे !"

२

अलनजर बे अपनी सजी-धजी छोलदारी में चाय पीने बैठा था। उम्सागुल उतावली से तम्बू में आ घुसी। जार के गद्दी से उतार दिये जाने की बात वह एक ही सांस में ऊंचे स्वर में दोहराये जा रही थी। अलनजर बे ने सुना। उसे काठ मार गया। न तो वह आंखें उठा बाहर ही देख सका और न होंठ खोल पुकार ही सका। वह स्वप्न में डर गये आदमी की तरह निश्चेष्ट रह गया और फिर होश सम्भाल, बोझ से दम तोड़ते जानवर की तरह हांफता हुआ उम्सागुल की ओर घूर कर चिल्ला उठा—"बदजात बांदी, क्या बक रही है? होश में आ! समझती है तू क्या बक रही है! अभी फांसी पर लटकवा दूंगा!"

बे की धमकी से उम्सागुल सुन्न रह गई। चेहरे का रंग उड़ गया। साहस कर वह थुथलाने लगी—"मा···मालिक ··मैं कह रही थी कि बा··· बादशाह की मौ···मौत से मुझे बहुत रोना आया···।"

"बदजात कहीं की, दिन भर अवारागर्दी करती है, दिन भर कुफ्र बकती है, दिन भर खुराफात का तूफान तोलती है। क्या कौए भरे हैं तेरे सिर में! तू ही गांव भर में बकती फिरी थी कि अरतैक मेरे मुंह पर थूक गया। हरामजादी, मेरा नमक खा मुझे ही गाली देती है! तुझे आज ही जिन्दा गड़वाता हूं।"

उम्सागुल का चेहरा धूल की तरह बेरंग हो गया। कुछ कहने के लिये उस के होंठ हिले परन्तु अलनजर ने उसे धमका दिया—"चुप रह बदजात!"

बे क्रोध से कांप रहा था। उस का मन चाय की ओर से फिर गया। चाय का प्याला उठा वह चायदानी में लौटाने लगा।

हाथ कांप रहे थे इसलिये चाय फैल गई। खिन्न हो बे ने होंठ काट लिये और चाय के सुन्दर प्याले को दरवाजे से बाहर फेंक दिया। प्याला पक्की धरती पर गिर कर चूर-चूर हो गया। बे को और भी क्रोध आ गया। उसने लात मार चायदानी को भी परे फेंक दिया। चायदानी एक ओर और ढक्कन दूसरी ओर लुढ़क गये। कालीन पर लम्बा दाग सा बन गया।

कोने में खड़ी उम्सागुल थर-थर कांप रही थी। लड़खड़ा जाने के कारण वह धरती पर बैठ गई।

अलनजर गम्भीर और काइयां आदमी था। अपनी स्थिति और सम्मान का ख्याल कर वह बातचीत धीरज और ठहराव से करता था परन्तु उस समय वह क्रोध में बहक गया। वह कई दिन से मन ही मन उम्सा से कुढ़ रहा था और उस पर बरस पड़ने का अवसर ताक रहा था। इस समय यह भयंकर समाचार भी उसी के मुंह से सुन बे आपे से बाहर हो गया। क्रोध का पहला उफान उतरते ही वह चिन्तित होने लगा···क्या यह खबर सच है? इतने में बे की चहेती बेगम शादाब आकर प्याले के बिखरे हुये टुकड़े चुन कर चायदानी को सम्भालने लगी। शादाब गर्दन झुकाये बोली—"सुनो न मालिक! सुन रहे हो··· तुम्हीं से कह रही हूं; होगा···माफ कर डालो! मुआफी मांग लेने से तो कत्ल का गुनाह भी बक्श दिया जाता है। यह तुम्हारी बांदी ही है। सुना होगा तो इस के अपने ही होश उड़ गये होंगे।"

बेगम की बात से बे के माथे के तेवर हल्के पड़ गये। उम्सा ने मालिक के चेहरे की ओर देखा और उसकी आंखों से आंसू बह चले। जमीन पर माथा टिका वह गिड़गिड़ाने लगी—"या अल्लाह, अगर मैंने मालिक के लिये कभी सपने में भी बुरा चेता हो तो मैं यहां ही गर्क हो जाऊं!"

"अच्छा बस, अब बहुत मत बनो···आंसू पोंछो, नहीं तो अभी तेरी आंखों में मिर्चें झुकवाता हूं !" बे ने धमकाया, "यह खबर कहां सुनी तू ने ?"

उम्सा आंसू पोंछती हुई हिचकी ले गले में रुंधे आंसू निगल रही थी कि तम्बू के दरवाजे में मुंशी पोखीवाला आ खड़ा हुआ और घबराहट में बोलता गया,—"···क्या कहर गिरा है, बादशाह जार गद्दी से उतार दिया गया। मुल्क में रेवलूशा हो गया। अरे···उम्सा, तू पहले ही आ पहुंची···तूने तो बस्ती भर में ढिंढोरा पीट दिया होगा। कहर खुदा का !···"

"हां मैंने जो सुना था, कह दिया।" हिचकी लेते हुये उम्सा बोली, "मालिक मुझ से नाराज हो गये···"।

मुंशी ने फिर बे को सम्बोधन किया—"मालिक, बात ठीक है। मैं अभी शहर से आ ही रहा हूं। घर जा कर चाय भी नहीं पी। तार घर में गवर्नर-जनरल का तार मिला है।"

मुंशी की बात से बे के मन में संदेह के आधार पर रही-सही आशा भी जाती रही परन्तु अब वह अपने आप को सम्भाल चुका था। मुंशी को सम्बोधन कर वह बोला—"आओ बैठो, चाय पियो ! इस के बारे में भी जरा सोच लें।"

मुंशी की नजर भीगे हुये कालीन पर जा पड़ी। शादाब की ओर देख उस ने मुस्कराकर पूछा—"यह क्या ? घर में इतना छोटा बच्चा कौन आ गया कि जगह बिगाड़ दी।"

"मुबारिक हो बेगम !"

मुंशी की बात से शादाब बेगम पल भर को झेंप गई परन्तु उस ने तुरंत बात सम्भाल ली—"अरे मुंशी, बच्चे तो बच्चे ही ठहरे आखिर ! छोटी बिटिया जिद्द कर बाप के लिये चाय लायी थी। बेचारी ठोकर खा गई। चायदानी उस के हाथ से गिर गई।"

"या खुदा, बेचारी के हाथ-पांव पर छाला-वाला तो नहीं पड़ा बेगम ?"

"शुक्र खुदा का, पोखीवाला ! चायदानी दूर लुढ़क गई। बच्ची पर बूंद भी न पड़ पाई।"

बेगम की चतुरता की प्रशंसा के लिये बे ने मुस्कराकर उस की ओर देख लिया।

पोखीवाला अपने घुटने समेट कर कालीन पर बैठा ही था कि छोलदारी की दहलीज पर मुहम्मदवली खोजा दिखाई दिया। धर्मात्मा और आलिम आदमी समझा जाता था। बस्ती में उस का बहुत आदर था। वह मौलवियों के ढंग का ऊंचा पायजामा पहने था। सफेद पायजामे के नीचे टखनों की लाल-लाल खाल चमक रही थी।

वली को देख बे ने आदर में दोनों हाथ फैला स्वागत किया—"आओ, आओ ! मौलाना खोजा आओ ! तशरीफ रखो !" बे ने आदर की जगह कालीन के सिरे पर खोजा को बैठने का संकेत किया।

उम्सा ने बे की खांसी सुन उसकी ओर देखा और मालिक की आंख का इशारा पहचान तम्बू से बाहर हो गई।

मुंशी पोखीवाला ने तुरन्त ही खोजा को सम्बोधन किया—"मौलाना, जार के तख्त से उतार दिये जाने की खबर सुनी है ?"

मुहम्मदवली खोजा अपने घुटने समेट गम्भीरता से कालीन पर बैठ गया। अपनी दुशाखी दाढ़ी हाथ में ले कालीन पर नजर टिकाये उस ने उत्तर दिया—"मुंशी पोखी, खबर तो सुनी है लेकिन सोचा कि अलनजर बे के यहां चलूं। सभी लोग राय लेने के लिये यहां आते हैं।...सही खबर तो मालूम हो सके।"

"मौलाना, तुम आलिम आदमी हो, शरियत जानते हो, तुम्हारी क्या राय है ?" मुंशी ने अपना प्रश्न दोहराया।

खोजा ने दाढ़ी हाथ में थामे, छोलदारी की छत की ओर आंखें उठा उत्तर दिया—मुंशी पोखी, इस के मुत्तलिक एक फारसी शायर ने कहा है—"दक्खिन-पच्छिम से बादल चढ़ता दीखे तो समझो कि अब बरसेगा और अन्यायी राजा का जुल्म बढ़ता दीखे तो समझो कि अब गिरेगा।"

"अन्यायी राजा...?" अलनजर ने कुछ कड़े स्वर में पूछा।

मुहम्मदवली खोजा ने बे के स्वर की कड़ाई की ओर ध्यान न दिया और सहज स्वर में कहता गया—"हां अलनजर बे, जार अपने वायदे से फिर गया। जब जार ने हमारा मुल्क लिया तो वायदा किया था कि मुसलमानों को फौज में भरती नहीं किया जायगा, याद है; अब क्या हो रहा है!"

"तो तुम्हारा ख्याल है कि जार के तख्त से गिरने का कारण यही है कि उस ने मुसलमानों को फौजी मजदूरी के लिये जबरदस्ती भरती किया?"

बे का यह प्रश्न मौलाना को कुछ विचित्र सा जंचा और उस का ध्यान बे के स्वर की ओर भी गया। खोजा ने बे के चेहरे की ओर देखा। बे अप्रसन्न था और खोजा को तीखी निगाह से घूर रहा था; मानो पूछ रहा हो यह नमकहरामी! बे की इस दृष्टि से मौलाना सिमिट गया जैसे केंचुआ छू दिया जाने पर कुण्डली मार जाता है।

"नहीं मालिक, यह बात नहीं। यह बात गलत है। मुसलमानों के लिये जार से बढ़ कर रहीम बादशाह तो दुनिया में कोई हुआ नहीं। किताबों में नौशेरवां न्यायी का नाम आता है परन्तु जार का न्याय उस से कहीं ऊंचा रहा। तुम्हीं बताओ, जार के चालीस साल के राज में किसी मुसल्मान की उंगली में फांस तक नहीं लगी...और क्या इन्साफ चाहते हो! मालिक, पेड़ गिरता है जड़ में कीड़ा लगने से; जार तख्त से गिरा है तो यह अपने खानदानी झगड़ों की वजह से!"

मुंशी ने बे की ओर देख खोजा का समर्थन किया—"खूब कहा मौलाना! आमीन, आमीन!"

खोजा की बात से बे को संतोष हुआ। उसने भी समर्थन किया—"ठीक है मौलाना, ठीक है। पेड़ की जड़ में कीड़ा लगने से ही पेड़ गिरता है।"

मुहम्मदवली खोजा अवसर देख, अपने घुटने पर हाथ टिका झूलता

हुआ बे के मन की बात कहने लगा था कि मुंशी बोल उठा—"अरे भाई, इस डाह का, जलन का बुरा हो ! बादशाहों और वजीरों की बात क्या, अपनी ही बात देख लो ! किसी पर जरा अल्लाह का करम हो जाय तो दूसरे ऐसे जलने लगते हैं मानो उन्हीं के पेट पर लात पड़ रही हो। अब मालिक को ही देखो ! अल्लाह की बरकत है मालिक पर। चश्मेबद्दूर, कितनों का भला होता है मालिक की बदौलत पर ऐसे भी हैं जो मालिक से हिरख कर जले जाते हैं। जिस प्याले में खाना उसी को ठुकराना !"

"ऐसे ही आमाल से तो दुनियां में सूखा पड़ता है।" मौलाना ने मुंशी की बात पूरी की।

"लेकिन कमबख्त लोग समझते भी तो नहीं ! मुसीबत आती है तो मरते भी तो ऐसे ही लोग हैं। अभी देख लो न, सूखा पड़ा है तो मालिक बे का क्या घट गया···क्यों मालिक !"

शादाब बेगम मेहमानों के लिये चाय ले आयी थी। उसे सम्बोधन कर बे ने सलाह दी—"शादाब, मुंशी पोखी थके हैं, इन के लिये कुछ पुलाव मंगवा लो।"

मुंशी तम्बाकू की डिबिया खोल, चुटकी भर तम्बाकू होंठ के नीचे दबाने को ही था कि पुलाव का प्रस्ताव सुन उसने डिबिया बन्द कर जेब में लौटा दी और बोल उठा—"ओ मालिक, रूह खुश कर दी मालिक ने ! मालिक का इकबाल बुलन्द हो ! जार के वजीरों का क्या है; वजीरों ने ही जार के साथ दगा किया है। यह वजीर पहले जार के नाम से रियाया को नोच कर खाते रहे और मौका लगा तो जार को ही खा गये और रियाया को ही देखो ! रियाया की परवरिश कौन करता है, हमारे मालिक बे ! और यह भूखे, गरीब लोग बे को ही नोच कर खा लेना चाहते हैं। मौलाना, इस दुनियां में दगा ही दगा और बेवफाई है।"

मौलाना दाढ़ी पर हाथ फेर बोले—"इस दुनियां में नेकी का बदला बदी से ही मिलता है मुंशी !"

अलनजर बे परेशानी अनुभव कर रहा था। हृदय में उठता लम्बा सांस दबा वह तम्बू की छत में बंधी डोरियों की ओर देखने लगा। एक लम्बी सांस छोड़ बे बोला—"देश राजा के बिना बरबाद हो जायगा जैसे बिना आदमी की औरत, जैसे बेलगाम घोड़ी ! मुल्क और सल्तनत की जड़ में दीमक लग गया है···।"

मुंशी बोल उठा—"मालिक, इस रेवलूशा से मेरा दिल बहुत घबरा रहा है···।"

बे ने अपनी भारी पलकें उठा कर पूछा—"यह रेवलूशा है क्या बला ?"

"सुना है, रेवलूशा में कुछ नहीं हो सकता। अल्लाह बहुत रहम करते हैं। खुदा ऐसे लोगों को मौका देते हैं और गुलामों के आमाल और करम देखते हैं। जो लोग खुदा को भूल जाते हैं, बगावत करते हैं, उन पर खुदा का कहर नाजिल होती है। यह सूखा पड़ना और जार का तख्त पलटना सब बागियों के गुनाहों का अंजाम है, यह सब कयामत के आसार हैं।"

मुंशी पोखी मौलाना की बात न समझ पाया, न उसने उस ओर ध्यान ही दिया परन्तु बे यह बातें सुन चिन्ता में चुप बैठा रहा। वह सोचने लगा—जार की सल्तनत पलट गयी तो रियाया उठ खड़ी होगी। शायद जंग खत्म हो जाय और जंगी मजदूरी के लिये पकड़े गये लोग लौट आयेंगे। कितने ही बदमाश दिल में बदले की आग और जलन दबाये हुये हैं, लौटेंगे तो जरूर ! शरारत करेंगे, यहां भी बगावत होगी··· क्या इन्तजाम हो सकेगा ! भूखे, नंगे लोग यों ही बलवा किये हुये हैं, जाने कब लूटपाट शुरू कर दें ! माबी जैसे लोग ही क्या कम हैं ! मौका पाकर जो न कर डालें ! जेल टूट गया तो···अगर अरतैक भाग कर आ गया···? बे ने चिन्ता से एक गहरी सांस ली। उसके माथे पर पसीना छलक आया। शादाब की ओर देख उसने कहा—"बहुत गरम हो रहा है, तम्बू के परदे उठवा दो !"

गरमी अभी कुछ अधिक नहीं थी। मार्च का महीना अभी लगा ही था। तम्बू के पर्दे प्रायः जून के महीने में उठाये जाते थे।

"क्या मालिक !" शादाब विस्मय से बोली, "गरमी तो अभी ऐसी नहीं है।"

बे कुछ उत्तर न दे चुप रह गया। उस के मन में चिन्ता और आशंका का जो भाड़ सुलग रहा था, बेगम उस की तपन क्या समझ पाती।

बे अपने जीवन में इतना व्याकुल कभी न हुआ था। उस समय भी नहीं जब कि उस ने बड़ी तैयारी से अपने बेटे का ब्याह गांव की सुन्दरी ऐना से रचाया था और बस्ती का बदमाश अरतैक ऐना को ले भागा। पाहुनों से मन की बेचैनी छिपाने के लिये बे कभी अपना बदन खुजाने लगता, कभी तम्बू की छत के झरोखों की ओर देखने लगता। गरम चाय की प्याली से उसे शरीर में कुछ ताजगी जान पड़ रही थी परन्तु मन अब भी वैसे ही उचाट था। बात करने को उस का मन न चाहता था। बहुत देर चुप रह वह बोला—"मौलाना खोजा, दिल घबरा रहा है। जान पड़ता है, दरअसल कयामत के आसार हैं…।"

३

जार की पुलिस अरतैक को तेजेन से अश्काबाद ले गई तो रेल के डिब्बे की खिड़कियों में लोहे के सींखचे लगे हुये थे। उस के हाथ-पांव रस्सियों से जकड़ कर बंधे थे और उन में घाव बन गये थे। इन घावों की कुछ दवा-दारू न की गई। इन घावों पर कभी-कभी टिंचर लगा दिया जाता था। टिंचर घावों पर ऐसे लगता था जैसे पिसी मिर्चें छिड़क दी गई हों। अरतैक दांत पीस कर इस पीड़ा को भी सह जाता। गाड़ी में उसे एक संकरी बेंच पर लिटा दिया गया। उस के चारों ओर हथियार-बन्द सिपाही खड़े थे। किसी भी आदमी से एक बात कर सकने का कोई अवसर उसे न मिला।

अश्काबाद की जेल में अरतैक को एक सूनी, अंधेरी कोठरी में धकेल कर भारी-भारी किवाड़ बहुत जोर के धमाके से मूंद दिये गये। किवाड़ों पर भारी ताला पड़ा रहता। अंधेरी कोठरी में धकेल दिये जाने पर अरतैक लोहे की एक खाट से टकरा कर गिरता-गिरता बचा। कुछ देर तक अंधेरे में बैठ रहने के बाद वह लोहे की खाट की जगह पहचान सका और दीवार में ऊंचे पर एक सीखों से मढ़ा झरोखा भी उसे दिखाई दिया।

इस के बाद उस से भेद पूछे जाने लगे—:

"तुमने जार की सरकार के खिलाफ बगावत की थी?"

"हां"

"तुम्हारे साथ दूसरे और कौन लोग थे?"

"सभी लोग थे।"

"तुमने ऐसा काम क्यों किया ?"

"जार का राज खत्म करने के लिये।"

"बागी अजीजखां की फौज मे तुम्हारा क्या ओहदा था ?"

"सिपाही !"

"तुम्हारी बस्ती से दूसरे कौन आदमी अजीज की फौज में थे ?"

"मुझे नहीं मालूम !"

संगीनों से लैस सिपाही अरतैक को घेर कर खड़े थे। अरतैक के इस उत्तर से अफसर ने सिपाहियो को इशारा किया। दो सिपाहियों ने अपनी संगीनों की नोकें अरतैक के शरीर में धंसा दीं।

अरतैंक ने दांतों से होंठ काट लिये और उत्तर दिया—"मेरे गांव का कोई आदमी मेरे साथ अजीज चपैक की फौज में नहीं था। तुम चाहो तो मेरे बदन के टुकड़े कर आग पर भून कर खा लो लेकिन मेरे साथ कोई दूसरा आदमी नहीं था।"

उस अंधेरी कोठरी में अरतैंक को छः मास बीत गये। इन छः मास में अरतक को जेल के सिपाहियों और जांच-पड़ताल करने वाले अफसरों के सिवा और किसी को देखने का अवसर न मिला। अंधेरी कोठरी के किवाड़ में एक छोटा-सा झरोखा था। इस झरोखे की राह दिन-रात में एक बार रोटी का एक टुकड़ा और कुछ नमकीन गरम लप्सी अरतैक को पेट भर लेने के लिये दे दी जाती। नित्य की हाजतें भी उसे इसी कोठरी में ही पूरी करनी पड़ती। संगति के लिये केवल मक्खियां थीं और समय काटने के लिये वह खटमल मार सकता था। उस के कानों को केवल कोठरी के बाहर घूमने वाले सिपाहियों के कदमों की आहट और तालों में चाबियां घूमने की आवाज ही सुनाई दे पाती थी या जेल की दीवारों के बाहर से रेल के इंजन की सीटी सुनाई दे जाती। अरतैक को इस जीवन का अभ्यास भी हो गया। वह चुप बैठा-बैठा अपने गांव की बातें सोचता रहता, अपनी प्यारी ऐना को याद करता रहता। वह सब बातें उसे एक

बहुत दूर बीते जीवन की, स्वप्न की बातें जान पड़तीं।

उस अंधेरी कोठरी में औरत का सहारा बीती हुई बातों की याद ही थी। वही याद उस का धन था। अपने घर की याद, बूढ़ी मां की ममता की याद, अपनी छोटी चुलबुली बहन की याद और प्यारी ऐना से विवाह की तैयारी की याद! बीती हुई घटनाओं की स्मृति की राह पर वह बीते दिन की ओर चलता चला जाता। इस राह का पहला पड़ाव उस का बचपन था और अन्तिम पड़ाव जेल की अंधेरी कोठरी। उसे अलनजर बे के अत्याचार याद आते।···बस्ती पर उसका कैसा आतंक छाया हुआ था! वह स्वयं भी उस आतंक का शिकार था। अलनजर उसके घर की सब सम्पत्ति समेट चुका था, उसका प्यारा घोड़ा भी उस ने कुर्क करवा लिया था और अन्त में उस की मंगेतर प्यारी ऐना को भी अपने लड़के बल्लेखां के लिये छीन लेना चाहता था। जार के राज के बढ़ते जाते अत्याचारों से तेजेन के किसानों के लिये जब चुपचाप मर जाने या बगावत करने के सिवा कोई और चारा रह ही नहीं गया तो वे बगावत कर उठे। उस समय अरतैक ने समझा, सहे हुये के बदले का समय आया है। तब अरतैक ने जाना कि जनता और रियाया उठ खड़ी हो तो क्या कर सकती है; लोग क्या कुछ, कितना कुछ कर सकते हैं! उन घटनाओं को वह अब दूसरे ढंग से सोचता। उन घटनाओं से उसे बहादुर अजीज चपैक की याद आती और आता कि चपैक की बहादुरी लोगों को साथ ले चलने में थी।

अजीज जार की सेना से हार कर भाग गया। उस समय अरतैक ने भी कोशिश की कि ऐना को लेकर भाग जाय। अलनजर बे ने अपने आदमियों को ले उसे घिरवा कर पकड़ लिया और जार की पुलिस के हाथों सौंप दिया। अरतैक की मुश्कें बांध कर अश्काबाद लाया गया और उसे जेल की अंधेरी कोठरी में मूंद दिया गया। यह सब एक सपना था—पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर वह एक दम खाई में गिर पड़ा। वह बीता हुआ जीवन एक लम्बा सपना था। यह सपना कई भागों में बंटा

हुआ था। कभी सपने का एक भाग और कभी दूसरा अरतैक की याद में उभर उठता। उसे बचपन के और बगावत के साथी चरकेज और अशीर याद आने लगते और कभी अपने वैरी अलनजर बे, बाबाखां, लंगड़ा, पटवारी कुलीखा और मौलाना मुहम्मदअली खोजा याद आते और उसका मन क्रोध और असफलता की कड़वाहट से भर जाता।

महीने पर महीने बीतते गये। एक दिन अरतैक की अंधेरी कोठरी के किवाड़ में बना छोटा-सा झरोखा खुला और एक मुस्कराता हुआ चेहरा उसे दिखाई दिया। अरतैक का मन इतना निराश हो चुका था कि उसने उस ओर देख कर भी ध्यान न दिया। उसे अपने नाम की पुकार सुनाई दी—"अरतैक बवाली, अरतैक बवाली!"

अरतैक को जान पड़ा, आवाज परिचित थी। यह जेलखाने के एक सिपाही की आवाज थी जो कभी-कभी उसे मिश्री का टुकड़ा या मक्खन चुपड़ी रोटी झरोखे से थमा देता था। यह चीजें लेने को अरतैक की इच्छा न होती तो भी वह सिपाही उसे दे ही जाता और दो-चार बातें तसल्ली की कह जाता।

पुकार सुन अरतैक उठ कर झरोखे के पास आया। सिपाही बहुत प्रसन्न दिखाई दिया। धीमे स्वर में सिपाही ने टूटी-फूटी तुर्की भाषा में कहा—"बवाली, जार धूल चाट गया···जार गया! तुम जल्दी अपना घर···!"

सिपाही ने इधर-उधर झांका और झरोखे को मूंद एक ओर सरक गया।

अरतैक सिपाही की बात ठीक से समझ न सका परन्तु सोचने लगा—"क्या मतलब?···जार धूल चाट गया! क्या जार हार गया? अगर ऐसा है तो शुक्र खुदा का···!"

अरतैक रात भर सोचता रहा। उसे नींद न आई। लगभग पौ फटने के समय उसे नींद आई और सुपना देखा कि वह एक सीधी खड़ी ऊंची चट्टान से चिपका हुआ है, उसके पांव धरती पर नहीं लग पा रहे।

वह चट्टान धीमे-धीमे हिलने लगी, जान पड़ा कि चट्टान गिर पड़ेगी। अरतैक ने आंखें झुका नीचे देखा, वहां एक बड़ा अजगर बल खा रहा था। इस अजगर के नथुनों से धुआं निकल रहा था। अरतैक भय से कांप उठा। अरतैक का साहस टूट गया। वह मौत का सामना करने की तैयारी करने लगा। सहसा उसने देखा कि नीचे वल खाते अजगर के माथे से खून का फव्वारा छूट गया। लोहे का कवच पहने एक जवान अजगर के बड़े सिर पर सवार हो गया। इस जवान ने अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया। अरतैक ने सहायता के लिये अपना हाथ उस बहादुर की ओर बढ़ाया। दोनों के हाथ छुये ही थे कि अरतैक की आंख खुल गई।

अरतैक का कलेजा जोरों से धड़क रहा था। धड़कन कुछ कम होने पर अरतैक सोचने लगा—इस सुपने का क्या अर्थ हो सकता है ? इस अंधेरी कोठरी को चट्टान मान लिया जाय और अलनजर को अजगर तो मेरी ओर सहायता का हाथ बढ़ाने वाला बहादुर कौन है ? इसी कल्पना में डूबा अरतैक अपनी खाट पर लेटा रहा। दीवार में ऊंचाई पर बने झरोखे से सूर्य की किरणें सुनहरी सलाखों की तरह कमरे में खिंच गई थीं। अरतैक उन किरणों में नाचते अणुओं की ओर आंख लगाये बीती रात के सुपने की ही बात सोच रहा था। उसकी कोठरी के ताले में चाबी घूमने की आहट सुनाई दी। इस शब्द से उस का ध्यान खुलते हुये किवाड़ों की ओर गया। मन में उसने सोचा—इन कमबख्तों की पूछ-ताछ जाने कब खत्म होगी ? कब इस से छुटकारा मिलेगा ?

जेल का अफसर कोठरी में आया। अफसर की बांह पर एक लाल पट्टा बंधा हुआ था। यह नई बात थी अफसर ने हाथ में थमे कागजों में कुछ ढूंढते हुये पूछा—"तुम्हारा नाम अरतैक बबाली है ?"

अरतैक ने हामी भरी।

"अपना सामान उठाओ !"

"क्यों ?"

"तुम अपने घर जाओ, तुम्हें छोड़ दिया !"

अरतैक ने अविश्वास से अपने सीने पर हाथ रख पूछा—"मैं अपने घर जा सकता हूं ?"

"हां, हां, घर जाओ, गांव जाओ, अपने बाल-बच्चों के पास।"

अरतैक अपनी खाट से उछल पड़ा और उसने फिर पूछा—"जनाब, कोई भूल-चूक तो नहीं है ?"

"शुक्र खुदा का, कोई भूल नहीं है।"

"मजाक कर रहे हो ?"

"नहीं, मजाक नहीं ! जार ने धूल चाट ली। मुल्क अब आजाद है।" अफसर ने उस की रिहाई का परवाना अरतैक को थमा दिया और बिदाई में हाथ मिलाने के लिये बांह आगे बढ़ा दी।

अरतैक कोठरी से बाहर निकला तो उसका मित्र सिपाही दिखाई दिया। सिपाही ने मुस्कराकर कहा—"कहो, मैंने कहा था न जार धूल खा गया।"

अरतैक ने सिपाही के गले में अपनी बाहें डाल दीं और रुंधे हुये गले से बोला—"तुम्हारी मित्रता कभी नहीं भूलूंगा। तुम्हारा नाम,"

सिपाही ने अपना नाम बताया—"तिशेन्को।"

"मैं अभी तक अकेला था," अरतैक ने कहा, "आज से तुम मेरे भाई हुये।"

तिशेन्को ने भी अरतैक के गले में बांह डाल कर उत्तर दिया—"मित्र, मैं भी तुम्हें कभी न भूलूंगा। हम दोनों भाई-भाई हुये।"

जेल में आते समय अरतैक अपनी मां का एकलौता बेटा था। जेल से जाते समय उसे एक भाई मिल गया। दोनों ने सगे भाइयों की तरह विदा ली।

लोहे की मोटी सलाखें जड़े जेल के बड़े फाटक से बाहर निकलने पर अरतैक को जान पड़ा कि सुहावनी हवा उस की दाढ़ी से ढके चेहरे को सहला रही है। उसे स्वतंत्र वायु में श्वास लेने पर अनुभव हुआ कि

महीनों बाद वह भरा-पूरा सांस ले पाया है; जैसे उस का दूसरा जन्म हुआ हो ! सड़क के दोनों ओर वहती पतली नहरों के दोनों ओर हरी घास जमी हुई थी। पेड़ों पर नये फूटे कल्ले अभी पत्तियों का रूप न ले पाये थे। बसंत की वायु में नयी फूटती वनस्पति की महक समाई हुई थी। अरतैक और दूसरे कैदियों को यह दृश्य एक स्वप्न जान पड़ रहा था। उन लोगों को विश्वास न हो रहा था कि वे लोग सहसा स्वतन्त्र हो गये हैं। अपने पैरों में बेड़ियों का बोझ न पा और जंजीरों की खनखनाहट न सुन पाने से वे लोग तेज चाल से चल रहे थे मानो अब भी भय हो कि पीछे से आकर उन्हें कोई पकड़ न ले। वे लोग शहर के बाजार में पहुंच गये। लोगों ने उन की ओर ध्यान भी न दिया। उन लोगों को भी शहर में कोई नई बात दिखाई न दी। कहीं-कहीं लोगों की बातचीत में सरकार बदल जाने की बात सुनायी दे जाती। अरतैक पहले अश्काबाद कभी न आया था। शहर की चौड़ी-चौड़ी सुथरी सड़कें, ऊंचे मकान और सजी हुई दुकानें उसे बहुत भली लगीं। वह रेल में बैठा और उत्सुकता से तेजेन की ओर चल दिया।

अरतक तेजेन पहुंचा। वह अपना घर और देश पहचान न पा रहा था। सब ओर रूखे शुष्क मैदान में रेत और धूल उड़ रही थी। न कहीं हरियावल, न कही पानी का नाम। बसन्त का कोई भी चिन्ह कहीं न देता था।

बसन्त के आरम्भ में तेजेन की छटा निराली होती थी। घन्टे-घन्टे में धरती रुप-रंग बदलती रहती। पल भर में सोंधी सीलन लिये वायु चेहरों को सहला जाती और दूसरे पल घटाटोप बादल आकाश पर छा जाते। इसके बाद हवा के तेज झोंके बादलों को उड़ा आंखों से ओझल कर देते और फिर आकाश से बूंदे झरने लगतीं। मैदानों में उड़ती धूल पीले मटियाले जल में समा जाती। धरती पर जगह-जगह छोटी-छोटी नालियां बहने लगतीं और फिर सब कुछ जलमय हो जाता। जैसे अकस्मात वर्षा आ जाती वैसे ही पलक मारते बादल फट कर सूर्य की

किरणें फैल जातीं। धुली हुई घास के मैदान और वृक्ष किरणों में सब्जे के खिलौनों की तरह चमकने लगते। पक्षियों के लाखों जोड़े अपनी-अपनी बोली में चहक उठते। सब ओर जीवन के राग की गूंज समा जाती।

हरी घास से ढके, फूल से छिटके मैदानों में छाज जैसी बड़ी दुमें लटकाये दुम्बे और भेड़ें बिखरी दिखाई देती रहतीं और उन के पीछे मेमनों के जोड़े कुलाचें भरते रहते। कहीं जाड़ों में बढ़ गये बालों से ढके ऊंटों के झुंड मनमाना चारा पाकर संतुष्ट, कुहान फुलाये घूमते रहते। ऊंटनियां अपनी कुण्डलीदार गरदनें फैला कर अपने दूध पीते बच्चों को पुचकारती दिखाई देतीं। घोड़ियां थनों में दूध भरे, अपने चंचल बछड़ों के पीछे भागती हुई गावों की धरती को रौंद डालतीं। गौओं के टोल चरते-चरते थक जाते और घास समाप्त न होती। वे उसी घास पर लेट पूंछ से मक्खियों को हांकती जुगाली करतीं। बस्तियों में दो-चार ही आदमी दिखाई पड़ते। किसान खेतों में ही बने रहते। समय रहते ही वे बैलों को ले सीली धरती को जोत डालते या बस्ती के जवार के खेतों में क्यारियां बना सब्जी-तरकारी बोने लगते। खरबूजे-तरबूज बो देने का भी यही समय था। नहरें वर्षा के जल से अघा जातीं और पानी सड़कों, पगडण्डियों पर फैल जाता। बसन्त में तेजेन के किसान वर्ष भर के लिये अन्न और दूसरे आवश्यक समान का आयोजन कर लेते थे।

परन्तु अरतैक ने देखा कि उस के गांव की रूखी खुश्क धरती धूल से भरी थी। अपना देश वह क्या पहचानता; उसे अपने काले तम्बू का नामोनिशान भी कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसका प्यारा काला तम्बू जिस में उस ने जन्म से धूप, आंधी और वर्षा से शरण पाई थी। उस की मां, उसकी छोटी बहिन···भाई को देख किलकती, फुदकती शाकिरा। सब कुछ कहां गया?

अरतैक विस्मय से बस्ती में चारों ओर आंखें दौड़ा खोज रहा था और सब कुछ तो लगभग वैसा ही था परन्तु उस का तम्बू दिखाई न पड़ा। सब तम्बुओं की बस्ती से ऊपर सिर उठाये, अलनजर का फैला

हुआ और ऊंचा तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब से अन्त में ऐना के परिवार का तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब तम्बू अपनी जगह थे परन्तु अरतैक के तम्बू की जगह खाली पड़ी थी।

खोया हुआ-सा अरतैक परेशान था कि क्या करे? अलनजर के तम्बू पर आंख पड़ने पर मन में ख्याल आया कि पहले जाकर इसी से समझ ले। ऐना के तम्बू को देख सोचा, उस का क्या हुआ होगा?... पहले लोगों से मां का पता ले। मां जिन्दा तो होगी...बेचारी पर क्या बीती होगी? गरीब शाकिरा...उस का क्या हाल होगा?

दुविधा में अरतैक कितनी ही देर तक खड़ा ही रह गया जैसे उस के पांव जुड़ गये हों। कितने ही आदमी आकर पास से निकल गये। वह किसी को पहचान न पाया...ऐसे कब तक खड़ा रहेगा। वह एक ओर चल पड़ा। वह ऐना के तम्बू के सामने आ पहुंचा। उसे कोई झिझक न हुई, न ऐना की मां मामा और पिता मुराद की नाराजगी का ख्याल आया परन्तु इस तम्बू के द्वार पर पहुंचते-पहुंचते फिर उस के पांव जड़ होने लगे। आशंका हुई...वह जिन्दा तो होगी, उस के बाप ने उसे कहीं ब्याह न दिया हो!

अरतैक की दृष्टि सब से पहले ऐना के पिता मुराद पर ही पड़ी। वह तम्बू के बायीं ओर घोड़ी के थान के समीप एक गढ़ा खोद रहा था। आहट पा मुराद ने आंखें उस की ओर उठाई और पहचान न सकने के कारण पल भर चुप, ध्यान से देखता रहा। पहचाना तो आगे बढ़ उस ने अरतैक को सीने से लगा लिया। उमड़ आये आंसू बस में करने के लिये बूढ़े ने मुंह फेर लिया और बोला—"बेटा अरतैक, हम लोग तो तुम्हें देखने की आशा ही छोड़ चुके थे। शुक्र अल्लाह का! तुम्हें देख आंखें शीतल हो गई। बेटा, बड़ा हौसला हुआ तुम्हें देख कर। तुम आ गये, अब कोई चिन्ता नहीं। बस अब इस तम्बू को ही अपना घर समझो।"

मुराद का यह व्यवहार देख अरतैक विस्मय से अवाक् रह गया। उस का मन हाथ से जाता रहा। अश्काबाद की जेल में संगीनों से कोंचा

जाने पर भी वह अडिग बना रहा था परन्तु मुराद की इस ममता ने उसे पिघला दिया। उस का चेहरा गुलाबी हो गया, पांव लड़खड़ाने लगे और माथे पर पसीना आ गया। बोलने का यत्न किया तो उस का गला रुंध गया।

मुराद ने कहा—"बेटा तुम चले गये तो···अच्छा, भीतर जाकर आराम तो करो।" मुराद ने उसे तम्बू के दरवाजे की ओर धकेल दिया।

अरतैक दरवाजे पर आकर फिर एक बार ठिठका और सोचा—ऐना जरूर यहां ही है तभी तो उस के पिता ने मेरा इतना ख्याल किया और सोचा कि एकाएक सामने जाने से ऐना कहीं घबरा न जाय। आहट करने के लिये उसने दरवाजे पर ही खांसा।

ऐना भीतर ही थी। महीन कसीदा काढ़ते समय, रोशनी के लिये वह तम्बू के झरोखे से आती किरणों के नीचे बैठी हुई थी। किरणों के प्रकाश में तकिये पर काढ़े हुये कसीदे के अक्षर चमक रहे थे—

'दुआओं की गोद में···'

दरवाजे पर अरतैक के खांसने की आवाज ऐना के कान में पड़ी और उस के खून में बिजली-सी कौंध गई। उस ने मन को बस में कर समझाया—क्यों पागल होती है, अन्धे को तो सदा ही आंखों के सपने आते हैं परन्तु उस की आंखें तम्बू के दरवाजे की ओर उठे बिना न मानी। एक कद्दावर मर्द भीतर आता दिखाई दिया। ऐना की आंखें विस्मय से फैल गई। वह अपनी जगह से उछल पड़ी—"अरतैक जान!" उस के होंठ पुकार उठे। उस की बाहें अरतैक के गले से लिपट गयीं और सिर सीने पर जा टिका।

ऐना को सुध आई तो वह लजा गई। पीछे हट उसने अपने हाथों से बुना कालीन बिछा कर अरतैक को बैठाया और उसके पास बैठ गई। उसके जीवन के स्वप्न साकार हो गये, हृदय की बगिया फूल उठी, हृदय का उत्साह और आनन्द उस के चेहरे पर छलक आया। उस की बड़ी-बड़ी आंखों की चमक और होठों के रंग में उसका खोया हुआ जोबन पल

भर में लौट कर उमड़ उठा; जैसे दुख के दुर्दिन कभी आये ही न थे।

अरतैक की उंगलियां ऐना के रेशमी बालों में उलझ कर फंस गईं। दूसरी बांह से उसे अपनी ओर समेट, पिघले हुये गले से उसने पुकारा—"मेरी ऐना, मेरी रूह, मेरी आंखों की पुतली···!"

ऐना अरतैक की गोद में सिमिट आई और उसके गाल पर अपना कोमल गाल रख, उसने धीमे से अरतैक के कान में कहा—"मेरी जान, अगर तुम अब भी न लौटते तो मैं जान दे देती। अब मैं तुम्हें पल भर के लिये भी कहीं न जाने दूंगी।"

कुछ पल अरतैक ऐना की बाहों में अपने आप को और दुनिया को भूले रहा परन्तु मन में चिन्ता उठने लगी। उसने पुकारा—"ऐना···" परन्तु चुप रह गया।

ऐना अरतैक के मन की बात भांप गई—"अभी क्या अपने यहां नहीं गये?" उस ने पूछा और अरतैक की आंखों में झांका। ऐना की बड़ी-बड़ी रसीली स्वच्छ आंखें सान्त्वना दे रही थीं—चिन्ता न करो डर की कोई बात नहीं है।

"हमारे यहां खैरियत तो है ऐना?" अरतैक ने पूछा।

"चिन्ता की कोई बात नहीं अरतैक! तुम्हारे जाते ही तुम्हारे चाचा आये थे और मां और शाकिरा को साथ ले गये। उन्हें किसी तरह की कमी नहीं। अभी तीन दिन पहले भी उनकी खैर-खबर मिली थी। शाकिरा के लिये एक टोपी काढ़ कर मैंने भेजी थी और अब्बा ने मां की पोशाक के लिये रेशम का थान और दूसरी जरूरी चीजें भी भेज दी हैं।"

"ऐना, शुक्रिया तुम को!" अरतैक ने संतोष से सांस ली।

ऐना ने मुस्करा कर विरोध किया—"वाह, क्या कह रहे हो! वे क्या मेरी मां-बहनें नहीं हैं! मेरे जिन्दा रहते उन लोगों को तकलीफ कैसे हो सकती थी?"

अरतैक का मन गदगद हो गया। वह कुछ कह न सका। पल भर

बाद उसने पूछा—"ऐना, उस बदमाश अलनजर ने तो जरूर तुम लोगों को परेशान किया होगा।"

"अब जाने दो उस नीच की बात। क्या होगा वह सब याद करके!"

"नहीं कहो, मुझे तो दिन-रात उस नीच से डर लगा रहता था कि जाने तुम्हें कैसे-कैसे परेशान कर रहा होगा। क्या किया उस ने? उसे सुने बिना मुझे चैन न आयगा।"

"अच्छा सुनो," ऐना बोली, "तुम्हें पकड़ कर ले गये तो मैं मुरदा सी पड़ी रहती। तम्बू से कभी ही बाहर निकलती। एक रोज मैं दरवाजे पर थी। अलनजर के आदमी मुझे पकड़ ले जाना चाहते थे। मैं धक्का देकर अलग हो गई। झगड़े में मैं नीचे गिर पड़ी। मां चिल्लाने लगी—अरे जालिमो, लड़की को क्यों मारे डाल रहे हो! इस से तो इसे अपने लड़के की वहू बना लो! मुझे भी समझाने लगी—ऐसे अपनी मिट्टी क्यों खराब करती है! वे बड़ा आदमी है, उस के यहां आराम भी होगा और इज्जत भी।

"मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने फटकार दिया—अगर तुझे बे का इतना ख्याल है तो तू ही उस छोकरे के साथ जा बस! एक रोज मां मुंह पर छलनी जैसे दाग भरे बल्ले को अपने साथ ले आई। बल्ले आकर मेरे कंधे पर हाथ रखने लगा। मैंने कालीन छांटने की कैंची खोल कर कहा, हिम्मत है तो छू मुझे! फिर मैंने मां से भी कहा—अगर तू फिर इसे यहां लाई तो पहले मैं यह कैंची तेरे गले से पार उतारूंगी और फिर खुद भी मर जाऊंगी। इसी बीच अब्बा आ गये। मामला देख गुस्से में उन्होंने बेलचा उठा कर मां की कमर पर दे मारा। मां जमीन पर गिर पड़ी और चिल्लाने लगी। बल्ले उठ कर भागा। अब्बा बेलचा लेकर बल्ले के पीछे भागे। बल्ले डर के मारे सिर पर पांव रख कर सर हो गया। उस की टोपी यहीं दरवाजे पर ही गिर गई।

"दूसरे दिन खोजा मौलाना बहकाने आया। मैं आगे बढ़ी कि उस बुड्ढे की खबर लूं। अब्बा ने मुझे रोका। उन्होंने मौलाना की बात नहीं

सुनी—"मौलाना और सब ठीक है लेकिन बे के यहां से लड़की के रिश्ते की बात ले मेरे यहां मत आना । मौलाना ने भी फिर सूरत न दिखाई। इस के बाद बे ने धमकी दी कि इन लोगों को बस्ती से निकाल देगा। अब्बा ने कहा कि बस्ती से तो मैं मर कर ही निकलूंगा और देखा जायगा कि पहले मैं मरता हूं कि बे मरता है। अब्बा ने मेरा बहुत साथ दिया। मां तो सौतेली ठहरी, वह सदा मिनमिनाती रहती। मैंने भी कहा—तू बकती रहा कर, तेरी कौन परवाह करता है !"

भाग्य की बात, उसी समय तम्बू का दरवाजा खुला और मामा दुह कर दूध का बर्तन हाथ से लटकाये भीतर आई। धूप से चौंधियाई आंखों से वह अरतैक को तो पहचान न सकी परन्तु देखा कि लड़की किसी जवान मर्द के साथ सट कर बैठी हुई है।

मामा माथा पीठ कर चीख उठी—"लोगो, दुनिया गारत हो गई ! हाय, इतनी बेहयाई ! जवान लड़कियों के ऐसे चरित्तर ! जमीन फट जाये और यह लोग फना हो जायें···!"

अरतैक कालीन से उठा और मामा के पास जाकर बोला—"अरे क्या कर रही हो मौसी ! पहचाना नहीं मुझे ? मैं अरतैक हूं, सलाम मौसी।"

मामा की आंखें और हाथ दोनों ही हैरानी से फैल गये। दूध का बर्तन मामा के हाथ से गिर गया—"ओह बेटा अरतैक !" मामा चिल्ला उठी और अरतैक को अपने हृदय से लगा लिया।

8

संध्या हो चुकी थी। बस्ती के चायखाने के मालिक जमरूदी के मकान में रोशनी जल चुकी थी। मकान के भीतर के कमरे में बस्ती के माल अफसर उमेदखां और खोजा मुराद, बड़ा मुंशी कुलीखां लंगड़ा और दारोगा बाबाखां और दो-तीन दूसरे भले लोग चाय पी रहे थे। बातचीत धीमे-धीमे चल रही थी। चायखाने के मालिक जमरूदी को ऐसे मुर्दा दिल लोग पसन्द न थे। अपने चायखाने में हंसी-मजाक और शोर-शराबा पसन्द करता था।

जमरूदी कमरे की चौखट के साथ सटा खड़ा, अपनी फैली हुई दाढ़ी खुजाता हुआ अपने मेहमानों की ओर देख रहा था। मेहमानों के चेहरे पर उसे मुर्दनी ही दिखाई दे रही थी। कोई उस की ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था, न कोई पुलाव जल्दी लाने के लिये पुकारता था। जमरूदी यह भी न भांप पाया कि इन लोगों को किस ने दावत पर बुलाया है! वह खड़ा-खड़ा थक गया तो बैठ गया। बैठा-बैठा उकता गया तो खड़ा हो गया और आखिर बोला—

"भले लोगों, आज यह कैसी सुस्ती छाई हुई है? आप का खादिम जमरूदी हाजिर है, कोई हुक्म कीजिये!" परन्तु जमरूदी की इस बात का भी कुछ असर न हुआ।

बस्ती के इन बड़े लोगों के उदास होने का कारण भी ठीक ही था। खबर मिली थी कि इलाके के गवर्नर कर्नल बेल्लानोविच हालत हाथ से निकलती देख, आग लगी झोपड़ी में बसने वाले चूहों की तरह झोपड़ी

छोड़ भागे थे। बेलानोविच इलाके का इन्तजाम लेफ्टीनेंट कर्नल आंतोनोव के हाथ में सौंप, स्वयं फैरूशा में जनरल कोल्माकोव के पड़ोस में जा बसे ताकि हालत और बिगड़ने पर तुरन्त भाग सकें।

बस्ती के अफसर लोग बेलानोविच को विदाई देकर चायखाने में आ बैठे थे। वे लोग अपनी स्थिति के बारे में चिन्तित थे। इन लोगों की सहायता से कर्नल बेलानोविच ने काफी सम्पत्ति बटोरी थी। कर्नल का सामान कई मालगाड़ियों में भर कर उन के साथ भेजा गया था। यह भले आदमी परेशान थे कि अब वे किस के सामने सलाम करेंगे और कौन इन के सिर पर अपने हाथ का साया करेगा ! लेफ्टीनेन्ट कर्नल आन्तोनोव तो स्वयं ही घबरा रहा था।

माल अफसर उमेदखां अपने फूले हुये गालों पर से पसीना पोंछ कर गम्भीर स्वर में बोला—"कहते हैं न कि जाने-पहचाने दुश्मन से लड़ लेना आसान होता है। इस हाकिम को हम समझ गये थे, वह हमें समझ गया था। उस का साया अपने सिर पर था। वह कभी हम लोगों पर बिगड़ता था, धमकाता भी था पर उसने कभी किसी का कुछ बुरा नहीं किया। यह तो एक नसीहत थी कि हम गलती न करें। उस का साया बाप का साया था। दारोगा ठीक कहते हैं, हम लोग अनाथ हो गये हैं। आन्तोनोव भी कोई आदमी है···बिलकुल बेदम !"

कुलीखां लंगड़े ने मुंह में दबा तम्बाकू का बीड़ा निकाल दरवाजे से बाहर फेंक दिया और होठों से टपकती लार हाथ से पोंछ कर बोला—"बेदम का क्या मतलब !···बेलानोविच सिर पर बैठा था तो वह कर ही क्या सकता था ? कुत्ते को शह मिले तो भेड़िये पर चढ़ बैठता है। हम लोग साथ देंगे तो उसे हिम्मत बंधेगी। अमले के बिना कोई गवर्नर क्या कर लेगा ! उसे सल्तनत सम्भालने दो, फिर देखना सल्तनत खुद सब कुछ सिखा देती है।"

मौलाना खोजा ने गम्भीरता से भवें चढ़ाकर समर्थन किया—"ठीक है, कुलीखां सही कह रहा है। हाकिम कोई भी हो, हकूमत हमी लोगों

को चलानी है। कुलीखां के पांव में खम है तो क्या, दिमाग उस का दुरुस्त है भाई !"

मौलाना खोजा ने कुलीखां के लंगड़ेपन पर मजाक कर दिया। इस बात पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दारोगा ने दोनों को समझा कर चुप कराया और दूसरी बात आरम्भ कर दी—"मौलाना सुना नहीं, अरतैक लौट आया है।"

"कौन अरतैक ?" मौलाना ने पूछा।

"अरतैक को नहीं जानते ? हमारी बस्ती का लड़का है। याद नहीं उस का घोड़ा छिनवाया था। अरे जिस ने अजीज का बगावत में साथ दिया था, जिसे पकड़वा कर अश्काबाद भिजवाया था। याद नहीं ?"

"सीधे-सीधे कहो न," कुलीखां बोल उठा, "जिसने अलनजर बे के लड़के की बहू छीन ली और माल अफसर के मुंह पर थूक दिया था और पंचों को भी धमकाया था !"

"खोजा मुराद को इस बात पर क्रोध आ गया। कमर में बंधे मियान से चांदी की मूंठ का खंजर खींच उस ने कुलीखां को ललकारा—"मुंह पर थूक कर दिखाऊं मैं ! कहो तो तुम्हारे मुंह पर थूकूं !"

कुलीखां ने अपनी कमर से रिवाल्वर निकाल कर जवाब दिया—"मैं तुम्हारे बाप के मुंह पर थूकता हूं।"

माल अफसर उम्मेद खां ने दोनों में बीच-बचाव किया और समझाया—"क्या बचपन कर रहे हो तुम लोग ! अपनी उम्र और ओहदे का तो ख्याल करो !"

जमरूदी की एक बीवी बढ़िया पोशाक पहने, एक कढ़ा हुआ दस्तरख़ान लेकर आई और मेहमानों के बीच बिछा गई। दूसरी बीवी आकर पुलाव का थाल रख गई और तीसरी शराब लेकर आई। जमरूदी टोंटीदार लोटा और चिलमची ले मेहमानों के सामने आ पूछने लगा—"कोई साहब हाथ धोना चाहते हैं ?"

उमेदखां आस्तीनें समेट पुलाव पर झुक गया और बोला—"दारोगा

साहब, आपने ठीक वक्त पर शराब मंगाई । शराब हमेशा, हर मौके मौजूं है । शराब में यही तो बात है कि गुस्सा आ रहा हो, पी लीजिये तो गुस्सा जाता रहेगा । आप खुश हों, पी लीजिये तो मन उदास हो जायगा । तबीयत ठीक न हो, पी लीजिये, तबीयत सुधर जायगी और सेहत में पी लीजिये तो तबीयत गिर जागगी ।"

"यों कहो, शराब सब को बराबर कर देती है । समझदार और बेसमझ सब एक बराबर हो जाते हैं," दारोगा की बात ठीक ही थी । कुछ ही मिनिट बीते थे कि कुलीखां और खोजा मुराद आपसी झगड़ा भूल एक दूसरे से प्याले छुआ-छुआ कर पीने लगे और मनमुटाव दूर हो गया ।

खाना अभी चल ही रहा था कि एक हरकारे ने आकर खबर दी कि रेलवाई लोगों की क्लब के हाल में अभी पंचों का चुनाव होगा । वहां सब लोगों को बुलाया गया है ।

कुलीखां ने मुंह का गस्सा चबाते हुये हरकारे को हुक्म दिया—"अभी हम लोग खा-पी रहे हैं । जब तक हमारा खाना खत्म नहीं होगा, चुनाव-उनाव कुछ नहीं होगा । कह दो जाकर अभी हम लोग नहीं आ सकते !"

हरकारे को तो इन लोगों ने धमका कर लौटा दिया परन्तु मन में दुविधा होने लगी—पंचों का चुनाव ! यह एक नई बात थी परन्तु इस में अचम्भा क्या था । सभी बातें नई थीं । अब जार तो रहा नहीं । सभी लोग जार बन गये थे । सभी लोग तुर्रमखां बन बैठे । सभी जगह चुनाव और ऐसे ही झगड़े चल रहे थे । बेइन्तजामी फैल रही थी । कुत्ते अपने मालिकों को और बिल्लियां अपनी मालकिनों को भूल गई थीं । लेकिन दुश्मन क्या कर रहा है, वह जानना भी तो जरूरी है । मौके की बात है, खुद को ही पंच चुनवाया जा सकता है । न हो तो अपने आदमियों को चुनवाया जाये । यह सब सोच कर इन लोगों ने जल्दी ही चुनाव की सभा में पहुंचने का निश्चय किया और सभी लोग तुरन्त क्लब की ओर चल पड़े ।

चुनाव की सभा अभी शुरू न हुई थी। इस भीड़ में सब लोग रूसी जवान ईवान चर्नीशोव की ओर देख रहे थे। चर्नीशोव रेलवाई की वर्दी पहने था। तेजेन शहर के तुर्कमानी और रूसी मजदूरों में सब से अधिक आदर चर्नीशोव का ही था। सभी लोग जानते थे कि चर्नीशोव जार और जार के अमलों का कट्टर दुश्मन था। लोग यह भी जानते थे कि बागी अजीज के साथियों और चर्नीशोव में गहरी मित्रता रही थी।

अरतैक के मन में सब से पहले चर्नीशोव ने ही अन्याय के विरोध का बीज बोया था परन्तु अश्काबाद जेल से छूट कर लौटने के बाद अरतैक चर्नीशोव से मिल न पाया था। चर्नीशोव सभा के लिये बढ़ती हुई भीड़ में खड़ा सरसरी निगाह से आने वाले लोगों को देख रहा था। उसने देखा बांह पर लाल पट्टा बांधे एक फौजी सिपाही इधर-उधर कुछ पूछता फिर रहा है। कुलीखां लंगड़े को देख सिपाही ने उस से भी अपना सवाल पूछा—"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हूं, वह कहां होगा ?" कुलीखां ने सिपाही की बात की ओर कुछ ध्यान न दिया और एक ओर निकल गया।

चर्नीशोव बढ़कर सिपाही के पास पहुंचा और बोला—"अरतैक बबाली से मिलना चाहते हो। क्यों क्या काम है उस से ?" मन ही मन चर्नीशोव घबराया। अरतैक अभी हाल ही में तो अश्काबाद से छूट कर आया है, क्या कोई और मुसीबत उस के सिर आ पड़ी ?

सिपाही ने हामी भरी—"हां, मैं अरतैक से मिलना चाहता हूं।"

"इस से पहले तो तुम्हें तेजेन में कभी नहीं देखा !" चर्नीशोव ने पूछा, "कहां से आ रहे हो ?"

"अश्काबाद से।"

चर्नीशोव का संदेह और बढ़ा—"क्या काम है अरतैक से ?" उस ने पूछा, "क्या सरकारी मामला है ?"

"नहीं।"

"तो फिर क्या काम है ?"

"अरतैक मेरा गहरा मित्र है।" सिपाही ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "मैं आज ड्यूटी पर यहां आया था। आशा थी मित्र से मिलूंगा परन्तु निराश ही हो रहा हूं। मुझे आज ही रात अश्काबाद लौट जाना है।"

इस सिपाही ने अपना नाम तिशेन्को बताया। तिशेन्को ने चर्नीशोव को अश्काबाद जेल में अरतैक से परिचय और मित्रता होने और जेल में अरतैक पर बीती बातों की कहानी सुनाई। चर्नीशोव ने भी बताया कि कि अरतैक उस का भी पुराना मित्र है। जेल से आकर अरतैक उस के मकान पर आया था। चर्नीशोव मकान पर न था इसलिये अरतैक उस की पत्नी से ही बात करके लौट गया। वह स्वयं अरतैक को खोज रहा था। अरतैक शहर से चालीस मील दूर अपने गांव में था।

चर्नीशोव और तिशेन्को आपस में बातचीत करने लगे। तिशेन्को को जब विश्वास हो गया कि चर्नीशोव भरोसे योग्य है तो उस ने अश्काबाद की हालत कह सुनाई कि मजदूरों की जो पंचायत चुनी गई है, उस में सब पुराने सरकारी अफसर, पादरी, सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी लोग भर गये हैं। तुर्कमान मजदूरों और किसानों में से कोई भी आदमी तुर्कमानी सोवियत में नहीं लिया गया। एक काउण्ट (बड़े जागीरदार) साहब जो इलाके के गवर्नर कोल्माकोव के दोस्त हैं, सोवियत के प्रधान बन बैठे हैं।

चर्नीशोव यह बातें पहले ही सुन चुका था। एक और साथी को अपने विचारों से सहमत पा उसे संतोष भी हुआ परन्तु उस ने खुल कर बात न की। जार के राज में उसे बरसों पुलिस से सावधान रहना पड़ा था। अब जार का राज समाप्त हो चुका था परन्तु बेमतलब बात न कहना उसकी आदत हो गई थी। उसने सोचा—कौन जाने तिशेन्को अश्काबाद के जार-समर्थक लोगों का ही आदमी हो और उस का भेद लेना चाहता हो!

चर्नीशोव की इस सावधानी से तिशेन्को उस के मन का सन्देह भांप गया परन्तु चर्नीशोव की रेलवे मजदूर की वर्दी देख तिशेन्को के मन में

सन्देह होने का कोई कारण न था। वह चर्नीशोव को बांह से थाम एक ओर ले गया और उसे अपना पार्टी का टिकट दिखा दिया। लिशेन्को का टिकट देख चर्नीशोव ने दिल खोल दिया और तेजेन की हालत बताई कि शहर में पार्टी का कोई संगठन नहीं। उसे छोड़ केवल दो और पार्टी-मेम्बर शहर में थे और शहर के मजदूरों का भी कोई अच्छा संगठन न था। सभा शुरू होने का समय हो जाने के कारण उन की बातचीत आगे न बढ़ पायी।

सभा में सब से पहले अश्काबाद की सोवियत से आये प्रतिनिधि ने लेक्चर दिया। उस ने जार का अत्याचार समाप्त होने के लिये जनता को बधाई दी और कहा कि आजादी का यह युद्ध पूरी आजादी पाये बिना रोका नहीं जा सकता। उस ने जनता को समझाया कि फिलहाल जो चालू सरकार कायम की गई है, उस के फैसलों को सख्ती से पूरा करना होगा।

उस के बाद चर्नीशोव बोलने के लिये खड़ा हुआ। उस ने कहा कि जार के राज में तुर्कमानिया की हालत खराब होना जरूरी था क्योंकि जार और उस के गुट्ट ने रूस के बाहर के देशों की जनता को चूस लेने के लिये ही इन देशों और इलाकों को अपने राज के जाल में समेटा था। उस ने कहा कि जार की सरकार अपने सहायक जागीरदारों और बड़े-बड़े धनी व्यापारियों को ही फायदा पहुंचाने की रीति पर चलती थी और जनता को असली हालत नहीं जानने देती थी। इस राज में देश और जनता बरबाद हो रहे थे। जार ने इतना बड़ा जंग छेड़ रखा था परन्तु इस जंग से जनता को मौत और कंगाली के सिवा और कुछ नहीं मिला। उस ने जार की सरकार के अत्याचारों की कई मिसालें सुनाईं। उस ने कहा कि यह जार की अत्याचारी नीति का ही परिणाम था कि १९१६ में तुर्कमानिया में बगावत कर अजीज ने अपने देश को जार के राज और रूस से अलग कर लेने की कोशिश की थी। जनता ने भी अजीज को सहायता दी थी क्योंकि जार के जुल्मों से जनता की जिन्दगी

दूभर हो चुकी थी। उस ने कहा—हम अपनी चालू (अस्थायी) सरकार से यह मांग करते हैं कि सब से पहले इस जंग को खत्म किया जाय। जंग से केवल धनी लोग फायदा उठा रहे हैं, जनता इस में पिसी जा रही है। जनता चाहती है कि किसानों को खेती के लिये जमीन और सिंचाई के लिये पानी मिले। जमीन, कारखानों और बाजार के प्रबन्ध पर जनता का कब्जा हो। अगर अस्थायी सरकार इस मार्ग पर नही चलेगी तो यह सरकार भी जार की सरकार जैसी ही बन जायगी।

चर्नीशोव की बात सुन सभा में बैठे कुछ लोगों के चेहरों पर घबराहट झलकने लगी; खास तौर पर दारोगा, पंच और दूसरे पुराने सरकारी अफसर आपस में झांक-ताक करने लगे। उन्हें ऐसा जान पड़ा कि पिछले गदर के मामले में उन की गिरफ्तारी होने वाली है। मुंशी ने माल अफसर के कान के पास मुंह कर कहा—"भैया अपने को क्या ! जार हो, दारोगा हो, सोवियत की पंचायत हो, बात अपनी चलनी चाहिये ! फिर हम भी जार हैं।"

एक पंच ने कहा—"यह लोग तो ऐसी बातें कहते हैं कि अजीज की बगावत खुद गवर्नर ने, दारोगा ने, हम ने कराई हो। शहर पर हमला करने वाले डाकुओं का कोई कसूर नहीं था। यह तो अजीब तमाशा है!"

दूसरा बोला —"चुप ही रहो भैया ! कोई सुन लेगा तो और मुसीबत होगी।"

चुनाव हो गया। चर्नीशोव और उसके साथियों के सिरतोड़ कोशिश करने पर भी चर्नीशोव को छोड़ दूसरा कोई मजदूर या किसान सोवियत में न चुना जा सका।

दारोगा बाबाखां को चुनाव का यह खेल कुछ समझ न आया। इस चुनाव से फायदा क्या! वह सोचने लगा, क्या चुने हुये लोग गवर्नर बनायेंगे ...तो फिर कर्नल आन्तोनोव क्या करेगा ? गवर्नर और दूसरे बड़े हाकिमों के रहते तो अफसर मनचाहा करते रहे। जब यह ढेरों आदमी हुकूमत चलायेंगे तो कैसे निभेगी ! हुकूमत तो एक की चल सकती है,

पचासों की नहीं। गड़बड़ी मचेगी, शहर और गांव सब बरबाद हो जायेंगे और क्या! साथ चलते माल अफसर को पुकार बाबाखां बोला—"खोजा मुरादखां, यह पंचों का चुनाव तो अपनी समझ में आया नहीं।"

"दारोगा हमें खुद इसका कुछ मतलब नहीं समझ में आया।" माल अफसर ने उत्तर दिया।

"तो अब गवर्नर क्या करेगा?"

कुलीखां आगे-आगे लंगड़ाता जा रहा था। यह बातचीत सुन उसने चाल धीमी कर दी और दारोगा के साथ-साथ चलता हुआ बोला—"समझ में क्या नहीं आया···गवर्नर को कौन कुछ कह रहा है? गवर्नर तो गवर्नर ही रहेगा।"

"तो यह सोवियत के पंच क्या करेंगे···खाद ढोयेंगे!"

"यह गवर्नर के मातहत मददगार हो जायेंगे।"

उमेदखां ने एक लम्बी सांस ली—"सभी कुछ सामने आया जाता है भाई। जिन्दा रहे तो अपनी आखों देख ही लेंगे।"

६

खोये हुये बेटे को पाकर मां की छाती ठण्डी हो गई। अरतैक की मां नूरजहां ने बेटे का सिर सीने पर रख उसे चूमा। कापते हुये हाथों से उस के शरीर और कपड़ों को सहलाती रही।

"मेरे बेटे, मेरे लाल ! तू कहां चला गया था !" उस की आंखों से झड़ते संतोष के आंसू थम न पाते थे।

मां के स्नेह की इस बाढ़ से स्वयं अरतैक की आंखों में भी आंसू छलक आये। उसे जान पड़ा कि मां के स्नेह की इस बहिया से १६१७ के सूखे से तपा तेजेन का पूरा देश सिंच गया।

शाकिरा भाई के गले में बांहें डाल मचल गई कि हम अब भैया को नहीं छोड़ेंगे।

अरतैक का चचा अधेड़ उम्र का आदमी था। उस की दाढ़ी खिचड़ी हो गई थी परन्तु शरीर की काठी मजबूत बनी थी। उस ने अरतैक को बताया कि वह दो बार तेजेन से अश्काबाद पहुंचा। दोनों बार वह तीन दिन और तीन रात जेल के फाटक के बाहर बैठा रहा। जिस किसी भी आदमी को फाटक के भीतर-बाहर आते-जाते देखता, उसी से अपने भतीजे की बाबत पूछताछ करता और भतीजे से मिला देने के लिये गिड़गिड़ाता परन्तु कुछ न कुछ बना। अपने भतीजे को सही-सलामत आ गया देख चाचा का चेहरा खुशी से चमक उठा।

महीनों से सूना, उदास और बेरौनक दिखाई देने वाला काला तम्बू प्रसन्नता और उल्लास से चहक उठा। अरतैक के मित्र और परिचित

और बहुत से लोग केवल उस का नाम सुन कर ही उस से मिलने और बधाई देने आ जुटे। जीत के जलसे का रंग बंध गया। एक ओर बड़ी सी देग में पकता भेड़ का मांस अपना सुरीला राग अलग से गुनगुना रहा था।

अरतैक का पड़ोसी बूढ़ा गरीब किसान खादिम भी अरतैक से मिलने आया। खादिम को भी अलनजर बे ने बरबाद कर दिया था। उस ने अपनी दुख की कहानी अरतैक को सुनाई—"बे ने मेरी खत्ती खुदवा कर सब गेहूं निकलवा लिया और पीट-पीट कर मुझे अधमरा कर दिया···।"

"खादिम बाबा, दिल छोटा न करो!" अरतैक ने तसल्ली दी, "जिंदगी रही तो एक दिन अलनजर को भी समझ लेंगे। तुम्हारा सब गेहूं लौट आयेगा।"

"तुम जिंदगी की शर्तों की बातें करते हो अरतैक बेटा!" खादिम ने आस्तीन से आंसू पोंछते हुए कहा, "यहां मेरे बाल बच्चे सोते-जागते भूख से तड़पते रहते हैं और बे के अघाये हुये कुत्ते गेहूं की रोटियों पर नाक सिकोड़ रहे हैं।"

"बाबा घबराओ नहीं! तुम भूखे रहोगे तो हम लोग भी भूखे रहेंगे; हम खायेंगे तो तुम भी खाओगे। जब तक अपना वक्त नहीं आता, मिल-जुल कर जैसे-जैसे निबाहना होगा।"

"बेटा, जिंदगी में तुम्हें देख लिया, बस सब पा लिया। अब मुझे कोई दुख नहीं। तुम से अपने दुख की बात कह ली, नहीं तो मैं अपनी बात किस से कहता।" खादिम ने आंसू पोंछ लिये और उसका चेहरा उत्साह से चमकने लगा। वह अरतैक को सुनाने लगा, "ऐना बहुत बहादुर लड़की है। उस ने तुम्हारे पीछे कमबख्त बे का मुंह काला कर उस की नाक काट ली! बे ने लोगों के सामने अपनी इज्जत रखने के लिये अपने लड़के बल्ले के लिये ऐना की जगह उस भोंड़ी बेहूदा छोकरी अतैरी को ब्याह लिया।" बे की बेइज्जती और परेशानी की बात सुनाते समय खादिम हंस-हंस कर जमीन पर लोट-लोट गया और फिर गम्भीरता

से सीधे बैठ अपनी दाढ़ी सहलाते हुये उस ने पूछा, "बेटा अरतैक, अ‹ ऐना को कब घर ला रहे हो ?"

"उस की सौतेली मां भला मानेगी !" अरतैक ने उत्तर दिया।

"अरे मामा ! वह तो ऐसी मानेगी कि···अभी उसे मुराद के बेलचे का डंडा भूला नहीं होगा। भूल गया होगा तो बेलचा तो अभी मुराद के पास है ही ! ऐना को अब अपने घर आना ही चाहिये। वह अपने घर की मालिक क्यों न बने।"

"खादिम बाबा, तो जैसा तुम कहोगे होगा।"

"नहीं भैया, अब देर ठीक नहीं। बेचारी ने बहुत सह लिया।" ऐना को जल्दी से जल्दी घर ले आने के लिये अरतैक स्वयं ही उतावला था पर वह चाहता था, अलनजर से बदला लेने के बाद ही ब्याह का जलसा हो। ऐना को यह देर पसन्द न थी। उसने अरतैक को समझाया—"तुम बे की बात से मन क्यों खट्टा किया करते हो; बेइज्जती तुम्हारी हुई है कि बे की ? बताओ, तुमने उसके लड़के को पीटा, उसका घोड़ा भी छीन लिया आर तुम्हारी ऐना तो तुम्हारे पास है। अब अगर वह बात बढ़ाये तो तुम जवाब दो ? यों ही क्यों झगड़ा बढ़ाना चाहते हो ! मैं ही जानती हूं तुम्हें एक बार खो कर मैंने कैसे पाया है···अब यह झगड़ मैं तुम्हें नहीं करने दूंगी।"

एक तरह से ऐना की बात ठीक ही थी परन्तु अरतैक का मन न माना। बे से उसके अपने ही झगड़े की बात तो न थी। सूखे के उस बरस में बे ने अरतैक के घर का और दूसरे सभी किसानों के घर का सब अनाज समेट लिया था। बस्ती के बहुत से लोग अपना अनाज खो सोते-जागते भूख से तड़प रहे थे। उस बरस तो फसल की कोई आस थी नहीं और कौन जानता था कि अगली फसल तक कितने मरेंगे और कितने जियेंगे ? बस्ती के लोग यों मर रहे थे और बे मुट्ठी-मुट्ठी भर अनाज के दामों ऊंट और घोड़े खरीद कर समेटता जा रहा था। अरतैक यह सब कैसे सह जाता !

ऐना और अरतक की मां दोनों ही उसे शान्त रहने के लिये समझाती रहतीं परन्तु उस के सीने की आग बार-बार भड़क उठती थी। वह ये कसे भूल जाता कि बे ने उस की खानदानी बस्ती से उस का तम्बू उखाड़ उसे बाहर निकाल कर उस का अपमान किया है। जब तक वह अपनी पुरानी जगह अपना तम्बू न जमा ले, अपमान को कैसे भूल जाय! वह अपनी पुरानी जगह जमना चाहता था।

मां आशंका से विरोध करती थी कि इस बात के लिये झगड़ा और मुसीबत सिर लेने की क्या जरूरत! सभी जगहें एक सी ही हैं। धरती-धरती में क्या फरक! फिर देखा जायगा, अभी रहने दो। हमें यहां क्या तकलीफ है। उस के चाचा ने भी समझाया—"नहीं, यह नहीं हो सकता। अभी तुम कहीं नहीं जा सकते। बरस भर से पहले मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूंगा।"

खादिम ने कहा, मां और चाचा ने जोर दिया, मुराद भी राजी था और ऐना को भी व्यर्थ देर भली न लग रही थी इसलिये अरतैक ने ब्याह का दिन पक्का कर लिया। मुराद ने लड़की के लिये 'कल्याम' (लड़की का मूल्य) की कोई बात न की। उल्टे उसने कहा—"तुम लोग ब्याह के लिये जितने चाहे मेहमानों को न्योता दे लो। दावत का इन्तजाम मैं खुद करूंगा।"

अरतैक के मित्र, उस के चाचा के सगे सम्बन्धी, मित्र और अलनजर बे से नाराज सभी लोग इस ब्याह के अवसर पर इकट्ठे हुये। उस साल सूखे के कारण घोड़े अच्छी हालत में न थे इसलिये बारात में सवारों का वह रंग न हो सका जो बे के लड़के के ब्याह में जमा था। फिर भी पन्द्रह घुड़सवार और पन्द्रह स्त्रियां ऊंटों पर सवार होकर बारात में गये।

बारात जान-बूझ कर अलनजर बे के तम्बुओं के सामने से निकली और बारातियों ने जान-बूझ कर खूब हो-हल्ला किया, धूल उड़ाई और आकाश में गोलियां भी चलाई। खादिम एक दुबले से टट्टू पर सवार, हाथ में मोटा डंडा लिये बारात के आगे-आगे था। उस की

लम्बी-लम्बी टांगें टट्टू के पेट के नीचे लटक रहीं थीं और उस के नंगे पांव रकाबों से बाहर फैले हुये थे। बे के खेमों के सामने आकर खादिम ने ललकारा—"अबे ओ बे के गलीज कुत्ते, हिम्मत है तो निकल बाहर !"

बे की बहू 'अतैरी जलीं शोर सुन भागी हुई खेमे के दरवाजे पर आई। खादिम को देख कहकहा लगाकर हंस उठी। बे का सब से प्यारा घोड़ा मालकौश इस गर्दो-गुबार, चीख-पुकार, गोलियों की गड़गड़ाहट और रंग-बिरंगे कपड़ों को देख भड़क उठा और अगाड़ी-पिछाड़ी तुड़ा बस्ती में भाग निकला।

अलनजर बे का तम्बू बारात के पांव से उड़ी धूल से भर गया और बारातियों की दागी हुई बन्दूकों से उस के कान बहरे हो गये। क्रोध में पागल हो उसने अपनी छोलदारी के कोने से दुनाली बन्दूक उठा ली और दरवाजे की ओर लपका, फिर ठिठक गया। बन्दूक उस ने एक ओर पटक दी। सिर को दोनों हाथों में थाम, एक ओर तहा कर रखे हुये कालीनों पर जा बैठा। वह सोचने लगा—यह लोग किस तरह मेरा अपमान कर रहे हैं ! मैंने नकद सोने का कल्याम (बहू का मूल्य) देकर लड़के के लिये मुराद की लड़की ली थी। उसे यह लोग छीन ले गये। अब यहां आकर मेरे सामने मुंह चिढ़ा रहे हैं और मेरे सिर पर धूल डाल रहे हैं। क्या कयामत आ गई है···लोगों को अदब-आबरू का कोई ख्याल नहीं रहा ! जार मर गया तो क्या, मैं तो अभी जिन्दा हूं ! मैं यह अपमान नहीं सह सकता !

अलनजर ने फिर बन्दूक उठा ली परन्तु इसी समय उसे पुकार सुनाई दी—"हाय मालिक, मालकौश भाग गया···!" बे तम्बू के दरवाजे की ओर लपका परन्तु दरवाजे पर आकर फिर ठिठक गया। बन्दूक उस के हाथ से सरक गई। उसे सूझ न रहा था कि क्या करे ? उस का मन चाहता था स्वयं अपना मुंह नोच ले।

"मालकौश भाग गया···!" चिल्लाती हुई शादाब तम्बू में घुस आई

परन्तु बे का चेहरा देख उस का अपना चेहरा फीका हो गया। वह और भी तीखे स्वर में चिल्ला उठी--"हाय मालिक, तुम्हें क्या हो गया···गोली तो नहीं लग गई ?"

बे ने सुध सम्भाली और शादाब को उल्टे हाथ से पीछे की ओर धकेल चुप रह कर लौट जाने के लिये कहा। शादाब डर कर तम्बू के पिछवाड़े निकल गई।

रूमाल से मुंह पोंछ वह अपने आप को समझाने लगा--जो हुआ होने दो ! जुओं से तंग आकर कोई अपना कपड़ा थोड़े ही जला देता है ! इन कमीनों के मुंह लगने से क्या फायदा ! यह कमबख्त सोते-जागते भूख से बिलख रहे हैं, इसीलिये तो मरने-मारने का बहाना खोज रहे हैं। रसूल पाक का हुक्म है--गुस्से को मारो ! मैं भी ताव में आ गया था···अल्लाह ने बांह से थाम कर रोक लिया।

बारात के लोग मुराद के घर चाय पीने बैठे। बावर्ची ने बहुत शौक और कारीगरी से तैयार किये पुलाव के देग का ढकना खोल लकड़ी की कड़छी से पुलाव को हिलाया। दूर-दूर तक महक फैल गई। मामा दुविधा में थी कि वह सब के साथ हंसी-खुशी में साथ दे या रूठ कर एक ओर हो जाये ! इस मामले में उस की जो कुछ भी उपेक्षा और अपमान हुआ था, उसे तो वह सह जाती परन्तु लड़की का कल्याम नहीं लिया गया था। कल्याम ही न लिया जाता तो एक बात थी, यहां उल्टे दहेज दिया जा रहा था और दहेज के साथ बारात की खातिरदारी का खर्च भी लड़की के घर पर आ पड़ा था। मामा मन ही मन सोच रही थी, ऐसा तो कभी किसी ने नहीं सुना था। ब्याह से पहिली सांझ पति से उस की काफी कहा-सुनी हो चुकी थी। मन में तो वह चाह रही थी कि फिर बात उठाये परन्तु मुराद के वेल्बे के डंडे की याद न भूलती थी। याद आ जाने पर वह कमर की डंडे से परिचित जगह को दबा कर चुप रह जाने के सिवा क्या करती !

अवसर के विचार से मामा ने भी अपना लाल रेशम का सब से

बढ़िया जोड़ा निकाल कर पहना था। मेलजोल में आयी स्त्रियों के सामने उसने भरसक अपने मन का दुख प्रकट न होने दिया परन्तु जब बहू को लेने आई स्त्रियां बिदाई के लिये तैयार होने लगीं, वह बारात की स्त्रियों से बिदाई का सगुन मांगे बिना न रह सकी। बारात के साथ आई स्त्रियों ने नेग के पन्द्रह रुबल (रूसी रुपये) दे दिये परन्तु मामा अड़ गई कि और चाहिये। इस समय उसे मुराद के डंडे का भी डर न था क्योंकि मेहमानों के सामने मुराद मार-पीट न कर सकता था। बारात की स्त्रियों के लिये कठिनाई यह थी कि उन के पास उस समय और रूपया था ही नहीं।

अरतैक यह उलझन देख परेशान था। कुछ सोच कर वह झगड़े की जगह पहुंचा और ऊंचे स्वर में बोल उठा—"क्यों तुम सब लोग मामा के पीछे पड़ी हो जी···झूठ-मूठ बातें बना रही हो!" वह बनावटी गुस्से में बाराल की औरतों पर और ऊंचे चिल्ला उठा, "तुम्हारा ही नाम ले कर कोई ऐसी बातें कहे तो तुम्हें बुरा नहीं लगेगा? यों ही कहे जा रही हो···तुम उस की बात तो सुनो! ढंग से बोलो! तुम से वह पैसा क्या मांगेगी; अरे तुम ढंग से मांग लो तो वह अपने पास से दे दे!"

मामा का सीना अभिमान से फूल उठा। गर्दन ऊंची कर वह बोली—"देख लो दूल्हा, कोई सुनता तो है नहीं, यों ही पीछे पड़ गई! मुझे क्या ऐसी कमीनी समझ लिया है! मैंने कल्यास भी नहीं लिया। मैंने कहा, बारात का पुलाव हम करेंगे! तुम लोग कहो तो ऊंटों का भाड़ा भी मैं चुका दूं, घुड़सवारों का नेग मैं दे दूं पर बात तो सुनो! दूल्हा बेटा, तुम्हीं समझाओ इन लोगों को। मेरा तो जो कुछ है, अब तुम्हीं लोगों के लिये है।"

तेजेन में रिवाज चला आया है कि बिदाई के समय दुल्हन को कालीन पर बैठा कर घसीटते हुये घर से बाहर ले जाते हैं। ऐना ने इससे इन्कार कर दिया और एक चादर ओढ़ कर बाहर निकल आई। उसे ऊंट पर सवार कराने के लिये स्त्रियां आगे बढ़ीं तो उस ने सहायता लेने से इनकार कर दिया और लपक कर ऊंट पर सवार हो गई।

६

खादिम जब देखो अलनजर बे के लड़के बल्ले की शादी का किस्सा सुनाने लगता—"जब बे ने ऐना को हथियाने में मुंह की खाई और आस-पास की बस्तियों में उस के नाम पर थू-थू होने लगी तो उस ने दूर की बस्तियों में बहू के लिये खोज करनी शुरू की। तेजेन के पच्छिम में दूर बसने वाले अंगेत खानदान की उस ने बहुत प्रशंसा सुनी थी। बे ने उन लोगों के यहां सम्बन्ध मिलाने वाले भेजे।

बे ने अंगेत लोगों की लड़कियों की बहुत बड़ाई सुनी थी—अंगेतों की बेटियां घर का दिया होती हैं। कहावत थी—अल्लाह ने रूप बांटा था तो अंगेतों की बेटियां दो हिस्से ले आई थीं और वैसी ही वे सुघड़ और सुलच्छनी भी थीं। अंगेतों की बेटी घर लाकर कभी कोई पछताया नहीं।

अंगेत लोग पहले तो इस सम्बन्ध के लिये तैयार न हुये। उन्हें एतराज था कि जिस दूल्हे की दुल्हन छोड़ गई उस घर में वे अपनी लड़की कैसे दे दें! अलनजरों के खानदान के नाम की बात से वे तैयार हुये तो कल्याम भी उन्होंने खूब बढ़ा कर मांगा—चालीस ऊंट, चालीस रेशमी चोगे, चालीस भेड़, चालीस बोरे चावल, पांच घड़े मीठा तेल, पांच पीपे चीनी और एक पीपा हरी चाय की पत्ती।

आखिर अंगेतों की बेटी बुरके में मुंह छिपाये अलनजर बे के खेमों में आई और बल्ले के तम्बू में उस का प्रवेश कराया गया। बे ने इस अवसर पर बस्ती के लोगों को दिल खोल कर दावतें दीं।

दूल्हे के घर की रस्में होने लगीं। वे के घर के लोग और मेहमान 'मुंह दिखाई' के लिये बहू को घेर कर बैठे थे। बहू ने मुंह उघाड़ने से इनकार कर दिया। इस के बाद दूल्हे के जूते उतारने की रस्म की गई। बहू ने जूते उठा तो लिये परन्तु सम्भाल कर कोने में रखने के बजाय क्रोध में जूतों को बाहर फेंक दिया। जब बहू को खूंटी पर लटकी टोपी लाकर देने को कहा गया तो उस ने बैठे-बैठे सिर हिला दिया और उठी ही नहीं।

मेहमानों में से किसी ने चुटकी ली—"भैया, बहू का बड़ा मिज़ाज है। यह बल्लेखां को नचा देगी!"

बल्लेखां बहुत प्रसन्न था। वह भौंहें चढ़ा कर बोला—"बल्लेखां को क्या अपने जैसा समझ लिया है⋯यहां बीबी को इशारे पर न नचाया तो नाम बदल देना!"

बहू ने दूल्हे की बात सुनी तो आंचल की आड़ से उस की ओर घूर कर देखा जैसे गली के कुत्ते को देखते हैं और दांत पीस लिये।

पहले चुटकी लेने वाला फिर बोल उठा—"हम शर्त बदते हैं, बहू ने अगर बल्लेखां को हथेली पर सरसों जमा कर न दिखा दी!"

पहले दिन बहू अपना चेहरा दोनों हाथों से आंचल में लपेटे रही परन्तु दूसरे ही दिन उसने न केवल घूंघट उलट दिया बल्कि अपना तौर भी दिखाने लगी। बे के घर के लोगों ने प्यार से अतैरी का नाम 'जर्ली' (चमन की हिरनी) रखा था लेकिन महीना बीतते-बीतते लोग उसे अतैरी बहरी * पुकारने लगे। उसके गठीले-हठीले बदन की ऐंठन दोहरी-तेहरी पोशाक में भी छिप न पाती।

शादाब दूसरी बहुओं को अपने हुक्म और दबदबे में रखती आई थी और उन्हें अपने घर के कायदे से चलाती थी। अतैरी से सामना होने

---

* एक खूंखार शिकारी चिड़िया जो छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करती है।

पर पहले ही अवसर पर शादाब ने कान छू कर तोबा कर ली ।

अतैरी ने पहले ही दिन सास को सुना कह दिया—"मैं कोई तुतलाती बच्ची तो हूं नहीं कि किसी से बोलना सीखूंगी···किसी को हुक्म चलाने का शौक है तो अपनी लड़कियों पर पूरा किया करे !"

महीने भर में अतैरी की आवाज और कदमों की धमक खेमे के कोने-कोने में गूंज उठी । लोगों की बात पूरी हुई, अतैरी सचमुच बल्लेखां के सिर पर चढ़ बैठी । शादाब दबे-दबे कहती—बाबा, यह तो ससुर की दाढ़ी थाम कर नचाती है ।

एक दिन तन्दूर पर रोटी सेंकने की बारी के लिये अतैरी का बड़ी बहू से झगड़ा हो गया । बड़ी बहू ने कहा—"पहले आटा लेकर मैं आई हूं, पहले मेरी बारी है ।"

"बारी-बारी मैं नहीं जानती !" अतैरी ने जवाब दिया, "पहले मैं रोटी सेकूंगी । हट परे !"

अतैरी बड़ी बहू की परात परे हटाने लगी तो बड़ी बहू ने उसका हाथ थाम लिया । अतैरी ने अपना हाथ छुड़ा एक हाथ बड़ी बहू की गर्दन में डाला और दूसरे से उस का कमरबन्द पकड़ पहलवानों की तरह उठा कर राख के ढेर पर पटक दिया । उसके आटे की परात भी उसके सिर पर औंधा दी और गाली देकर बोली—"यह ले खाज की मारी कुतिया ! अपनी बारी ले !"

अलनजर बे के खेमों में दो पाये तो क्या, चौपाये भी अतैरी से कांपने लगे । यहां तक कि बड़े-बड़े बदमिजाज ऊंट भी उसे देख ऐसे सन्नाटा मार जाते कि भेड़िये का सामना हो गया हो परन्तु एक बात किसी को समझ न आई । अतैरी बे की भुलाई हुई, सताई हुई बेजुबान पहली बेगम मेहली पर जाने क्यों रीझ गई !

अतैरी को ससुराल आये अभी बहुत समय नहीं बीता था कि एक दिन बे ने मेहली को इतना पीटा कि बेचारी में रोने-चिल्लाने का भी दम न रहा । यह देख अतैरी गुस्से में दांत पीसती अपने रूमाल का छोर

चबाती रही। उस का जी चाह रहा था कि मेहली की तरफ से बे की खबर ले परन्तु जैसे-तैसे मन मार कर रह गई क्योंकि अभी वह नवेली दुल्हन थी और ससुर के सामने बोली नहीं थी। कुछ ही दिन बाद फिर अलनजर लाठी ले मेहली को पीटने लगा। अतैरी ने आकर बे के हाथ से लाठी छीन ली और लाठी ले एक ओर खड़ी हो गई।

बे की आंखों से चिनगारियां बरसने लगीं। उसने एक ओर पड़ा बेलचा उठा कर अतैरी को ललकारा—"बदतमीज छोकरी, तेरी यह मजाल!"

अतैरी लाठी उठा और सीना निकाल बे के सामने आ गई—"हिम्मत है तो मार मुझे, देखूं तेरी मर्दानगी!"

शादाब बेगम भागी हुई आई और बे की बांह पकड़ बोली—"क्या जुल्म कर रहे हो! शर्म नहीं आती!"

अतैरी के सिर पर वार करने के लिये बे के हाथ में उठा बेलचा जहां का तहां रुक गया और धीमे-धीमे धरती पर आ टिका। बे अपना क्रोध वश में करने के लिये लम्बी-लम्बी फुफकारें छोड़ता खड़ा था। अतैरी बहरी और आगे बढ़ आई। बे की ठोढ़ी अपनी उंगली से उचका कर बोली—"जरा अपनी इस दाढ़ी का तो ख्याल कर! लानत है तुम पर! इस गरीब मेहली ने तेरा क्या बिगाड़ा है···गरीब एक टुकड़ा खा कर चीथड़े लपेटे दिन काट रही है। सब जालिम इस गरीब को नोच-नोच खा रहे हो!"

पिटते-पिटते मेहली में इतना भी दम न रहा था कि पिटने का विरोध करती या रो भी सकती परन्तु अतैरी को अपनी ओर से बोलते देख मेहली का जी भर आया। वह चीख कर रो पड़ी। इसके बाद से मेहली पर मार न पड़ती। कम से कम अतैरी के आस-पास रहने पर कोई मेहली से कुछ न बोलता।

बहू के हाथों बेइज्जती सह कर अलनजर बे जल-भुन गया। उस ने अपने लड़के बल्लेखां को बुलाया और गाली दे कर फटकारा—"तेरे जैसे

लड़के से तो मैं बेऔलाद मर जाता तो अच्छा था ! तू एक औरत को काबू नहीं कर सकता तो सिर से टोपी उतार कर औरतों की तरह रूमाल बांध ले। औरत तेरी बांदी है या तू औरत का गुलाम है ! तूने उसे सिर पर चढा कर मेरी इज्जत धूल में मिला दी।"

बल्लेखां सिर लटका, आंखे चुरा कर बोला—"मैं क्या करूं ? तुम्हीं ने उसे लाकर मेरे गले चक्की का पाट बांध दिया है।"

"मैं क्या करूं !" क्रोध में विवश हो बे भड़क उठा, "जा डूब मर किसी अंधेरे कुएं में ! अबे तू अलनजर की औलाद है ! पूत पालने में ही सिखाये जाते हैं और बीबी को पहले दिन बस किया जाता है···मार-मार कर सुजा दे कमबख्त को ! मर जायगी तो लड़कियों की कमी नहीं है दुनिया में ; बच रहेगी तो इशारे पर चलेगी। मर्द की आवाज पर औरत कांप न उठे तो वह मर्द क्या !"

बल्लेखां ने सिर झुकाये ही उत्तर दिया—"उसे मारना-पीटना मेरे बस का नहीं। कहो तो मैं घर छोड़ जाऊं ?"

बे और भी नाराज हो गया—"मुंह काला करके दूर हो जा मेरे सामने से !"

बे, शादाब और बल्लेखां कोई भी अतैरी बहरी को बस न कर सका। बे ने अपने विश्वासपात्र मित्रों से राय ली कि बहू को कैसे बस में किया जाय, कुछ जादू-टोना किया जाये। कोई भी उपाय न बता सका। मौलाना खोजा ने उसे समझाया—"मालिक बे, बिगड़ैल औरत से तो अजदहे भी कांपते हैं।" अपनी बात के समर्थन में मौलाना ने किताब पढ़ी एक कहानी सुना दी और फिर समझाया, "बिगड़ैल औरत का इलाज ! कमबख्त को बेच नहीं सकते, घर से निकाल नहीं सकते, कत्ल नहीं कर सकते। बस खुदा हाफिज है। गले ढोल बंध गया है तो गम खाओ, चुप बैठो। जितनी कूद-फांद करोगे, उतना ही ढोल और बजेगा। निभाने के सिवा उपाय क्या है, पड़ी रहने दो कमबख्त को !"

निराश हो बे खुदा से पनाह मांगने लगा—"या अल्लाह, इस मुसीबत

से तेरे सिवा मुझे कौन बचा सकता है !"

अतैरी वहरी अपने जोर पर अलनजर बे के खेमों की मलका बन बैठी। मेहली बरसों तक मारपीट और उपेक्षा सह कर सूख कर कांटा हो गई थी। उसकी सूरत भी घिनौनी और बेरोनक हो गई। अतैरी का राज मेहली के लिये फला। उसके दिन फिर गये। मारपीट न हो पाती और खाना-कपड़ा भी मिलने लगा। शरीर पर मांस चढ़ने लगा। गालों पर सुरखी और आंखों में चमक आ गई। वह रेशमी पोशाक पहन सिर पर मगज़ी शाल ओढ़ने लगी। उसकी चाल में चुस्ती और मटक भी आ गई। अब वह कुयें से पानी लेने जाती तो लोग घूरने भी लगते। और तो और, अब वह अलनजर को भी भली लगने लगी...।

जंग खत्म हो गई थी। मई के महीने में बे का बल्लेखां के जन्म से पहले गोद लिया लड़का मावेद भी लाम पर से लौट आया। बे ने मेहली के रोने-पीटने की परवाह न कर, जार के अफसरों को प्रसन्न करने के लिये मावेद को लाम पर भेज दिया था। मावेद को जीता-जागता लौट आया देख मेहली खिल उठी। अब मेहली के ओठों पर हंसी नाचती रहती, उसके गाल थिरकते रहते और निगाहें भी चंचल हो उठीं।

मावेद के कुछ बदले हुये रंग देख अलनजर बे सनका। मावेद की चाल-ढाल, उठना बैठना, बोलना सभी बातें बदल गई थीं। अब वह रूसियों की तरह हाथ मिलाता था। बे अपने मन की शंका दबाये रहा और गोद लिये बेटे को प्यार से पुकार कर बोला—"आओ बेटा, तुम्हें देख जान में जान आई। दिन-रात मन कांपता रहता था। लाम पर जाने कब क्या हो जाय ? हजार शुक्र अल्लाह का तुम आ गये। बेटा, तुम ने लोगों के सामने मेरा सिर ऊंचा कर दिया...।" बे शादाब बेगम को पुकार कर बोला, "बेगम, खुदा का शुक्र करो, घर का लड़का खानदान का नाम उजला कर लाम पर से लौटा है। खुशी का मौका है। कुछ खाने-पीने का इन्तजाम किया है तुम ने ! आने-जाने वाले सभी लोगों के लिये भी चाय-पुलाव का ख्याल रखना।" और फिर मावेद को सम्बोधन

किया, "बेटा, मैं ही जानता हूं कैसे सीने पर पत्थर रख जार का जुल्म बर्दाश्त कर तुम्हें लाम पर भेज दिया। क्या कहूं, एक तरफ तुम्हारे लिये सीना कट-कट कर रह जाता था, दूसरी तरफ और मुसीबतें सिर पर टूट पड़ीं। मालकौश को डाकू उड़ा ले गये और फिर अजीज ने बगावत की तो लोगों ने गवर्नर के यहां जाकर चुगली कर दी कि कि मैं भी बागियों के साथ हूं। अब तुम्हें क्या बताऊं! तुम्हारे जाने के बाद मैंने गवर्नर के यहां दरखास्त दी कि कर्नल हमारे खानदान से किनारा खाता है इसलिये मेरे बेटे को जबरन भरती करा लिया गया है। सुल्तान जार के वफादार खानदानों के लड़कों का लाम पर भेजा जाना बहुत बेइन्साफी है। तुम्हें वापिस बुलाने के लिये दरखास्त दी। मैं तो हरदम तुम्हारी राह ताकता रहता था। हजार शुक्र है खुदा का कि मेरी मेहनत बर आई और जिन्दगी में तुम्हारा मुंह देख लिया...।"

मावेद जानता था उसे बे ने स्वयं ही लाम पर भिजवाया था और उस का दिल अपने जबरन बने बाप से जला हुआ था। लौट कर उस ने बे का दूसरा ही व्यवहार पाया। कुछ मेहली की ममता भरी पैनी-पैनी आंखों का भी असर था। उस के मन का क्रोध बुझने लगा। मावेद पर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों का प्रभाव होता देख बे और भी बातें बनाने लगा—"बेटा, क्या कहूं, इतना समय तुम ने लाम पर कैसे कैसे बिताया होगा! सोचते ही कलेजा मुंह को आने लगता है पर बेटा तुम ने मेरा नाम रौशन कर दिया। तुम्हीं घर के चिराग हो। बल्ले ने तो कुल का नाम डुबो दिया। लाम पर तुम्हें खाने-पीने को भी तो ठीक से नहीं मिला होगा। कैसे दुबला गये हो! तुम्हें किसी बात की फिक्र की जरूरत नहीं। जरा खुराक बढ़ाओ और आराम करो और अब तुम्हारे ब्याह में भी देर नहीं होनी चाहिये। जो लड़की तुम्हें जंच जाय, बस तुम नाम भर बता दो! तुम्हारा ब्याह हो जाय और फिर तुम्हारे लिये अलग से एक सफेद तम्बू लगवा दूं तो मुझे संतोष हो।" शादाब को बुला कर बे ने हुक्म दिया, "लड़के के लिये रेशमी जोड़े बनवा दो और मेहली से पूछो कि

क्या करती है दिन भर'''इस की जरूरत-खिदमत का ख्याल रखे ! चाय और खाना हर वक्त उस के सामने रहना चाहिये ।"

बे के मन में मावेद से डर तो था पर उसने नौजवान को फुसला कर अपने प्रति संतुष्ट कर लिया। यह भी ख्याल आया कि बदमाश अरतैक जो न कर गुजरे गनीमत ! ऐसे समय अरतैक का सामना बल्ले क्या करेगा'''मावेद पर ही भरोसा किया जा सकता था इसलिये मावेद का और भी अधिक लाड़-प्यार होने लगा ।

मावेद के साथ जबरन भरती किये गये बहुत जवान मजदूरी के लिये बहुत दूर-दूर के इलाकों में भेज दिये गये थे परन्तु मावेद को भाग्य से तुर्कमानिया की रेलवे लाइन पर ही काम दिया गया था । वे दिन मावेद ने बड़ी कठिनाई से विताये थे । उसने बे को सहायता के लिये कई पत्र लिखे परन्तु उसे कभी कोई उत्तर न मिला । उन पत्रों की बात याद आने पर बे कहने लगा—"बेटा, मुझे सदा चिंता बनी रहती थी, जाने तुम पर क्या बीत रही होगी ! विदेश में गांठ का पैसा ही काम आता है । तुम्हारे लिये मैंने चार बार सौ-सौ रूबल भेजे । दो बार तो डाकखाने से और दो बार उधर जाते जान-पहचान के आदमियों के हाथ ।

"तुम तो जानते ही हो, इन डाकखानों का जैसा हाल है । पहुंचने की रसीद ही कभी नहीं मिली और न ही उन भले आदमियों ने लौट कर खबर दी । रूपया तुम्हें मिल तो गया था ?"

भरती के समय मावेद धेला-कौड़ी कुछ साथ न ले पाया था । पैसा जेब में न होने से मावेद आवश्यक चीजों के लिये तड़प-तड़प कर रह जाता । दूसरे साथियों और मजदूरों को गरीबी में तड़पते देख और उन की बातें सुन-सुन कर मावेद के मन में जार की सरकार और इस सरकार की छत्र-छाया में ढेरों दौलत बटोर कर दूसरों कंधों पर सवारी करने वालों के प्रति घृणा और गुस्सा भरता रहा । वह मन में सोचता रहता — बे स्वयं आराम और मजे कर रहा है । मुझे मरने के लिये उस

ने यहां भेज दिया है। अगर कभी घर लौटूंगा तो उस मक्कार जालिम से अच्छी तरह समझूंगा। इन विचारों के कारण लाम से घर लौटने पर मावेद गुमसुम बना रहता परन्तु बे के खुशामद के व्यवहार और मेहली के लाड़-प्यार से उस के विचार बदलने लगे। बे आंखों में आंसू भर कर मावेद को अरतैक के दुरव्यवहार और दूसरी ज्यादतियों की कहानी सुनाता रहता।

"बेटा मुझे तुम्हीं से उम्मीदें हैं।" अलनजर मावेद को समझाता, "वल्ले तो जैसा हुआ वैसा न हुआ। ये लड़का तो अपनी औरत से ही डर गया। तुम्हीं अरतैक से बदला लेकर मेरी रूह को शांति दे सकते हो, नहीं तो कब्र में भी मेरे दिल में बेइज्जती की आग दहकती रहेगी।"

मेहली के लिये तो मावेद का लौट आना मुर्दा शरीर में जान पड़ जाने जैसा हुआ। वह मावेद के गले में बांहें डाल, उसे चूम-चूम कर परेशान कर देती। मेहली की बाहें गले पर छूने और सीने पर उसका सीना बार-बार दबने से मावेद का शरीर चंचल होने लगा। अतैरी की रक्षा में मेहली को किसी की मार और धमकी का डर न रहा था, तिस पर उसे बहाना मिल गया कि बे ने उसे मावेद की खास खिदमत करने का हुक्म दिया है। वह बेझिझक मावेद से चिपटी रहने लगी। जब देखो किसी न किसी बहाने उसी के पास बनी रहती, जब देखो मावेद के लिये चाय लिये खड़ी रहती। चायदानी और प्याले साफ-सुथरे होने पर भी उन्हें आंचल से रगड़ कर चमकाती रहती। सुबह के नाश्ते में वह उसे ऊंटनी के दूध में शहद और मक्खन मिलाकर देती। खिलाते-पिलाते समय मावेद के शरीर से ऐसे सट कर बैठती कि उस की छातियां मावेद के शरीर से दबती रहतीं और उस की सांस मावेद की मूछों में उलझती रहती।

खाने-पीने और कपड़ों की यह पौबारह देख मावेद सोचता—बचपन में सही गरीबी और लाम पर भुगती मुसीबतों का बदला क्या अब ब्याज समेत मिल रहा है! मेहली की बारे में सोच कर उसे घबड़ाहट होने लगती। वह सोचता—यह क्या तमाशा है···मैं अलनजर बे का लड़का हूं

या मेहली का दोस्त ! दोनों बातें साथ-साथ कैसे चल सकती है ?…कई दिन तक वह इस दुविधा में रहा। आखिर एक दिन मेहली से उस ने साफ-साफ बात की—"देखो मौसी, वे मेरा बाप है और तुम वे की बेगम हो !"

"पत्थर है वह तुम्हारा बाप…जैसे तुम जानते नहीं ?"

"यह तो तुम ठीक कहती हो लेकिन बे मेरे लिये वह ढूंढ़ रहा है और मेरा दिल तुम से लग गया है। अब बताओ क्या होगा ?"

मेहली मावेद के गले में बाहें डाल उस से चिपट गई और उस के गाल से अपना गाल सटा कर, आंखें मूंद, पिघले गले से बोली—"नहीं, यह नहीं हो सकता…मैं तो जान रहते तुम्हें नहीं छोड़ूंगी !"

"लेकिन बे क्या करेगा ?" मावेद का दिल धड़क रहा था।

"मैं कुछ नहीं जानती।" मेहली ने उत्तर दिया, "मेरे लिये जैसा खेमे के दरवाजे पर बंधा हुआ अल्वा (कुत्ता), वैसा वे।"

"लोग क्या कहेंगे ?"

"लोगों से मुझे क्या लेना है, बकने दो लोगों को ! क्या जान दे दूं लोगों के लिये !"

"अगर बे जान गया तो ?"

"जब नहाने चली तो भीगने का क्या डर ! जिन्दगी भर मार ही तो खाई है। मेरा भी तो दिल है।"

"तो फिर यहां गुजारा नहीं होगा।"

"मेरी जान, यहां कौन हमारे नाड़ गड़े है ! दुनियां में जगह की कमी नहीं है। यहां हमारे लिये कौन नेमतें रखी हैं ! अल्लाह ने हाथ-पांव दिये हैं। जहां हाथ-पांव हिलायेंगे, चार रोटी कमा लेंगे। दिल को चैन तो मिलेगा।"

मावेद ने मेहली को सीने से लगा लिया। मेहली की गालें अनार के फूल की तरह गुलनारी हो गई।

"मेरी जान," मावेद ने मेहली के कान में कहा, "सच कहूं, मैं यहां

बे के टुकड़ों की खातिर नहीं, तेरे लिये ही पड़ा हूं। नही तो इस बेईमान को कभी का लात मार जाता। तू मेरी, मैं तेरा। जो होता है हो, लेकिन जब तक अपना इंतजाम न हो जाय, बात दबाये रहो।"

मेहली ने सिर झुका कर अनुमति दी और सोचती रही—मैं किसी की क्या परवाह करती हूं! दुनिया जाय ठेंगे से लेकिन अतैरी बहरी भांप गई तो बुरा होगा।

कुछ ही दिन बाद बे ने फिर मावेद से बात की—"बेटा, तुम ने अपने ब्याह की बाबत कुछ कहा नहीं, कौन लड़की पसन्द आयी है। न हो, मैं ही कोई लड़की देखूं!"

मावेद ने सिर झुका कर उत्तर दिय—"अब्बाजान, यह साल जैसा बीत रहा है, सब तरफ परेशानी और तंगी है। सभी तरह के झगड़े-बखेड़े चल रहे हैं। मेरा ख्याल था, इस काम में अभी जल्दी की जरूरत क्या। जरा अमन और चैन हो जाने पर ही यह काम किया जाय तो ठीक है।"

मावेद के उत्तर से बे का मन हरा हो गया—"बेटा, तुम्हारे जैसे समझदार जवान से मुझे ऐसी ही आशा थी। जो तुम कहते हो, वही ठीक है।"

७

अश्काबाद के जेल से छूट कर आने के बाद अरतैक ने १६१७ के दुष्काल का साल अपने परिवार में रह कर ही बिताया। वह जेल में कमजोर हो गया था। अच्छा खाना और आराम मिलने से उस का शरीर पनपने लगा। वह चाचा के साथ खेतों में काम करता। अपने व्यवहार से वह गांव के किसानों में घुल-मिल गया, उन के सुख-दुख का भागी हो गया। पुराने परिचित चेहरों पर आंखें गड़ाये, उन की बातें सुनता और सोचता रहता—लोग जार की सरकार पलटने और आजादी की बातें करते है परन्तु कहां है आजादी···कैसी आजादी! आखिर बदला क्या? तब और अब में अन्तर क्या हुआ?

जार फरवरी में तख्त से उतार दिया गया था परन्तु सरकार का काम अब भी पुराने अफसरों के ही हाथ में था। अफसर लोग जागीरदारों और दूसरे बड़े आदमियों की राय और मदद से काम चला रहे थे। दो-चार चेहरे और नाम बदल गये थे। गवर्नर को अब कमिस्सार पुकारा जाने लगा। दारोगा, माल अफसर आदि जैसे के तैसे रहे। तेजेन में रेल के क्लब में हुई सभा में जो पंच चुने गये थे, वे भी चालू इन्तजाम का साथ देने लगे।

शहरों में गरीब लोगों और देहात के किसानों को जार की पुरानी सरकार और केरेन्स्की की नयी अस्थायी सरकार में कोई भेद न जान पड़ा। दारोगा और दूसरे सरकारी अफसर पहले तो नयी पंचायती सरकार से बहुत डरे लेकिन कुछ ही दिन में उन्होंने देख लिया कि घबराहट व्यर्थ

थी। जार के राज में कुछ तो डर जार के अफसरों का था, अब तो वे ही मालिक बन गये। गावों की जनता का हाल अकाल के कारण बहुत बुरा था—न अनाज, न मांस, न दूध-घी ! किसानों के शरीर सूखे चमड़े से ढके, ठठरी भर रह गये थे।

इस सूखे में किसान बरबाद हुये तो इस का कुछ असर दारोगा बाबाखां, माल अफसर खोजा मुराद और कुलीखां पर भी पड़ा। मरे-पिसे किसानों से इस हालत में क्या वसूली हो सकती थी। किसान लोग पेट की आग से व्याकुल हो, जमीनें छोड़ शहरों की ओर चले गये। वे जहां कहीं मौका पाते कुछ मजदूरी-दिहाड़ी कर लेते और राशन की दुकानों के सामने घन्टों लाइन बांधे खड़े रहते। जो लोग गांवों में रह गये, वे रात के अंधेरे में तीन-तीन, चार-चार का गिरोह बना कर लाठी, बेलचा और टूटी-फूटी तलवारें ले, अलनजर बे जैसे अमीर लोगों की खत्तियां खोद कर अनाज चुरा लाने के लिये घूमते रहते। कुछ हाथ लग जाता तो वे दस-पांच दिन पेट भर अनाज पा जाते और कभी अनाज के बदले मार खा कर घर में सिर छिपा लेते। सरकारी अफसर इन लोगों का सामना न कर कतरा जाते। कभी-कभी यह लोग इतना साहस कर जाते कि सरकारी डाक ही लूट लेते। ईरान से माल आने-जाने पर रोक थी परन्तु अब चोरी-चोरी सब कुछ आ-जा रहा था।

सरकारी अफसरों की आमदनी का बड़ा सहारा था—किसानों से मिलने वाली रिश्वतें, नजराने और वसूलियां। किसानों की ऐसी हालत में उन से कुछ पा लेने का अवसर न रहा। अफसरों ने अपने गुजारे के दूसरे तरीके निकाल लिये। अस्थायी सरकार ने गांवों में सूखे और अकाल के कारण सहयोगी सभाओं की मार्फत कुछ सामान सस्ते दामों देने का प्रबन्ध किया था। इस के लिये राशन कार्ड बांटे गये थे। अफसरों ने इन राशन कार्डों से ही अपना काम बनाना शुरू किया।

फरवरी की क्रांति के बाद, दूसरे सूबों की तरह तेजेन के देहातों और शहरों में भी जनता की सहयोगी सभायें बना दी गई थीं। जनता

को कुछ बताये बिना सभी लोगों के नाम इन सहयोगी सभाओं में लिख लिये गये। गांव के सभी किसानों के नाम कार्ड बना दिये। इन कार्डों के हिसाब से शहर के राशन दफ्तरों में चीनी, चाय, मक्खन, रोटी वगैरा सरकार के यहां से मंगा लिया जाता। अफसर लोग मनचाहे दामों इस माल की चोर-बाजारी करते। किसानों को इस खेल का कुछ भी पता न चलता था। उन के बाल-बच्चे भूखे तडप रहे थे।

अरतैक का पुराना मित्र चरखेज अजनजर बे के ही गांव में रहता था। एक दिन चरखेज तेजेन में सहयोगी सभा के दफ्तर में गया। अवसर की बात, जिस समय वह सहयोगी सभा के दफ्तर में पहुंचा, कुलीखां और मुरतज्जिम (अनुवादक) ताशेखां में झगड़ा चल रहा था। झगड़ा राशन कार्डों पर हो गया था और बात-बात में बहुत बढ़ गया था।

"जुल्म की हद्द हो गई! अपनी पूरी बस्ती के किसानों के कार्ड तुम ने ले लिये तब भी तुम्हारा पेट नहीं भरा! अब मेरे यहां के किसानों के नाम भी भरे ले रहे हो। उन के नाम तुम्हें काटने पड़ेंगे।" ताशेखां चिल्ला बोला।

कुलीखां ने विरोध किया—"कौन कहता है वे नाम तुम्हारे किसानों के हैं? यह किसान तुम्हारे खरीदे हुये हैं, तुम्हारे गुलाम हैं! कौन हो तुम मुझ से नाम कटवाने वाले!"

"तुम्हें काटने पड़ेंगे!"

"जबान सम्भाल कर बोल!" कुलीखां और बिगड़ उठा।

"क्यों यह तेरे बाप की विरासत है!"

कुलीखां ने ताशेखां को बहन की गाली दे दी और ताशेखां ने उसके मुंह पर घूंसा दे मारा। दोनों गुत्थम-गुत्था हो गये। दफ्तर की मेजें कुर्सियां उलटने लगीं और आलमारी में रखी हुई बोतलें गिर-गिर कर टूटने लगीं। पहरे पर खड़े सिपाही ने यह झगड़ा देख सीटी बजा दी। ताशेखां ने कुलीखां की गर्दन दोनों हाथों में ले ली और दबा कर उस का दम घोंट देने को ही था कि दारोगा बाबाखां दफ्तर में आ गया।

बाबाखां ने ताशेखां के हाथों से कुलीखां की गर्दन छुड़वाई। गर्दन छूटते ही कुलीखां ने एक बार ताशेखां के सिर पर वार कर दिया परन्तु बाबाखां ने उन्हें फिर भिड़ जाने से रोका और झगड़े का कारण पूछा।

"देखो इन बेवकूफों को !" बात सुन कर उस ने दोनों को फटकारा, "यह पढ़े-लिखे आदमियों की हालत है कि नामों के लिये झगड़ रहे हैं ! मैं तो काला अक्षर भैंस बराबर जानता हूं लेकिन जितने चाहो नाम लिखा सकता हूं। नाम मैं बोलता हूं। नामों की कमी है ! तुम लिख-लिख कर ऊंट लाद लो !

"अरे बस्ती के किसानों के नाम खत्म हो गये हैं तो ढोर-गोरू के नाम, जंगल के जानवरों के नाम लिख सकते हो ! लानत है तुम्हारी अक्ल पर ! यह पढ़े-लिखों का हाल है !"

चरकेज ने शहर से लौट राशन कार्डों का यह किस्सा अपने गांव में और अरतैक के गांव में सुनाया।

किसान हैरान थे—सरकार किसानों के नाम पर राशन और समान दे रही है और खा जाते हैं शहर के अफसर, मुहर्रिर। हमारे हाथ कुछ नहीं लगता...।

"ऊंह, तुम किसान ही तो हो ! किसान का क्या है ! किसान ने अपनी कमाई, अपना हिस्सा कभी खुद खाया है !"

"अरे भाई, उस रेवलूशा, इन्कलाब से क्या मिला ?"

"इन लोगों ने तो कहा था कि जार मर गया। अब जार के दारोगा, माल अफसर, काजी, मुहर्रिर सब जायेंगे। किसान भर पेट खायेंगे-पियेंगे। गरीब-अमीर सब एक से रहेंगे और जाने क्या-क्या।"

"बातें तो ऐसे करते थे कि धरती पर ही बहिश्त बन जायगा।"

"हुआ क्या ? जागीरदारों के हाथ लम्बे हो हो गये। पहले दस लोग जार के नाम पर खाते थे, अब खुद जार बन गये।"

"अरे, जार मरा-वरा कुछ नहीं !"

"अपने बड़े-बूढ़ों का ढंग था कि जिस तम्बू में घर के लोग मरने लगें, उस तम्बू को फूक कर झोपड़ी में जा बसते थे।" चरखेज ने समझाया, "उन लोगों का कहना था कि तम्बू घर के लोगों को खाने लगते हैं। वैसी ही अपनी यह जिन्दगी है। भैया, या तो जिन्दा रहें या मर ही जायं! रेंगते रहने में जिन्दगी क्या! किसान को तो लोग या दोहते जाते हैं या उसे कोल्हू में डाल कर पेल लेते हैं। जागीरदार और जार के लोग हमें मिटाये दे रहे हैं। यह लोग ही मिट जायें तो किसान जिन्दा रहें।"

"चरखेज ने ठीक कहा भैया।" अरतैक बोल उठा, "एक बार फिर अजीज की तरह उठना होगा। उन लोगों को गिराना होगा।"

पिछले बरस की बगावत की सजा किसान अभी भूले नहीं थे। किसी ने सिर झुकाये ही कहा—"तब भी क्या हुआ? दो उठे और मर गये, बाकी वैसे ही पड़े रहे।"

लोग उठ कर चले गये तो भी अरतैक सिर झुकाये बैठा धरती पर लकीरें खींचता कुछ सोचता रहा।

दूसरे दिन वह तड़के ही दारोगा बाबाखां के यहां पहुंचा। बाबाखां अरतैक की रुखाई और आंखों में बेचैनी देख भांप गया कि अरतैक झगड़े के लिये आया है। शायद जेल भेजे जाने का बदला लेने आया हो। बाबाखां ने समझदारी से काम लेना उचित समझा। अरतैक के लिये तुरंत चाय और मिश्री मंगाई और मुस्करा कर अगवानी के लिये बोला—"आओ भैया आओ, मुबारक हो घर लौटे हो! तुम्हें आये तो कई दिन हुये। तुम्हारे यहां जाने की बात सोच ही रहा था। अब-तब में ही वक्त निकल गया। जब चलने को हुआ, कोई न कोई आ बैठा, कहीं न कहीं जाना पड़ गया। अरे सरकारी काम का कोई ठिकाना है! एक झंझट हो तो बताऊं। जब तुम्हें वे लोग पकड़ कर ले गये, क्या बताऊं बेबसी में चुप रह जाना पड़ा। भाई, पड़ोस का नाता कोई मामूली चीज है। सोचा, मुझे अब कितने दिन जिन्दा रहना है। अब तुम्हारा मुंह क्या देख पाऊंगा। हजार शुक्र है अल्लाह का! हां तुम्हारा ब्याह हो गया,

मुबारक, मुबारक ! तुम्हारे दो हाथ की जगह चार हाथ हो गये। भाई, तुम ने अलनजर बे को खूब सीधा किया...वाह !"

अरतैक बाबाखां को खूब समझाता था। मन में उस ने सोचा, यह मुझे कैसे बना रहा है...बेवकूफ समझता है। अरतैक चुप रह गया।

अरतैक की चुप्पी से बाबाखां भांप गया कि अरतैक उस की बातों में नहीं आया। उस ने पैंतरा बदला—"भैया अरतैक, तुम ने बहुत जुल्म सहा। खैर इस का बदला तुम्हें अल्लाह के यहां तो मिलेगा ही। लेकिन अब तुम्हारा ब्याह हुआ है। घर में खर्च भी होता। खर्च की जरूरत होगी। पड़ोसी से क्या पर्दा ? जिस चीज की, जिस मदद की जरूरत हो, अपना ही घर समझ कर कहना। अल्लाह के करम से इस घर में दो-एक आदमी के लिये कुछ हो ही सकता है और फिर तुम्हारा तो यह अपना ही घर है। तुम्हारे ब्याह के लिये एक बोरी गेहूं और दो भेड़ें रखवा ली थीं। क्या बताऊं, उलझनों में टलता ही गया, अब तक न भेज सका। मंगवा लेना और अपना घर समझ कर जो जरूरत हो कह देना। तकल्लुफ करो तो मेरी कसम है।"

'एक बोरी गेहूं, दो भेड़ें और जिस चीज जरूरत हो !' कोई और सोचता—कितनी मेहरबानी है। अकाल के दिनों में यह कम नहीं है। सम्भाल कर खर्च करो तो तीन-चार महीने महीने का गुजारा है और बेच लें तो पूरा तम्बू कालीनों से जगमगा उठे। आदमी छः महीने की मेहनत में भी इतना नहीं कमा सकता। इतने माल को कौन ठोकर मार सकता है ! आज तो बाबाखां का मुंह देखना मुबारक हो गया। मां और ऐना सुनेंगी तो प्रसन्न हो जायेंगी। इतने में से पड़ोसी खादिम की भी थोड़ी बहुत सहायता हो सकती है। आज तो खुदा छप्पर फाड़ कर दे रहा है...। परन्तु अरतैक ने यह नहीं सोचा, उस ने सोचा—आज तो यह खूब माल खिलाने को तैयार है लेकिन इस बदमाश का माल जहर है। जब लोग भूख से बिलबिला रहे हैं, यह रिश्वत खाना हराम नहीं तो क्या है ! जो भेड़ गल्ले से बिछड़ी, भेड़िये के मुंह में गई ! जहां साथ

के लोग भूखे मरेंगे, वहां मैं भी मरूंगा। अगर साथ के लोग खा पायेंगे तो मैं भी खा लूंगा। साथियों का साथ छोड़ना सब से बड़ा गुनाह है।

"बाबा खां", अरतैक ने उत्तर दिया, "आप की मेहरबानी के लिये बहुत शुक्रिया! जैसे-तैसे गुजारा चल रहा है। हाल तो सभी किसानों का बहुत बुरा है। सभी को मदद की जरूरत है।"

अपनी चाल खाली जाने से बाबाखां को निराशा के साथ ही क्रोध भी आ गया। मन ही मन कहा—भूखे ही मरना चाहता है तो तुझे रोक कौन रहा है। अरतैक को जब उसने गिरफ्तार करवा पुलिस के हाथ जेल भेजा था, उस समय वह और भी बुरी तरह डांट सकता था परन्तु अब समय बदल गया था। भूख से तड़पते किसान मरने-मारने पर तुले थे। ऐसी हालत में किसी एक से भी झगड़ा हो जाय तो बहाना पाकर गांव सिर पर आ पड़े और घर-बार लूट ले! तब बचाने कौन आयगा? गवर्नर आन्तोनोव तो खुद ही परकटे बाज की तरह दुबका बैठा है।

पंचायत!...उस की परवाह कौन करता है। माल अफसर मुराद! वह पहले अपनी जान बचा ले। क्या दिन थे कि कुलीखां से लिखवा कर एक दरखास्त खुफिया पुलिस को भिजवा दी तो एक अरतैक क्या, सौ अरतैक पल भर में मिट्टी में मिल जाते परन्तु वे दिन तो अब थे नहीं। अपमान और क्रोध निगल कर बाबाखां दुखी स्वर में बोला—"भैया कुछ मत कहो! लोगों की हालत तो देखी नहीं जाती। सच कहता हूं, यह हालत देख कर तो मुंह में दिया अनाज भी बाहर को आता है, लेकिन कोई करे तो क्या? मैं अपना घर भर उठा कर बांट दूं तब भी क्या बनेगा। समुद्र में बूंद भर का भी तो फरक नहीं पड़ेगा। दिल पर जो बीत रही है, मै ही जानता हूं। कहने से क्या होता है। कुछ इंतजाम होना चाहिये भैया। अपने बूते भर कर ही रहा हूं। सभी अफसरों और पंचों के दस्तखत से एक दरखास्त सरकार के यहां मैंने लोगों की मदद के लिये भिजवाई है। हम ने लिखा है—देहात के किसान बरसों शहरों का पेट भरते रहे हैं। जार के अमले को, उस की फौजों को

खिलाते रहे हैं। मुल्क भर का पेट हमने बरसों भरा है। अब किसानों पर मुसीबत पड़ी है तो क्या उन की मदद नहीं करोगे ! उन्हें भूखा मर जाने दोगे ? मुसीबत में घर के जानवर को भी अपनी रोटी का हिस्सा बांट कर खिलाया जाता है। आज देहात का किसान दम तोड़ रहा है। आज उस के मुंह में रोटी का टुकड़ा दो, कल तुम हम से दस गुना ले लेना। अर्जी अश्काबाद जा चुकी है। सूबे का कमिस्सार कोल्माकोव अपनी जान-पहचान का है। देखो, कुछ तो किया ही जायगा…।"

अरतैक इस बहानेबाजी से थक कर बीच में बोल उठा—"बाबाखां, लोग कहते हैं कि सरकार देहात के किसानों के लिए अनाज और दूसरा सामान भेज रही है।"

"क्या कहते हो…यही होता तो और चाहिए क्या था ! अरे, मैं ही न आकर यह बात तुम से कहता ?"

"लोग कह रहे हैं कि सहयोगी सभाओं के दफ्तरों से सामान बंट रहा है।"

"ऊंह, वह तो शहरों के लिए है भाई, देहात के लिए कहां !"

"सुना है, सब सरकारी अफसर और मुहर्रिर हजारों राशन कार्ड दबाये बैठे हैं।"

"यह झूठी अफवाहें हैं। कह दें रात खेतों में खूब बारिश हुई तो जबान थोड़े ही पकड़ सकते हैं।"

"सुना है अफसर लोग फर्जी नामों से कार्ड बना रहे हैं। सुना है बाबाखां ऊंटों के बोझा भर राशन कार्ड बनवा रहे हैं।"

बाबाखां का चेहरा सुर्ख हो गया और गर्दन पर नीली नसें उभर आईं, माथे पर त्योरियां गहरी होकर आंखों में लाली आ गई। अंगीठी की ओर थूक कर आंखें झुकाये ही बाबाखां बोला—"अरतैक, यह क्या दिल्लगी कर रहे हो तुम !"

"बाबाखां, लोगों का पेट काटना दिल्लगी है !"

"लोगों का पेट कौन काट रहा है ?"

"जब कुलीखां और ताशेखां में राशन कार्डों के लिए झगड़ा चल रहा था, किस ने कहा था—कलम सम्भालो, जितने नाम चाहते हो, मैं लिखाता हूं ?"

"देखो अरतैक !" बाबाखां अरतैक की आंखों में घूर कर बोला, "झगड़े के लिए बहाने क्यों ढूंढ़ते हो, जो कहना है साफ-साफ कहो ! अगर तुम्हारा ख्याल है कि मैंने तुम्हें जेल भिजवाया था तो साफ कहो ! दिल्लगी मैं पसन्द नहीं करता । तुम जानते हो, मेरा नाम बाबाखां है, मैं दारोगा हूं ।"

अरतैक के माथे पर भी बल पड़ गये परन्तु अपने को बस कर बोला—"दारोगा साहब, तुम्हीं क्यों नहीं सीधी-साफ बात कहते ? तुम्हीं बताओ, फर्जी राशन कार्ड बनवाये हैं या नहीं ? मैं सवाल कर रहा हूं, तुम गुस्सा दिखा रहे हो ।"

"मैं तुम से बात नहीं करना चाहता !"

"तुम बात नहीं करना चाहते । लेकिन मैं राशन कार्डों का और सरकार के यहां से आए माल का हिसाब चाहता हूं ।"

"तुम क्या मेरे इन्सपेक्टर हो ?"

"उस बात की तुम परवाह मत करो !"

"अरतैक, मजबूर हूं कि तुम इस समय मेरे तम्बू में मेहमान हो, नहीं तो तुम्हें जवाब देता···।"

"तो बाहर आ जाओ, दे लो जवाब !"

बाबाखां गुस्से में कांपता हुआ उठ खड़ा हुआ । उसी समय बाबाखां की बीबी नादाब पर्दे के पीछे से सामने आ गई और पति का हाथ थाम चिल्ला उठी—"हाय मैं मर गई ! अरे अरतैक भैया, क्या कर रहे हो तुम ।···होश करो ! अरे लोगो भागो ! खून ! खून !"

नादाब की पुकार सुन शूरे तम्बू में आ गया । देहात और शहर दोनों ही जगह शूरे की बात की इज्जत थी । दोनों आदमियों की आंखों में सुर्खी और उन के लम्बे-लम्बे सांस सुन शूरे समझ गया कि वे एक-दूसरे पर

टूट पड़ने के लिए तैयार हैं। "अरे भाई बैठो-बैठो," दोनों को अपनी-अपनी जगह बैठाने के लिए कंधों से दबाते हुए शूरे ने हंसते हुए कहा। झगड़े की बात वह जान नहीं पाया था।

अरतैक क्रोध से कांप रहा था, कुछ उत्तर न दे सका।

"क्यों, बात क्या है ?" शूरे ने कहा, "कांप क्यों रहे हो, ऐसा जाड़ा तो नहीं है।"

"शूरे आगा, आप को जाड़ा क्यों लगने लगा !" अरतैक बोला।

"बाबाखां, तुम्हें ख्याल करना चाहिए था। मेहमान के लिये जाड़े का भी इन्तजाम नहीं कर सकते थे !"

"जाड़ा नहीं," बाबाखां बोला, "उसके सिर में दरद है।"

"मेरे सिर दरद का इलाज तुम्हारा सिर तोड़ कर होगा।" अरतैक ने उत्तर दिया और बाबाखां की तरफ दो कदम बढ़ गया।

यह देख नादाब दोनों हाथ उठा फिर चिल्ला उठी—"शूरे आगा ! मेरे बच्चों के बाप के दिमाग को आज क्या हो गया है ! तुम अरतैक को समझाओ, क्या कर रहा है !"

शूरे ने झगड़े का कारण पूछा और बोला—"भैया, मैं भी राशन कार्डों के ही बारे में पता लेने आया था।" बाबाखां ने फिर बात टालना चाही तो शूरे भी बिगड़ उठा, "बाबाखां, सभी बातों की हद होती है। तुम हद का खयाल ही न करो तो दूसरे कहां तक गूंगे-बहरे बने रहें ! पेट तो सभी के हैं। सिर्फ अरतैक और मेरी ही बात नहीं, सभी तुम से हिसाब लेंगे।"

बाबाखां कुछ उत्तर न दे ठोढ़ी हाथ में थामे बैठा रहा। वहां और प्रतीक्षा करने से कुछ फायदा न देख अरतैक तम्बू से निकल आया और शहर की ओर चल दिया। वह सोचता जा रहा था—तेजेन जाकर चर्नीशोव के सामने सब बात रखे और फिर उस की राय से चले…।

६

उन दिनों चर्नीशोव को सैकड़ों ही उलझनें थीं। मिलने आने वालों को कभी ही वह घर पर मिलता। अरतैक को भाग्य से वह घर पर ही मिल गया। सलाम दुआ होने पर पहले चर्नीशोव ने ही शिकायत की—"अश्काबाद से लौट कर तुम यहां आए और मिले बिना ही चले गये। इन्तजार भी न की। बड़े वैसे आदमी हो!"

अरतैक ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"खूब, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे! मैं तुम्हारे यहां कितने चक्कर काट गया। तुम एक बार भी मेरे यहां न आए। अच्छा, अगर तुम हमारे यहां आकर दस दिन के लिए न रहो तो फिर मैं भी कभी तुम्हारे यहां नहीं आने का।"

चर्नीशोव ने हंस कर अरतैक के गले में बांह डाल दी और बोला—"अरे आयेंगे क्यों नहीं, तुम्हारे यहां अपना ही घर है। जरा वक्त ठीक हो लेने दो। आजकल तो देहात में तुम्हें अनाज-दाने की भी तकलीफ होगी।"

"नहीं मित्र, ऐसी बात नहीं है। कम से कम मैं खुशकिस्मत हूं। मेरा चाचा और ससुर दोनों मदद कर रहे हैं। तुम आओ; तुम्हारे लिये दूध, मक्खन, मांस सब हो जायगा।"

"चलता तो तुम्हारे साथ ही लेकिन क्या कहूं, फंसा हुआ हूं बुरी तरह। लोग छुट्टी नहीं देंगे।"

"हफ्ते-दो हफ्ते के लिये भी छुट्टी नहीं मिलेगी?"

"हफ्ते-दो हफ्ते! यहां घण्टे भर की भी छुट्टी नहीं है। आज-कल तो रात में सोने के लिये भी समय नहीं।"

"ठीक कहते हो भैया।" अरतक गम्भीर स्वर में बोला, "मैं भी सोच रहा हूं कि कुछ करना होगा। जार तो मरा परन्तु उसके बेईमान अफसरों के पंजे अभी तक जमे हुए हैं। इन लोगों से अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए जनता को एक बार फिर उठना होगा।"

चर्नीशोव ने चेतावनी से उस की ओर देख कर उत्तर दिया—"पिछले वर्ष अजीज के साथ बगावत में शामिल होते समय तुम ने हम से राय भी नहीं ली। मैंने तुम्हें तब भी कहा था कि जरा सोच-विचार कर चलो परन्तु तुम ने कुछ परवाह नहीं की। तुम्हें अजीज पर बहुत भरोसा था; अब कहां है अजीज ? तुम लोगों ने शहर पर हमला बोल दिया, क्या हुआ ? हम लोग जानते थे तुम्हारी बगावत का कुछ नहीं बनेगा। हम लोग तुम्हारी सहायता भी नहीं कर सके। अलबत्ता, तुम लोगों पर हमला करने के लिए जो फौजी मोटरें आई थीं, उन्हें लोगों ने तोड़ गिराया। तुम्हें शायद यह पता भी नहीं लगा और न इस से तुम लोगों को कुछ फायदा ही हुआ। हम लोगों के कई काम के साथी उस समय मारे गए। यदि वे लोग रहते तो इस क्रांति के समय बहुत सहायक होते···।" चर्नीशोव कुछ सोच कर चुप हो गया। अरतैक भी कुछ देर चुपचाप सोच कर सहसा बोला—"चर्नीशोव, तुम्हारा खयाल है मैंने गलती की···।"

अरतैक को सुन लेने का संकेत कर चर्नीशोव बोला—"जो हुआ सो हुआ ! तुम्हारी बगावत में एक तो कोई राजनीति समझने वाला नेता नहीं था और न तुम्हारी तैयारी ही ठीक ढंग से हुई थी, लेकिन फिर भी उस बगावत का अपनी जगह लाभ ही हुआ। यह अच्छा हुआ कि अब की तुम ने मुझ से बात कर ली। दो महीने पहले तुम मुझे बगावत के लिए कहते तो मैं भी तैयार हो जाता परन्तु इधर रूस से आये कुछ पर्चे और किताबें मैंने पढ़ी हैं और बात मेरी समझ में आई है। रूस की पार्टी के साथियों और लीडरों ने जो तरीका बताया है, वह मुझे समझ आता है। रूस में दूसरी क्रांति हो सकती है परन्तु यह क्रांति केवल सरकार का काम हाथ में ले लेने के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक

परिवर्तन के लिए करनी होगी ।"

अरतैक चर्नीशोव की बात के अन्तिम शब्दों का कुछ अर्थ न समझ पाया परन्तु इतना जरूर समझा कि कोई बड़ा परिवर्तन होने वाला है।

चर्नीशोव बोला—"केरेंस्की की सरकार जमीन किसानों को बांटने के लिए तैयार नहीं है । यह सरकार मिलें मजदूरों के हाथ में देने के लिये भी नही मानती है । इस सरकार के अमल और जार के अमल में भेद ही क्या है ? यह सरकार जंग खत्म करने के लिए भी तैयार नहीं । बड़े व्यापारियों और पूंजीवालों के फायदे के लिए यह सरकार लड़ाई चला रही है और गरीब जनता लड़ाई में गाजर-मूली की तरह कट रही है । लोगों को मिला क्या ? आजादी क्या हुई ?" इस के बाद चर्नीशोव ताशकन्द, बाकू और पेट्रोग्राड में मजदूरों की हालत के बारे में और मजदूरों पर नयी सरकार के दमन की बातें सुनाता रहा और फिर बोला, "अरतैक, तुम ईमानदार आदमी हो । तुम इस सरकार के तरीके और चालों को समझो और देहात के किसानों के सामने यह सब बात रखो । एक बात मत भूलना, किसानों को जो कुछ करना हो, मजदूरों को साथ लेकर ही कर सकेंगे । यदि किसान अकेले बगावत कर बैठेंगे तो पिट कर रह जायंगे । किसानों की बगावत में जो लोग नेता बनेंगे, वे खुद जागीरदार बन कर किसानों के सिर पर बैठ जायंगे । किसानों को आजादी केवल मजदूरों की नेता बोल्शेविक पार्टी ही दिला सकती है । इस पार्टी के बताये रास्ते पर चलने में ही सवाल हल होगा । वक्त से पहले कुछ कर बैठोगे तो अपने पांव कुल्हाड़ी मारोगे । अभी तुम किसानों को समझा कर अवसर के लिए तैयार करो…।"

अरतैक ने दारोगा बाबाखां की राशन कार्डों की चोरी की बात चर्नीशोव को सुनाई और ऐसे बदमाशों को ओहदों से हटाने का अनुरोध किया ।

चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"मैं जानता हूं खूब अंधेरगर्दी हो रही है परन्तु अंधेरगर्दी करने वाले दो-चार आदमियों को ठोक-पीट कर निकाल

देने से कुछ नहीं बनेगा। इस से किसानों की भूख नहीं मिट सकेगी। पहले जरूरी है कि किसान जनता को इन बातों का पता लगे और किसान की ओट में इस इंतजाम के खिलाफ पंचायत में आवाज उठे। तुम्हें इस काम में मैं पूरी सहायता देने के लिए तैयार हूं।"

चर्नीशोव अरतैक को किसानों में आन्दोलन चलाने का ढंग बता ही रहा था कि चरखेज तेज कदमों से भीतर आया। चर्नीशोव की बात काट कर गुस्से भरे स्वर में उसने बताया कि बाबाखां आज शहर में आया है और उसने अपने मालिकों—खोजा मुरादखां और कुलीखां से अरतैक की शिकायत की है। उन लोगों ने अरतैक का इंतजाम करने का फैसला किया है। जान पड़ता है कि अरतैक पर फिर कोई मुसीबत आने वाली है। उसने अरतैक को सावधान रहने के लिए कहा।

अरतैक पहले ही भरा बैठा था, चरखेज की बात सुन वह उफन उठा—"यह लोग मेरा इंतजाम करेंगे ! मैं ही पहले इन लोगों का इंतजाम किये देता हूं। एक दफा मैं इन लोगों के हाथ पड़ गया यही क्या कम है। देखूंगा मुझे कौन हाथ लगाता है ! जो पहल करे सो जीते, मैं ही क्यों न उन के यहां चलूं।" उस ने चरखेज से पूछा, "सहयोगी सभा का दफ्तर है कहां ?"

पल भर के लिये चरखेज ठिठका, अरतैक कोई जल्दबाजी न कर जाय, फिर सोचा कि पहल करना ही ठीक है—"दफ्तर दूर नहीं है। चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं···लेकिन वहां क्या होगा ?"

"वहीं जा कर देखेंगे कि क्या होगा ! यहां बैठे बात बनाने से क्या लाभ !"

चर्नीशोव ने अरतैक का चेहरा देख कर भांप लिया कि इस समय वह मानेगा नहीं परन्तु उसने फिर भी समझाया—"अरतैक सुनो, जल्दबाजी मत करो। मैं यह नहीं कहता कि तुम इन लोगों से मार खा जाओ परन्तु यह भी सोचो कि हम लोग अभी जिस तरीके से काम करने की बात कर रहे थे···जरा सम्भल कर चलो !"

"मैं तुम्हें बड़े भाई की जगह मानता हूं।" अरतैक ने चर्नीशोव को उत्तर दिया, "परन्तु यह बात दूसरी है। मैं एक बार मार खा चुका हूं, अब नहीं खाना चाहता !" वह चरखेज को साथ ले चल दिया।

इन दोनों के चले जाने के बाद चर्नीशोव इन लोगों के बारे में ही सोचता रहा और अपनी पत्नी अन्ना से बोला—"तुम इस लड़के को जानती हो। इन लोगों ने समझा होगा कि छः महीने जेल में सड़ा कर इसे दबा लिया। वह और भी आग-बबूला बन कर निकला है। उसे धुन सवार हुई है तो कोई रोक नहीं सकता। आदमी को होना भी ऐसा ही चाहिये। बस अपनी राह से फिसल न जाय, अकेले आदमी को राह भटकते देर नहीं लगती ! मुझे डर है कि मुसीबत में न फंस जाय ! मैं जा कर देखता हूं···।" चर्नीशोव ने टोपी सिर पर रखी और चल दिया।

अरतैक और चरखेज सहयोगी सभा के दफ्तर में पहुंचे और सभा के प्रधान से मिले। प्रधान साहब ने उन की ओर देखा और बेपरवाही से आंखें फेर लीं।

चरखेज बोला—"हम लोग 'कोश' के किसानों की ओर से आये हैं। हमारे यहां किसानों को खबर मिली है कि हम लोगों के नाम से राशन कार्ड बना-बना कर आप के दफ्तर के मुंशी और हाकिम सभा का राशन खा रहे हैं। यही बात हम जांचने आये हैं। हम नामों की फेहरिस्तें देखना चाहते हैं।"

प्रधान के माथे पर त्योरियां गहरी हो गई। वे गुस्से में बोले—"हम तुम्हारे किसानों और मुंशियों को नहीं जानते। जिन लोगों के पास कार्ड हैं, उन्हें राशन दिया जाता है। हमारे यहां कोई फेहरिस्तें नहीं हैं।"

अरतैक समझ गया कि यह साहब भी खाऊ हैं, लूट में अपना हिस्सा पाते हैं, सीधे-सीधे बात नहीं सुनेंगे। चर्नीशोव की बात याद कर वह नम्रता से बोला—"जनाब, हम लोग कागजात उठा कर ले नहीं जायेंगे। देख भर लेना चाहते हैं। हो सकता है, हमारा भी नाम आप के यहां हो।"

"मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता !"

"यह तो न्याय नहीं है ।"

"मैंने कह दिया कि कोई कागज नहीं दिखाया जायेगा !"

"हम देख कर जायेंगे !" अरतक मेज पर हाथ पटक ऊंचे स्वर में बोला ।

प्रधान साहब सहम गये । मेज पर हुये धमाके से उन की मोटी नाक पर टिका चश्मा फिसल गया । संभल कर वे बोले—"आप लोग चिल्लाते क्यों हैं ? यह हाट-बाजार की जगह नहीं, दफ्तर है !" वे फिर तेज हो उठे, "आप लोग बाहर जाइये !"

अरतैक ने हाथ बढ़ा उन की ठोड़ी पकड़ ली और बोला—"आखें मत दिखाओ ! अभी उठा कर नीचे पटक दूंगा । दफ्तर का सब रोब धरा रह जायगा । कागज निकालो !" अरतैक ने दूसरे हाथ का घूंसा उन के सिर पर उठा कर उत्तर दिया ।

प्रधान साहब के कंधे सिकुड़ गये और एक लम्बा सांस ले उन्होंने कुर्सी की पीठ का सहारा ले लिया और फिर मुस्करा कर बोले—"अरे भाई, बिगड़ते क्यों हो···नाराज होने की क्या बात है ! बैठिये तो ! मैं तो यह पूछ रहा था कि आप लोग कौन हैं ? आप गांव वालों की ओर से आये हैं, गांव के प्रतिनिधि हैं । सौ दफे देखिये कागजात । जो समझ न आये, मुझ से पूछ लीजिये । और वैसे आप को जो कुछ चाहिये, कहिये । इस समय चाय भी नयी आ गई है ।"

अरतैक और चरखेज कागजों में नाम देखने लगे । कोश के आस-पास के सैकड़ों किसानों के नाम चढ़े हुये थे । अरतैक का नाम भी लिखा हुआ था ।

अरतैक ने पूछा—"इन लोगों के कार्ड कहां हैं ?"

"मेरा खयाल है," प्रधान ने उत्तर दिया, "कुलीखां के यहां होंगे या खोजा मुराद के पास ।"

"हमारे कार्ड हमें मिलने चाहिये ।"

"मेरे हाथ में तो है नहीं। कार्ड जांच कमेटी से मिल सकेंगे। हां, इनकी लिस्ट चाहिये तो तुम मुझ से ले सकते हो।"

अरतैक ने उठ कर कहा—"चरखेज, जांच कमेटी को कहां खोजते फिरेंगे, आओ कुलीखां के यहां चलो।"

चरखेज को दूसरी जगह जरूरी काम था परन्तु अरतैक इंतजार के लिये तैयार नहीं था। वह अकेला ही कुलीखां के दफ्तर में पहुंचा।

कुलीखां और बाबाखां एक साथ बैठे अरतैक की शिकायत में दरखास्त लिख रहे थे। अरतैक को देख बाबाखां विस्मय से घबरा गया। कुलीखां भी घबराया परन्तु अपने को सम्भाले रहा और अरतैक को सम्बोधन कर बोला—"आओ आओ, बैठो, क्या खबर है?"

अरतैक ने बिना लाग-लपेट के सीधे ही उत्तर दिया—"खबर यह है कि सहयोगी सभा के दफ्तर से मालूम हुआ है कि हमारे गांव के किसानों के सब राशन कार्ड तुम लोगों ने हथिया लिये हैं। अब अगर पेट भर गया हो तो हमारे कार्ड लौटा दो।"

"कैसे कार्ड?"

"बनो मत कुलीखां, भोले मत बनो!"

कुलीखां ने क्रोध में होंठ काट कर बाबाखां की ओर देख कर पूछा—"यह कौन आदमी है?...बड़ा बदतमीज है!"

बाबाखां ने धीमे भारी स्वर में उत्तर दिया—"इसे जानते होंगे, यह हमारी बस्ती का आदमी है—अरतैक बवाली।"

"ओ हो, अरतैक! अश्काबाद की जेल में रह कर इसका मिजाज ठीक नहीं हुआ। फिर लोगों को भड़का रहा है!" कुलीखां ने अरतैक की ओर देखा, "अच्छा किया तुम खुद आ गये, नहीं तो बुलाना पड़ता।"

"जब कहो मैं हाजिर हो सकता हूं।"

"अच्छा, इस बात को रहने दो, तुम्हें और क्या काम है?"

अरतैक ने एक कुर्सी खींच ली और कुलीखां के साथ बैठ गया और मुस्कराकर बोला—"कुलीखां, दूसरे काम बाद में होंगे, पहले कार्ड

निकालो !"

लंगड़े मीर मुंशी ने मूंछों पर हाथ फर क्रोध में पूछा—"हूं, तुम मुझ से हिसाब तलब करने वाले कौन हो ?"

"मैं अपने कार्ड तलब कर रहा हूं !"

"तलब कर रहा हूं···मेरे पास तुम्हारे पचानवे कार्ड हैं लेकिन इस वक्त नहीं मिल सकते। कार्ड लेने हैं तो फरवरी की तीस तारीख को आना।"

इस मजाक से अरतैक के होंठ क्रोध से फड़क उठे। वह कुलीखां के और नजदीक सरक कर बोला—"कुलीखां, तुम हद से बढ़ रहे हो !"

"यह तो मेरी आदत ही है।" कुलीखां मुस्करा दिया।

"कार्ड नहीं दोगे ?"

"मैंने तुम्हें तारीख बता दी है।"

अरतैक का सिर घूम गया। उसे समझ न आया कि कब और कैसे उस का मुक्का कुलीखां की नाक पर जा पड़ा। कुलीखां अपनी लंगड़ी टांग पर गिर पड़ा। वह उठने का यत्न कर ही रहा था कि अरतैक ने धम्म-धम्म चार लातें उस की पीठ पर जमा दीं। कुलीखां फिर गिर पड़ा। उठने का यत्न न कर कुलीखां ने जेब से पिस्तौल निकाल कर सम्भाली। अरतैक ने तुरन्त एक ठुड्डा उस के हाथ पर दिया। पिस्तौल कुलीखां के हाथ से छिटक कर दूर जा पड़ी। अरतैक ने पिस्तौल उठा कर अपनी जेब में रख ली। अरतैक ने कुलीखां को कोट के कालर से पकड़ ऊपर उठाया और तख्त पर पटक उस के नाक और जबड़ों पर कई मुक्के जमाये। कुलीखां बेदम हो जाने से चिल्ला भी न सका। बाबाखां दफ्तर से निकल जोर से चिल्लाने लगा—"दौड़ो, दौड़ो खून हो गया···! पुलिस···!" इसी समय खोजा मुराद बौखलाहट में चिल्लाता हुआ भीतर आय—"इन्कलाब-इन्कलाब, बोल्शेविक, लेनिन !" परन्तु सामने का दृश्य देख विस्मय से उस की बोलती बन्द हो गई। बड़ी कठिनाई से उसके मुंह से निकला, "इ-इन्कलाब !"

उस के पीछे-पीछे आया चर्नीशोव। उस ने गम्भीर स्वर में खोजा की बात का समर्थन किया—"ठीक है, इन्कलाब की बात ठीक है। तार घर से खबर मिली है कि इन्कलाब हो गया है।" उस ने कमरे के चारों ओर आंख दौड़ाई। स्थिति समझ उस ने आवेश से हांफते हुये अरतैंक को बांह से थाम लिया और खींचता हुआ बाहर ले गया—"मैं तुम्हें जाने कहां-कहां खोजता फिरा। छोड़ो इस झंझट को। कितने जरूरी काम हैं, जल्दी आओ।"

६

पहली क्रान्ति फरवरी १९१७ में हुई थी। उसी वर्ष अक्टूबर में फिर क्रान्ति हो गई। रूस में केरेंस्की की सरकार टूट गई और उस के साथ ही प्रान्तों और प्रदेशों की सरकारें भी टूट गई। गवर्नरों के अधिकार पंचायतों के हाथ में चले गये परन्तु इन पंचायतों में केवल कम्युनिस्ट और बोल्शेविक लोग ही नहीं, सोशलिस्ट, मेन्शेविक और मध्यम श्रेणी के दूसरे बड़े लोग भी थे।

जल्दी में प्रायः यह भी हुआ कि महकमों-विभागों के नाम और दफ्तरों पर लगे साइनबोर्ड तो बदल गये लेकिन काम पुराने ढर्रे पर ही चलता रहा। अश्काबाद में तुर्कमानी और अजरबैजानी मध्यम श्रेणी के लोगों ने एक प्रादेशिक कमेटी बना ली और इस का प्रधान जार के जमाने के बड़े अफसर कर्नल उरेज सरदार को बना लिया।

तेजेन में मजदूर और फौजी सिपाहियों के प्रतिनिधियों की एक नयी पंचायत बन गई। इन प्रतिनिधियों में चर्नीशोव और कुलीखां चुन लिये गये। कुलीखां ने एकदम एलान कर दिया कि वह सोवियत सरकार का कट्टर पक्षपाती है।

ठीक इसी समय तेजेन में १९१६ की स्थानीय बगावत का नेता अजीजखां चपैक भी फिर से आ पहुंचा। तुर्कमानिया के बहुत से लोगों को अब भी अजीजखां पर बहुत विश्वास था और वे उसे अपना नेता समझते थे।

अजीजखां १९१६ की बगावत में हार कर अफगानिस्तान भाग गया

था और अब तक वहीं छिपा था। तेजेन में आते ही अजीज ने अपना संगठन शुरू कर दिया। अपना कार्यक्रम उस ने किसी को न बताया परन्तु फिर भी भूख से तड़पते और सरकार के प्रबन्ध से असन्तुष्ट लोग उस के संगठन में आने लगे। जागीरदार, बे और अमीर लोग भी समाजवादी क्रान्ति में अपनी में अपनी जागीरें और खजाने छिन जाने की आशंका से उस का साथ देने के लिये तैयार हो गये और तेजेन के बड़े-बड़े व्यापारी भी सब ओर संकट और भय देख उसकी रक्षा में जुटने लगे। अजीज के पास जो भी आता, वह सभी को आश्वासन और रक्षा का भरोसा दे देता। अजीज ने तुरन्त अपनी इन्तजामी कमेटी भी बना ली। इस कमेटी में बेमील नहर के इलाके से करीमउल्ला को, बेक नहर के प्रदेश से आल्ती सोपी को, ओतमेश नहर के इलाके से यारमुश काजी को और कयाल के इलाके से अलनजर बे को ले लिया। तेजेन और आस-पास के देहात में दो सरकारें, दो फौजें बन गईं—एक अजीजखां की और दूसरी पंचायत के प्रतिनिधियों की।

अरतैक दुविधा में था कि वह किस सरकार का साथ दे? उस की इच्छा अपने मित्र चर्नीशोव के साथ पंचायती सरकार में रहने की थी परन्तु इस पंचायत में जारशाही के अफसरों का, खास कर कुलीखां का, प्रभाव जार के जमाने में उनकी शक्ति से भी अधिक था। अरतैक यह सहन न कर सकता था। अरतैक ने अपने मन को बहुत समझाया परन्तु वह कुलीखां का साथ देने के लिये तैयार न हो सका। वह किसी तरह भी कुलीखां का भरोसा न कर सकता था। उसने कुलीखां की नाक तोड़ी थी और वह जानता था कि कुलीखां बदला लिये बिना न मानेगा।

चर्नीशोव से मिलने पर अरतैक को उस ने समझाया—"तुम किस दुविधा में फंसे हो! इतना सह कर भी क्या तुम्हारी आंखें नहीं खुलीं? मैंने हमेशा तुम्हारा साथ दिया है। अब हम लोगों का समय आया है और अब चूकना नहीं चाहिये। मैं मजदूर हूं और तुम गरीब किसान हो। हम गरीब लोगों के लिये पंचायत छोड़ और ठौर कहां!"

"कुलीखां जैसे गरीबों के साथ ?"

"बेवकूफी मत करो अरतैक ! तुम जानते हो, हम लोगों का उद्देश्य सोवियत से ही पूरा हो सकता है ।"

"भैया, ऐसे सांपों के साथ बसने से तो बेवकूफ बनना भला ।"

"इस का मतलब है···!"

"नहीं, हमारी मित्रता बनी रहेगी । हो सकता है फिर कभी हम लोगों का साथ हो जाय ।"

चर्नीशोव अरतैक की इस ज़िद्द से झुंझला गया । उसे अरतैक पर बहुत विश्वास था और उस की ईमानदारी और बहादुरी पर भरोसा था परन्तु जाने क्यों उस का दिमाग फिर गया था । चर्नीशोव को अपने प्रति भी असंतोष था कि वह अपने उद्देश्य के प्रति एक मित्र की सहानुभूति न ला सका । यदि अरतैक जैसे मित्र और किसान उसका साथ न देंगे तो वह क्या कर सकेगा ।

"तुम्हें अपना विरोधी बन जाने देने से तो अच्छा है तुम्हें गिरफ्तार करा दूं ।" चर्नीशोव ने मुस्कराकर कहा, "अरतैक, हो सकता है कुछ समय बाद तुम्हें होश आ जाय !"

अरतैक भी हंस दिया—"देख लो चर्नीशोव, यह है तुम पर कुलीखां की संगति का असर ! तुम अपने मित्रों पर वार करने की बात सोचने लगे हो । अच्छा है भाई चल दूं । न जाने तुम कब सचमुच ही हमला कर बैठो !"

"चुप रहो अरतैक, क्या बकते हो !"

"अच्छा तुम जैसे कहो ! नहीं बोलूंगा भाई ।"

"तुम हमारी सेना में पल्टन कमाण्डर क्यों नहीं बन जाते ?"

"तुम्हारे साथ मैं मामूली सिपाही बन कर भी रहने को तैयार हूं परन्तु उस लंगड़े बदमाश के साथ मुझे जनरल बन कर रहना भी मंजूर नहीं ।"

"जिद्द मत करो !"

यह मुझ से न हो सकेगा।"

चर्नीशोव ने फिर समझाने का यत्न किया—"अरतैक, तुम समझदार आदमी हो। तुम जानते हो कि मैं तुम्हारा भला ही सोचूंगा। मेरी बात मानो। पंचायतें तुम्हारी अपनी, किसानों और मजदूरों की हैं। किसान लोग इन पंचायतों से ही जमीन और पानी पर अपना कब्जा कर सकते हैं। तुम छोटी-छोटी बातों में उलझ रहे हो। कुलीखां आदमी बुरा सही; वैसे वह काम का आदमी भी है। इतनी सी बात के लिए तुम अगर पंचायती सरकार के विरुद्ध हो जाओ तो यह तुम्हारी अपनी सरकार और किसानों के साथ धोखा नहीं होगा! तुम पंचायत की तरफ नहीं होगे तो जा कर घर में बैठे नहीं रहोगे। चुप बैठे रहना तुम्हारे बस का नहीं। तुम पंचायत का साथ नहीं दोगे तो अजीज का साथ दोगे। तुम जानते हो, अजीज तो डाकू है। वह जागीरदारों, मुखियों, अमीर किसानों और मौलवियों का गिरोह बना कर खुद सुल्तान बन जाना चाहता है।"

"चर्नीशोव, तुम अजीज की बात रहने दो!"

"ठीक है, तुम उस की निन्दा नहीं सुनना चाहते परन्तु मुझे सच्ची बात कहनी चाहिए। हो सकता है, कुछ दिन तक अजीज तुम्हारे जैसे आदमियों को बहका ले और उसे कुछ सफलता मिल जाय परन्तु उस की चाल बहुत दिन तक नहीं चलेगी। आखिर तो जनता उस का भेद जानेगी ही। समझेगी कि वह जनता का शत्रु है या मित्र! एक हल्ले में चाहे वह कामयाब हो जाय परन्तु उस के कदम टिक नहीं सकेंगे।"

चर्नीशोव की बात सुन कर अरतैक सिर झुकाए सोचता रह गया। चर्नीशोव को आशा हुई कि वह मान गया है परन्तु अरतैक सहसा उठ खड़ा हुआ और अपना गुस्सा दबा कर बोला—"मैं पंचायती सरकार का शत्रु नहीं हूं। सोवियत सरकार के विरुद्ध मैं हाथ नहीं उठाऊंगा परन्तु कुलीखां और उसके मित्रों का मैं कट्टर शत्रु हूं। जब तुम ऐसे लोगों को निकाल दोगे, तब तक मैं जिन्दा रहा तो स्वयं ही तुम्हारे पास आ जाऊंगा।" अपनी बात समाप्त कर अरतैक दरवाजे की ओर चल पड़ा।

"जरा ठहरो !" चर्नीशोव अधिकार से पुकार कर बोला, "मेरी बात पूरी सुन लो । मैंने केवल अनुभव से कहा था कि यदि हमारा साथ नहीं दोगे तो अजीज से जा मिलोगे लेकिन तुम्हारी बात से साफ है कि तुम ने अजीज का साथ देने की बात पक्की कर ली है । तुम एक बार अच्छी तरह सोच लो ! तुम कहते हो तुम सोवियत सरकार के खिलाफ हाथ नहीं उठाओगे । अगर तुम अजीज का साथ दोगे तो यह कैसे सम्भव होगा ? यह कैसे हो सकता है तुम पूरब भी चलो और पश्चिम भी चलो ! जब तुम सोवियत के शत्रुओं का साथ दोगे, उन की सहायता करोगे तो यह सोवियत पर चोट करना नही तो क्या होगा । उस समय पछताने से भी क्या लाभ होगा। हमें कौन झण्डा लेकर चलना है, यह मामूली सवाल नहीं है । अपने झण्डे के लिए सिपाही को जान देनी पड़ती है । तुम झण्डे की बात नहीं सोचते, सोचते हो कि फलां आदमी तुम्हें पसन्द नहीं । आदमी बड़ा है या झण्डा ? अगर कुलीखां जैसे आदमी से भी जनता का कुछ काम बन सकता है तो उस से काम क्यों न लिया जाय !"

अरतैक सिर झुकाये दरवाजे में खड़ा रह गया । उस के चेहरे पर परेशानी और जिद्द अब भी मौजूद थी । चर्नीशोव की ओर देखे बिना ही वह बोला—"यदि कुलीखां जनता के काम आ सकता है तो अजीज ने भी जनता की बगावत का झण्डा ऊंचा किया । जिस समय कुलीखां जार के जनरलों की जूतियां चाट रहा था, अजीज तलवार सूत कर इन जनरलों के सिर तराश रहा था । यह तो तुम्हें भी याद होगा !"

"यही तुम्हारी भूल है !" चर्नीशोव ने कड़े स्वर में चेतावनी दी, "अरतैक, याद रखो जनता भूल-चूक तो माफ कर देती है परन्तु गद्दारी माफ नहीं करती ।"

अपनी बात कह कर चर्नीशोव खिड़की से बाहर देखने लगा और क्रोध वश में करने के लिए अरतैक की ओर देखे बिना वह मेज पर उंगलियों से तबला सा बजाने लगा ।

अरतैक उत्तर देने को हुआ परन्तु फिर कुछ भी न कह सिर लटकाए

चुपचाप दरवाजे से निकल कर चला गया। वह सिर लटकाए ही गली से बाजार में पहुंच गया। आस-पास से आने-जाने वाले लोगों की ओर उस का ध्यान नहीं गया। बिना सोचे-समझे, बिना किसी ख्याल के वह चलता जा रहा था। बाजार में खूब जोर से खड़खड़ाहट कर चलती हुई एक बैलगाड़ी की लपेट में आते-आते बचा। पुल पार करते समय वह पुल के खम्भे से ही टकरा गया। वह अचेत-सी अवस्था में चल रहा था। जान पड़ता था, वह अपना हृदय और सोचने-समझने की सब शक्ति अपने मित्र के यहां ही छोड़ आया है। उदासी से उसका शरीर निढाल हो रहा था।

अरतैक पुल की दीवार पर झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सोचने लगा—दुख-सुख के साथी चर्नीशोव से आज मेरा बिछोह हो गया। उस दिन जब मैं अश्काबाद जा रहा था, जब आशंका थी कि शायद मौत के घाट उतार दिया जाऊं, तब केवल चर्नीशोव ही ढाढ़स बंधाने स्टेशन पर आया था। चर्नीशोव ने सदा मेरे दुख में साथ दिया। जब मैं कुछ सोच भी न सकता था, तब भी चर्नीशोव ने ही मेरी आंखें खोली थीं। आज भी वह सगे भाई की तरह मुझे साथ न छोड़ने के लिये बार-बार समझा रहा है...। अरतैक के मन में उबाल सा उठा कि चर्नीशोव के पास लौट जाय और अपने हाथों में उस का हाथ थाम कह दे—मैं तुम्हारे साथ हूं परन्तु उसी समय कुलीखां का चेहरा उस की आंखों के सामने आ गया।

चर्नीशोव के घर की ओर मुड़ते उस के पांव ठिठक गये और एक गहरी सांस लेकर उस ने सोचा—चर्नीशोव से मेरा कोई झगड़ा नहीं लेकिन मैं कुलीखां के साथ कभी नहीं चल सकता; या तो मैं रहूंगा या वह ! कुलीखां का साथ देने से तो मैं अजीज का ही साथ करूंगा।

अरतैक दृढ़ निश्चय से बाजार की ओर चल पड़ा। वह अजीज के मकान की ओर बढ़ा चला जा रहा था। चर्नीशोव ठीक ही कहता है, उस ने सोचा—इस जमाने में किसी भी आदमी के लिये चुप और अलग

बैठना सम्भव नहीं। आदमी को इधर या उधर, किसी न किसी का साथ करना ही पड़ेगा। अजीज से एक बार बात करके देखना चाहिये। यदि उस से बात न बनेगी तो गांव लौट जाऊंगा।

अजीज का खेमा या दरबार अन्नाकोचक सराय में था। जिस समय अरतैक के वहां पहुंचा, अजीजखां एक गद्दे पर करवट से लेटा हुआ कुछ सोच रहा था। अरतैक का उदास चेहरा देख कर ही अजीज उसकी मानसिक अवस्था भांप गया। अजीज उठकर पाल्थी मार कर बैठ गया और अरतैक को सम्बोधन किया—"कहो भाई अरतैक, क्या हो रहा है?"

"आजकल जैसे दिन वीत रहे हैं, कोई क्या कह सकता है।" अरतैक ने उदास स्वर में उत्तर दिया।

पिछले वर्ष की बगावत में अजीज को अरतैक पर बहुत भरोसा था। वह उसे भूला न था। दूर अफगानिस्तान में भी उसे अरतैक की याद आती रहती थी। अरतैक की उदासी का कारण मालूम होने पर उसने कहा—"मेरा जो कुछ बल है, वह तुम्हारे जैसे साथियों के भरोसे ही है। अरतैक, तुम मेरे दाहिने हाथ थे। किसने परेशान किया है, बताओ मुझे उस कमबख्त का नाम! मैं अभी उस का घर फूंक कर उसे नेस्तनाबूद कर दूंगा। मेरे जिन्दा रहते तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।"

"अजीजखां, मेरी अपनी परेशानी की मुझे कोई चिन्ता नहीं है। तुम हमारे गरीब किसानों की हालत देखो।" अरतैक ने उत्तर दिया।

"ओह, तुम तो दूर की बातें कर रहे हो।"

"लेकिन मेरा ख्याल था कि तुम भी इन बातों का ख्याल करते हो! पिछले बरस तक तो तुम्हारा ऐसा ही ख्याल था।"

"ख्याल मुझे अब भी है। तुम यह मत समझो कि मेरा दिल बदल गया है। यह भी न सोचना कि मैंने तुम्हारा सत्कार नहीं किया। मेरा दिमाग इस समय फिक्र में चकरा रहा है। सैकड़ों ही सवाल सामने हैं।"

"अजीजखां मैं अपना सवाल लेकर नहीं आया हूं।"

"जो भी सवाल हो, कहो।"

"सवाल किसानों का ही है। मैं तुम्हें किसानों का रक्षक समझता रहा हूं। पिछले बरस तुमने किसानों में एलान किया था, अगर वे और जागीरदार तुम लोगों को दबाना चाहें तो उन्हें उखाड़ फेंको लेकिन आज जैसे लोग तुम्हें घेरे बैठे हैं, मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं।"

"तुम किन लोगों की बात कह रहे हो ?"

"मैं तुम्हारे साथियों को तो जानता नहीं। हां, अलनजर बे को जरूर जानता हूं। वह सदा जार के पक्ष में रहा है, जनता के पक्ष में कभी नहीं था। इस एक आदमी को देख कर मुझे दूसरे लोगों के बारे में भी सन्देह होता है। अलनजर बे वह आदमी है जो मेरे जैसे गरीबों का खून पीकर फूल रहा है। अगर तुम ऐसे आदमियों की सलाह पर चलना चाहते हो तो फिर जार के कारिन्दों और तुम्हारे काम में भेद ही क्या रहेगा !"

"अरतैक जरा सोच समझ कर बात करो !"

"मैं खूब सोच-समझ कर ही कह रहा हूं।"

अरतैक की इस दो टूक बात से अजीज सहम गया। शीतला के दागों से भरे उस के चेहरे पर परेशानी झलक आई और उस की बड़ी-बड़ी आंखों में लाल डोरे फिर गये। अपने मन का भाव प्रकट न होने देने के लिये उस ने करवट बदल ली और आराम से बैठ कर गंभीर स्वर में बोला—"अरतैक, तुम जानते हो मैंने जार के खिलाफ बगावत क्यों की थी ! क्यों मुझे अपना वतन छोड़ कर भागना पड़ा ! सिर्फ इसलिये कि मैं जार के बदमाश कारिन्दों को खत्म कर देना चाहता था। यह जानते हुये भी तुम मेरी तुलना जार के कारिंदों से कर रहे हो !"

अरतैक पर अजीज की बात का गहरा प्रभाव पड़ा। उस ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"अजीजखां, मैं अब भी तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं सकता। जो होगा सामने आ जायगा। दूध होगा तो दूध और पानी

होगा तो पानी । मैं तुम्हारी बराबरी किसी से नहीं कर रहा हूं परन्तु मैं तुम्हारा मित्र हूं इसलिये साफ बात कह रहा हूं ।"

अजीज इस कड़ी बात से भी बिगड़ा नहीं । वह और नरमी से बोला—"भाई, तुम मुझे जान नही पाये । मैं जार के कारिन्दों की नस्ल में से नहीं हूं जो अपने मालिक के बूते पर कूदते थे । मैं खुद घर-बार और सगे सम्बन्धियों के सुख-दुख को समझता हूं । चपैंक सर्दार का खून है । कोई नहीं कह सकता कि मैंने कभी रियाया पर जुल्म किया है । मैं तुम्हारे मन की बात भी समझता हूं लेकिन आल्ती सोपी और अलनजर बे मेरे भाई-बन्द नहीं और न उन की बात मेरे लिये कुरान की आयत है । भाई यह तो राजनीति है । देहात में इन बड़े आदमियों की ताकत है । लोग अब भी इन की बात मानते हैं । अगर दुश्मन से भी अपना काम निकल सके तो हर्ज क्या है ! जब तक अपने कदम नहीं जमते, इन लोगों से मदद लेनी ही होगी । मैं उन की बात सुनता हूं, राय भी लेता हूं लेकिन फैसला तो मुझे ही करना है । तुम फिजूल बातों में मत उलझो, तलवार सम्भालो !"

"नहीं भाई अजीज, यह मेरे बस का नहीं । अलनजर बे के साथ मेरा निबाह नहीं । एक सराय में तो क्या, जिस गांव या देश में बे रहेगा मैं नहीं रह सकता । तुम नाराज भले ही हो जाओ परन्तु बे तुम्हारे साथ है तो मेरे लिये तुम्हारे यहां जगह नहीं ।"

"क्या बचपन कर रहे हो अरतैक ! मैं तुम्हारे लिये सर्दार अजीजखां नहीं, एक तुर्कमानी साथी हूं । तुम बताओ, तुर्कमान का यह कायदा है कि कोई भी इन्सान मेरे यहां आता है तो मुझे उस की इज्जत रखनी है; अलनजर हो या कोई और हो । तुम से मैं कोई सौदा नहीं कर रहा हूं लेकिन याद रखो, मेरे साथ रहोगे तो तुम्हारे लिये तरक्की की राह खुल जायगी । मैं तुम से जल्दबाजी के लिये नहीं कह रहा हूं । तुम मन को खूब तौल लो । अलनजर है क्या ? अगर वह तुम्हारे खिलाफ जबान भी हिलाये तो उस का घर तुम्हारे सामने फुंकवा दूं !"

"क्या कहूं मैं···तुम्हारा नौकर हूं और वे तुम्हारा दोस्त है। तुम्हीं बताओ, किस का हक ज्यादा है?"

"अरतैक देखो, मुझ से कसम मत दिलवाओ। मेरी बात ही काफी है। तुम मेरे कदम जम लेने दो, अल्लनजर को मैं कान से पकड़ कर तुम्हारे हवाले कर दूगा।"

यदि इतनी बात चर्नीशौव ने कुलीखां के बारे में कह दी होती तो अरतैक आंख मूद कर उसका साथ देता परन्तु चर्नीशोव तो लंगड़े का पक्ष ले रहा था। अरतैक अजीज के पास तो चला गया लेकिन उसे क्या मालूम था कि जिस राह पर पांव रखा है वह उसे कहां से कहां ले जायगी! पिछले दिनों उस ने जो कुछ सहा था, उस के आधार पर वह अपने आप को खूब अनुभवी और पक्की समझ का आदमी समझने लगा था और उस का विचार था कि हालत के मुताबिक उस ने बिलकुल ठीक मार्ग अपनाया है। क्रान्ति के बाद तेजेन में हथियारों की कमी न थी। अजीज ने अरतैक और काजिलखां को अपनी फौज का कमाण्डर बना दिया। अरतैक के कंधों पर हरे रंग के हिलाल और तारे के निशान लग गये। उस की पीठ पर राइफल और कमर में तलवार लटकने लगी।

उसी समय तेजेन में पंचायत की ओर से एक लाल फौज भी बन गई। इन लोगों के कंधों पर लाल निशान थे। इस फौज के अफसरों में चर्नीशोव और कुलीखां थे। इस फौज का कमाण्डर कुलीखां का मित्र कलूईखां था। कलूईखां देव का देव, भयानक रूप-रंग का आदमी था। उस की आंखें भी बड़ी-बड़ी थीं। एक ही शहर में दो फौजें हो गई। एक ही बाजार के एक सिरे पर लाल दाढ़ी-मूंछ से घिरे लाल चेहरे वाला काजिलखां, कमर में टेढ़ी तलवार लटकाये ऐंठता फिरता और दूसरी ओर कलूईखां, कमर में माउजर पिस्तौल और छोटी किर्च अड़ाये घूमता दिखाई देता।

भोले किसान इन लोगों की ओर सहमी हुई आंखों से देखते और सोचते रह जाते—जाने दुनिया में क्या होने जा रहा है!

१०

एक खूब बड़े कमरे में लम्बे-चौड़े कालीन पर अजीजखां अपने सलाहकार साथियों के साथ बैठा दिल बहला रहा था।

रोएंदार खाल की बनी अपनी लम्बी-लम्बी टोपियां उतार कर उन लोगों ने एक ओर रख दी थीं। खिड़की से आती दोपहर की धूप उन लोगों के उस्तरे से मुंडी खोपड़ियों पर पड़ रही थीं। बीच में एक दस्तरखान पर चाय के प्याले, चायदानियां और मिसरी रखी हुई थी। जाड़े के आरम्भ की सुहाती-सुहाती घाम में इन बर्तनों पर मक्खियां अपने राग गुनगुना रही थीं। प्यालों में भरी गहरी चाय से महक लिये भाप उठ रही थी। कमरा बड़ा और ऊंचा होने पर भी हुक्के से निकला हुआ धुआं छत के नीचे मंडरा रहा था।

अजीज के साथ ही अन्ना कुर्बान यारमुश काजी बैठा हुआ था। काजी की काली दाढ़ी बड़े थैले की तरह उस की ठोड़ी से लटकी हुई थी। जांघों पर टिके उस के हाथ भी काले रोमों से ढंके रीछ के पंजों जैसे जान पड़ रहे थे। उस की बड़ी-बड़ी साफ आंखों से मूर्खता झलक रही थी। वह एक दरबारी राजनीतिज्ञ नहीं बल्कि बेपरवाह देहाती ही मालूम देता था।

अन्ना कुर्बान के साथ ही भारी-भरकम करीमुल्ला बैठा था। करीमुल्ला का माथा और दाढ़ी शेष चेहरे से बहुत आगे बढ़े हुये थे। ऐसा जान पड़ता था कि सिर पर चक्की का पाट रख देने से चेहरा पिचक कर, ऊपर-नीचे के भाग आगे बढ़ कर बीच का भाग भीतर धंस

गया हो। उस की धंसी हुई आंखों में छोटी-छोटी पुतलियां चमक कर आतुरता प्रकट कर रही थीं। मुल्ला अनपढ़ था परन्तु उस के बाप-दादा मुल्ला थे, इसलिये मुल्ला का नाम खानदानी तौर पर चला आ रहा था। उस के आगे आल्ती सोपी एक मामूली सा कुरता पहने बैठा था। कुरता गले पर मैला था। उस के ऊंचे पायजामे के पहुंचे से उस की बिवाई से फटी एड़ियां दिखाई दे रही थीं और सूखी-सूखी पिंडलियां भी झलक रही थीं। उस का भूरे रंग का लाबादा कंधे से अटका हुआ था। अपनी आदत के अनुसार वह इस समय भी दाहिने हाथ से माला जपता जा रहा था और मन में शायद कोई तिकड़म सोच रहा था। उस की आंखों और चेहरे से निर्दयता टपक रही थी। जैसे उस का चेहरा निर्दय था, वैसे ही उस की जुबान भी कड़वी थी। ईमानदारी और इन्साफ के झगड़ों में वह कभी न पड़ता था। पिछली बगावत में भाग लेने के कारण वह भी अरतैक के साथ अश्काबाद के जेलखाने में रह आया था। उस बगावत में सोपी ने जनता पर अन्याय के विरोध के लिये नहीं बल्कि खानों और मुल्लाओं का राज कायम करने की आशा से भाग लिया था।

इस घेरे के अन्त में अलनजर बे के साथ बैठा हुआ धूसर से चेहरे का आदमी मदीर ईशान था। ईशान की आंखें फौलादी रंग की थीं और चौड़े जबड़े फैले हुये थे। उस की आयु लगभग पैंतीस बरस थी। पिछले पन्द्रह बरस से वह रूसी अफसरों के साथ रह कर तुर्कमान लोगों की बात रूसी में समझने का काम करता रहा था, इसलिये जनता में उस का काफी रोब था। उस की जबान कैंची की तरह चलती थी इसलिये लोग उसे मदीर (जल्दी बोलने वाला) पुकारने लगे थे। बुजुर्गों और मुल्लाओं से बातचीत करते समय वह शरियत (धार्मिक पुस्तकों) की ही जबान में बात करता था इसलिये लोग उसे ईशान (आलिम) भी पुकारने लगे।

यह था अजीजखां का दरबार जहां उस की नीति तय होती थी। अरतैक भी कमरे में एक ओर बैठा था। इन लोगों की बातचीत सुनने के लिये वह किसी न किसी बहाने वहीं बना रहता था।

बातचीत राज-काज के प्रबन्ध के बारे में हो रही थी। अजीज ने अपना तरीका बहुत दिन पहले, अफगानिस्तान में रहते समय ही मन में निश्चय कर लिया था परन्तु इन लोगों का मन रखने के लिये वह इन लोगों की सलाहें बहुत महत्व देकर सुन रहा था।

आल्ती सोपी सभी लोगों की ओर निगाह दौड़ा कर सब से पहले बोला—"अजीजखां, खुद नये कानून बनाने का खयाल करना ही गलत है। सही कानून हजरत पैगम्बर ने एक हजार बरस पहले ही कायम कर दिये थे। हम उन कानूनों से बाहर नहीं जा सकते। असली कानून शरियत का कानून है। मगर शरियत को समझने में कहीं शक होता है तो आलिमों की राय ली जानी चाहिये। एक आलिम को काजी बनाया जाना चाहिये। शरियत के कानून में कोई चूंचे-चुनांचे नहीं होना चाहिये। शरियत के हुक्म पर पूरा असल होना चाहिये। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार का हाथ काटो, हाथ काट दो। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार का सिर काटो, तो सिर काटो। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार को फांसी पर लटका दो, तो फांसी पर लटकाओ।"

अलनजर बे ने सिर हिला कर मुल्ला सोपी का समर्थन किया—"ठीक है, ठीक है।" मन ही मन वह सोच रहा था, यह है तरीका अरतैक का इन्तजाम करने का।

इसके बाद बोला यारमुश काजी, भर्राई हुई आवाज में, जैसे कि गले में फांस अटकी हुई हो—"वैसे तो मुल्ला की बात सोलह आना सही है लेकिन शरियत के कानून के साथ ही अपना रीति-रिवाज भी तो है। कहावत है, आदमियों की परवाह चाहे न करो पर रिवाज पर कायम रहो। शरियत तो शरियत है पर अगर हम रिवाज पर कायम हैं तो भी ठीक है।"

करीमुल्ला न तो शरियत की और न रिवाज की ही बात कर सकता था। बहुत देर तक कोशिश में नाक और दाढ़ी हिला-हिला कर वह आखिर बोला—"हां भाई, हम तो यह कहते हैं कि—मिसाल के तौर पर

कहते हैं न कि चाहे ऐसे ठीक समझ लो, चाहे वैसे कर लो। मतलब यह कि बात ठीक होनी चाहिये और अपना इस्लामी रिवाज ठीक होना चाहिये, बस यही ठीक है।" यह बात कहने के यत्न में करीमुल्ला का पूरा शरीर थर्रा उठा, उस की मुंडी हुई खोपड़ी की खाल तक सिकुड़ गई और शरीर पसीना-पसीना हो गया। वह ऐसे हांफ रहा था जसे मंजिल पूरी करने के बाद घोड़ा हांफता है। कांपते हुये हाथों से अपना चाय का प्याला उठा कर वह प्यास बुझाने के लिये घूंट भरने लगा।

अलनजर गम्भीर स्वर में बोला—"यह ठीक है कि शरियत और रिवाज दोनों ही मानने से हम लोग गलती से बच सकते हैं। अब जमाना बदला है तो जमाने के साथ नये कानून की भी जरूरत होगी। जहां तक मैं समझता हूं, कुरान में हजरत मोहमद की रवायत में रिवाज की बात नहीं है। रिवाज तो जमाने की हालत से लोगों की जरूरत के मुताबिक बन जाता है। मुल्ला लोग खुद मानते हैं कि कुरान में पिछली आयतें पहली आयतों के खिलाफ पड़ती हैं। आजकल का जमाना हजरत पैगम्बर के जमाने से बदल गया है। आज अगर लोगों की तरफ से इकट्ठे हुये लोग मिल कर हाल्लात के मुताबिक कानून बनाते हैं तो यह शरियत और रिवाज के खिलाफ नहीं है।"

बातचीत का कोई भी शब्द लिखा नहीं गया। फौज के लिये कितना खर्च किया जायगा, कैसे किया जायगा और वह रकम कहां से आयेगी, इस विषय में अजीज ने अपने दरबारियों से कोई राय नहीं ली। उस ने सब नहरों के इलाकों पर अपनी इच्छा से कर लगा दिया। जब लोगों ने पूछा कि यह रकम कहां से आयेगी तो अजीज ने उत्तर दिया—"जिन लोगों के पास रकम है, उन्ही के यहां से रकम आयेगी।" अजीज के इस मनमाने फैसले और बे लोगों की दौलत पर हाथ फैलाने से अलनजर घबराया। अलनजर ने इस विषय में बात उठाने के लिये अजीज की ओर प्रश्नात्मक ढंग से कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि अजीजखां ने आंखें फिरा कर दूसरी बातें आरम्भ कर दी—"बुजुर्गो,

इस साल रियाया की हालत बहुत खराब है। यह बात आप मुझ से ज्यादा जानते है। लोग भूख से तड़ातड़ मर रहे हैं। इस अकाल मौत से लोगों को बचाने के लिये क्या इन्तजाम किया जा सकता है ?"

अलनजर और अधिक कर बढ़ाये जाने की आशंका से तुरन्त बोला—"सरकार से मदद लेनी चाहिये।"

"सरकार कौन है; हम सरकार हैं !" अजीज बोला।

चाय का प्याला पीने से यारमुश काजी को और अधिक पसीना आ गया। वह अपने छींट के कुरते का दामन हिला कर हवा करता हुआ बोला—"सुना है, सहयोगी सभा बनी है। सुना है, शहर के तंग सुथन्ने वाले (पतलून पहनने वाले) अफसर सब सरकारी राशन आपस में बांट लेते हैं। हम लोग भी सरकारी राशन क्यों न लें ! जार तो मर गया, फिर भी इन तंग सुथने वालों का ही राज चलता रहेगा ! अजीजखां, इन लोगों के सुथन्नों में छेद करना होगा।"

अजीज की जगह उस के माल अफसर मदीर ईशान ने उत्तर दिया—"कुर्बान आगा, सहयोग सभायें क्या देती हैं; जैसे बीमार आदमी के मुंह में पानी की बूंद टपका दी जाये। इतना राशन ले कर बांटने लगें तो किसी के हाथ कुछ न आये, जैसे मुट्ठी भर अनाज दस बीघा जमीन पर बो दिया हो। वहां से अगर कुछ मिलेगा तो ले लेंगे लेकिन रियाया की मदद के लिये इस से कुछ नहीं बनेगा। उस के लिये तो कुछ और ही करना होगा।"

"जो कूकर मारेगा वही कूकर करेढ़ेगा !" आल्ती सोपी बोला, "किसानों को जिसने लूट कर भूखा मारा है, वही आ कर उन्हें मरने से बचायें, खाने को दे।"

"तुम सीधी बोली में बात करो तो समझ में आये।" अजीजखां ने कहा।

"अजीजखां, अनाज धरती की ओर ही जाता है। फसल काटो तो अनाज की बाल धरती पर झुकती है। मंडाई करो तो अनाज धरती पर

गिरता है । खेत में बोओ तो अनाज धरती में धुस जाता है । बोरी में भरो तो अनाज का मुंह धरती की ओर रहता है । कटाई में जितना अनाज खेतों में बिखर जाता है, वही गरीबों और पक्षियों के हिस्से आता है । जो अनाज व्यापारी की खत्ती में चला गया, वह किसी का नहीं; न तुम्हारा, न हमारा ।"

"सोपी की बात सोपी ही समझे !"

"किसान की कमाई का क्या है ! रुपये में से चार आना जागीरदार के कारिन्दे के हिस्से गया, चार आने साहूकार के हाथ, चार आने जागीरदार-सरकार के हाथ, चार आना उस के पेट के लिये रहा ।"

"तो फिर ?"

"साहूकारों, जागीरदारों की खत्तियों में गया किसानों का अनाज कहां गया ? वह खत्तियों में धरा है । इस अनाज को धरती से निकालो । इतना अनाज अगर धरती से निकल कर किसान को मिल जाय तो अगली फसल तक किसान बच जायगा ।"

"मतलब है जागीरदारों और वे लोगों से अनाज मांगा जाय ?"

"मांगे से दे दें तो भला, नहीं तो लेना तो होगा ही ! अभी कहा न अलनजर बे ने ! बदले जमाने में हालात के मुताबिक कानून बनाना ही होगा ।"

"आखिर काम की बात कही सोपी ने ।" अजीज ने करवट ले उस का समर्थन किया ।

सोपी के अपने यहां अनाज था नहीं इसलिये दूसरे साहूकारों और जागीरदारों का अनाज छीना जाने में उसे कोई आपत्ति न थी । एक से छीन कर दूसरे को दे देने में उसे एतराज न था । इस समय सोपी के मन असली बात यह थी कि बैंक नहर के इलाके का प्रतिनिधि होने के नाते जागीरदारों से अनाज ले कर अपने इलाके में खुद अनाज बांटेगा । किसानों में उस की मानता बढ़ेगी सो बढ़ेगी, इस के अलावा उस के अपने घर अनाज की कमी न रहेगी । सोपी या कोई दूसरा आदमी थोड़ा बहुत

माल समेट ले, इस में अजीज को कुछ एतराज न था। वह चाहता था जनता और किसानों को उस पर विश्वास हो जाय।

यारमुश काजी को सोपी की पसन्द न थी परन्तु वह बहुत यत्न करने पर भी इतना ही कह सका—"मतलब···इस का मतलब तो है···।"

करीमुल्ला को भी यह प्रस्ताव नापसन्द था, मन ही उसे इस बात पर भी क्रोध आ रहा था परन्तु अजीज के भय से वह चुप रह गया। अजीज से अलनजर बे को भी भय था परन्तु उसे अपने नुकसान का भय भी सब से अधिक था। वह साहस कर बोला—"बात सोपी की ठीक है लेकिन हमारे यहां ईरान और रूस जैसे साहूकार हैं कहां, जिनके यहां बड़ी-बड़ी खत्तियां भरीं हों? यह तो गरीब लोगो की बस्ती है। फसल कटी और बनियों के हाथ से निकल, दूर रूस की मण्डियों में जा पहुंची। यहां किसी के यहां आठ-दस बोरी अनाज होगा भी तो क्या; कुनबे हैं, रिश्ते और जान-पहचान के लोग हैं। तुम कहते हो, वे लोगों के यहां अनाज है! भैया, मैं भी वे ही हूं परन्तु मैं ही जानता हूं कि इस बरस खुदा ही हाफिज है··· जाने कैसे निबाह होगा! अगर इसी तरीके पर चले तो गरीबों का पेट तो क्या भरेगा, उन की हालत और बुरी हो जायगी और वे लोग भी बिगड़ उठेंगे। दुश्मन का मुकाबला करना है तो आपस में बदगुमानी और झगड़े न उठें तभी अच्छा।"

अब तक अरतैक एक ओर चुपचाप बैठा था परन्तु अब रह न सका—"मालूम होता है जैसे दुनिया में सतह पर बगावत हो रही है वैसे जमीन के भीतर भी मची है जो अलनजर की खत्तियों में भी सैकड़ों बोरियों की जगह आठ-दस ही रह गई। मालूम होता है, बेचारे का अनाज धरती निगल गई!"

अलनजर बे ने अजीजखां की ओर देख कर पूछा—"क्या यह आदमी भी तुम्हारा सलाहकार है?"

अजीजखां ने बे की नाराजगी की परवाह न कर उत्तर दिया—"यह आदमी हमारी फौज का एक कमाण्डर है।" बे को चुप रह जाना पड़ा।

इसी समय एक अफसर ने आकर अजीज को सम्बोधन किया—"एक परदेसी मेहमान आप से अकेले में मिलना चाहता है ।"

यह सुन अजीज ने अपना दरबार स्थगित कर किया । दरबारी लोग उठ कर चले गये । परदेशी भीतर आया और आकर उसने कमरे का दरवाजा सावधानी से बन्द कर लिया । मेहमान की आयु तीस बरस के लगभग होगी । कद मंझोला, घनी भवें, रंग कुछ ढका हुआ, मूंछे और दाढ़ी खूब काली, दांत कुछ बड़े-बड़े लेकिन खूब साफ चमक रहे थे । वह रेशमी कमीज, खाकी पतलून और घुटनों तक ऊंचे बादामी बूट पहने था । उस के कंधों पर चोगा था । पोशाक उस की तुर्कमानी थी परन्तु वह तुर्कमान जान न पड़ता था ।

उस ने अपना परिचय दिया—"मैं अफगान हूं ।"

अफगानिस्तान में अजीजखां ने अपनी मुसीबत के दिन विताये थे । अफगानिस्तान का नाम सुनते ही अजीज ने विश्वास से मेहमान की ओर देखा परन्तु मेहमान के व्यवहार और तौर-तरीके में कुछ ऐसी नफासत थी कि अजीज के मन में सन्देह हो गया । कुछ सोच कर उस ने मेहमान से प्रश्न किया—"तुम अफगान हो या बलूची हो ?"

मेहमान ने इस्लामी ढंग से सीने पर हाथ रख कर उत्तर दिया—"शुक्र खुदा का, उस ने मुझे अफगान पैदा किया है ।"

"नाम पूछ सकता हूं ?"

"अब्दुलकरीमखां ।"

"कारोबार, शगल ?"

"जो काम सौंप दिया जाय, उसे पूरा करना ।"

"कहां से तशरीफ आ रही है, किस तरफ का इरादा है ?"

दरवाजे और खिड़की की तरफ देख अब्दुलकरीम धीमे स्वर में बोला—"मैं कुछ खास बात करना चाहता हूं ।"

"यहां कोई खतरा नहीं है, महफूज जगह है। जो चाहो कह सकते हो ।"

अब्दुलकरीमखां ने एक बार चारों ओर देखा । उस के इस ढंग से

अजीज का सन्देह और बढ़ा—यह आदमी कोई चोर है या भगोड़ा; या कोई जासूस है ? उस ने एक बार फिर मेहमान को विश्वास दिलाया यहां से कोई गैर आदमी बात नहीं सुन सकता बेखतरे कहो। अफगानिस्तान के लोग मेरे लिये तुर्कमानिया के लोगों की तरह ही सगे हैं, तुम अगर अफगान हो तो बेखौफ जो चाहे कहो ! अगर खून करके भी आये हो, तो जहां तक मेरी पहुंच है, तुम्हें कोई छू नहीं सकता।

अब्दुलकरीमखां ने भरोसे से कहा—"मैं एक राजदूत हूं।"

"राजदूत ?"

"मैं अफगानिस्तान के अमीर हबीबुल्लाखां का राजदूत हूं।" अब्दुल-करीमखां गर्दन उठा कर बोला।

अजीज की नजरें बदल गईं। उत्सुकता से उस ने पूछा—"तुम्हें मेरे पास अमीर ने भेजा है ?"

"खुदा मुझसे गलत बात न कहलाये।" अब्दुलकरीम ने ठिठक कर उत्तर दिया—"जिस समय मैं अफगानिस्तान से चला था, आप के खान बन जाने की खबर वहां नहीं पहुंच पाई थी। अमीर ने मुझे खुरासान के कुर्बान मुहम्मदखां जुनैद के यहां भेजा था लेकिन मुझे हुक्म है कि अगर हो सके तो मैं आप से भी मिलूं।"

"तो तुम खुरासान ताशौज जा रहे हो ?"

"मैं ताशौज से लौट रहा हूं। कुर्बान मुहम्मदखां ने आप को सलाम कहा है।"

"शुक्रिया, तुम पर अल्लाह की इनायत इस सन्देश के लिये। खान आगा मजे में हैं ?"

"शुक्र अल्लाह का, खान खुशहाल हैं। खान आगा आप को अपना भाई खयाल करते हैं। उन का संदेश है कि आप को किसी किस्म की मदद की जरूरत हो खत या आदमी भेज कर खबर दें।"

"हम लोग अफगानिस्तान में ही एक-दूसरे के भाई बने थे।"

"ठीक है, मुझे मालूम है।"

"अब्दुलकरीमखां, यहां से कहां जाने का इरादा है ?"

"यहां मैं आप के पास आया हूं। जा कर मुझे अमीर हबीबुल्लाखां को आप से मुलाकात की खबर देनी होगी।"

अजीज ने अब्दुलकरीमखां से अफगानिस्तान के बारे में बहुत सी बातें पूछीं, उससे पश्तो में बातचीत कर अपना संतोष कर लिया कि वह अफगानिस्तान से ही आया है। अफगानिस्तान के कई खान परिवारों का जिक्र उसने अब्दुलकरीम से किया। अब्दुलकरीम ने इन लोगों का ठीक-ठीक परिचय दिया। अजीज खां ने फिर भी उससे पूछा—"तुम्हारे पास अमीर का कोई पत्र है ?"

"देख ही रहे हैं कि मैं भेस बदल कर आया हूं।" अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया, " इसीलिये मैं तुर्कमानी पोशाक भी पहने हूं। ऐसी हालत में अपनी सरकार का पासपोर्ट (राहदारी) या कोई पत्र मैं साथ कैसे रख सकता हूं ? किसी दूसरे आदमी को तो मैं यह भी नहीं बता सकता कि मैं अफगान हूं।"

अजीज का सन्देह दूर हो गया तो उस ने अब्दुलकरीम से उस की यात्रा का प्रयोजन पूछा।

"खान आगा," अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया, "मुसीबत के दिनों में आप ने और जुनैद आगा ने अफगानिस्तान में ही जगह पाई थी। मेरा खयाल है, हम लोगों का सलूक बुरा नहीं रहा होगा !"

"नहीं शुक्रिया, बहुत आराम में रहा और मशकूर हूं।"

"जुनैद आगा अब खुरासान के पूरे इलाके का मालिक है और अब आप की हैसियत भी, अलहम्दोलिल्लाह, बहुत ऊंची है। इस वक्त दुनिया में कैसी गड़बड़ी मच रही है और राजनीतिज्ञ कैसी चालें चल रहे हैं, यह मुझ से ज्यादा आप खुद ही जानते हैं। जार ने आप के साथ जो जुल्म किया, सभी जानते हैं और यह जो नई सरकार बन रही है ; तरबूज को तराशे बिना कौन जानता है, कैसा निकलेगा ! कौन जाने यह जार से भी ज्यादा जालिम निकले ! आप का क्याल क्या है, आप रूस पर ही

भरोसा करेंगे या किसी दूसरी सल्तनत के साये में आना बेहतर समझेंगे ?"

"किस सल्तनत के साये में ?"

"हूं···समझ लीजिये, बर्तानिया !"

"बोझा ही ढोना है तो ईट ढोई कि पत्थर, क्या फरक पड़ता है ! रूस के जार ने जो किया, बर्तानिया का बादशाह उस से कम क्या होगा ! मैं तो किसी के भी जुये में गर्दन नहीं फंसाना चाहता।"

करीमखां के माथे पर बल पड़ गये परन्तु अजीज का ध्यान उस ओर न था। करीम सम्भल कर कर बोला—"मेरा मतलब है कि आप किस से संधि करना चाहते हैं ?"

"मैं इस झंझट में नहीं फंसना चाहता !"

"अपने पड़ोसी अफगानिस्तान के बारे में आपकी क्या राय है ?"

"पूरी की आस से हाथ की आधी भली···दूर के बड़े-बड़ों से अपना पड़ोसी अफगानिस्तान बहुत अच्छा !"

अजीज के समीप सरक कर अब्दुलकरीम बोला—"बस इसी मतलब से मुझे अमीर हबीबुल्लाखां ने जुनैद आगा और आप की खिदमत में भेजा है। अब तक मुसलमानों को एक तरफ रूस, दूसरी तरफ बर्तानिया और तीसरी तरफ फ्रांस बांटे रहे थे। इस जंग के बाद मौका है कि दुनिया के मुसलमान मुल्कों में एका हो जाय। इस के लिए सभी को कोशिश करनी होगी, एक जान, एक दिल होकर ! लेकिन हम लोगों को एक बड़ी ताकत के सहारे की भी जरूरत है, मिसाल के तौर पर बर्तानिया ही हो। अमीर की राय है कि इस वक्त रूस में फैली गड़बड़ी का फायदा उठा कर मुस्लिम मुल्कों—तुर्की, तुर्कमानिया और अफगानिस्तान का एका बन सकता है। इस बारे में आप की क्या राय है ?"

अजीजखां सिर झुकाये सोचता रह गया। अब्दुलकरीमखां की बात बहुत सीधी-सादी न थी कि जैसे चाहा देहात पर कर लगा दिया। सवाल का जवाब देने से पहले खूब सोच लेना जरूरी था। अजीजखां अफगानिस्तान से जा मिले तो रूस क्या यों देखता रह जायगा और फिर अफगानिस्तान

का अमीर क्या जार से भला होगा ? अफगानिस्तान उसे पड़ोसी सुल्तान मानेगा या उसे अपनी सल्तनत का एक जागीरदार भर ही बना देगा ?

करीम भी जानता था कि सवाल अजीज के लिये आसान नहीं है। खूब सोच लेने का अवसर देने के लिये करीम चुप बैठा उस की झुकी हुई पलकों की ओर देखता रहा।

अजीज काफी देर तक सोचता रहा और फिर अपने हुक्के के तम्बाकू में एक दियासलाई दिखाकर हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। सूने कमरे में हुक्के की गड़गड़ाहट बहुत जोर से सुनाई दे रही थी और तम्बाकू का नीला-नीला धुआं कमरे भर में फैल गया। हुक्के की सटक मुंह में लगाये अजीज ने पूछा—"जुनैद आगा की क्या राय है ?"

"जुनैद आगा सब मुसलमानों का एका चाहता है, वह अमीर से सहमत है।"

"आगा ने अमीर के लिये कोई खत दिया है ?"

"खतों के बारे तो मैं अर्ज कर चुका हूं कि अगर मैं पकड़ा जाऊं और ऐसा कोई खत या सन्देश मेरे पास निकल आये तो मेरी तो जान जायगी ही लेकिन मुझे जान की फिक्र इतनी नहीं है। ऐसी हालत में जिस काम के लिये मैं जोखिम झेल कर आया हूं, उस की राह रुक जायगी। खत-वत मैं अपने साथ कैसे रख सकता हूं !"

"ठीक कहते हो।"

"फिर क्या राय है आपकी ?" कुछ प्रतीक्षा के बाद करीम ने पूछा।

"मैं जुनैद आगा के साथ हूं। आगा जो कहते हैं, ठीक है।"

दो दिन तक अजीजखां और अब्दुलकरीम तुर्कमानिया और अफगानिस्तान की संधि के बारे में बातचीत करते रहे। इस बीच अब्दुलकरीम ने तेजेन में अजीज की स्थिति का पूरा पता लगा लिया। अजीज के सलाहकारों, उस के फौजी अफसरों और सोवियत सरकार की स्थिति भी वह जान गया। अवसर निकाल कर उस ने काजिलखां और कलूईखां और उन की फौजों को भी देख लिया। करीम हर बात

के ब्योरे में गहराई से जाता था। उस की चतुरता और सावधानी से अजीज को विस्मय होता था। अजीज ने ऐसे चतुर और समझदार आदमी अफगानिस्तान में कभी न देखे थे। अपने दरबारियों को उस ने अब्दुलकरीमखां का भेद न बताया।

दो दिन बाद अब्दुलकरीमखां सेराख की ओर चला गया।

११

अरतैक के गाव का और उस का लगोटिया यार अशीर भी दूसरे साथियो के साथ जबरन भरती मे पकड़ा गया था। उसे दूसरे तुर्कमानी साथियो से अधिक दूर, मजदूरी पर रूस के भीतरी भाग मे भेज दिया गया था। जार की सरकार टूटने पर जब दूसरे लोग लौटे, अशीर उन के साथ न लौट सका। वह कई महीने बाद, कई रेलो का चक्कर लगाता हुआ तेजेन स्टेशन पर पहुचा।

अशीर स्टेशन से शहर की ओर आ रहा था और आते-जाते लोगों के चेहरे पहचानने का यत्न कर रहा था। पहला परिचित आदमी उसे अरतैक ही मिला। दोनो मित्र यों अचानक एक दूसरे को पा गदगद हो गले मिले।

अरतैक अशीर की ओर विस्मय से देखता रह गया। अशीर रूसी मजदूरों के ढग का गहरे भूरे रग का सूट पहने था। उस के कपड़े मशीनों के तेल से चीकट हो रहे थे और पांव मे भारी-भारी फौजी बूट थे। अरतैक को अशीर का पहनावा देखकर नही, चेहरा देखकर विस्मय हो रहा था। उस का चेहरा बिलकुल बदल गया था। उस के चेहरे पर पक्कापन झलक रहा था और माथे पर अनुभव की रेखायें पड़ गई थी। उस की भोली चचल आखे भी गहरी और गम्भीर हो गई थी। तेजी से बहती, किलकिलाती जल की धारा बदल कर गहरा गम्भीर ताल बन गई थी। अरतैक देखता रह गया कि अशीर कितना बदल गया था।

अशीर को भी अरतैक का चेहरा बदला हुआ जान पड़ा। अरतैक

के चेहरे पर पहले की सी उलझन न थी। उस के चेहरे पर भी निर्भयता और आत्मविश्वास झलक रहा था, आंखें अधिक चमकीली और सजीव हो गई थीं। अरतैक एक रेशमी चोगा पहने था। कमर में एक ढीली पेटी से तलवार लटक रही थी और हाथ में एक मैगजीन-राईफल थमी थी। सब से अधिक विस्मय हो रहा था अशीर को अरतैक के कंधों पर हरे रंग के हिलाल और तारे के निशान देख कर। उसी ओर देखते हुये अशीर ने पूछा—"तुम किस फौज में भरती हुये हो ?"

अशीर की बात से अरतैक को अचम्भा हुआ। अशीर ने पहले न मित्र की बाबत, न अपने और उस के घर-बार की बाबत, न गांव की बाबत और न ढोर-डंगर के बारे में ही कुछ पूछा। अरतैक के जेल से लौटने और ऐना के बारे में भी कोई बात नहीं! सीधे यही प्रश्न, किस फौज में भरती हुये हो? उस ने उत्तर दिया—"अजीज की फौज में हूं ?"

"अजीजखां की फौज !" लम्बी यात्रा से थकी आंखें झपक कर अशीर बोला, "अजीजखां किस फौज में है ?"

"अजीजखां की अपनी फौज है।"

"किन लोगों के साथ है वह, किस वर्ग (जमात) के साथ ?"

इस प्रश्न से अरतैक को और भी हैरानी हुई। अशीर का ढंग भी मित्रों जैसा नहीं, कुछ संदेह भरा और अफसराना भी था। उस बात की उपेक्षा कर अरतैक ने साफ-साफ जवाब दिया—"वर्ग से तुम्हारा क्या मतलब ? वर्ग मैं नहीं जानता। अजीज तुर्कमानी जनता के साथ है।"

"तुर्कमानी जनता के साथ या तुर्कमानी जागीरदारों के साथ ?"

"मेरा तो खयाल है कि जनता के साथ।"

"तो तुम ने यह कंधे पर निशान कैसे लगा रखे हैं ?"

"क्यों, क्या निशान लगाना मना है ?"

"नहीं, यहां दूसरे निशान होने चाहिये थे।"

"लाल फौज के ?"

"हां।"

"जब तक लाल फौज का कमाण्डर कुलीखां रहेगा, लाल फौज का निशान मैं नहीं लगा सकता।"

"मुझे अफसोस है!"

"क्यों?"

"हम तुम एक मां-बाप के बेटे न सही पर एक ही जमात की औलाद थे।"

"तुम क्या समझते हो. तुम ने अपनी पोशाक बदल दी है तो जनता भी बदल गई है?"

"सवाल पोशाक का नहीं, दिल का है।"

"तो क्या यह निशान ही मेरा दिल है।"

"अरतैक, हम लोगों ने जार की सरकार के खिलाफ बगावत क्यों की थी? तुम ने जेल किस लिए काटी थी?"

"जुल्म का विरोध करने के लिये।"

"तो फिर लाल निशान छोड़ कर हरे निशान क्यो लगाये हो?"

"मैं कह चुका हूं, कुलीखां के निशान मैं नहीं लगाऊंगा।"

"लाल निशान कुलीखां के नहीं हैं, वह जनता के निशान हैं।"

"तेजेन में तो ये कुलीखां के ही निशान हैं।"

"खैर, मुझे नहीं मालूम कि अजीजखां अब क्या कर रहा है। पहले तो वह जनता के ही साथ था। लेकिन मुझे तो लाल निशान छोड़ दूसरा कोई निशान सुहाता नहीं।"

"अशीर, लाल-हरे रंग के निशानों का झगड़ा बाद में होता रहेगा। चर्नीशोव से इस बारे में मेरी बात हो चुकी है। आओ पहले चाय पियें, तुम जरा सुस्ता भी लो।"

दोनों मित्र अन्ना की काफिला सराय में अजीजखां के डेरे पर पहुंचे। यहां तोंद बढ़ाये, चिकने-चिकने चेहरे के लोगों को धीमी और भद्दी चाल से सहन में आते-जाते देख अशीर को भला न मालूम हुआ। अजीजखां भी दिखाई दिया। अशीर की पोशाक देख अजीज के माथे पर त्योरी

पड़ गई । अशीर के बैठते ही वह अरतैक की ओर देख बोला—"यह कौन आदमी है ?"

"मेरा एक दोस्त, अशीर साहत ।"

"क्या करता है ?"

"जबरन मजदूरी से छूट कर अभी लौटा है ।"

"हूं ।"

"तुम भूल गये, पिछले साल की बगावत में यह मेरे साथ ही तुम्हारे यहां आया था ।"

"अब तुम ने याद दिलाया, पहचान लिया ।" अजीज ने उत्तर दिया, "कमबख्त जार की नौकरी ने हजारों नौजवानों को बरबाद कर दिया । कपड़े तो देखो इस के, क्या पहने हैं ! चेहरा कैसा पीला हो रहा है ! मालूम होता है जैसे मुसीबत के दिन काट कर लौटा है । तसल्ली रखो भैया, यही गनीमत है कि जिन्दगी बच गई, हाथ-पांव सलामत हैं । सब ठीक हो जायगा ।"

अरतैक अशीर को अपने व्याह और ऐना की बातें सुनाता रहा । अतैरी बहरी की बातें सुन कर वह खूब कहकहा लगा कर हंसा । बहुत देर तक तो अरतैक अशीर के घर-बार की खबर टालता रहा लेकिन बाद में उसे बताना ही पड़ा कि अशीर की पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी । इस खबर से अशीर को बहुत दुख हुआ । वह साल भर से अपनी पत्नी से मिलने की आस लगाये बैठा था । जबरन भरती के समय अपने घर के लोगों से मिलने का भी समय उसे न मिला था । अशीर बहुत देर तक सिर झुकाये उदास बैठा रहा । अरतैक उसे सांत्वना देने का यत्न करता रहा ।

अशीर अरतैक को सुनाने लगा कि उसे इवानोव भेजा गया था । उसे एक मामूली मजदूर की तरह कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी । वहां कुछ साथी मिले जिनसे बातचीत होने पर उसे देश और दुनिया की हालत का पता लगा ।

"अरतैक, इस से पहले मैं कुछ समझता न था। हम लोगों ने यहां बे लोगों के खिलाफ बगावत की, हुआ क्या? सौ-पचास लड़ मरे, पचासों चुपचाप बैठे रहे। कुछ बे लोगों का पैसा खाकर उन की ओर हो गये, कुछ हम लोगों से ही लड़ मरे। रूस में ऐसी बात नहीं है। वहां किसान-मजदूर खूब संगठित हैं।"

"कैसे? क्या मतलब?"

"उन लोगों में संगठन और दृढ़ता है।"

"साल भर में तुम नई बातें और नई जुबान सीख आये हो। मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया।"

"मैं साल भर और रहता तो रूसी बोलना भी सीख जाता। अब मेरे दिल में जबरन भरती में भेजे जाने का कोई कलख नहीं और न वहां कड़ी मेहनत करने का। घर-बार का खयाल न होता तो अभी साल-दो साल और वहीं रह जाता। हम लोग अनपढ़ हैं, बोली भी नहीं जानते इसीलिये तो मुतरज्जिम (अनुवादक) हमारा खून पीते रहे।"

"तुम मुझे कुलीखां से मित्रता न करने के लिये कोस रहे थे; क्या कुलीखां मुतरज्जिमों से भला आदमी है?"

"वह बात ही दूसरी है।"

"अशीर, अभी यहां सैकड़ों ऐसे आदमी हैं जिन्हें ठिकाने लगाना होगा। कुलीखां है, अल्लनजर बे है। मैं अजीजखां से कुछ दिन की छुट्टी लिये लेता हूं। एक साथ गांव चलेंगे। वहां अपने पुराने मित्रों से मिलेंगे और अल्लनजर बे को भी अपना सलाम कह लेंगे।"

"बहुत ठीक रहेगा अरतैक, मैं उसे जरूर सलाम कर लेना चाहता हूं।"

अरतैक अजीजखां से छुट्टी मांगने गया तो खान ने उसे चेतावनी देकर कहा—"देखो, देहात में कुछ गड़बड़ी न हो! अभी सब्र करो!" अरतैक बात टाल गया। अपने मन की बात उस ने न कही।

दोनों मित्र एक काफिले के साथ गांव की ओर चल दिये। राह उजाड़ सपाट मैदानों में से होकर जाती थी। ऊंटों के चौड़े-चौड़े पांव के

दुरमत पड़ने से सड़क समतल हो गई थी और हवा उसे बुहार कर साफ किये दे रही थी।

अशीर इस सड़क पर चलता दूर-दूर तक नजर दौड़ाता हुआ सोचता जा रहा था—सड़क पर बाइसिकल कितने मजे में चल सकती है और सफर कितनी आसानी से और जल्दी पूरा हो जाता। एक बात की ओर उस का ध्यान बार-बार जा रहा था कि रेल के स्टेशन से सड़क के किनारे-किनारे तुर्कमान लोगों की छोलदारियां लगातार फैली हुई थी। इन में कज्जाक लोगों की छोलदारियां भी काफी थीं। यह लोग नये-नये आकर बसे जान पड़ते थे; जैसे रात भर जोर की बरसात के बाद अचानक मैदान में झुण्ड के झुण्ड धरती के फूल (कुक्करमुत्ते) उग आये हों। राह में भूख से सूखे शरीर, थके-मादे किसानों के झुण्ड शहर को ओर आते मिलते थे। चारों ओर आंखें दौड़ाने पर कही भी घास या हरी झाड़ी दिखाई न देती थी। रेतीले मैदानों में पनपने वाली कांटेदार झाड़ियां भी कुम्हला कर धरती पर बिछकर सूख गई थीं। जुते हुये खेतों में धूल की आंधियां चल रही थीं और मोटे-मोटे पहाड़ी कौए इन खेतों में से अनाज के बीज अपनी फौलादी चोंच और पंजों से खोद-खोद कर चुग रहे थे। मनुष्य और पशु भूख से सूख रहे थे परन्तु कौवे मुटा रहे थे। जगह-जगह लाशें बिखरी रहने के कारण उन्हें खुराक की कमी न थी। काफिला मीलों सफर कर चुका था परन्तु एक भी घुड़सवार राह में न मिला। आखिर अशीर को सड़क पर खूब दूर धूल का बादल-सा दिखाई दिया। फिर सुमों की आहट सुनाई दी और दो घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ाते हुए काफिले के पास से निकल गये। एक सवार दोहरा लाल चोगा पहने ऊंचे घोड़े पर सवार था। दूसरा सवार भी भारी शरीर का मोटा सा आदमी था और एक चितकबरी घोड़ी पर सवार था।

घुड़सवारों के बगल से निकल जाने पर अरतैक ने उन्हें पहचान लिया। उसने तुरन्त घूम कर अपनी राइफल उठा ली और घुड़सवारों पर निशाना साधा। वह राइफल का घोड़ा दबाने को ही था कि अशीर

ने हाथ बढ़ा राइफल खींच ली और पूछा—"यह कौन है इतनी शान में ?"

"तुम क्या समझते हो !" बड़े यत्न से अपना गुस्सा रोक अरतैक ने उत्तर दिया, "इस बरस देहात के कौए ही नहीं मुटा रहे, शहरों में जिन्दा गरीबों को नोच कर खाने वाले गिद्ध भी मुटा रहे है। यह थे तुम्हारे लाल निशान के सरदार !"

"लाल फौज के सरदार ?"

"हां, कुलीखां और केलुईखां !"

इस के बाद दोनों मित्रों में कोई बात न हुई। दोनों सिर झुकाये थके-मांदे कदम-कदम चलते गये। गांव पहुंच कर अरतैक मुराद की छोलदारी में और अशीर अपने परिवार की छोलदारी में चला गया।

अशीर की मां दूर से बेटे को पहचान न सकी। हैं, यह कौन रूसी हमारे यहां घुसा चला आ रहा है ?...अशीर की मां सोच रही थी। उसी समय अशीर पुकार उठा, "मां !"

बुढ़िया का शिथिल शरीर कांप उठा और उस की धुंधली हो गई आंखों में आंसू छलक आये।

"मेरा बच्चा, अशीरजान !" वह बार-बार चिल्लाने लगी और बेटे को बांहों में ले सीने से चिपटा लिया। मन का पहला आवेग शान्त हो जाने पर मां आंखों से आंसू बहाती अपनी दुख की कहानी, अपनी बहू की मौत की बात सुनाती रही। मां ने रो-रो कर सुनाया—"जब तुम्हें पकड़े लिये जा रहे थे, मै दौड़ कर अलनजर बे के यहां गई और उस के पांव छू-छू कर मैंने दुहाई दी—मेरा एक ही बेटा है, मालिक रहम कर ! मेरा बेटा मुझे बख्श दे ! बे ने एक न सुनी।" मां की आंखों में दुख के आंसुओं की जगह आनन्द के आंसू बह रहे थे।

"बेटा, अल्लाह ने तुझे मेरी गोद में लौटा दिया। अब दुनिया में मेरी कोई साध बाकी नहीं...।"

१२

अरतैक तडके ही कुछ खाकर घर से निकल पड़ा। आकाश में कराकोरम के रेगिस्तान से उठने वाली रेत की घटाओं जैसे उजले-उजले बादल रुई के बड़े-बड़े लोदों की तरह सूर्य की किरणों में चमकते हुये उड़ रहे थे। हवा के झोंके मुख पर लगते तो कुछ ठंडी-ठंडी सीलन सी अनुभव होती। हवा सड़ती हुई लाशों की दुर्गंध से बोझल हो रही थी। अरतैक खादिम बाबा की छोलदारी की ओर चल पड़ा।

खादिम ऊखली में बिनौलों की खली कूट रहा था और सिर झुकाये सोचता भी जा रहा था। खली में से उड़ती पीली-पीली भूसी खादिम की पलकों और दाढ़ी पर जम गई थी। उस का चेहरा भी बिनौले की खली जैसा ही जान पड़ रहा था। जान पड़ता था जैसे कब्र से उखाड़ कर निकाला हुआ चेहरा हो। जब वह पलकें उठा सामने देखता तो उस की आखें पीड़ा और घृणा से पथराई हुई सी जान पड़तीं। अरतैक को देखकर भी वह उत्साहित और प्रसन्न न जान पड़ा। उस की घरवाली 'बीबी' की आयु तीस बरस रही होगी परन्तु वह भी बुढ़िया जान पड़ती थी। बीबी के चेहरे पर भी घोर निराशा और उपेक्षा जमी हुई थी। उन की सात-आठ बरस की लड़की केवल बांस की कमचियों का ढांचा भर दिखाई देती थी। उस का रंग भी सूखे कुम्हड़े की तरह पीला हो रहा था। इस परिवार की अवस्था देख अरतैक का कलेजा मुंह को आने लगा।

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—इन लोगों के लिये क्या किया

जाय ? इनकी क्या मदद की जा सकती है···?

उसी समय पड़ोस से अलनजर बे की अकड़ भरी आवाज और उस के घोड़े मालकौश की हिनहिनाहट सुनाई दे गई। अरतैक के कलेजे में घृणा और हिंसा की आग भड़क उठी—अभी जाकर इस कमबख्त से कहूं, अगर तुझे जान प्यारी है तो एक ऊंट बोझ गेहूं फौरन खादिम बाबा के घर पहुंचा। उसी समय ख्याल आया—अगर मैं न जाकर कहूं और बे खादिम बाबा के यहां एक ऊंट गेहूं पहुंचा ही दे तो क्या होगा ? दूसरों का क्या होगा ? एक खादिम बाबा का ही तो सवाल नहीं है।

"खादिम बाबा," उदास स्वर में अरतैक बोला, "कहो क्या हाल है ?"

शायद खादिम अरतैक की सहानुभूति का भाव समझ न पाया। दुखी आदमी चिड़चिड़ा हो ही जाता है। "हमारा क्या हाल है ?" खादिम ने चिढ़ कर उत्तर दिया, "हाल है उन का जो समूर की टोपियां, लाल चोगे और काले चमकदार बूट पहन कर अकड़ते फिरते हैं। या तो दुनिया के फिक्र हमें छोड़ जायेंगे या हम ही दुनिया को छोड़ जायेंगे।" पल भर अरतैक की ओर देख वह फिर बोल उठा, "ऐसे भी आदमी हैं जो कन्धों पर निशान लगाये, कमर में तलवार लटकाये अकड़ते फिरते हैं।" और वह कहकहा लगा कर बदहवास की तरह हंस उठा !

खादिम की पागलपन की बातें और हंसी अरतैक के दिल में बर्छी की तरह धंस गई। पीड़ा से उस का कलेजा जोर से धड़कने लगा। अपना लाल चोगा उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उस के शरीर की लपटें उठ रही हों, उस का शरीर झुलसा जा रहा हो। वह खादिम की छोलदारी से झपट कर निकल गया परन्तु खादिम का कहकहा उस का पीछा करता रहा। वह कहकहा हिचकियों और रोने की चिल्लाहट में बदल गया। अरतैक का हृदय असह्य पीड़ा से उस के हाथों से निकला जा रहा था।

अरतैक छोलदारियों की कतार के सामने से चला जा रहा था। छोलदारियों के सामने के चूल्हे और अंगीठियां सूनी पड़ी थीं। इस बरस

इन चूल्हों और अंगीठियों में आंच जलाई नहीं जा रही थी। चूल्हे और अंगीठियां उखड़ी और चिटकी हुई थीं। कहीं-कहीं इन चूल्हों में चीटियों और दीमकों ने भिटे बना लिये थे। अरतैक इस उजड़ी, शोक मनाती बस्ती को देखता जा रहा था। उस के कानों में खादिम के कहकहे और आंसू भरी हिचकियां गूंज रही थीं। वह समझ नहीं पा रहा था—कहां जाये, क्या करे ? सामने कच्ची दीवारों पर बनी एक झोपड़ी पर उस की आंख पड़ी। कुछ लोग इस दीवार की टेक लिये घाम सेक रहे थे।

दीवार के सहारे घाम में बैठे लोगों ने अरतैक को पहचान कर सलाम किया। इन लोगों के स्वर में कोई शिकायत या शत्रुता का भाव न था परन्तु अरतैक को उन की उदास और निराश आंखें कहतीं हुई जान पड़ीं—दोस्त, पिछले साल तुम भी हमारे साथ इस झोपड़ी में पड़े थे। तुम्हीं ने तो आजादी, इन्साफ और जुल्म का मुकाबिला करने की बातें करके हमारे दिलों को बेचैन कर दिया था। अब तुम भी अफसर बन बैठे, कन्धों पर निशान लगा कर। शायद तुम हम पर रोब जमाने आये हो !

क्यों मैंने यह चीथड़े लाद लिये हैं ! यह पोशाक पहन कर यहां गांव में क्यों आया ! अशीर ने ठीक ही किया, उसे मैंने कपड़े बदलने के दिये तो उस ने नहीं बदले। मैंने क्या मूर्खता की ··! वह अपने कीमती कपड़ों की परवाह न कर उन लोगों के बीच धरती पर जा बैठा।

चरखेज ने अपना लबादा उतार अरतैक के लिये बिछाते हुये कहा—"यह लो, तुम इस पर बैठो। धूल में तुम्हारे कपड़े खराब हो जायेंगे।"

अरतैक को चरखेज की बात में व्यंग और अपमान मालूम हुआ। खिन्न हो कर बोला—"चरखेज आगा, मेरे कपड़ों पर मत जाओ ! मैं वही पुराना अरतैक हूं। मेरा दिल तो नहीं बदल गया।"

उसी समय अशीर भी आ पहुंचा। लोग उसे देख खुश हो कर उठ खड़े हुये। अशीर के कपड़े उन लोगों को भी विचित्र जान पड़े। वे उस से मजाक करने लगे—"अशीर, तुम तो पूरे-पूरे रूसी बन गये।"

"हम ने समझा था कि चर्नीशोव ही आ रहा है ।"

"हम ने तो समझा कि रेल का गार्ड आ रहा है ।"

"कारखाने का मजदूर लगता है ।"

"मैं रूसी बन गया तो कौन बड़ी बात है ?" हंस कर अशीर बोला, "तुम अरतैक को देखो, वह तो खान बन गया है ।"

अरतैक पहले ही चिढ़ा बैठा था, बिगड़ कर बोला—"अब यह बकवास बन्द करो ।"

"देख लो, अभी से रोब जमा रहा है ।" अशीर और भी हंस दिया ।

अरतैक गम्भीर हो गया—"तुम्हारा मतलब क्या है, साफ-साफ क्यों नहीं कहते ! तुम लोगों की मुसीबत की बात कह रहे हो । संगठित होने को कहते हो तो आओ चलो, हम तुम्हारे पीछे हैं । तुम से नही हो सकता तो मेरे पीछे आओ ।"

"तुम्हारी बात मैं समझा नही ।" अशीर उस की ओर देख कर बोला, "मैं सदा तुम्हारे पीछे साये की तरह चला हूं, अब भी तैयार हूं । यह सब लोग भी तैयार हैं और अब तो तुम अफसर हो ! हुक्म करो, सब लोग तैयार हैं ।"

अरतैक क्रोध में कांप उठा । वह चाहता था अशीर को और कड़ी बात कहे । उस के होंठ और हाथ फड़क उठे । आस-पास बैठे लोग पहले मजाक से खुश हो रहे थे परन्तु बात बिगड़ती देख गम्भीर हो गये । बीच में बोल कर चरखेज ने बात बदली—"अशीर, तुम रहे कहां बरस भर ? क्या-क्या देखा सुना ?" फिर अकाल की बात चलने लगी कि इस मुसीबत के समय किसानों की सहायता कैसे हो सकती है ।

"अगर कुछ लोग तैयार हो तो राह मैं बताता हूं ।" अरतैक बोला ।

"हम लोग सदा तुम्हारे पीछे रहे हैं और अब तो तुम जो कहो !" कई आदमी एक साथ बोल उठे ।

"गल्ले के लिये दूर जाने की जरूरत क्या है ! गल्ला तो साल भर के लिये यहीं मिल सकता है ।"

लम्बी-लम्बी भवों वाला बूढ़ा तैयारी से उठ कर बोला—"यहीं हो जाय तो हम लोगों की जान बच जाय ! बताओ कहां है गल्ला ?"

"गल्ला और कहां होगा ! अलनजर की खत्तियों में खूब भरा है ।"

"अलनजर ने क्या गल्ला हम से उधार लिया था कि अब लौटा देगा !" चरखेज ने पूछा ।

"अलनजर ने हमारे गल्ले की डकैती की थी, हम उस से मांगने नहीं जा रहे हैं !"

"अलनजर अजीजखां के वजीरों में से हैं ।"

वजीर नहीं वह जार हो जाये । हम चोरी से छिपाया गल्ला निकाल कर भूखों को देंगे ।"

"अजीजखां की सोच लो !"

"अशीर उठ कर खड़ा हो गया—"ठीक है दोस्तो, अरतैक हमारा पुराना मुखिया है ।" उस ने अरतैक की पीठ थपथपा दी ।

पहले कभी कोई बे लूटा न गया हो, ऐसी बात न थी फिर भी बात मामूली न थी । यह बात मजहब और शरियत के खिलाफ थी । इस्लामी रिवाज के भी खिलाफ थी । अलनजर क्या चुपचाप लूटा जाने के लिये तैयार हो जाता ! दो-चार-दस की जान जरूर जायेगी पर किसानों की जानें तो यों भी जा रही थीं । अलनजर को शायद भूखे मरते गरीबों पर तरस ही आ जाये या वह भीड़ देख कर डर जाये···। आदमी अपने घर वालों को भूखा मरने दे तो भी गुनाह है । भूखे मरे, दोजख भी जाये, इस से तो आदमी लूटने का ही गुनाह सिर ले ले । भूखे किसान यही सब बातें सोच रहे थे । कुछ बड़े-बूढ़े घबराये भी परन्तु बाकी सब लोग बे के यहां चल कर गल्ला निकलवाने के लिये तैयार हो गये । बात तुरन्त ही गांव भर में फैल गई और किसानों की भीड़ बे के खेमों की ओर चल दी ।

भीड़ के चढ़े चले आने की खबर बे के यहां पहुंच गई थी । उस ने अरतैक के कन्धों पर लगे हरे निशानों की ओर देखा और अशीर के

रूसी मजदूर के कपड़ों की ओर भी नजर दौड़ाई। भय और घबराहट से उस की भवें और होंठ थिरक रहे थे। वह बार-बार मन में सोच रहा था, क्या होने जा रहा है !

अरतैक आगे बढ़ कर बोला—"बे आगा, हालत तुम जानते ही हो। किसान एक-एक करके भूख से मरते जा रहे हैं। रोज-रोज इतने आदमी मर रहे हैं कि कब्रें खोदना भी मुश्किल हो गया है। जो आज चलते-फिरते दिखाई भी दे रहे हैं, समझ लो कल वह भी कब्र में लेट जायेंगे। सभी लोग जानते हैं तुम बड़े दयालु हो, इसीलिये सब लोग तुम से मदद मांगने आये हैं। अगले साल साल फसल पर हम तुम्हारा गल्ला दाना-दाना चुका देंगे। देखो तो इन लोगों की तरफ, क्या हालत हो रही है सब की !"

जमाना बदल चुका था। एक साल पहले लोग ऐसा साहस करते तो बे भीड़ को गाली दे दुत्कार देता—भाग जाओ यहां से, यह गल्ला तुम्हारे बाप का है ! और गोली चला कर इन्हें भून डालता परन्तु इस समय उसे दूसरे ही ढंग से बात करनी पड़ा—"भैया, मैं क्या नहीं देख रहा हूं ! पर कहीं धरती में से गल्ला निकल सकता है। इतना ही मेरे बस में होता तो मैं भला लोगों को दुखी होने देता। बांटता और आसीसें लेता। मेरे पास है ही क्या ! मेरे पास तो जो कुछ था, कभी का बांट चुका। अब तो सब मिला कर एक बोरी गेहूं भी न निकलेगा। इतना अगर बांटने भी लगूं तो चार-चार दाने भी हिस्से न पड़ेंगे। अब सब भाई आये हैं तो क्या करूं ! जो पाव-आध सेर है, सभी को बराबर बांट देता हूं। न होगा थोड़ा खली में ही मिला कर काम आ जायेगा।"

अरतैक अभी तक मुस्कराहट बनाये था परन्तु बे की बात सुन कर उस के माथे पर बल पड़ गये। बे की ओर घूर कर उस ने कड़ी आवाज में कहा—"यह लोग भिखमंगे नहीं हैं। पाव-आध सेर की भीख मांगने नहीं आये हैं। यह लोग गल्ला वापिस लेने आये हैं जो तुम ने पिछले साल झपट लिया था। तुम सीधे-सीधे देते हो तो ठीक ही है, अगर

अड़ियल टट्टू की तरह अड़ोगे तो हम उसी तरह इन्तजाम करेंगे ।"

"भैया, मैं तो कह चुका कि मेरे पास होता तो मांगने की जरूरत ही न पड़ती । कसम न खिलाओ, मेरी बात मानो ! मेरे यहां गल्ला है ही नहीं ।"

"बे आगा, बात बहुत हो चुकी, चलो खत्ती का दरवाजा दिखाओ ! हम लोग खुद ही देख लेंगे ।"

बातों से काम न बनते देख अलनजर ने तौर बदले । धमका कर बोला—"जबान सम्भाल कर बोलो ! कौन हो तुम लोग मेरा गल्ला लेने वाले ! मेरे भी दो हाथ हैं, मेरा नाम अलनजर है, कुछ और न समझ लेना । कन्धों पर दो फीते क्या लगा लिये हैं, तुर्रमखां बन बैठे हो । बहुत जबान चलाओगे तो यह निशान-विशान झड़वा कर रख दूंगा ।"

अशीर भीड़ में से आगे बढ़ आया और अलनजर की ओर घूर कर बोला—"ओहो, बहुत झाड़ना जानते हो ! पहले मेरे ही कपड़े झाड़ लो ।"

अशीर ने अपना तेल से चीकट कोट उतार कर बे के मुंह पर दे मारा । कोट में भरे गर्द और तेल की बू से बे को जोर की छींक और खांसी आ गई । इस अपमान से क्रुद्ध हो वह अशीर पर झपटा परन्तु अशीर ने उस से पहले ही एक घूंसा जोर से उस के मुंह पर दिया । अलनजर ने खेमे के कोने से लाठी उठाई परन्तु अरतैक ने लाठी उस के हाथ से छीन ली । अशीर फिर उस की ओर झपटा परन्तु इस बार चरखेज ने उसे थाम लिया । बे सहायता के लिये जोर से पुकार उठा—"मावेद हो ! बल्ले हो, दौड़ो !"

बे की चीख-पुकार मुहम्मदवली खोजा ने अपने खेमे में सुनी । वह कपड़े उतार कर लेटा हुआ आराम कर रहा था । पुकार सुनकर एक तहमत लपेटे ही दौड़ा आया । आकर उस ने देखा—भीड़ बे को घेरे खड़ी है और उस के हाथ-पांव बांधे जा रहे हैं । यह देख खोजा चुपचाप उल्टे पांव जंगल की ओर भाग गया ।

हल्ला सुन कर बे के घर की स्त्रियां दौड़ी आईं। मेहली ने यह दृश्य देखा तो घबरा कर चीखने को ही थी कि उसे समझ आया कि लोग स्त्रियों को कुछ नहीं कह रहे हैं। यह तमाशा देख उस के ओठों पर मुस्कराहट आ गई। अतँरी बहरी को लोगों की इस हरकत पर गुस्सा आ गया। वह झपट कर अरतैक का मुंह नोच लेने को ही थी कि उस का भी विचार बदल गया—अच्छा है, जरा बे का मिजाज दुरुस्त हो जाय, बहुत चीखा करता है।

बेगम शादाब रोती हुई अरतैक से बोली—"क्या कर रहे हो बेटा, शरम नहीं आती तुम्हें! तुम्हारे बाप की उम्र का है। तुम उस की दाढ़ी नोच रहे हो। बेचारे पर रहम करो! तुम्हारा अपना घर है, भीतर आ कर बैठो, तुम्हारे खाने-पीने के लिये लाती हूं।"

मावेद भी शोर सुन खेमे की आखिरी छोलदारी से भागा हुआ आया और बोला—"हटो पीछे, खबरदार, कौन है! खबरदार अगर मेरे बाप को हाथ लगाया!"

मावेद अरतैक की ओर दौड़ा परन्तु अशीर ने उसे बीच ही में रोक उस की गर्दन दोनों हाथों में ले ली। चरखेज ने भी उसे थाम लिया। दोनों मावेद को खींचते हुये एक ओर ले गये। अशीर ने मावेद की आंखों में आंखें डाल धमका कर पूछा—"अबे बेवकूफ, यह लोग तेरे फायदे के लिये लड़ रहे हैं और तू इन्हीं पर चोट कर रहा है! सिर घूम गया है तेरा! चार बरस गुलामी करके भी तुझे होश नहीं आई!"

"तुम समझते हो मैं यहां शौक से पड़ा हूं?"

"तो क्यों पड़ा है?"

मावेद चुप रह गया। अशीर भी भेद समझ न पाया और मावेद की ओर देखता रहा और बोला—"अगर तुम हम लोगों के साथ हो तो बताओ अनाज की खत्ती कहां है?"

मावेद ने चारों ओर नजर दौड़ाई। उस के मन में बे का आतंक

अब भी दूर न हुआ था और मन में बे से बदला लेने की इच्छा भी जाग उठी।

अशीर ने उसका अभिप्राय समझ कर कहा—"कोई नही देख रहा है। भरोसा रखो मुझ पर!"

"मेरा हिस्सा मिलेगा?"

"जरूर!"

"मैं खत्ती बताये देता हूं परन्तु तुम खत्ती खोलोगे तो मैं हो-हल्ला और मार-पीट करूंगा ताकि बे को शक न हो।" माबेद ने आंख से मालकौश के बंधने की जगह की ओर इशारा कर दिया।

अशीर समझ गया। उस ने पूछा—"और कहां है?"

"मैं यही एक जगह जानता हूं। यहां भी कम नहीं निकलेगा।"

अलनजर के हाथ-पांव बांध कर ईंधन के ढेर पर बैठा दिया गया था। वह किसी भी सवाल का जवाब न दे रहा था। वह सोच रहा था—किसी तरह भाग कर अजीज के यहां पहुंच जाय लेकिन गल्ले का तो दाना भी नहीं बचेगा। अजीज अगर इन सब को कत्ल भी कर दे तो भी क्या! मैं भिखमंगा हो गया। और अजीज का भी क्या पता? एक जमाना था जब जार के कर्नल और दारोगा मेरी बात पर दौड़े आते थे। यह गांव मेरे इशारे पर नाचता था। आज सब बरबाद हो गया…।

अरतैक ने किसानों को लेकर सारे खेमे की छोलदारियां छान डालीं परन्तु अलनजर की ही बात ठीक हो रही थी। तीन बोरी से अधिक गेहूं न मिला। अतैरी ने अपने खेमे में किसी को घुसने न दिया। वह दरवाजे पर पांव जमाकर खड़ी हो गई और बोली—"यहां जो आयेगा सिर काट लूंगी!"

अरतैक अतैरी को पहचानता न था। "यह औरत कौन है? यह तो बे के घर की औरत नहीं जान पड़ती। इसे पहले कभी देखा नहीं," उस ने पूछा।

"यह वल्ले की बहू है, अतैरी ! अंगेतों की लड़की !"

अरतैक एक औरत से क्या लड़ता, क्या बहस करता ! उसे अतैरी पर गुस्सा भी आया।

"वाह, यह तब मेरी मौसी होती है।" अतैरी को सुनाकर अरतैक बोला, "व्याह हुआ तो मैं नहीं था, नहीं तो यह सम्बन्ध कभी न होने देता। वह निकम्मा आदमी ऐसी औरत के लायक है !"

अतैरी का चेहरा बदल गया। दरवाजा छोड़ कर एक ओर हो वह बोली—"अरे भाई, भांजे के तो सात गुलामों को भी जगह देनी होती है। आओ, आओ बैठो !" स्वयं ही उस ने छोलदारी के दरवाजे का परदा उठा दिया।

अरतैक भीतर गया और एक नजर में चारों तरफ देख कर बोला—"अच्छा मौसी, जरा बाहर के लोगों से निबट लूं, फिर बैठ कर बातचीत होगी !"

किसान छोलदारियों के आसपास, गढ़ों में और ऊंटों के बंधने की जगह लाठियों से ठोक-ठोक कर छिपी हुई खत्ती खोज रहे थे। अशीर घूमता हुआ मालकौश के थान पर पहुंचा और जगह-जगह जमीन ठोक कर टोहने लगा। एक जगह पोल सुनाई दी। खोदने पर यहां खूब बड़ी खत्ती निकल आई।

किसानों ने जगह घेर ली और फावड़े-बेलचे लेकर खत्ती खोदी जाने लगी। यह देख बे आपे से बाहर हो गया। एक झटके से उस ने अपने हाथों की रस्सी तुड़ा ली और एक तलवार उठा भीड़ पर झपट पड़ा। गल्ले का नुकसान उसे अपने खून का नुकसान जान पड़ रहा था। बे की तलवार अरतैक के सिर पर पड़ती परन्तु अशीर ने एक हाथ बे की कमर में डाल कर उसे उठा धरती पर पटक दिया।

मावेद बे की मदद के लिये दौड़ा परन्तु लोगों ने उसे भी पकड़ कर बांध कर एक ओर बिठा दिया। घर की औरतें रोती हुई आईं और बे को लाश की तरह उठा कर भीतर ले गईं। अतैरी अशीर पर झपटी

और उस का मुंह नोचने लगी। अशीर ने उसे कमरबंद से उठा कर नीचे पटक दिया। चोट खा कर वह ऐसे चिल्लाने लगी जैसे उस के गले पर छुरी रखी जा रही हो!

चरखेज ने बीच-बचाव किया—"अरे क्या कर रहा है? उस का पेट गिर जायेगा। क्यों गुनाह सिर लेता है, छोड़ दे इसे!"

गल्ले से भरी खत्ती देख कर किसानों की आंखें ऐसे चमक उठीं जैसे बच्चे मिठाई को देख कर किलक उठते हैं। महीनों से दबी उन की भूख भड़क उठी और आंतें कुलबुलाने लगीं। स्त्रियां और बच्चे बोरियां ले कर दौड़ पड़े। खादिम बाबा की घरवाली और लड़की दो बोरियां और दो चादरें लेकर आईं।

खादिम अरतैक की ओर उंगली उठा कर बोला—"भैया अरतैक, भूलना नहीं! सांझे हिस्से के साथ बे के यहां से मेरा और भी निकलता है।"

"खूब याद है बाबा।" अरतैक ने उसे विश्वास दिलाया, "तुम्हारा दोहरा हिस्सा रहा।"

खत्ती के चारों ओर मेला सा लग गया। अरतैक ने भीड़ को चुप रहने और बारी-बारी से आकर अपना हिस्सा लेने के लिये कहा। वह स्वयं खड़ा हो हिस्से बंटवाने लगा।

अलनजर अपनी छोलदारी में लेटा अनाज पाने वालों की प्रसन्नता भरी किलकारियां सुन रहा था। उस के कलेजे पर छुरियां चल रही थीं। इसी खत्ती पर उसने बड़ी आस बांधी थी। सोचा था, एक-एक बोरी गेहूं की कीमत एक-एक ऊंट लेगा और दो पसेरी पर एक कालीन! किसी को सेर भर भी देगा तो चांदी का गहना रखवा लेगा। उस का इरादा था कि शहर में एक बड़ी दूकान खोल कर एक आटे की चक्की लगायेगा। रुई बेलने का एक कारखाना भी वह खोलना चाहता था लेकिन खत्ती लुटी जा रही थी···।

उस से रहा न गया तो फिर उठा। एक पेंसिल और कागज का

टुकड़ा ले वह खत्ती के पास जा खड़ा हुआ। गल्ला पाने वाले सभी लोगों को वह चेहरे से पहचानता था। वह कागज पर सब का हिसाब लिखता जा रहा था—मौका आयेगा तो पूरा-पूरा वसूल करूंगा।

गल्ला हर घर के आदमियों के हिसाब से बट रहा था। अरतैक ने अपना हिस्सा नहीं लिया। उस ने कहा—"मैं अपने चाचा के यहां खाता-पीता हूं, मुझे अलग हिस्से की क्या जरूरत ?" अशीर को उस ने जबरन मजदूरी की भरती के इनाम में और नये जोड़े कपड़े खरीदने के लिये दूना हिस्सा दिया। इस पर किसी को आपत्ति थी तो केवल अलनजर को।

खत्ती में से साठ ऊंट के बोझ का गल्ला निकाला। गांव के किसानों आफत टल गई। सब को हिस्सा मिल जाने पर अरतैक ने मावेद के लिये भी एक हिस्सा बचा लिया था। इस पर भी अलनजर बे ने आपत्ति की—"यह किस का हिस्सा है ?"

अरतैक ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"बे आगा, यह खुदा के नाम का है।"

१३

अरतैक की उजड़ी सी छोलदारी ऐना के आ जाने से आबाद और गुलजार हो गई। लम्बी काली छोलदारी बाहर से देखने में बहुत लम्बे, काले तरबूज की तरह दिखाई देती थी पर भीतर से तरबूज के गूदे की तरह रंगीन थी। छोलदारी का फर्श, दीवारें और छत सब बढ़िया कालीनों से मढ़े थे। बीचोंबीच एक कीमती कालीन था और अंगीठी के समीप बैठने की जगह पर भी रेशमी गद्दियां सजी हुई थीं। जहां-तहां रखे हुये झोले और थैलों पर भी कढ़ाई का बढ़िया काम था। ऐसा जान पड़ता था, बाग और चमन अपने फूल ले कर यहां होली खेल गये हों। छोलदारी की इस शोभा की जान थी—रेशमी पोशाक पहने ऐना। उस के सिर पर भी रेशमी रुमाल बंधा रहता। माथे पर सुनहरी पटिया थी। पटिया से लटके छोटे-छोटे लटकन उस के माथे पर झूलते रहते। अरतैक के लिये सब से बड़ा संतोष यह था कि छोलदारी की सब सजावट, कालीन और कसीदा ऐना के ही हाथों का बना हुआ था।

ऐना सुन्दर तो यों भी थी परन्तु नवेली बहू की पोशाक ने उसे और दमका दिया। अरतैक उस की अदाओं को देखता रह जाता। उस की चाल-ढाल में एक अदभुत कोमलता और लोच थी। उस का चाय के लिये समावार सजाना, चायदानी से प्यालों में चाय उड़ेलना ऐसे हल्केपन और सफाई से होता कि देखते ही बनता। उस के चलने की आहट भी सुनाई न देती और कभी कोई चीज उस के हाथ से गिर कर या धक्के से भी अपने स्थान से हिल न पाती। उस की सफाई भी प्रशंसा

के लायक थी। छोलदारी में कभी गंदगी या गड़बड़ न दिखाई देती।

ऐना का प्रभाव अरतैक की मां नूरजहां पर भी पड़ा। आराम, सफाई और सुघड़पन से वह भी पहले से जवान जान पड़ने लगी। बेटे और बहू के सुख और संतोष से उस के भी ओठों पर मुस्कराहट बनी रहती। उस के निराश और अंधेरे जीवन में फिर से सुख-संतोष की किरणें चमचमा उठीं। शाकिरा पर भी ऐना का असर कम न था। अपनी नई रेशमी पोशाक में वह भी खूब फबती थी। वह अब पहले से कुछ गम्भीर हो गई थी। जवानी का आभास उस पर झलकने लगा था। ऐना उसे कसीदा सिखा रही थी। शाकिरा छोलदारी के एक कोने में बैठी घंटों कसीदा काढ़ने में मन लगाये रहती। पड़ोसियों पर ऐना के प्रभाव का नूरजहां को अभिमान था। पड़ोस की स्त्रियां और लड़कियां उस से बात-बात में सलाह लेतीं और ऐना के बनाये कालीन और कसीदे नमूने के तौर पर गांव भर में फिरते रहते। स्त्रियां प्रायः उस से कालीनों के रंगों के मेल और फूल डालने के बारे में राय ले जातीं।

ऐना अरतैक के लिये चाय बना कर लायी तो उस के पास ही बैठ गयी। अरतैक उस के गालों में पड़ते गढ़ों को देखता रह गया।

"तुम तो ज्यादातर बाहर ही रहते हो।" लजाते हुये ऐना बोली।

चाय समाप्त कर प्याला एक ओर रखते हुये अरतैक ने उत्तर दिया—"जानता हूं तुम्हें बुरा लगता है। मुझ भी यह अच्छा नहीं लगता पर क्या करूं?"

"बात क्या है?"

"क्या बताऊं? आजकल बड़ा विकट समय है, रोज उलझनें पैदा हो रही हैं। सब बातें इस समय शहर में हो रही हैं। वहीं उलझा हुआ हूं।"

"अरतैक जान, क्या शहर में घर से अच्छा लगता है?" ऐना ने पूछा।

ऐना का कोमल हाथ अपने हाथों में ले अरतैक ने उत्तर दिया—

"अच्छा तो क्या लगता है ! मैं चाहे जो करूं, जहां रहूं पर दिल मेरा यहां तुम्हारे पास ही रहता है ।"

"यह तो है परन्तु तुम यहां ही रहते तो अधिक अच्छा होता ।"

"ऐना, अगर मैं जनता के काम छोड़ कर यहां आ बैठू तो बिलकुल बे जैसा घर-घुस्सू आदमी बन जाऊंगा ।"

"हाय, यह तो मैं नहीं चाहती हूं । मै तो चाहती हूं तुम्हारा नाम हो, तुम बड़े-बड़े काम करो ! यह देख कर मेरा सिर ऊंचा हो जाता है कि गांव भर के लोग तुम्हारी इज्जत करते हैं पर दिल तो चाहता ही है तुम मेरे पास रहो ।"

ऐना के विचार अपने ही जैसे होने से अरतैक को संतोष होता कि वह किसी भी विषय में ऐना से बात कर सकता था । घर पर रहने की बड़ी इच्छा थी । परन्तु घर पर बैठा रहता तो जिन्दगी क्या होती और ऐना की ही इच्छा कैसे पूरी होती !

चाय पीते-पीते अरतैक ने मां और ऐना को अलनजर बे का गल्ला छीन कर किसानों में बांट देने की बात सुनाई । नूरजहां घबरा गई—"हाय बेटा, यह तूने क्या किया ! शरियत में तो बे लोगों और मालिकों के माल को हाथ लगाना हराम कहा गया है ।"

"अम्मा, अगर किसी जान बचाने के लिये चोरी भी की जाय तो शरियत में ऐसी चोरी भी हलाल हो जाती है । और फिर हम लोगों ने चोरी कब की ! यह तो किसानों का ही गल्ला था, सो हम ने वापिस ले लिया ।"

"वाह, गल्ला अगर किसानों का ही था तो उस पर इतना झगड़ा, मारपीट, रोना-धोना क्यों हुआ ?"

"अलनजर ने हम लोगों से गल्ला छीन लिया था तो हम लोगों ने क्या गाना-बजाना किया था !"

"बे ने रुपया तो उधार दिया था लोगों को !"

"तुम्हें कितना मिला था ?"

"मुझे···मैंने तो एक पाई भी नहीं ली !"

"तो फिर तुम्हारे खेतों का गल्ला कहां गया ! मैं तो बरस भर मेहनत करके गया था, क्या कुछ भी पैदा नही हुआ ?"

नूरजहां क्या उत्तर देती ? अरतैक को बरस भर खेतों में मेहनत करते उस ने देखा ही था । यह भी वह जानती थी कि वह साल उस ने भूखे पेट ही रह कर बिताया था परन्तु वह न समझ सकती थी कि किसानों की कमाई बे ने क्यों हथिया ली थी । वह सीधी बात समझती थी, पराई चीज चाहे किसी की भी हो, छीन कर लेना हराम है । नूरजहां को इस बात से संतोष था कि खादिम जैसे गरीब आदमी अब अगली फसल तक किसी तरह मौत से बच जायेंगे । यह भी उसे याद आने लगा कि बोरियों पर बोरियां बे की खत्तियों में भरी गई थीं । उस का बुढ़ापे का लोभ जाग उठा—

"अरतैक, हमें कितना गल्ला मिला ?"

अरतैक मुस्करा दिया—अभी तो मां हलाल-हराम की बात कर रही थी और अब इसे अपने हिस्से की चिन्ता हो रही है···!

"मां, तुम और ऐना जिन्दा रहो, मेरे हाथ-पांव सलामत रहें; हिस्से की फिक्र न करो, तुम लोग भूखी नहीं रहोगी ।"

"हमें इतना मिल गया बेटा ?"

"तुम्हें जरूरत थी ?"

"जरूरत ! जरूरी चीजों की जरूरत का क्या कहना ! जितनी मिल जायें ।"

"शरियत का ख्याल नहीं है मां ?"

शरियत की बात याद आ जाने से नूरजहां ने दोनों हाथ ऊपर कर तौबा की और बोली—"नहीं भाई, हम किसी दूसरे की चीज नहीं लेंगे । सोचा था, सब को मिला है तो तुम्हें भी हिस्सा मिला होगा, इसीलिये पूछ रही थी ।"

"क्यों, अपना हिस्सा लेने में बुरा क्या था ! मैंने इसीलिये नहीं

लिया कि जो लोग ज्यादा मुसीवत में हैं, उन्हें कुछ और मिल जाय। हमारा काम तो चल ही रहा है।''

''नहीं बेटा, नही लिया तो भला ही किया। तुम्हारे पीछे मुझे फिक्र ही लगी रहती थी कि जाने का क्या अंजाम हो! तुम यह बन्दूक-तलवार और कंधों के निशान-विशान भी हटा दो बेटा। यह सब अपने मालिक को वापिस कर दो और भले किसानों की तरह चुपचाप घर में रहो। अरे, हल्ला मचाने से ही अगर कुछ होता हो तो दुनिया में तुम्हारे बिना भी हल्ला मचाने वालों की कमी नहीं है बेटा!''

''मैं ऐसा निकम्मा आदमी थोड़े ही हूं कि चादरा तान कर पड़ा रहूं और जिन्दगी बिता दूं। मां, जिन्दगी तो कुछ करने-धरने में ही है।''

''बेटा अपने घर का सा सुख-सबर मारे-मारे फिरने में कहां!''

''मां, बैठे बैल को कौन खिलाता है! बैठे रहने से सुख-सबर कहां से आ जायगा? मैं घर ही बैठा रहता तो यह बहू तुम्हें कैसे मिलती; क्यों ऐना!''

ऐना आंख झपक कर मुस्करा दी। मुंह से कुछ बोली नहीं। मां ने उसे पुकार कर कहा—''तू ही क्यों नहीं समझाती इसे? मारा-मारा फिरेगा तो तेरी क्या जिन्दगी होगी!''

''ऐना तो कहती है, यहां बैठे रहोगे तो तुम्हें कोई पूछेगा ही नहीं। पूछ लो न इस से क्या कहती है!''

''ऐना जान, सच तुम ऐसी बातें कहती हो?''

''अम्मा, बन्दूक की गोली भी बहादुर को पहचानती है, उस से बच कर निकल जाती है।''

''ओह बेटी, तो तू ही उसे बिगाड़ रही है। भाई, तुम लोग सब सियाने हो, भला-बुरा समझते हो पर बुढ़ापे में मेरा दिल बहुत घबराता है। कहीं मुसीबत में न फंस जाना! मेरा तो दम निकल जायगा…।''

१४

तेजेन लौट कर अरतैक ने देहात में अलनजर बे के यहां से गल्ला लेकर भूखे किसानों को बांट देने की बात अजीज को साफ-साफ कह सुनाई।

अजीज की आंखें क्रोध में लाल हो गई और माथे पर बल पड़ गये। "मैंने तो तुम्हें खबरदार रहने को कहा था," वह कड़े स्वर में बोला।

शान्त स्वर में, बेपरवाही से अरतैक ने उत्तर दिया—"मैंने तुम्हें कोई वचन नहीं दिया था।"

अजीज का गुस्सा भड़क उठा—"मैंने तुम्हें किस बात से खबरदारी के लिये कहा था, बोलो!"

अरतैक के चेहरे पर भी सुर्खी आ गई। उस का भी मन चाह रहा था कि डांट कर जवाब दे—मैंने जो चाहा किया, तुम से जो बन पड़ता है, तुम कर लो! परन्तु उस ने क्रोध दबा कर, भावोद्रेक से कांपते हुये स्वर में उत्तर दिया—"अजीजखां, मैं तुम्हारा साथ दे रहा हूं। इस का यह मतलब नहीं कि मैं कुछ देख-सुन नहीं सकता। मेरे भी दिमाग है। मैं मुर्दा नहीं हूं, मेरे भी अपने ख्याल हैं। अच्छा-बुरा भी समझता हूं।"

"मैं मानता हूं तुम्हारी बात···लेकिन तुम तो मेरे ही पांव पर कुल्हाड़ी चला रहे हो!" अजीज ने कुछ ठंडे होकर कहा।

"अजीजखां यह बात नहीं है।"

"कैसे नहीं है यह बात?"

"अगर मैं तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहता तो मैं कुलीखां के यहां

नौकरी कर सकता था। पिछले साल बगावत में मैंने तुम्हारा साथ दिया और मैं तुम्हारी ही फौज में आया हूं। तुम्हारे लिये मैं जान का जोखिम उठा रहा हूं लेकिन एक बात साफ है कि मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूं। यह बात साफ रहे कि मैं गरीब जनता के खिलाफ नहीं जाऊंगा। अगर तुम्हें इस बात में एतराज है तो यह है तुम्हारी नौकरी !" अरतैक ने अपनी बन्दूक और अफसरी की पेटी अजीजखां के सामने पटक दी।

अजीज ने सुर्ख आंखों से एक बार अरतैक की तरफ ताका और फिर सिर झुका लिया और सोचने लगा।···उस के भरोसे के आदमी ने ही उस का हुक्म नहीं माना था। इस मामले का तुरन्त ही पूरा-पूरा फैसला होना चाहिये वर्ना यह आदमी जाने क्या कर बैठे ? इस आदमी का क्या भरोसा ? इस से क्या फायदा ? क्रोध के कारण अजीज के मुख से बात न निकल पा रही थी। उसी समय यह भी ख्याल आया—अगर इसे मैं आज निकाल दूं और कल काजिलखां मुझे छोड़ कर चलता बने तो क्या होगा ? और यदि यह लोग मुझे छोड़ दुश्मन के साथ जा मिलें ? यह ख्याल आते ही उस का गुस्सा दबने लगा। उस ने यह भी सोचा कि अरतैक को आस-पास देहात के लोग चाहते हैं, उस की इज्जत करते हैं। ऐसा आदमी मेरा साथ छोड़ जायगा तो इस से मेरी बदनामी ही होगी। इस समय मुझे जनता की सहानुभूति की जरूरत है···इस विचार में डूबा वह बहुत देर तक चुप बैठा रहा।

अजीजखां सोच रहा था कि अरतैक और अलनजर दोनों में वह किसी को भी छोड़ नहीं सकता और दोनों को सम्भाले रहना सम्भव नहीं। वह किस को सम्भाले और किसे जाने दे ? उसे जान पड़ा, अरतैक ही अधिक काम आ सकता है। अपना गुस्सा छिपा कर वह बोला—"अरतैक, जब हमारे असल ख्याल एक हैं तो झगड़े की बात नहीं होनी चाहिये। तुम्हें यह करना था तो मुझे कह जाते; एक अलनजर क्या, मैं सौ अलनजर तुम पर निछावर कर दूं। अब तुम्हें कोई ऐसा कदम उठाना हो तो पहले मुझ से जरूर बात कर लेना ताकि मैं सब इन्तजाम

रख सकूं और मुझे तुम्हें टोकना न पड़े। अब लोग क्या कहेंगे ''कि अजीजखां तो जार से भी बढ़ कर जुल्म कर रहा है, अपने साथियों को लूट ले रहा है !''

''चार-पांच लोग ऐसा कहेंगे, जनता तो तुम्हारा एहसान मानेगी।''

''शायद तुम्हारा ही खयाल ठीक हो ! तुम लोग-बाग की बात अधिक समझते हो। फिर भी होशियार तो रहना ही चाहिये।''

उसी समय अजीज को खयाल आया—अगर अरतैक को ही अपनाना है तो यही हो। इस जिद्दी की बात ठीक भी है। एक अकेले जागीरदार को नाराज होने दे कर हजारों किसानों को अपनी ओर खींच लेना कहीं बेहतर। बे मुझे छोड़ कर जा भी कहां सकता है ? बोलशेविकों के यहां उस का गुजारा कहां ? बे का गुजारा तो हो जायगा। जरूरत तो है प्रजा को अपनी ओर समेटने की। इस मामले में मुझे दुश्मनों से पहले कदम उठाना होगा'''।

अजीज गर्दन ऊंची कर गम्भीरता से बोला—''कुछ सिपाही साथ ले लो और मेरे साथ शहर चलो। हम लोग गरीब रियाया की हालत अपनी आंखों से देखेंगे। आज शहर में ऐलान करवा दो कि जो लोग मुनाफाखोरी करके गरीब रियाया को भूखा मार रहे हैं, उन्हें अजीजखां सख्त सजा देगा।''

अरतैक को विस्मय भी हुआ और संतोष भी। यह हुक्म पूरा करने के लिये तुरन्त उठ खड़ा हुआ।

सिपाहियों की टुकड़ी से घिरे हुए अजीजखां और अरतैक तेजेन के बाजारों में घूम रहे थे। एक बाजार के सिरे पर भीड़ का जमाव हो रहा था। भीड़ की ओर इशारा करके अरतैक बोला—''यह देखो, भिखमंगों का मेला !''

आकाश में बादल छाये हुये थे। कभी-कभी बादलों की सांध से सूर्य की किरणें चीथड़ों में लिपटे लोगों के भूख से सूखे चेहरों पर पड़ जातीं और उन की भयानकता को और बढ़ा देतीं। भीड़ टुकड़ों की तलाश में

देहातों से घिर आये भूखे किसानों की थी। कुछ लोग चिल्ला-चिल्ला कर अल्लाह की दुहाई दे कर भूखे पेट के लिये कुछ मांग रहे थे। स्त्रियां और बच्चे निराश और व्याकुल हो कर चिल्ला-चिल्ला कर रो रहे थे। घुड़सवारों को देख कर भीड़ हाथ फैला चिल्लाती हुई इन लोगों की ओर दौड़ी—"हम भूख से मर रहे हैं, हमारे बच्चे मर रहे हैं। अजीजखां, हम मर गये! हमारे पेट का ख्याल करो…!"

अजीज यह दृश्य देख चुप रह गया। कुछ देर सोच कर अरतैक को समीप आने का इशारा कर वह बोला—"मैंने खुद आंखों से देख लिया, तुम ठीक कहते थे। इन कमबख्त जागीरदारों, रईसों और मुनाफाखोरों का सब कुछ लूट कर गरीबों को बांट देना काफी नहीं, इन बदमाशों को गोली मार कर सजा देना भी जरूरी है।"

अजीज ने अरतैक को हुक्म दिया—"अभी इसी समय सब गल्ले के व्यापारियों और खत्ती वालों का गल्ला, दुकानों का सब माल जब्त कर लो।"

उसी समय कई दुकानों का गल्ला उस ने अपने सामने भूखी भीड़ में बंटवा दिया। कुछ गोदामों के ताले तुड़वा कर उस ने अपने मोहरबंद ताले लगवा दिये। यही इंतजाम उस ने बड़ी-बड़ी दुकानों का भी किया।

गोतूर तेजेन का बड़ा भारी सौदागर था। जब उस का गोदाम जब्त किया गया, वह हाथ फैलाकर दुहाई देता हुआ अजीज के सामने आया—"मालिक, मैंने तो तुम्हारी बहुत मदद की है। मेरा लाखों रुपया जीजाक और फर्गना में फंसा हुआ है। मेरा दिवाला निकल जायगा तो तुम्हारा ही नुकसान होगा। मेरा तो जो कुछ है, तुम्हारा ही है। विलायत में मेरा लाखों रुपया मारा जा रहा है!"

अजीज ने चारों ओर खड़े लोगों को सुना कर उसे धमका दिया—"चुप रहो! तुम ने गरीब रियाया का बहुत खून पिया है। लाखों की जान जा रही है, तुम्हें हुंडियों और दिवाले की फिक्र हो रही है।"

"मालिक, तो मेरे माल की कीमत बाजार भाव से ही मिल जाये ।"

"तुम्हारे माल की लागत की कीमत दे दी जायगी, लेकिन जब हमारे पास फालतू रकम होगी !"

गोतूर दुहाई देता हुआ अजीज का चोगा पकड़े खड़ा रहा । अजीज ने अपना घोड़ा बढ़ाया तो वह साथ-साथ दौड़ने लगा । अजीज ने पीछे घूम कर एक सिपाही को हुक्म दिया—"अगर यह बदमाश अपनी दुकान की तरफ जाये तो इसे गोली मार दो !" और घोड़े को एड़ लगा कर चल दिया ।

गोतूर चिल्लाता रह गया—"अजीजखां, अपने गुलाम पर रहम कर !"

तेजेन के सब से बड़े आटा गोदाम और रोटी के कारखाने पर भी अजीज ने कब्जा करके इस कारखाने का नाम 'अजीज का तन्दूर' रख दिया । शहर भर में उस ने डौंडी पिटवा दी—'देहात के भूखे किसान और शहर के बेकार लोग जिन्हें रोटी की तंगी हो, अजीज के तन्दूर से आध सेर रोटी बिना दाम ले सकते है ।'

अजीज काफिला सराय में लौटा तो बहुत उत्साहित था । मूछों पर बल देकर वह अरतैक से बोला—"एक अलनजर की खत्ती ले लेने से क्या हो सकता था···गरीब भूखी जनता का पेट भरने का यह तरीका है !"

"मेरी सामर्थ और तुम्हारी सामर्थ में बहुत अंतर है अजीजखां ! मै इस पेड़ की जड़ खोद रहा था, तुम ने उसे उखाड़ फेंका," अरतैक ने उत्तर दिया । अजीज की मुस्कराहट और झूठा अभिमान उसे भला न मालूम हुआ । वह दूसरे कमरे में जाकर सोचने लगा—अगर कुलीखा चर्नीशोव को न रोके होता तो जो कुछ अजीज ने आज भूखों की भीड़ देखकर किया, चर्नीशोव ने कभी का कर दिया होता । अजीज तो जो चाहे कर सकता है परन्तु चर्नीशोव हर बात के लिये कमेटी और पंचायत का मोहताज है ।

अरतैक खिड़की से सराय के फाटक की ओर देख रहा था । सामने

अलनजर क्रोध से काले चेहरे से, पांव पटकता आता दिखाई दिया। अरतैक ने देखा—वे सीधा अजीज के दीवाने-खास की ओर जा रहा है। वह जरूर उस से मेरी शिकायत करेगा। मन में उस ने सोचा—कह लेने दो इसे जो कहना है। देखें, इस की बात सुनने के बाद अजीज क्या कहता है ? अरतैक उठकर अपने सिपाहियों की तरफ चला गया।

अलनजर ने रो-रो कर अपने ऊपर बीती अजीज को सुनाई और अंत में आंसू पोंछता हुआ बोला—"अजीजखां, अरतैक ने मुझे लूट लिया, बात यहीं तक नहीं है। तुम यह सोचो, तुम्हारे नौकर ऐसे काम करेंगे तो तुम्हारी कितनी बदनामी होगी !"

मुस्कराहट छिपाकर अजीज बोला—"लेकिन बे आगा, तुम तो कहते थे कि तुम्हारे यहां इतना गल्ला था ही नहीं।"

"अरे कितना गल्ला था, कुछ भी नहीं ! यह तो घर के लोगों का पेट काट कर मैंने जमा किया था कि कौन जाने आगे कैसे दिन आते हैं।"

"लेकिन हम लोगों ने तो यहां तय किया था कि जितना भी फालतू गल्ला मिले, इकट्ठा कर भूखे गरीबों में बांट दिया जाये !"

"तुम्हारा जो भी हुक्म हो हम मानेंगे लेकिन यह तो नहीं कि जो आवारा लौंडा चाहे आकर हम लोगों की बेइज्जती कर जाय ! उतना गल्ला मैं खुद ही गरीबों को बांट देता।"

"खुद तुमने कितना गल्ला गरीबों में बांटा था ?"

"मैं तो देख रहा था कि जब तुम्हारा हुक्म हो…!"

"अरतैक को यह मेरा ही हुक्म था कि रियाया के बिगड़ उठने से पहले ही बे का गल्ला ले लो।"

"मुझे ही हुक्म किया होता।"

"अब यह बात खत्म करो।"

अलनजर क्रोध में भरा बेबस दांतों से होंठ काटता रह गया। वह फिर बोला—"खान, तुम कुत्ते को पुचकार कर पास भी बुलाते हो और फिर लाठी भी मारते हो।"

अजीज ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"देखो बे आगा, अब इस बात को खत्म करो। हम लोग बहुत लम्बे सफर पर चल रहे हैं। छोटी चीजों के हाथ से गिरने और खो जाने के लिये क्या रोना-धोना! कोशिश करो कि मंजिल पर सलामती से पहुंच जायें। आज आटे का बड़ा गोदाम और रोटी का कारखाना मैंने ले लिया है। कल हम अर्जीमान की गल्ले की खत्तियां और आटे का कारखाना भी ले लेंगे। यह सब मिला कर बहुत बड़ा कारोबार बन जायगा। यह काम मैं तुम्हारे हाथ में दे दूंगा। रुपये में से दस आना तुम्हें गरीबों में बांटना होगा, बाकी से तुम्हारा नुकसान पूरा हो जायगा। रईसों का जो माल हम ले रहे हैं, सब पाई-पाई चुका दिया जायगा। लेकिन अभी भूखे मरते गरीबों की तसल्ली के लिए रईसों को अपना माल देना ही होगा। तुम ने दीवान में कहा था कि रियाया और रईसों में झगड़ा न होने देना चाहिये। यह झगड़ा बचाने के लिये तुम्हें गरीबों का खयाल करना होगा। मुझे खबर मिली है कि सोवियत पंचायत में चर्नीशोव ने बे लोगों की दौलत जब्त कर के गरीबों में बांट देने की बात रखी थी परन्तु कुलीखां ने यह बात होने नहीं दी। उन लोगों को झगड़ों में पड़ा रहने दो। उन के दांव हमें खेल लेने चाहिये। तुम समझते हो न, फिर इस इस बात के लिए रोना-धोना क्या…!"

जब अलनजर बे काफिला सराय से लौटा तो उसका क्रोध धुल चुका था। इस के बाद अरतैक से मुलाकात होने पर उस ने बीती बातों और बुरे व्यवहार की कोई शिकायत न की। वह अरतैक से ऐसे मिला कि शिकायत को कोई बात हुई ही न हो।

१५

अक्टूबर १९१७ की क्रांति से रूस में किसानों-मजदूरों की सोवियत (पंचायती) सरकार तो कायम हो गई परन्तु उस के शत्रुओं की कमी न थी। सोवियत के यह शत्रु समाज के सभी भागों से इकट्ठे हो कर नयी सरकार के कदम न जम सकने दे की कोशिश कर रहे थे। विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियां इन्हें धन और हथियारों से मदद देने लिए आ पहुंची थीं। जनता को सरकार के विरुद्ध भड़काने के लिये सभी सम्भव प्रयत्न किये गये। धर्मान्ध लोगों को धर्म की दुहाई दे कर भड़काया गया। अनाज और जिन्दगी के लिये बहुत जरूरी चीजों को जला कर बरबाद करके, जनता को भूखा मार कर यह समझाने की कोशिश की गई कि सोवियत सरकार उन्हें जरूरी चीजों पहुंचाने के अयोग्य है। सोवियत का समर्थन करने पर गांवों और बस्तियों को जला कर लोगों को धमकाया गया और समझाया गया कि यह सरकार तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ है। इन सोवियत विरोधी शक्तियों के मुख्य गढ़ रूस की सीमाओं पर फैले हुये थे।

दिसम्बर के महीने में मध्य एशिया के मुस्लिम देशों में खास बेचैनी फैल रही थी। इन देशों की मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की एक कान्फ्रेंस कोकन्द में की गई। कहने को यह कान्फ्रेंस मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की थी। शिक्षित मुसलमान, उनके मौलवी और उलमा उस में भाग ले रहे थे परन्तु वास्तव में इस कान्फ्रेंस का आयोजन विदेशी राजनीतिज्ञों की की सलाह से मध्य एशिया के बे लोगों (जागीरदारों), कारखानादारों,

बड़े-बड़े व्यापारियों और विदेश में काराकुल खालों का व्यापार करने वाले लखपतियों ने ही किया था। जार के पुराने रूसी अफसरों ने भी इस कान्फ्रेंस में भाग लिया लेकिन यह सब रहस्य जनता से छिपा कर रखे गये। इस धार्मिक कान्फ्रेंस में इस प्रश्न पर विचार किया गया कि नयी स्थापित सोवियत सरकार को असफल करने के कौन उपाय सम्भव हो सकते है ?

इस कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिये तुर्कमानिया के रईस लोग अश्काबाद में जमा हुये और एक स्पेशल ट्रेन से कोकन्द पहुंचे। यह स्पेशल ट्रेन तुर्की कालीनों से मढ़ कर सजाई गई थी। इन प्रतिनिधियों का प्रधान जार के समय का एक बड़ा तुर्कमान फौजी अफसर निमाजबेग था। निमाजबेग जरा छोटे कद का दुबला-पतला आदमी था। वह लाल मखमली चोगा और सफेद भेड़ की खाल की कीमती टोपी पहने था। उस की कमर में रेशमी पट्टे पर पर चमड़े की पेटी से चांदी की म्यान में टेढ़ी तलवार लटक रही थी। खूब ऊंचे-ऊंचे कद्दावर सिपाहियों का दल उस का शरीर-रक्षक था। लोग उसे 'बयार' (सर्दार) कह कर पुकारते थे और झुक-झुक कर सलाम करते थे।

यह स्पेशल ट्रेन तेजेन स्टेशन पर भी खड़ी हुई। अजीजखां गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। निमाजबेग अपनी गाड़ी से उतर कर प्लेटफार्म पर आया और अजीज को अपने साथ गाड़ी में ले गया। वे एक-दूसरे के नाम से परिचित थे परन्तु मुलाकात पहली बार ही हुई थी।

दोनों की खूब घुटने लगी। निमाजबेग अजीज के आदर-सत्कार में शराब पेश करना चाहता था परन्तु झिझक गया—इस्लाम में शराब हराम ठहरी। उस ने उस की खातिर शिकंजबीन और सोडे ही की। अजीज ने इस से पहले कभी शाही गाड़ी देखी नहीं थी। वह घूर-घूर कर गाड़ी के सामान को देख रहा था और मन में सोचता जा रहा था—यह है जिन्दगी ! जिन्दगी के मजे लेना तो यह सरदार लोग ही जानते हैं।

बातचीत में अजीज ने कहा—"सोच रहा हूं कि कुलीखां की कमान

में सोवियत की जो फौज तेजेन में है, उसे जल्दी ही खत्म कर दूं ।" निमाजबेग ने कुछ दिन ठहरने की सलाह दी और बोला—"अजीजखां, हम तुर्कमान लोगों की डेराबासी कौम दो दिन में बनने-बिगड़ने की चीज नहीं है, अभी सब्र करो। कोकन्द से लौटकर मैं तुम्हारे साथ तेजेन में ठहरूंगा। तभी इन बातों को तय करेंगे ।"

दोनों ही एक-दूसरे का मन लेने के लिये चतुरता से बात कर रहे थे और अपनी-अपनी राय बनाते जा रहे थे । निमाजबेग ने सोचा—अगर अजीजखां को हाथ में किये रहे तो तुर्कमानिया ही नहीं बल्कि तुर्किस्तान में भी अपनी सल्तनत बढ़ा सकेंगे ।

अजीज ने सोचा—यह निमाजबेग पतलून पहरने वाला नये ढंग का आदमी है । यह फिर से जार के ढंग की सल्तनत कायम करने की कोशिश करने वालों में से है लेकिन आदमी काम का है । इस पर भरोसा किया जा सकता है। एक बार मेरे पांव जम जायें तो यह मेरी खुशामद करता फिरेगा ।

दोनों अपनी-अपनी चतुरता में अपने स्वार्थ पूरे करने की कल्पना कर रहे थे—निमाजबेग जारशाही को फिर से जमाने की और अजीज अपनी स्वतंत्र सल्तनत बना लेने की ।

धार्मिक प्रतिनिधियों के दल में अजीज ने अपनी ओर से मदीर ईशान का नाम लिखवा दिया। तुर्कमान राष्ट्रीयता के दो महान नेताओं की मुलाकात समाप्त हो गई ।

कोकन्द की कान्फ्रेंस में वही हुआ जो कि उस का प्रयोजन था—सोवियत सरकार को समाप्त करने के लिये, सोवियत से सभी सम्भव उपायों से लोहा लेने का निश्चय किया गया। तुर्कमानिस्तान में स्वतंत्र राष्ट्रीय पूंजीवादी सरकार की घोषणा कर दी गई। एक गुप्त कान्फ्रेंस में तुर्कमानिया की नयी स्थापित सरकार के प्रधान ने यह भी सूचना दी कि एक बहुत बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति हमारी नयी स्वतंत्र सरकार को आवश्यक आर्थिक सहायता और जरूरत पड़ने पर सैनिक सहायता भी देने के लिये तैयार है।

तुर्कमानिया के जागीरदारों, कारखानादारों, व्यापारियों और जार के समय के अफसरों ने तुरंत इस सरकार के प्रति राजभक्ति की शपथें भी ले लीं। एक सशस्त्र सेना बनाने का फैसला किया गया। इग्राशवेग के नेतृत्व में स्थानीय डाकुओं और लुटेरों की एक सेना तुरंत तैयार भी हो गई।

घोषणा कर दी गई कि १६ दिसम्बर को पैगम्बर का जन्म-दिवस मनाया जायगा। देश भर में छुट्टी रहेगी और उस दिन सब जगह सोवियत विरोधी सेना का प्रदर्शन किया जायगा।

तेजेन में भी प्रदर्शन करना तय हुआ। शहर सोवियत को अजीज के षडयंत्र का भेद मिल गया। सोवियत ने भी तुरंत पचायत की बैठक की और अजीज के व्यवहार तथा प्रदर्शन के सम्बन्ध में विचार किया गया।

चर्नीशोव ने कहा—"मुझे विश्वास है इस मौके पर अजीज सोवियत से कोई झगड़ा नहीं करेगा। वह अपना धार्मिक उत्सव मनाना चाहता है इसलिये सोवियत सेनाओं को शहर में सामने ला कर उसे भड़काना ठीक नहीं परन्तु हमें अपनी सेना को अवसर के लिये तैयार जरूर रखना चाहिये।"

एक दूसरे मेम्बर ने कहा—"धार्मिक दिन का जलसा केवल बहाना है। अजीज इस मौके पर सोवियत पर अवश्य हमला करेगा। वह अपना आतंक बैठाना चाहता है। हमें उस का जवाब हथियारों से ही देना होगा।"

कुलीखां से जोर दिया—"नहीं, हमें उस से पहली रात ही अजीज के डेरे पर हमला करके झगड़े की जड़ें काट देनी चाहिये।"

चर्नीशोव ने फिर भी जोर दिया कि यदि आक्रमण हो तो हमें उस का पूरा जवाब देना चाहिये परन्तु स्वयं लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये। उस के विचार में उस समय तेजेन में लाल फौज की स्थिति अजीजखां की सेना से मोर्चा ले सकने योग्य नहीं थी।

कुलीखां अपनी बात पर अड़ा रहा—"लाल फौज का कमिस्सार मैं हूं।" वह बोला, "सोवियत माने या न माने, मैं दिन चढ़ने से पहले

अजीज के डेरे पर हमला करूंगा और उन के पैगम्बर के जलसे को गमी बना कर रख दूंगा।"

केलुईखां ने अपनी मोंछ ऐंठ कर कहा—"कुलीखां, तुम लाल फौज के कमिस्सार हो और मैं कमाण्डर हूं। मुझे तुम्हारी राय जंच रही है लेकिन सुबह तक प्रतीक्षा करना फिजूल है। हमें फौरन ही, अभी रात में ही अजीजखां का कूड़ा समेट लेना चाहिये।"

चर्नीशोव ने उठ कर उन दोनों का विरोध किया—"कुलीखां, तुम्हारा इस तरह जिद्द करना बहुत बुरी बात है।" चर्नीशोव ने डांटा, "पिछली बार जब सोवियत जागीरदारों का अनाज जब्त करके गरीब किसानों में बांटने की तजवीज कर रही थी, तुम ने उस का विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि अजीजखां ने हमारे दांव का फायदा उठा लिया और उस ने थोड़ा-बहुत अनाज जब्त करके, किसानों में बांट कर भोले किसानों की सहानुभूति अपनी ओर कर ली। यह हमारी भारी भूल थी कि सोवियत ने तुम्हारी बात को महत्व दिया। अब तुम फिर वही मूर्खता कर रहे हो। तुम चाहते हो सोवियत सेना आत्महत्या कर ले! चाहे तुम सेना के कमिस्सार हो और केलुईखां कमाण्डर है परन्तु जब तक सोवियत फैसला नहीं करेगी और प्रादेशिक सोवियत का समर्थन नहीं होगा, हमारी सेना एक कदम नहीं हिला सकती।"

"तुम चाहे जो कहो!" कुलीखां ने मुट्ठी बंधा हाथ उठा कर कहा, "सेना और हथियार तो मेरे हाथ में है।"

"बको मत," चर्नीशोव आपे से बाहर हो गया, "अगर जुबान चलाओगे तो अभी गिरफ्तार कर लिये जाओगे।"

अतादयाली केलुईखां के नीचे लाल फौज का छोटा कमाण्डर था। वह विस्मय से कुलीखां और केलुईखां की ओर देख कर खिन्न स्वर में बोला—"क्या हो रहा है यह! क्या तुम लोग पागल हो गये हो! कुलीखां, क्या लड़ने का बहुत चाव चढ़ रहा है! आओ देख लूं तुम कितने बहादुर हो! चर्नीशोव, जरा इस का मिजाज ठण्डा होना चाहिये।

आखिर हो क्या गया इन लोगों को…!"

अतादयाली बहुत चतुर आदमी नहीं समझा जाता था परन्तु अवसर पर सीधे आदमी भी बहुत ढंग की बात कह जाते हैं। अतादयाली की बात से कुलीखां वास्तव में ठण्डा पड़ गया और गर्दन झुका चुप रह गया। वह मन में सोचने लगा—चर्नीशोव और सोवियत से बिगाड़ कर उस के लिये पनाह कहां है ? अजीज तो उसे जिन्दा जमीन में गाड़ देगा। मन ही मन वह अपनी भूल पर पछता जरूर रहा था परन्तु सब के सामने अपनी गलती मान लेने के लिये भी वह तैयार न था। वह चुप बैठा रहा।

चर्नीशोव धीमे स्वर में अपनी बात समझाने लगा—"अव्वल तो हमारी सेना इतनी नहीं कि हम अजीज की सेना को रोक सकें, दूसरे इस समय शहर में किसान भरे हुये हैं। होगा क्या, बैल-बैल लड़ेंगे और घास का सत्यानाश होगा। दोनों तरफ से गोली चलेगी और किसान मरेंगे। इस समय तो अजीज छेड़े तो भी हमें तरह दे जानी होगी। हां, अगर वह हम पर हमला कर ही बैठे तो सामना करना ही होगा !"

मौका देख कुलीखां ने चुटकी ली—"तो हम लोग जा कर अजीज के सामने घुटने टेक कर उसी का हुक्म क्यों न मानने लगें !"

"नहीं, इस का यह मतलब हरगिज नहीं !" चर्नीशोव बोला, "हमें समय देख कर चलना होगा। अजीज को जनता की शक्ति के सामने झुकना पड़ेगा परन्तु ढंग से और अगर आप लोग इस के लिये जल्दी चाहते हैं तो मैं अश्काबाद जा कर इस का प्रबन्ध करता हूं।" सोवियत ने चर्नीशोव की ही बात मानी। कुलीखां की बात नहीं मानी गई।

आकाश से बूंद गिरे बरस भर से अधिक हो गया था परन्तु उस रात खूब खुल कर बरसा। सन्ध्या से ही आकाश पर बादल घिर आये थे और हवा में नमी भी थी। आधी रात से खूब बरफ गिरने लगी। घाम से झुलसी धरती पर बरफ की मोटी रजाई बिछ गई। सुबह जब मुर्गी ने तीसरी बार बांग दी, पौ फटने के समय सहमा बादल छंट कर

नीला आकाश उघड़ आया। सुबह आते-जाते लोगों के पांवों के नीचे बरफ खसखसा रही थी और आदमियों के मुंह से भाफ के बादल उड़ रहे थे।

एक पहर दिन चढ़ते-चढ़ते शहर के मुस्लिम जगत में हलचल मच गई। अजीज के समर्थक बुजुर्ग और मौलवी गलियों-बाजारों में दिखाई देने लगे। अजीज भी दल-बल सहित बाजार में आ गया। उस के आगे-आगे मदीर ईशान हाथ में हरा झण्डा लिये चल रहा था।

छोटे से तेजेन शहर का चौक बाजार भीड़ से खचाखच भर गया। जुलूस गिरजा के चौक से करावाली मसजिद की ओर बढ़ रहा था। मदीर ईशान की आंखों से आंसू बह रहे थे और वह ऊंचे स्वर में चिल्ला रहा था—"ओ अल्लाह...! ओ अल्लाह...ओ मुहम्मद !"

अजीज के दूसरे बड़े दरबारी आल्ली सोपी ने नारे लगाये—"इस्लाम जिन्दाबाद ! अजीजखां जिन्दाबाद !"

बरफ को कुचल कर चलती भीड़ सर्दी से कांप रही थी और लोग मदीर ईशान और आल्ती सोपी के पीछे कुरान पाक की आयतें दोहराते हुये करावाली मसजिद की ओर बढ़े जा रहे थे। मसजिद के पास पहुंच कर मदीर ईशान ऊंचे चबूतरे पर चढ़ गया। अपने हाथ का झण्डा उस ने यारमुश काजी और अलनजर बे को थमा दिया। आल्ती सोपी मीनार पर चढ़ कर तीखी और ऊंची आवाज में अजां की बांग देने लगा—"अल्लाहो अकबर...!"

अचम्भे में खड़ी भीड़ समझ नहीं पा रही थी कि हो क्या रहा है? अजीज को नमाज और अजां से क्या मतलब...क्या इस्लामी सल्तनत कायम हो रही है?...जरूर यही बात है नहीं तो इस जमाने में दुनिया भर को आध-आध सेर रोटी की खैरात कौन बांट सकता था! अल्ला का रहम हो। दरया तेजेन पूरा रहे। अल्लाह अजीज को सलामत रखे!

अजीज की आज्ञा से आल्ती सोपी ने कोकन्द के फैसले के मुताबिक तेजेन में स्वतंत्र इस्लामी राज कायम होने की घोषणा की और इस्लामी राज का मतलब समझाया। सोपी बहुत जोश में नाक-भौं चढ़ा कर बोल

रहा था। कभी वह खूब गला फाड़ कर चिल्लाता और कभी बिलकुल खामोश हो जाता। रूमाल ले कर वह बार-बार आंसू पोंछता जा रहा था।

यारमुश काजी और अलनजर वे झण्डे के बोझ से परेशान हो रहे थे। अगर कभी पहले ऐसा धार्मिक दृश्य दिखाई देता तो बे का हृदय भक्ति से गद्गद हो गया होता परन्तु उस का मन अभी तक अपना अनाज लूटा जाने के कारण खिन्न था। अजीज के जन-समर्थन पाने के ढंग पर उसे कोई भरोसा न था पर उस की शक्ति बढ़ती देख वह मन ही मन घबरा भी रहा था। तिस पर उसकी बांहें झण्डे के बोझ से टूट रही थीं। वह सोच रहा था कि कब यह बवाल खत्म होगा !

अजीज भीड़ के बीचोंबीच बढ़ आया। उस ने गुरूर भरी निगाह चारों ओर डाल कर देखा और फिर अधिकारपूर्ण गम्भीर स्वर में बोला—"उलेमा, बुजुर्गों और लोगों ! आज का दिन मुअबरिक (पवित्र) है क्योंकि आज हज़रत पैगम्बर का जन्म-दिवस है लेकिन यह और भी बड़ी बात है कि आज हम लोगों ने अपनी खोई हुई आजादी हासिल की है। आज से इस मुल्क में शरियत का कानून कायम होगा। उलेमा, बुजुर्गो, और सब लोगो, इस काम में मुझे आप सब लोगों की मदद की जरूरत है। आज तक इस मुल्क में दो तरह की हुकूमत चल रही थी और दो तरह के उसूल कायम थे। आप लोग यकीन रखिये कि चन्द ही दिन में जार की हुकूमत और उस के गिरोह का जो कुछ असर बाकी है, मैं खत्म कर दूंगा। मुझे आप लोगों से कहना है कि आप सच्चे और सही रास्तों पर चलें ! सही और सच्चा रास्ता सिर्फ इस्लाम का है। इस्लाम जिन्दाबाद !"

इस का समर्थन सब से पहले किया मदीर ईशान ने। वह जोर से चिल्ला उठा—"हुर्रा, हुर्रा···वल्लाह !"

और फिर सब भीड़ चिल्ला उठी और यह शोर आकाश तक जा पहुंचा।

१६

एक दिन पौ फटते-फटते कोश गांव के लोग शोर सुनकर अपनी छोलदारियों से बाहर निकल आये। बात भी मामूली नहीं थी। खबर थी कि अलनजर बे की घरवाली रात में घर छोड़ भाग गई है। बिजली की लपट की तरह खबर गांव में फैल गई। सब के होंठों पर एक ही बात थी—'बे की औरत भाग गई !'

'मेहली मावेद के साथ भाग गई !'

जवान लडकियां पहले भी कई बार जवान लड़कों के साथ गांव से भाग चुकी थी। उस पर भी बात चलती ही थी पर वैसा हो जाना कोई अनहोनी बात न थी लेकिन ब्याहता औरत के भाग जाने से सभी लोग अचम्भे में आ गये। और तो और, ऐना की सौतेली मां, जिसे निजी बातों को छोड़ किसी से कुछ मतलब न था, बोली—"अच्छा ही हुआ इस कमबख्त के साथ ! मेरी लड़की चली गई थी तो इस आदमी ने मेरे नाक में दम कर दिया था। कोई इस से पूछे, अब क्या कहते हो! अरे वह तो अनब्याही लड़की थी, तेरी तो औरत भाग गई नाक के नीचे से ! अब बोलो ! जिसकी औरत ही भाग गई उसे तो दोजख में भी जगह नहीं मिल सकेगी। खूब हुआ ! इस के साथ यही होना चाहिये था !"

गांव की गलियों में बड़े-बूढ़े कहने लगते—"अरे, ब्याहता औरत भाग गई ! जाने अब इस धरती और आसमान का क्या होने को है ! अब कयामत का वक्त आ गया है···।"

औरतें यह खबर सुनती तो ऐसे लम्बी सांस खींचतीं कि नीचे की

सांस नीचे और ऊपर की ऊपर रह गई हो और फिर पड़ोसिन को खबर देने के लिये लपक जातीं। उन की बातें समाप्त होने में ही न आती थीं।

"अच्छा ही हुआ," एक बोली, "गरीब की जान तो बची।"

"तो और करती क्या!" दूसरी ने कहा।

कईयों ने मेहली को बेहया वेश्या कह कर गाली दी।

उम्सागुल के लिये यह मौका दिल की जलन बुझाने का आया। लहंगा कमर में खोंस कर वह गांव में घर-घर खबर सुनाती फिरी और फिर पड़ोस के गांव की ओर दौड़ी गई। बात शुरू करती तो मुंह पर हाथ रख मेहली की करतूत पर विस्मय प्रकट करती हुई धीमे स्वर में, फिर उस का स्वर ऊंचा हो जाता—"···लौंडिया भाग नहीं जाती तो करती क्या? अलनजर उस के लिये क्या मर्द था! खाने के लिये ही उसे क्या देते थे! ऐसा कोई कुत्ते को भी नहीं देगा। अच्छा बदला लिया उस ने! बहनों, सुना है कि वह शहर में बोलशेविक के यहां शिकायत करने गई है। सुना है, बोल्शेविक लोग बे को जेल में कैद कर कर देंगे। इस बे के तो करम ऐसे हैं कि इस के साथ जो कुछ हो, वही थोड़ा!"

वह बरस ही अलनजर बे के लिये बदकिस्मती का था। बहू की वजह से यों ही उस की जान सूली पर लटकी रहती थी। एक तो जार का तख्त पलटने से उस का दबदबा और इज्जत यों ही खत्म हो गई थी, तिस पर अतैरी बात-बात में बेइज्जती करती रहती थी। अरतैक ने उसे पीट-पाट कर अनाज लूट लिया तो लोगों की नजर में वह बिलकुल मिट्टी हो गया। तिस पर साठ ऊंट बोझ अनाज का नुकसान कम नहीं होता! अब उस की घर की औरत ही भाग गई। कोई भी इंसान और क्या सह सकता था।···मुसीबतें इंसानों पर पड़ती ही हैं। दुनिया बुरा सलूक भी करती है तो इंसान उसे सह जाता है कि किस्मत और दूसरे लोगों पर किसी का क्या बस! लेकिन खुद अपने घर में···अपनी घर की

औरत लानत दे जाये ! और फिर औरत का भी क्या ! पर मेहली··· जिस का न कोई सगा-सम्बन्धी था न घर-बार। एक बोरी जौ दे कर बे ने उसे खरीदा था और यह लड़का मावेद ! बे दोष दे तो किस को, दिल का दुख कहे तो किस से ? वह उन दोनों की बोटी-बोटी दांत से काट डालता पर उन का सुराग कौन लगाये ?

बरस नहीं बीता दुनिया उस की ताबेदार थी, उस के इशारे पर नाचती थी। कहां गये अब खोजा मुराद, दारोगा बाबाखां और कुलीखां ? जा कर अजीज के सामने अपना दुख रोये ! जा कर कहे मेरी औरत भाग गई···एक बे जा कर कहे कि उस के घर की औरत भाग गई ! क्या मुंह वह दुनिया को दिखायेगा; क्या उस का नाम रह गया, क्या उस की इज्जत रह गई ! लोग उसे हिजड़ा कहेंगे और मुंह पर थूकेंगे। अगर यह दिन देखने से पहले ही उस की मौत हो गई होती तो लोग उसे बुजदिल हिजड़ा तो न कहते ! अब किस तरह उस के मुंह पर लगा यह कलंक धुले !

वह दोपहर तक बैठा सोचता रहा। उस ने अपना नया रिवाल्वर निकाला। हथियार को गौर से देखा गोली है या नहीं। गोली थी। उस ने रिवाल्वर का घोड़ा चढ़ा लिया। उस के हाथ कांप उठे, आंखें भय से फैल गईं और होंठ लटक गये। सम्भल कर उस ने रिवाल्वर की नली अपने सीने पर टिका ली। संसार का सब मोह छोड़, संसार से नाता तोड़ देने के लिए उसने आंखें मूंद लीं।

परन्तु उस का दिल जोर से धड़कने लगा। उस ने आंखें खोल जगमगाती दुनिया को फिर एक आंख देखा। छोलदारी की छत से धुंआ निकलने के लिए बने सूराख से धूप की किरणें आ कर कीमती रंग-बिरंगे कालीनों पर फैल रही थीं। कालीनों पर बने भड़कीले फूल मानो बे को पुकार कर कह रहे थे—तुम भी क्या पागल हो ! अरे इस दुनिया की कुदरत की असलियत के मजे छोड़ कर तुम कहां जाना चाहते हो ! अंधेरी कब्र में जा लेटोगे तो तुम्हारा क्या भला हो जायेगा ? जिन्दा

रहोगे तो दुनिया में मौके और जगह की इन्तहा नहीं ! सोचो, हजार मौके आ सकते हैं !

अलनजर अपनी सांस के आने-जाने का शब्द सुनने लगा और सोचा—सांस का आता रहना कितना बड़ा सुख है ! यह सांस ही बन्द हो गया तो क्या रह जायेगा ! ओफ कितनी तकलीफ होगी सांस न आने से ! सौ मन मिट्टी के नीचे कब्र में दब जाना ! जा कर खुद ही मौत के फरिश्ते इजराइल के हाथों पड़ जाऊं !···धीमे-धीमे रिवाल्वर उस के हाथ से समीप पड़ी गद्दी पर जा टिका। छोलदारी के बाहर मालकौश के हिनहिनाने की आवाज आ रही थी और उस की लड़की की खिल-खिलाहट भी सुनाई दी। उसे जान पड़ा वह कब्र से लौट आया और जिन्दगी कितनी मजेदार चीज थी !

बे ने अपनी प्रतारणा की—मैं ही दर-असल बेवकूफ हूं ! निराश हो कर जान दे देने से फायदा ? किस के लिये जान दे दूं ? मेहली के लिए ! मैंने न उसे कभी अपनी बीवी-बेगम समझा, न मुझे उस से कोई मुहब्बत थी। एक बांदी थी, बस ! समझ लो, मावेद अपनी पांच बरस की नौकरी की मजदूरी ले गया···पर लोग-बाग क्या कहेंगे ! अरे कुछ दिन बकेंगे और फिर भूल जायेंगे ! दस-पांच दिन बात रहेगी, दब जायगी। इतने दिन गम खा जाओ !

बे अपनी छोलदारी से निकला। किस्मत की बात, पहले उसे अतैरी ही दिखाई दी। उसे देखते ही बे झुंझला उठा—जिस दिन से यह कलमुंही इस घर में आई है, एक के बाद दूसरी मुसीबत सदा ही सिर पर पड़ती रही। यह जरूर किसी डायन की औलाद है। यह आई और किस्मत ने मुंह फेर लिया। किसी तरह इस से पीछा छूटे तो मैं आधी जायदाद खैरात कर दूं। उस ने अतैरी की ओर से मुंह फेर लिया।

अतैरी बे की आंखों में घृणा भांप गई। उसे भी याद आ गया कि एक दिन यह बल्लेखां को फटकार रहा था—···तू कैसा मर्द है रे, जो एक औरत को बस में नहीं कर सकता !

अतैरी ने उसे वैसी ही निगाह से जवाब दिया और बोली—"कहो, क्या तुम्हारी मर्दानगी मैंने छीन ली। औरत को तो तू क्या बस करेगा, तू तो बांदी को ही नहीं निबाह पाया ! अब अपनी मर्दानगी दाढ़ी में समेट ले। हिम्मत है तो पकड़ कर ला उन लोगों को !" अतैरी ने शहर की ओर हाथ बढ़ा संकेत किया।

बे दांत पीस कर चुप रह गया।

जब बे के यहां यह बीत रही थी, मावेद और मेहली शहर की ओर भागे चले जा रहे थे।

अशीर कई दिन पहले ही लाल फौज में भरती हो चुका था। उसे फौज के निशान, नम्बर और बंदूक मिल गई थी। मावेद के आ जाने पर अशीर ने उसे भी अपनी ही कम्पनी में भरती करवा लिया। चर्नीशोव की सिफारिश से मावेद को शहर में एक कोठरी मिल गई। बे के यहां से मिला उसके हिस्से का अनाज सम्हाल कर रखा हुआ था। कुछ दूसरे सामान के साथ वह सब उसे दे दिया। वह अपने नये घर में आ बसा और मेहली अपने घर की रानी बन गई। अब उस पर हाथ उठाने वाला और उसे आंख दिखा कर गाली देने वाला कोई न था। न उसे अब बांदियों की तरह नाम ले कर पुकारा जा सकता था। अब वह मावेद की घरवाली कही जाती थी। आराम और अधिकार का नशा उस की आंखों में चमकने लगा। कभी-कभी वह सोचती इस सब के लिये किस का शुक्रिया करूं।

वह सोचती, यह अतैरी की मेहरबानी है···नहीं ! सोचती, जार का तख्त पलटने से मेरे दिन फिरे···नहीं ! अशीर की मेहरबानी है···नहीं ! मावेद की मुहब्बत है···नहीं ! यह मेरे अपने हौंसले की बात है, नहीं तो कोई क्या कर सकता था ?

मेहली मावेद से भी यह सवाल पूछ कर जवाब मांगती। मावेद कहता—"मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता था ? मुझे तो तुम ने खुद अपने आप को दिया और मेरी जिन्दगी बना दी !"

मावेद के शहर में आकर बस जाने की खबर अरतैक को भी मिली। वह उन्हें मुसीबतों और गुलामी से छूट कर नया जीवन पाने के लिये बधाई देने गया। रास्ते में उसे चरखेज मिल गया। चरखेज बहुत उदास जान पड़ता था। अरतैक ने उस की उदासी का कारण पूछा।

"क्या बताऊं! दुनिया के तौर मेरी समझ में नहीं आ रहे हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूं लोग कर क्या रहे हैं?"

"क्या मतलब?" अरतैक ने पूछा, "लोग सदा ही अपनी-अपनी समझ से चलते हैं। शहर में दो-तीन राजनैतिक दल हैं। तुम्हें क्या कोई भी पसन्द नहीं?"

"नहीं।"

"आखिर तो तुम मुसलमान हो!"

"अजीज के इस्लाम को मैं नहीं मानता।"

"तो तुम पतलून वालों की पार्टी (बोलशेविकों) के साथ हो जाओ।"

"कुलीखां की पार्टी में! कुलीखां सदा दगाबाजी करता रहा है। मुझे उस पर अब भी एतबार नहीं।"

"तुम चाहते क्या हो?"

"मैं चाहता हूं इन्साफ हो। लोग कहते थे इन्कलाब के बाद इन्साफ होगा।"

"इन्साफ क्या कोई गठड़ी में बांध कर तुम्हारी बगल में दे जायगा··· क्या पागलपन की बातें करते हो! तुम मेरे साथ आ जाओ।"

"तुम्हारे साथ!"

"क्यों, क्या मुझ पर विश्वास नहीं?"

"तुम पर तो विश्वास है, अजीज पर बिलकुल नहीं।"

"क्यों, उसने अभी तक क्या बुरा किया है!"

"यह उस की चालबाजी है। आगे देखना क्या करता है। मुझे उस पर भरोसा नहीं होता।"

अरतैक के बहुत समझाने पर भी चरखेज को संतोष न हुआ—"देखा

जायगा !" उसने अरतैक की बात टाल दी। अरतैक भी निराश हो मावेद के घर पहुंचा। उस ने मावेद और मेहली को उन के निर्णय पर वधाई दी। उस के मन में यह विचार अवश्य था कि इन का ब्याह ठीक ढंग का ब्याह तो नहीं है, फिर भी उन लोगों के पिछले जीवन का ध्यान कर वह बोला—"जो हो भाई, तुम दोनों ने हिम्मत की, ठीक ही किया।"

अरतैक ने मावेद को समझाया—"यह तुम्हारी गलती है कि तुम मुझे छोड़ कुलीखां और अशीर की फौज में जा मिले। अपने आखिर अपने हैं, गैर का क्या भरोसा !" मौके से उसी समय अशीर भी नये जोड़े को बधाई देने आ पहुंचा। उस की और अरतैक की बातचीत तानेबाजी से शुरू हुई और फिर गरमा-गरमी हो गई।

अशीर ने अरतैक का अजीजखां को सहयोग देना और अरतैक ने अशीर का कुलीखां की फौज में जाना मूर्खता बताया। दोनों अपनी सफाई देकर दूसरे की बेवकूफी सुझा रहे थे। उन का झगड़ा ऐसे चल रहा था जैसे दो अंधे एक-दूसरे पर पत्थर चला रहे हों।

अरतैक गुस्से में उठ कर जाने लगा परन्तु अशीर उस की राह रोक कर खड़ा हो गया। दोनों ही क्रोध में हांफ रहे थे। अरतैक झुंझला कर बोला—"तुम मुझे जा क्यों नहीं देते ?"

"जब बात का फैसला हो जायेगा तभी तुम जाओगे !" अशीर ने उस की आंखों में घूर कर जवाब दिया।

"तो क्या फैसला तब होगा कि तुम मुझे गोली मार दो या मैं...!"

"यह बात कमीनापन होगी। फैसला होगा लड़ाई के मैदान में !" अशीर ने जवाब दिया।

"हमारी दोस्ती खत्म है ?"

"हां, अब हम लोग दुश्मन हैं !"

पुराने गहरे मित्र एक दूसरे की ओर ऐसे घूर-घूर कर देख रहे थे कि एक-दूसरे को फाड़ खायगे। अरतैक बिना कोई जवाब दिये कमरे से निकल कर चला गया।

१७

अजीजखां ने तेजेन में पैगम्बर मुहम्मद के जन्मदिन का जो जलसा करवाया था, उस का प्रयोजन अपनी सेना और शक्ति का प्रदर्शन कर देना भी था। इस से जनता पर प्रभाव बढ़ने की आशा थी। तुर्कमानी प्रतिनिधि मंडल के नेता निमाजबेग से उस की जो बातचीत कार्यक्रम के के सम्बन्ध में हुई थी, उस का भी उसे ख्याल था। कोकन्द से लौट कर उस के दूत मदीर ईशान ने स्वतंत्र इस्लामी राज्य कायम होने के जो समाचार उसे दिये थे, वह बात भी उस के ध्यान में थी।

अजीज को यह विश्वास हो गया कि देहात के किसानों और शहर की जनता की सहानुभूति उस के साथ है और वे लोग उस का आदर करते हैं। यह भी उस ने देखा कि कुछ तुर्कमानी लोगों ने उस के जलसे में भाग नहीं लिया था; वे लोग अभी स्थिति को परख लेना चाहते थे। वह यह भी जानता था कि कुलीखां जैसे आदमियों के प्रति लोगों में घृणा होने पर भी जनता में सोवियत का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि चर्नीशोव के प्रयत्नों से लोग किसान-मजदूर राज की आशा में दृढ़ विश्वास से मरने-मारने के लिये सोवियत की ओर खिचते चले जा रहे थे। अशीर जैसे थे बिना घर-बार के लोग, जो अब तक गुलामी में जकड़े हुये थे, अब शहरों में जमा हो रहे थे। ऐसे लोग सोवियत के कट्टर सहायक बनते जा रहे थे। इन लोगों को समझाने-बुझाने का भी कुछ लाभ न था। यह लोग समझते थे इन का जीवन केवल सोवियत के राज में ही सम्भव है। इन्हें चर्नीशोव के सिवा

किसी दूसरे पर विश्वास ही न था। तेजेन में लाल फौज की संख्या अधिक नहीं थी परन्तु उस की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती थी। लाल फौज से सामना होने पर वह किस से सहायता की आशा कर सकता था? किसानों का भरोसा करना व्यर्थ था। वह अवसर की प्रतीक्षा में था।

चर्नीशोव भी आशंकित था। समाजवादी क्रान्ति-विरोधी शक्तियों को इकट्ठा होते देख उसे आशंका हो रही थी। रूस की क्रान्तिकारी शक्ति मध्य एशिया से बहुत दूर थी और फिर दुतोव की जार की समर्थक और क्रान्ति-विरोधी सेनायें मध्य एशिया को शेष क्रान्तिवादी रूस से अलग किये हुये थी। क्रान्ति-विरोधी शक्तियां इस अवसर से लाभ उठा कर मध्य एशिया में अपने कदम जमा लेना चाहती थीं। कोकन्द में आजाद इस्लामी सल्तनत कायम करने वाले तुर्कमानिया के जागीरदार और पूंजीपति, कास्पियन समुद्र के पडोस के क्रान्तिकारी सोशलिस्ट नाम से सोवियत विरोधी पार्टी बनाने वाले, ईरान से लौटी हुई कज्जाक फौजें, जुनैदखां जैसे छोटे-छोटे खान जिन का काम लूट-पाट से ही चलता आया था और डाकुओं की टोलियों का सब से बड़ा मुखिया इग्राशबेग, अलीयारखां, अजीजखां और उस जैसे कई दूसरे—यह सब लोग अपनी-अपनी जगह सोवियत का विरोध कर अपने स्वतंत्र राज्य कायम कर देने की तिकड़में जमा रहे थे। इन सब की सहायता देने वाले थे ब्रिटिश साम्राज्यशाही शक्ति के एजेंट जो कई जगह भेष बदल कर और कई जगह स्थानीय खानों के विश्वासपात्र बन कर जमे हुए थे। यह लोग बरसों से इसी गुर से एशिया के छोटे-छोटे राष्ट्रों को आपस में लड़ा कर, उन्हें फोड़ कर अपनी साम्राज्यशाही सत्ता की नींव डालते आये थे।

चर्नीशोव को अभी इन गुप्त जालसाजों का कोई भेद मालूम न था परन्तु इन लोगों की करतूतों के परिणाम वह अवश्य देख रहा था। तेजेन की स्थिति बहुत डांवाडोल थी। बाहर की सोवियतों से उनका सम्बन्ध टूट चुका था। सोवियत के मुट्ठी भर विश्वासपात्र आदमी थे। वे जो कुछ करते, अपने साहस और जिम्मेवारी पर ही कर सकते थे। ताशकंद

की क्रान्तिकारी कमेटी अपने इलाके में चल रही सोवियत विरोधी बगावत का सामना करने में उलझी हुई थी। चर्नीशोव अश्काबाद की सोवियत से कुछ आशा न कर सकता था क्योंकि वहां के चुनाव के बाद जार के सब पुराने अफसर और क्रांतिकारी सोशलिस्ट लोग सोवियत पर कब्जा किये बैठे थे।

तेजेन की अवस्था दिन ब दिन संकटमय हो रही थी। सोवियत के सामने प्रश्न था कि अजीजखां की बढ़ती फौज को जल्दी से जल्दी समाप्त किया जाय लेकिन शहर में दंगा-फसाद की नौबत भी न आने पाये। इस के लिये आवश्यक सिपाहियों की संख्या तेजेन की सोवियत के पास नहीं थी। कुलीखां पर भी चर्नीशोव का सन्देह बढ़ता ही जा रहा था। विशेष आशा न होते हुये भी अश्कावाद जाकर यत्न करने के सिवा और कोई उपाय न था।

अजीज भी ऐसी ही डांवाडोल स्थिति में था। वह भी अश्कावाद से सहायता पाये बिना कुछ न कर सकता था परन्तु निमाजबेग से सहायता मांगना भी अजीज के आत्मसम्मान के विरुद्ध था। उस ने मदीर ईशान से एक पत्र निमाजबेग के नाम लिखवाया और अरतैक को पत्र देकर अश्काबाद भेजा।

अरतैक और चर्नीशोव एक ही गाड़ी से अश्कावाद जा रहे थे। चर्नीशोव को गाड़ी में देख कर अरतैक की बड़ी इच्छा हुई कि पुराने मित्र से मिल-जुल कर बातचीत करे परन्तु उचित न जान पड़ा। अश्कावाद वह जा रहा था चर्नीशोव के विरुद्ध अजीज के लिये सहायता का प्रबन्ध करने; फिर मित्रता का झूठा आडम्बर क्या करता! उस समय उसे ध्यान भी आया कि सोवियत विरोधी मार्ग पर वह कहां से कहां आ पहुंचा है! चर्नीशोव की निगाह अरतैक पर न पड़ पाई थी। बाकी सफर में अरतैक जान-बूझ कर चर्नीशोव की निगाह से बचा रहा था।

अरतैक जिस समय अजीज का पत्र लेकर अश्काबाद की इस्लामी कमेटी में पहुंचा, कमेटी की सभा हो रही थी। कमरा खूब बड़ा था।

इंतजाम और सजावट योरूपियन ढंग की थी। भीड़ भी काफी थी। अरतैक कमरे भर में आंखें दौड़ा रहा था कि कोई जान-पहचान का चेहरा दिखाई दे परन्तु निजामबेग को छोड़ उसे कोई परिचित नहीं दिखाई दिया। निजामबेग को भी उस ने तेजेन के स्टेशन पर, गाड़ी में कोकन्द जाते हुये ही देखा था। अरतैक को यह कमेटी का जमाव कुछ विचित्र सा लगा। किनारे की ओर एक गंजा दाढ़ी मुंडा सरदार बैठा था, उस के साथ ही एक तोंदियल बड़ा व्यापारी था जिस के चेहरे पर फैली चर्बी भरी गालों में आंखें भी दबी जा रही थीं। उस के आगे एक बे बैठा था जिस का सिर मुंडा हुआ था परन्तु ठोड़ी से लम्बी दाढ़ी लटक रही थी। एक ओर बिर्चिस पहने एक आदमी खड़ा था। उस के रिवाल्वर की चमड़े की डोरी नीचे दूर तक लटक रही थी। यह आदमी चुप खड़ा मूछें ऐंठ रहा था। कमेटी की कारवाई इस आदमी को पसन्द नहीं आ रही थी ! कभी वह एक किनारे चहलकदमी करने लगता और कभी खीझ से दूसरे लोगों की ओर देखने लगता।

कमेटी का प्रधान था आरोज सरदार। आरोज का चेहरा निस्तेज भुसभुसा सा था। चेहरा मोटी-मोटी भवों और दाढ़ी-मूंछ से ढंका हुआ था और तोंद भी खूब बढ़ी हुई थी। आरोज सरदार के कंधों पर जार के जमाने की कर्नेली के निशान लगे हुये थे। इन लोगों को देख कर अरतैक ने निराशा से मन में कहा—यदि इन्हीं लोगों के हाथ हमारी नैया की पतवारें हैं तो डूबेंगे नहीं तो क्या !

इस इस्लामी कमेटी ने प्रादेशिक सोवियत से मांग की थी कि सोवियत इस इस्लामी कमेटी को तुर्कमानिया की पूरी जनता की प्रतिनिधि स्वीकार कर ले, इस कमेटी के प्रतिनिधियों को सोवियत का मेम्बर बना ले और इलाके में लड़ाई के जितने हथियार और गोली-गट्टा है, वह सब सोवियत और इस कमेटी में बराबर बांट दिया जाये। कान्फ्रेंस में यह विचार हो रहा था कि सोवियत इन मांगों को दो दिन के भीतर स्वीकार कर लेगी या नहीं।

यह लोग तो स्वयं ही बेपेंदी के लोटे की तरह लुढ़क रहे हैं, मन में अरतैक ने सोचा, और हम इन की सहायता का भरोसा कर रहे हैं !

कान्फ्रेंस में सब अपनी कहे जा रहे थे । परेशान होकर गंजे सिर वाला मोटा सरदार बोला—"हमें तो आप लोगों की बातें कुछ समझ नहीं आ रहीं । जब हमने सोवियत के सामने अपनी मांगें रख दी हैं तो यह मांगें पूरी होनी चाहिये । सोवियत को हमें जवाब देना होगा । अगर सोवियत तसल्लीबख्श जवाब नहीं देती है तो शहर को जला डालो ! सोवियत है क्या चीज ! यह मुल्क हमारा है, यहां ताकत हम लोगों की है । अगर कमेटी को यों बेसिर-पैर की बातों में ही उलझे रहना है तो हम लोग यहां बैठ कर क्या कर रहे हैं ? इस तमाशे का फायदा ही क्या! हमें यह तमाशा बिलकुल नापसन्द है । हम यहां से चले जायेंगे !" सरदार क्रोध में कह रहा था और और उस के मुंह से थूक की फुहार उड़ रही थी । उस का चेहरा बिलकुल सुर्ख हो गया था । उस ने कमेटी के लोगों की ओर इस आशा से देखा कि वे उस की बात से प्रभावित हो गये होंगे ।

अरतैक ने देखा कि निमाजबेग गंजे सरदार की बात पर मुस्करा रहा था और उस ने निमाजबेग को कहते सुना—"'...भाड़ में जाये, यह कमबख्त चला ही जाये तो जान छूटे ! यह तो लूट के मौके की तलाश में यहां आया है ।"

अजीज का खत कान्फ्रेंस में पढ़ा गया । उस पर भी बहस छिड़ गई । किसी ने कहा—"सौ सिपाही भेज दो, दिन में कुलीखां को खत्म कर लौट आयेंगे ।" दूसरा बोला, "अजीज से तो कुलीखां ही भला । कल अजीज के पांव जम जायेंगे तो वह हमीं को आंखें दिखायेगा ।" कुछ लोगों की राय थी कि आरोग सरदार और निमाजबेग तेजेन जाकर सोवियत और अजीजखां में समझौता करवा दें । कुछ की राय थी—इस झगड़े से हमें क्या मतलब ? कुछ ऊंघ रहे थे ।

अजीज के पत्र के बारे में कुछ फैसला हो नहीं पाया और दूसरी ही बहस छिड़ गई । कोई बोल उठा—"जर्मनी को अगर टर्की में जगह मिल

जाये तो वह बर्तानिया के परखचे उड़ा देगा।" मोटा तोंदियल बे फिर बोल उठा—"यह बात सही है। अंग्रेज तुर्की की फौज का भला क्या मुकाबला करेंगे ! इस बारे में एक तुर्की अफसर ने मुझे सब कुछ बता दिया है।"

आरोज सरदार बोल उठा—"ईरान में रुकी हुई जार की कज्जाक फौज बर्तानिया की कमान में चली गई है। बर्तानिया ही उस का पूरा खर्चा दे रहा है। कज्जाक फौज के बड़े अफसर लोग कोमथूज, खोजानेप, खीवा और बुखारा में बर्तानिया के हुक्म से गये हैं। बर्तानिया की फौजें ईरान में ही नहीं बल्कि कास्पियन समुंदर के इस तरफ और तुर्कमानिया में भी आ गई हैं। रूसी फौज के पीछे हट जाने के कारण बर्तानिया इधर आकर जर्मनी और तुर्कमानिस्तान से खुद लड़ेगा। उम्मीद है इस मुल्क में जल्दी ही जर्मनी और बर्तानवी फौजों की जोरदार टक्कर होगी।"

आरोज सरदार की इस महत्वपूर्ण खबर पर भी दूसरे लोगों ने खास ध्यान नहीं दिया। जो जिस के मन में आता, बोलता चला जा रहा था। मुल्क पर आये खतरे को न तो कोई समझ ही रहा था और न किसी को उस की चिन्ता थी। लोग प्राय: आपस में ही गप-शप कर रहे थे, कोई उठ कर जरा घूमने और चाय पीने चले जाते और फिर लौट कर आ बैठते। अरतैक ने यही समझा कि यह लोग यहां दिल बहलाने के लिये आये हैं या इस खयाल में हैं कि पैसा बनाने का कोई अवसर हो तो उस की खबर रहे। अरतैक ने सोचा—फिजूल मैं तेजेन से यहां तक आया। इन लोगों को जनता की क्या परवाह है ! इन में और जार के अफसरों में फरक ही क्या है ? यह उन से ज्यादा मूर्ख जरूर हैं।

कान्फ्रेंस में सुनी बातों से एक बात जरूर उसे समझ में आई कि सब लोग समझते हैं कि अजीज केवल अपना राज जमाने के लिये ही सहायता चाहता है। चर्नीशोव ने भी यही कहा कि अजीज को जनता से कोई मतलब नहीं, वह खुद खान बनने का स्वप्न देख रहा है। अजीज

को जनता का हितैषी और रक्षक सिवा उस के और कौन समझता है… कौन उस का विश्वास करता है ! खुद अरतैक भी क्या अजीज का विश्वास कर सकता है !

अरतैक का माथा घूम गया। वह कान्फ्रेंस से उठ कर चल दिया। तेजेन के मामले में कान्फ्रेंस क्या करेगी, इस विषय में वह कुछ जान नहीं पाया। कान्फ्रेंस में स्वयं कुछ कहने का भी उसे कुछ फायदा न जान पड़ा। उस ने सोचा—इन स्वार्थी लोगों के सामने जनता के नाम पर, देश पर आते खतरे के नाम पर दुहाई देना व्यर्थ है और फिर उस के मन में विश्वास भी न था कि अजीज को सहायता मिलने से जनता का भला हो जायगा। वह किसी भी भरोसे के नेता के पीछे चल कर जान लड़ा देने के लिये तैयार था परन्तु किसी खान की खुदगर्जी पूरी करने के लिये बेवकूफ बनना उसे मंजूर न था।

जिस समय अरतैक कान्फ्रेंस से खिन्न हो कर स्टेशन की ओर लौट रहा था, चर्नीशोव प्रादेशिक सोवियत के सामने अपनी बात कह रहा था। चर्नीशोव बड़ी कठिनाई में था। वह अच्छी तरह जानता था कि अश्काबाद की सोवियत में तिकड़म से चुने गये अधिकांश लोग जनता विरोधी थे और उस पर सन्देह करते थे। मेंशेविक और सोशलिस्ट लोगों के नेता फुन्तीकोव और दुखोव का अश्काबाद की सोवियत में खूब जोर था। चर्नीशोव की बात लोग ध्यान से सुन अवश्य रहे थे परन्तु उन के चेहरों पर सन्देह और विरोध का भाव भी स्पष्ट था। सोवियत की इस बैठक में अश्काबाद के बोल्शेविकों तेमया, झितनीकोव, मोली बोजकोव और बेतमानोव में से कोई भी मौजूद न था, इसलिये चर्नीशोव और भी घबराहट अनुभव कर रहा था। यह उसे बाद में मालूम हुआ कि सोवियत के बोल्शेविक मेम्बरों को सभा का समय गलत बताया गया था ताकि वे लोग सभा में आ ही न सकें।

"दिन ब दिन अजीज की शक्ति बढ़ती जा रही है और उस का दुस्साहस भी बढ़ रहा है," चर्नीशोव ने कहा, "उस का उद्देश्य क्या है,

यह किसी से छिपा नहीं है। जिस तरह वह चल रहा है, उस से सन्देह का भी कोई कारण नहीं है। जनता के लिये अन्न और भोजन के सम्बन्ध में उस ने जरूर कुछ काम ऐसे किये हैं जो वास्तव में हमारी सोवियत को करने चाहिये थे। इस का परिणाम यह हुआ है कि कुछ समय के लिये भूखे किसानों की सहानुभूति उस की ओर हो गई है। उस ने आजाद इस्लामी सल्तनत का नारा भी लगाया है। इस से मुस्लिम जनता को उस के प्रति विश्वास होने लगा है परन्तु अजीज की यह आजाद इस्लामी सल्तनत मुस्लिम जनता की स्वतन्त्रता के लिए नहीं है। यह आजाद इस्लामी सल्तनत कुछ जागीरदारों और तुर्कमानी पूंजीपतियों की ही हुकूमत होगी। यदि हम समय पर अजीज का उचित उपाय नहीं करेंगे तो परिणाम वही होगा जैसा ताशकंद में इस्लाम की स्वतंत्र हुकूमत कायम करने के नाम पर जनता के खून की नदियां बहाने के रूप में हुआ था। इस हालत में अजीजखां की फौज को निरस्त्र कर देना बहुत ही आवश्यक है और जहां तक सम्भव हो सके, यह काम बिना खून-खराबी किये, लड़ाई किये बिना होना चाहिये। इस के लिये आवश्यक है कि हमारे पास उस की सेना से काफी बड़ी सेना हो। यह बात तेजेन की मौजूदा लाल फौज के बस की नहीं, इसलिये मैं अश्काबाद की प्रादेशिक सोवियत से सैनिक सहायता चाहता हूं।"

चर्नीशोव ने अनुभव किया कि सोवियत के लोग तेजेन की गम्भीर स्थिति की उपेक्षा कर उस का विरोध करने के लिये उतारू हैं। वह एक बार फिर बोला—"अन्त में मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यह समस्या केवल तेजेन की ही समस्या नहीं है। यदि तेजेन में अजीज के उगते हुये संकट का उपाय उचित समय पर न कर दिया जायेगा तो एक नहीं, सैकड़ों अजीज पैदा हो जायेंगे और तेजेन में ही नहीं, यह लोग पूरे तुर्कमानिया पर छा जायेंगे।"

"और यह लोग फिर से जार को गद्दी पर ला बैठायेंगे!" फुंतीकोव ने अपनी लम्बी गर्दन उठा कर मजाक किया।

"नहीं," चर्नीशोव ने उत्तर दिया, "यह लोग पुराने जार को ढूंढने नहीं जायेंगे ! एक जार की जगह सौ-सौ जार जगह-जगह पैदा हो जायेंगे ।"

दुखोव बहुत शांति और उपेक्षा से बोला—"अजीज के प्रश्न को ले कर हमें भड़क नहीं जाना चाहिये । इस प्रश्न पर हमें राजनैतिक दृष्टि से दूरदर्शिता से विचार करना चाहिये । हमें यह जान लेना चाहिये कि अजीज है क्या । फर्ज कर लीजिये कि उस की शक्ति एक मामूली ततैये के बराबर ही है । एक ततैये की ताकत क्या है ! वह केवल कुछ समय के लिये परेशान कर सकता है परन्तु एक ततैये को छेड़ने का परिणाम होता है कि पूरा छत्ता आ पड़ता है । सोच लीजिये कि एक तुर्कमान को छेड़ कर कहीं हम पूरे तुर्कमानिया को तो नहीं भड़का देंगे ? आखिर वह देश तो उन्हीं लोगों का है । इस से यह कहीं बेहतर होगा कि अजीज से स्वयं झगड़ा मोल न ले कर किसी प्रभावशाली व्यक्ति को ही अजीज का सामना करने के लिये खड़ा किया जाये···।"

"अजीज की फौज से हथियार रखा लेने का मतलब तुर्कमान लोगों से झगड़ा शुरू कर देना हरगिज नहीं है ।" चर्नीशोव ने समझाना चाहा, "इस का मतलब है तुर्कमान जनता को अजीज के जुल्म से बचाना । इस का मतलब है तेजेन के किसानों को जमीन और सिचाई का पानी देना और उन्हें पंचायत के रूप में संगठित करना । इस के विरुद्ध आप के सुझाव का अर्थ होता है कि हम जनता के एक अंग को दूसरे अंग से लड़ा दें । अगर हम ऐसा करते हैं तो यह जार की फूट डालने की कूटनीति की नकल करना होगा ।"

"तुम्हारे पक्ष में कुलीखां जैसे प्रभावशाली तुर्कमान हैं । जनता पर इन लोगों के प्रभाव का उपयोग होना चाहिये ।"

"कुलीखां पर हम लोग बिलकुल भरोसा नहीं कर सकते । कुलीखां प्रत्येक बात में सोवियत की नीति का विरोध कर रहा है ।"

"तुम तेजेन की सोवियत के प्रधान हो ! यदि तुम कुलीखां जैसे

आदमियों को भी अनुशासन में नहीं रख सकते तो तुम वहां कर क्या रहे हो !" दुखोव ने पूछा।

"आप लोगों को याद होगा कि मैंने अपनी रिपोर्ट में यह कभी नहीं कहा कि हमारी सोवियत में बोल्शेविकों का बहुमत है। हमारी सोवियत में जनता विरोधी लोग काफी संख्या में घुसे हुये हैं और यह बात मैं आप की सोवियत में भी देख रहा हूं।"

फुन्तीकोव ने चर्नीशोव की ओर कनखियों से देखा और उस के माथे पर त्योरियां पड़ गई। "जो बात तुम कह रहे हो उस की जिम्मेवारी समझते हो ?" उस ने चर्नीशोव को घूर कर प्रश्न किया।

"यदि आप की सोवियत में जनहित के समर्थकों का बहुमत है, यदि आप को अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास है तो तेजेन की स्थिति सम्भालने में आप को हिचकिचाहट किस बात की है और आप लोग कुलीखां जैसे आदमी का पक्ष क्यों ले रहे हैं ?" चर्नीशोव ने प्रश्न किया, "हमारी सोवियत में कुलीखां जैसे आदमियों के रहने के कारण ही अजीजखां को बढ़ने का मौका मिल सका है। मुझे तो आश्चर्य है कि आप का कुलीखां पर इतना भरोसा और विश्वास है !"

सोवियत की बैठक में मौजूद लोगों का व्यवहार देख चर्नीशोव ने साफ और कड़ी बातें कह देना आवश्यक समझा। कई उदाहरण पेश कर उसने बताया कि अश्काबाद से परस्पर-विरोधी आज्ञायें मिलती रही हैं जिस के कारण तेजेन में उलझनें पैदा हुई और इन सवालों के स्पष्टीकरण लिये लिखा गया तो प्रादेशिक सोवियत से जवाब ही नहीं दिया गया...। चर्नीशोव की इन बातों से फुन्तीकोव बहुत बिगड़ उठा। वह बार-बार उठकर चर्नीशोव का विरोध करने लगा कि चर्नीशोव अपनी बात कह ही न पाये। इसी समय किजाइल अर्वात के मजदूरों के बहुत से प्रतिनिधि और लाल फौज के लोग भी सभा में आ गये। चर्नीशोव ने फिर से अपनी बात दोहराई। अब फुन्तीकोव ने रंग बदल दिया।

"यह तो अजब तमाशा है," फुन्तीकोव बोला, "यह आदमी हम

लोगों पर तोहमत और इलजाम लगा रहा है, हम लोगों को क्रांति विरोधी कहता है और फिर हम से सहायता मांगता है। अपने ऐसे ही व्यवहार के कारण इस आदमी ने तेजेन की सोवियत के सब लोगों को अपना विरोधी बना लिया है। हम तेजेन के मामले की उपेक्षा नहीं कर सकते ! दोस्त चर्नीशोव, हम लोग जल्दी ही आकर तेजेन की स्थिति को स्वयं देखेंगे। तुम वहां झंझट और उलझनें पैदा करते रहो और झंझटों को दूर करने हम वहां जाते रहें तो काम कैसे चलेगा ! यदि हम चर्नीशोव की बातें ठीक मान लें और मान ल कि तेजेन में इस समय स्थिति खराब है तो हम अपने आदमियों को वहां किस की जिम्मेदारी पर भेज सकते हैं ?"

फुन्तीकोव ने अपने इस प्रबल तर्क से सब को चुप करा देने की आशा से लोगों की ओर घूम-घूम कर देखा—"ऐसी स्थिति में कौन तेजेन जाने के लिये तैयार होगा ?" सब ओर चुप्पी देख फुन्तीकोव की आंखें चमक उठीं।

सहसा पीछे की ओर से आवाज आई—"हम जायेंगे तेजेन !"

फुन्तीकोव का चेहरा फक हो गया। "कौन जायेगा ?" उसने फिर प्रश्न किया।

लाल फौज का एक मामूली अफसर लोगों को हटाता हुआ आगे बढ़ आया। चर्नीशोव ने ध्यान से देखा—यह वही अलेक्सी तिशेंको था जो तेजेन की चुनाव सभा में अरतैक को पूछता हुआ आया था। उस के बाद और कई आदमी तेजेन जाने के लिये खड़े हो गये। तिशेंको की लाल फौज की कम्पनी के साथ ही किजाइल अर्वातियन मजदूरों का एक स्वयं-सेवक दल भी तेजेन जाने के लिये तैयार था। फुन्तीकोव के लिये चुप रह जाने के सिवा उपाय न रहा। सभा समाप्त होने के दो घंटे के भीतर चर्नीशोव दो सौ लाल सिपाहियों के साथ तेजेन की ओर चल पड़ा।

लाल फौज की एक और कम्पनी तेजेन में पहुंच जाने का समाचार अजीज को जल्दी ही मिल गया। उसने तुरन्त अपने सलाहकार दरबारियों

को बुलवाया। आल्ती सोपी और अलनजर बे खबर पाकर तेजेन आये परन्तु अजीजखां तेजेन में नहीं था। उन्हें कहा गया कि अजीजखां किसी आवश्यक काम से बाहर गया है, शीघ्र ही लौट आयेगा।

सूरज छिपने को था। पश्चिम की ओर छितराये बादल सुर्ख हो रहे थे। हवा बोझल और गरम हो रही थी। चिड़ियां भी सुस्ती अनुभव कर जहां-तहां पेड़ों पर शाखाओं में जा छिपी थीं। उन के चहचहाने में भी उदासी जान पड़ती थी।

अलनजर का मन भी उदास था। वह उठ कर सराय के आंगन में चहलकदमी करने लगा। संध्या की लाली लिये धुंधलके में वह आंगन उसे कैदखाना सा लग रहा था। अजीज शाम तक भी न लौटा तो उसे विस्मय होने लगा। वह सराय की एक दीवार से दूसरी दीवार तक टहलता अपने दुर्भाग्य की बात सोचता जा रहा था। मेहली के भाग जाने के बाद से उस ने लोगों से मिलना-जुलना बहुत कम कर दिया था। तब से वह शहर में भी नहीं आया था। यहां वह बात भी करता तो किस से ? आल्ती सोपी शहर में अपने किसी मिलनेवाले के यहां चला गया था। सराय में कोई बात करने लायक आदमी था भी तो नहीं।

शहर में जाकर किसी से मिल आऊं···अलनजर सोच रहा था। उस का मित्र अरतैक खजैन भी तेजेन से चला गया था। इन्कलाब होते ही खजैन अपनी जायदाद समेट कर काकेशस चला गया था। मेहली की बात उस ने भी सुनी होगी और वह कमबख्त खूब खुश हुआ होगा। उस का मन और भी भारी हो गया—क्या फायदा कहीं जाने का···इस से तो अच्छा है लेट कर आराम ही किया जाये।

लेट जाने पर भी उसे नींद नहीं आई। चुपचाप लेटने से दुश्चिन्ताओं से मन और भी व्याकुल हो रहा था—उस पर क्या नहीं बीती···बदनामी, माल का नुकसान क्या नहीं हुआ ! अब जानवरों के लिये चारा भी नहीं मिल रहा है। उस की सैंकड़ों भेडें और बीसियों ऊंट मर चुके थे। उस के डेरे के चारों ओर जानवरों की हड्डियां बिखरी पड़ी थीं।···

अल्लाह मुझ से नाराज क्यों है ? या अल्लाह, मेरे गुनाह बख्श, मुझे पनाह दे ! या अल्लाह, कहीं खादिम की तरह मेरे लिये भीख मांगने की नौबत न आ जाये । मेरे खुदा रहम कर मुझ पर !...बहुत देर तक इसी तरह के ख्यालों के बाद उस की आंख लगी ।

गोलियां दगने की आवाज से उस की नींद उचट गई । वह पलंग पर से उछल पड़ा । वह एक लबादा पहने था, उसी हालत में आंगन की ओर दौड़ पड़ा । चारों ओर से गोलियां दगने की आवाजें, नींद में घबराहट से डर गये अजीज के सिपाहियों की चीखें सुनाई दे रही थीं और बन्दूकों की नालियों से उठते भभूके अंधेरे में दिखाई दे रहे थे ।

अलनजर ने घबरा कर पुकारा—"अजीजखां, अरतैक !"

एक गोली उस के सीने में लगी । वह लड़खड़ा गया । उस का सिर चकरा कर आंखों के आगे धुन्ध छा गया । उस समय भी उस के मुंह से निकला—"बेटा, अतादयाली...मैं...दुश्मन नहीं...मुआफ...!" वह कटे पेड़ की तरह फर्श पर गिर पड़ा ।

अजीजखां की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारने का काम बहुत चुस्ती और होशियारी से किया गया था । कुलीखां को इस आयोजन की खबर भी नहीं दी गई । तेजेन की लाल फौज और अश्कावाद से आई मजदूरों और सिपाहियों की कम्पनी को मिला कर पूरी कमान तिशेंको को सौंप दी गई और चर्नीशोव छापा मारने के समय स्वयं भी उन के साथ बना रहा । काफिला सराय में अजीज के डेरे की देख-भाल एक दिन पहले ही कर ली गई थी । सोवियत सेना को दो टुकड़ियों में बांट कर पूरब की ओर से तथा रेलवे स्टेशन की ओर से भी घेर लिया गया । अजीज के संतरियों को घेरे का पता ही उस समय लगा जब उन के लिये कुछ कर सकने का अवसर न रह गया था । अजीज के सिपाही नींद से मदहोश और हमले से घबरा कर जिधर बन्दूक की नाली उठी, गोली चलाने लगे । इन की गोलियों के जवाब में रेलवे लाइन की ओर से एक बौछार गोलियों की आई । असल में तो इसी एक बौछार से लड़ाई का

फैसला हो गया। अजीज के सिपाही अपनी बन्दूकें फेंक, नंगे-उघाड़े सराय की नीची दीवारें फांद-फांद कर भाग निकले। अजीज के घोड़े, हथियार और अलनजर बे की लाश सराय में पड़ी रह गई। सोवियत सेना ने सराय पर कब्जा कर लिया।

सोवियत के सिपाहियों ने अजीज के भागते हुये सिपाहियों का पीछा किया। कोई-कोई भागते हुये सिपाही पीछा करने वालों पर गोली चलाते जा रहे थे। अरतैक भी इन्हीं में था। बेखबरी में हमला होने पर नींद से उठते ही अरतैक ने अपने सिपाहियों को रोक कर दुश्मन का सामना करने की कोशिश जरूर की परन्तु सिपाहियों को जमता न देख कर वह भी दीवार फांद कर भाग निकला।

भागता हुआ अरतैक अपने बचाव के लिये पीछे की ओर गोली चलाता जा रहा था। मतलब था कि पीछा करने वाले नजदीक न आने पावें लेकिन पीछा करने वाले लाल सिपाही गोलियां आने पर भी रुके नहीं। अरतक के सिर के ऊपर से गोलियां सन्नाती हुई निकल रही थीं। अरतैक ने समझा कि पीछा करने वालों की नजर उस पर पड़ गई है और वे उसी पर गोली चला रहे हैं। वह एक छोटी सी दीवार की आड़ में झुक गया और पीछा करने वालों को देख कर उस ने गोली चलाई। पीछा करने वाला लाल सिपाही भी एक दीवार के कोने की ओर हो गया। दोनों के ही पास कारतूस थे। ज्यों ही वे दूसरे को आड़ से बाहर सिर निकालते देखते, एक-दूसरे पर गोली चला देते।

अंधेरे के कारण दोनों का ही निशाना खाली जा रहा था। अरतैक अपने ऊपर झुंझलाया—घबराहट में कारतूस बरबाद करने से फायदा ! उस अपना चित्त स्थिर करके निशाना लेने का यत्न किया फिर भी निशाना न बैठा। उस के कारतूस खत्म हो गये। अब उस के पास रिवाल्वर ही रह गया था। वह सोच रहा था कि जगह बदल ले परन्तु उस ने देखा कि उस के विरोधी की बन्दूक भी चुप है। उसी समय अरतैक को विरोधी की ओर से बन्दूक का घोड़ा चढ़ाने की आहट तो आई परन्तु

उस की गोली नहीं दगी। अरतैक समझ गया कि दुश्मन की बन्दूक जाम हो गई है। अरतक उस की ओर आंखें गड़ाये अपनी जगह से उठने लगा। उस का विरोधी लाल सिपाही भी खड़ा हो गया। तारों की छांव में वह सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अरतैक अभी सोच नहीं पाया था कि क्या करे; सहसा लाल सिपाही को बगल से गोली चलने का धड़ाका हुआ। उस के हाथ से बन्दूक गिर गई और वह धरती पर गिर पड़ा। गिरते-गिरते उस ने पुकारा—"तिशेंको···अल्योशा, आओ!"

यह पुकार अरतैक के कलेजे में धंस गई। वह स्वर उसे पहचाना हुआ लगा। अरतक दौड़ कर जख्मी सिपाही के पास पहुंचा। लाल सिपाही धरती पर धीमे-धीमे छटपटा रहा था। अरतैक उस पर झुक गया और कुछ सन्देह से पुकारा—"अशीर!···क्या तुम हो अशीर?"

जख्मी सिपाही ने आंखें खोल उत्तर दिया—"अरतैक!"

"हां मैं अरतैक हूं।"

"क्या तुम···नहीं, यह नही हो सकता!"

"मैंने तुम्हें जख्मी नहीं किया अशीर।" अरतैक का गला रूंध रहा था।

"···मैं जानता हूं।" बहुत धीमे से अशीर की आवाज निकली, "मैं तुम पर गोली चला रहा था परन्तु मेरे हाथ हिल जाते। तुम भी मुझ पर गोली चला रहे थे। मैं जानता हूं मुझे तुमने गोली नहीं मारी···।"

अशीर का सिर एक ओर लुढ़क गया। अरतैक ने उसे बाहों में उठा लिया और सोचने लगा उसे कहां ले जाये। काफिला सराय में या लाल सेना की बारिक में? जहां भी वह जाता, अजीज की सेना का कप्तान होने के नाते गिरफ्तार कर लिया जाता परन्तु यह बात उस ने नहीं सोची। उसे चिन्ता थी, जैसे हो अशीर की मरहम-पट्टी की जाये और वह तकलीफ से बचे।

अंधेरे में समीप ही कदमों की आहट सुनाई दी। अरतैक ने उसी ओर पुकारा—"कौन है?···यहां आओ। मदद करो।"

राइफल सम्भाले एक आदमी आगे बढ़ आया और संदिग्ध स्वर में उस ने प्रश्न किया—"क्यों, क्या बात है ?"

"तिशेंको !" अरतैक पुकार उठा, "अलेक्सी, मदद करो। इस जख्मी आदमी को ले चलो !···यह तुम्हारा सिपाही है, अशीर सहात !"

"अशीर !···जख्मी हो गया ? मैं तो इसी को खोज रहा था !"

तिशेंको और कुछ नहीं बोला। अरतैक को पहचान लेने का भी कोई संकेत उस ने नहीं किया। अपनी राइफल कंधों से लटका उस ने तुरन्त अरतैक की कलाइयों में अपनी कलाइयां डाल कर कुर्सी बना ली और अशीर को उस पर टिका कर बोला—"चर्नीशोव के यहां चलो। उस का घर नजदीक है।"

बेहोश अशीर को उठाये वे दोनों धीमे-धीमे चर्नीशोव के मकान पर पहुंचे। चर्नीशोव मकान पर नहीं था। उस की पत्नी अन्ना गोलियां चलने के धड़ाके से उठ बैठी थी और फिर लेटी नहीं। दरवाजे पर कदमों की आहट और जख्मी की कराहट सुन वह घबरा उठी—"हाय, क्या···चर्नी को क्या हो गया ?"

"घबराओ नहीं अन्ना !" तिशको ने गम्भीरता से कहा, "यह चर्नी नहीं है, दूसरा सिपाही है। इसकी मरहम-पट्टी करो !"

अन्ना ने तुरन्त अशीर को एक बिस्तर पर लिटा दिया और उस के जख्म को धोकर मरहम-पट्टी करने लगी। कुछ देर बाद अशीर ने आंखें खोलीं। तिशेंको को सामने देख उस ने कहा—"अलेक्सी, मुझे अरतैक ने गोली नहीं मारी।"

अशीर की बात सुन तिशेंको ने अरतैक की ओर ध्यान से देख उसे पहचाना परन्तु बोला कुछ नहीं।

"यह बात ठीक है," अरतैक ने अशीर की बात का समर्थन किया—"परन्तु मैंने गोली इस पर जरूर चलाई थी।"

तिशेंको ने उत्तर न दे मुंह फेर फिर अशीर की ओर देखा—"घबराओ मत तुम। यह बाद में देखा जायगा कौन सोवियत और

जनता का मित्र है और कौन उनका शत्रु !"

तिशेंको ने अरतैक को पहचान कर न दुआ की, न कुछ बातचीत, न इतने दिनों बाद मिलने पर प्रसन्नता ही प्रकट की। जैसे जेलखाने में भाई बनने की बात उसे याद ही न हो !

"अलेक्सी," अशीर फिर तिशेंको की ओर देखकर बोला, "कुछ नहीं कहा जा सकता भाई, जब किसी को समझ आ जाए···।"

अरतैक का चेहरा सुर्ख हो गया परन्तु वह कुछ बोला नहीं। उसे याद आ गया, चर्नीशोव ने कहा था—तुम अजीज की तरफ जा रहे हो। एक दिन खुद ही तुम अनुभव करोगे कि जनता के शत्रुओं का साथ देकर तुम स्वयं ही जनता के शत्रु बन जाओगे !···जनता अपने शत्रुओं को कभी माफ नहीं करेगी !

अरतैक के लिये वहां खड़े रहना सम्भव न रहा। उस ने अन्ना को सलाम किया और चल दिया। न किसी ने उसे रोकने का यत्न किया और न ही किसी ने उस से पूछा कि वह कहां जा रहा है।

तारों की छांव में कठिनता से राह पहचानता वह रेल की लाइन के साथ शहर से बाहर चल दिया। उस के मन में बार-बार यह बात उठ रही थी—मैंने सोवियत सरकार और जनता के विरुद्ध हथियार उठाये हैं···जो जनता के लिये लड़ रहे हैं, वे मुझे अपना शत्रु समझेंगे ही··· चर्नीशोव ने ठीक ही कहा था !

१८

अंधेरी रात में अरतैक अपने गांव की राह पर चला जा रहा था। सुबह के पहर धुन्ध कम होने लगा परन्तु चमकते तारों पर हल्की बदली का पर्दा छा गया। अरतैक सोचता जा रहा था—आज दुनिया में जो कुछ हो रहा है, वह समझ लेना सम्भव नहीं। दुनिया की हालत तो इस अंधेरी रात से भी ज्यादा बुरी हो रही है। राह को सीधी और साफ समझ कर चलो तो दो कदम जाते ही कांटेदार झाड़ियां आ जाती हैं। दाहिने घूमो तो दलदल है और बांयें घूमो तो नाला! लौटना चाहो तो राह भटक जायें!···पर यह तो साफ है कि मैं चर्नीशोव, तिशेंको और अशीर का दुश्मन बन गया हूं। अपने हार्दिक मित्र को मैंने मार ही डाला था! बचपन में हम लोगों का कितना मेल और प्यार था···भाइयों से बढ़ कर! आज हम एक-दूसरे की जान ले रहे थे। हमें कौन जायदाद बांटनी है···हमारी लड़ाई किस बात पर है? मैं अजीजखां के लिये इन लोगों से लड़ रहा हूं! अजीज कौन मेरा अपना है···तो फिर लड़ाई किस बात की?

यह दुनिया ही धोखा है!···यह तो पागलपन है।···यह उसूलों की लड़ाई है।···मेरा बाप उम्र भर धरती जोत कर खेती करता रहा, क्या पा लिया उसने? मैं ही बीस बरस एक तम्बू में पड़ा खेती करता रहा, क्या फायदा हो गया उस से? भूखा रहा, नंगा रहा! दुनिया मजाक नहीं है। कुछ करना है तो लड़ना पड़ेगा; जिन्दा रहना है तो भी लड़ना पड़ेगा! अपने लिये और अपने जैसे लोगों की जिन्दगी के लिये लड़ना

पड़ेगा। बाबाखां और उस के दोस्तों से जिन्होंने मेरे जैसे लोगों का खून पिया है, मुझे लड़ना पड़ेगा लेकिन तिर्शंको, चर्नीशोव और अशीर भी तो यही कर रहे हैं !···वे लोग भी तो जनता के लिये लड़ रहे हैं। मेरा और उन का क्या झगड़ा ? सहसा उसे खयाल आया—इन दोस्तों से मैं क्यों लड़ रहा हूं···यह मेरे कंधों पर लगे अजीज के निशान ही मुझे इन लोगों से लड़ा रहे हैं !

अपने कंधे से हरे निशान उतार अरतैक ने फेंक दिये। इतने दिन तक यह निशान लगाये रहने के लिये मन में ग्लानि भी अनुभव हुई।

भुरभुरे बादल अब बरसने लगे थे। बूंदे महीन थीं परन्तु हवा की तेजी से चेहरे पर चुभती सी जान पड़ती थीं। अरतैक अपने मन की उलझन में इतना खोया हुआ था कि बारिश से भीगने की ओर उस का ध्यान ही न गया। सूखा पड़ने के बाद के बरस में वह तीसरी बारिश थी।

सूरज निकलने के समय तक बारिश थम गई। बारिश से धूल बैठ गई थी इसलिये बादलों को उड़ाने वाली हवा चली तो उस में धूल का नाम न था। भीगी धरती से बहार की गंध उमड़ रही थी। सब ओर जीवन फूटने के चिन्ह दिखाई पड रहे थे। अभी तक अंधेरे से दृष्टि सीमित होने के कारण अरतैक को जान पड़ रहा था कि धरती और संसार सिमट कर अंधेरा कुंआ बन गये थे। अब प्रकाश फैलने से दुनिया उसकी आंखों के सामने फैल गई। खेतों में गेहू के अंकुर फूट रहे थे। बरस भर से दबा बीज धरती में रस पाकर फूट उठा था।

चारों ओर फैले नये जीवन के चिन्हों से अरतैक के मन का दुख और शरीर की थकावट भी उड़ गई। उस का मन गुदगुदाने लगा। वह गुनगुनाने लगा और फिर ऊंचे स्वर में गाने लगा। उसे पता न लगा कि राह कैसे कट गई और वह घर पहुंच गया।

ऐना उसे आया देख उस के सीने पर सिर रख ऐसे चिपट गई कि मानों वह अरतैक के लौटने की आस खो बैठी हो। अरतैक को खूब

प्रसन्न और उस के कंधों पर से हरे निशान फटे देख ऐना का दिल बाग-बाग हो गया।

'ऐना को देख पाता हूं तो मुझे दुख और चिन्ता भूल जाती है···' अरतैक ने सोचा, 'क्यों मैं व्यर्थ भटकता फिरता हूं! जो सुख और विश्राम घर में है, उसे भी छोड़े बैठा हूं। अब चाहे जो हो, जैसा अमल चले, पहले जैसा जोर-जुल्म तो हो नहीं सकता। मैं राजनीति समझता नहीं हूं। खामुखा भटक रहा हूं। बेहतर है घर पर ही चैन करूं। ऐना भी तो यही चाहती है···।'

अरतैक को अपने गांव का जीवन सुख-संतोष भरे संसार के ख्वाब जैसा जान पड़ रहा था। ऐना आंखों के सामने दिखाई पड़ती रहने से जीवन में पूर्णता और संतोष जान पड़ता था। ऐना की बोली कितनी मीठी जान पड़ती! उस का चलना-फिरना, उठना-बैठना; उसका सब व्यवहार उसे सौन्दर्य की सब से बड़ी कल्पना जान पड़ती। ऐना भी सभी तरह उसे अधिक से अधिक संतोष देने का यत्न करती। ऐना ये सब पत्नी की दीनता से नहीं बल्कि अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से, परस्पर प्यार को पूर्ण करने और संतोष पाने के लिये करती। उन का प्रेम निस्सीम जान पड़ता। ऐसा जान पड़ता कि एक ही हृदय अलग-अलग शरीरों में काम कर रहा था। एक के होठों पर आई मुस्कान दूसरे के मन को गदगद कर देती। दोनों बिलकुल एक जान हो गये थे।

अरतैक का चाचा, लड़के और बहू का यह व्यवहार देख विस्मित था—आजकल के लड़के-लड़कियों के ढंग निराले हैं! इन बेवकूफियों में क्या रक्खा है! आखिर औरत क्या है! वह सोचता—अपनी बीबी के लिये पागल और परेशान होने का क्या मतलब! नये घड़े का पानी ठंडा मालूम होता ही है। चाहे इसे मुहब्बत कह लो या कुछ और! देर तक प्यासा रहने के बाद जो भी पानी मिल जाये, उस का स्वाद और गंध अच्छा ही होता है।

अरतैक इस घरेलू जिन्दगी में ऐसे बैठता चला गया कि उसे दूसरी

तरह का जीवन केवल मूर्खता और अहंकार ही जान पडने लगा। वह सोचने लगा—बाप-दादा से चला आया तरीका, देहात में रह कर खेती करना ही सब से बड़ा संतोष है। वह सोचता—अब कौन अलनजर आकर उसे लूट ले जायेगा! वह यह भी भूल गया कि अलनजर बेचारा तो मर चुका था और शायद अपने साथ ही वह अपनी निर्दयता, धूर्तता, क्रूरता और शोषण भी ले गया था। बात कही जाती है कि मकान गिर भी जाता है तो उस की नींव रह जाती है; वैसे ही अरतैक के मन में अलनजर की छाया अभी बनी ही थी। गांव में यह अफवाह फैल गई थी कि अरतैक ने ही अलनजर को मार डाला है हालांकि अलनजर को मार डालने में अरतैक को कोई आपत्ति नहीं थी और न वह इस तरह की लोक निन्दा की ही चिन्ता करता था। इस नये जीवन की शान्ति का प्रभाव था कि अरतैक को इस अफवाह से मन ही मन अच्छा न लगता था। वह मन ही मन कहता—'अरे कहते हैं तो कहने दो! अलनजर का काम अगर मैंने तमाम नहीं किया तो अभी बाबाखां तो बचा ही है!'

अरतैक ने खेत के हल और दूसरे औजार ठीक कर डाले। बैलों के जुए सम्भाले। दीमक लग कर यह सब बरबाद हो रहे थे। उस ने फावड़े और बेलचों को ठीक कर उन पर धार रखी।

इधर पानी का छींटा भी आकाश से रोज ही गिर रहा था। जमीन नरम देख किसानों ने खेत सम्भालने शुरू किये। ईद के अगले रोज अरतैक भी अपने चाचा के साथ जुताई करने खेतों में पहुंच गया। नमी भरी हवा उन के पसीने से तर चेहरों को सहला जाती। नम धरती बड़ी उत्सुकता से हल के फाल के इशारे पर उलटती जा रही थी और उस की महक जोतने वालों का उत्साह बढ़ा रही थी।

नये जुते हुये खेतों पर से एक चिड़िया चिल्लाती हुई निकल जाती—'टू···टी···टा! टू···टी···टा!' अरतैक को जान पड़ता, चिड़िया कह रही है—'जो जोतेगा, खायेगा! जो बोयेगा, खायेगा!'

अरतैक को विश्वास था—यही नये युग का संदेश है।

१९

जिस रात लाल सेना ने काफिला सराय पर छापा मार कर अजीज के सिपाहियों के हथियार छीन लिये, अजीज शहर में न था। वह शहर से कुछ दूर एक गांव में टिका हुआ था। सराय से भागे सिपाहियों ने जाकर उसे दुर्घटना और अलनजर बे की मौत का समाचार दिया। दुख और चिन्ता का कारण था कि इस छापे में लाल सिपाहियों ने अजीज की दो सौ अठारह राइफलें और बारह हजार कारतूस हथिया लिये थे। इस भयकर चिन्ता के समय वह बे की जान को क्या रोता !

अजीज के सिपाहियों ने खोये हथियार फिर से मिल सकने की आशा भी दिलाई। उन्होंने बताया कि लाल सेना के कमान्डर कुलीखां को हथियार पा कर लाल सेना की शक्ति बढ़ाने की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि यह छीने हुये हथियार बेचकर रुपया बनाने की है। इन सिपाहियों ने भेद पा लिया कि कुलीखां ने अजीज से छीने हुये हथियार तुरन्त ही एक धूर्त यहूदी चारी चमन को देकर तौशेज भेज दिया था। चारी चमन यह हथियार या तो जुनैदखां के हाथ या खुरासान के सरदारों के हाथ बेचेगा। खुरासान के सरदार जुनैदखां के विरुद्ध बगावत करने के लिये हथियार जुटा रहे हैं। चारी चमन अभी दूर नहीं गया होगा। अगर तेज सांडनियों पर उस का पीछा किया जाये तो हथियार लौटाये जा सकते हैं।

अजीज ने सोच-विचार में समय बरबाद न कर छः तेज सांडनियों पर अलान कसवाये और अपने भरोसे के छः सिपाहियों को ले कर चारी

चमन के पीछे सरपट चाल से रेगिस्तान में निकल पड़ा। तेज सांडनियां रेत के टीलों को फांदती चली जा रही थीं और कड़ी धरती पाकर वे ऐसे उड़ने लगतीं कि मानो हवा उन का पीछा कर रही हो। उसी राह पर चलने वाले दूसरे काफिले विस्मित थे कि यह लोग किस चाल से जा रहे हैं और कहां जाकर रुकेंगे। लोगों ने यही समझा कि यह डाकुओं का दल है और पीछा करने वालों से जान बचाने के लिये भाग रहा है।

तेजेन की ओर जाते हुये कई काफिले भी उन्हें मिले। रेगिस्तान की लम्बे सफर में भी व्यापारी काफिलों के ऊंट अपनी लहराती गर्दनें आकाश की ओर उठाये, दांये-बांये देखते हुये, धीमी मस्तानी चाल से चला करते हैं परन्तु इन काफिलों के ऊंटों के कोहान छिलकर खून बहते रहने से लकीरें जमी हुई थीं। कुछ ऊंट बोझ उठाने लायक ही न रहे थे और खाली ही जसे-तैसे चल रहे थे। कुछ गधों पर बोझ लाद दिया गया था और वे ऊंटों के लायक बोझ से टांगें फैलाये, काले पसीने से लथपथ, दम तोड़ते चल रहे थे। यह काफिले तेजेन में भूखे मरते अपने लोगों के लिये अनाज ढोकर ला रहे थे। इनके हृदय धड़क रहे थे कि अनाज घर पहुंचने से पहले ही कहीं उन के परिवार भूख से दम न तोड़ बैठें।

राह चलते काफिलों को अजीज ध्यान से परखता जा रहा था और उन से आगे गये चारी चमन के विषय में पूछ लेता कि वह कितनी दूर पहुंचा होगा। पहले तो काफिले वाले कुछ समझ न पाते परन्तु काले, ठिगने, चंचल से आदमी का हुलिया सुनकर बताते कि उसे तो हमने तीन दिन पहले देखा था, वह तो बहुत दूर निकल गया होगा। अजीज अपनी सांडनियों को और तेज कर देता। वह बिना रुके पड़ाव पर पड़ाव पीछे छोड़ता जा रहा था। उस ने सांडनियों के पालन से पांव नीचे न रखा था।

काराकोरम के रेगिस्तान में से पन्द्रह दिन की इस राह के दोनों ओर युगों से इस राह पर मरते चले आये ऊंटों के पंजर धूप से सफेद होकर चमकते दिखाई देते रहते हैं। अजीज के दल को कहीं-कहीं झाड़ियों

के आस-पास भटकते ऊंट भी दिखाई दे जाते जिन्हें उन के मालिक साथ चलने में असमर्थ जान कर मर जाने के लिये राह पर छोड़ गये थे परन्तु ये जानवर मरे नहीं बल्कि विश्राम पाकर चलने-फिरने लायक हो गये। कहीं भेड़ों के गोल दिखाई दे जाते। रात के समय गड़रियों की बंसी की तान भी सूने रेगिस्तान में गूंज उठती। उन्नीस सौ सत्रह के सूखे ने इस दृश्य को और भी भयंकर बना दिया था। इस मंजिल पर जहां-तहां बने कुयें और सोते सूख कर पड़ोस में बसी छोटी-मोटी बस्तियां भी उजड़ गई थीं। कहीं ही कोई बच रहा रहा खेमा दिखाई दे जाता। झाड़ियों में पत्ते तो उग ही नहीं पाये थे। भूखे ऊंट झाड़ियों की टहनियां भी चबा गये थे। इस साल मरे जानवरों की लाशें पिछले दस बरस के पंजरों से कहीं अधिक थी। भेड़ियों और लोमड़ियों की आवाजें अब पहले से कहीं अधिक सबल हो गई थीं और ये जानवर भी खूब मुटा रहे थे। इन्हें अब शिकार की तलाश में भटकना न पड़ता था। जगह-जगह काफिलों से गिर पड़े ऊंटों की लाशें इन के खाये खतम न हो पाती थीं। यह जानवर रात में डेरों के पास निधड़क आ घिरते। इन के मन से इन्सानों का डर जाता रहा था। आदमियों को देख वे विस्मय से ऐसे कनौतियां खड़ी कर लेते मानों सोच रहे हों कि क्या अभी भी जिन्दा इन्सान और जानवर दुनिया में बाकी हैं !

ओताकिक पहुंच कर अजीज ने काफिलों के डेरे में फिर चारी चमन की बाबत पूछा। उसे उत्तर मिला कि काफिले को लोगों ने दो दिन पहले देखा था। वे लोग भी बहुत तेजी में थे। अब तक तो वे लोग काराकोरम का रेगिस्तान पार कर चुके होंगे।

अजीज और तेजी से चल पड़ा। उसे भरोसा था कि खुरासान पहुंच कर वह चारी चमन को पकड़ तो लेगा परन्तु भय था कि उस के पहुंचने से पहले ही चारी चमन हथियारों को बेच न डाले। चारी चमन भाव-तोल तो क्या करेगा ! वह तो मिट्टी के मोल ही सब कुछ फेंक कर पैसा बटोरने की ही करेगा। अजीन ने सांडनियों को और निर्दयता से

हांका। पन्द्रह दिन की राह वे लोग तीन ही दिन में पूरी किये डाल रहे थे।

तख्त पहुंच कर उस ने फिर एक काफिले से चारी चमन के विषय में पूछा। इन लोगों ने बताया चारी चमन उहें कल ही मिला था। वह वहुत जल्दी में था और हथियार बेच कर साठ ऊंट और साठ ऊंट के बोझ का चावल खरीद कर तेजेन लौटने की बात कर रहा था। इन लोगों से भी कह गया था कि जिसे पुलाव खाना हो, थाली लेकर तेजेन पहुंच जाये।

अजीज ने पूछा—"ख्याल है वह तौशेज कब तक पहुंच जायेगा ?" अजीज पछता रहा था···अगर वह कुछ और पहले चल सका होता !

अगले दिन दोपहर के बाद अजीज का दल काराकोरम की सीमा पर पहुंच गया। सपाट रेत के मैदान के आगे तख्त के बाग दिखाई देने लगे थे। दिखाई दे जाने पर भी तख्त अभी दूर था। तेजेन से पन्द्रह दिन की मंजिल तीन दिन में पूरी करने से जितनी कठिनाई उन्हें हुई थी, उस से अधिक दूभर हो गया रेगिस्तान की सीमा से तख्त तक पहुंचना।

अजीज जब तौशेज और खुरासान के खान जुनैदखां के आंगन में पहुंचा तो सूर्यास्त हो चुका था। जुनैद के आदमियों ने अजीज के लिये ठहरने की जगह का इन्तजाम कर दिया परन्तु अजीज ने अपने आने की खबर जुनैदखां को तुरन्त दी जाने का आग्रह किया।

खबर पाकर जुनैदखां आया। जुनैद का शरीर भारी-भरकम परन्तु गठीला था। उस के लाल चेहरे पर सफेद गोल दाढ़ी खूब फब रही थी। उस की आंखें बाज की तरह पैनी थीं। जुनैदखां ने अजीज को आलिंगन ले सलाम किया, कुशल-मंगल पूछा और अजीज का हाथ अपने हाथ में थामे बोला—"मेरे भाई, शुक्रिया है तुम ने अपने बड़े भाई का इतना ख्याल किया और यहां आने की तकलीफ की। तुम्हें अचानक आ पहुंचा देख कर तो मुझे और खुशी हुई।"

जुनैद अजीज को अपने खास मेहमानखाने में लिवा ले गया। अजीज

आंगन में आते-जाते घुड़सवारों की संख्या से हैरान था। घोड़े भी बढ़िया और सजे-धजे थे। भूरी दाढ़ी वाले सभी सिपाही खानदानी सर्दारों जैसे जंच रहे थे। कुछ घोड़ों के पीछे हाथ बंधे, गलों में फंद पड़े आदमी घिसटते चले आ रहे थे। अजीज और उस के साथ के लोगों के ऊंटों को बाहर के आंगन में खड़े नौकरों ने थाम लिया। यहां बीसियों घोड़े, जीन और साज से लैस, खूंटों से बंधे थे। दूसरे आंगन में माल-असबाब की गांठों और बोरों के गंज लगे हुये थे। जुनैद का मकान तीसरे आंगन में था। मकान बाहर से मामूली सा दिखाई देता था परन्तु भीतर फर्श से छत तक सजावट से पटा हुआ था। चारों ओर भड़कीले रंगों में बने फूलों से सजावट की गयी थी। एक कोने में आग की लपटें उगलते समावार और प्यालों में चाय उड़ेलती चायदानी का चित्र बना हुआ था। कालीनों से मढ़े फर्श पर जगह-जगह मखमली गाव तकिये लगे हुये थे। रेशमी गद्दियों और रजाइयों के ढेर बने थे। एक कोने में आदमकद आइना लगा हुआ था।

एक नौकर हुक्का लेकर हाजिर हुआ। चिलम में तौशोज का सफेद तम्बाकू जमा हुआ था। तम्बाकू पर दहका हुआ अंगारा रख खादिम ने हुक्का मेहमान के सामने पेश किया। अजीज ने एक कश खींचा। तम्बाकू की महक चारों ओर फैल गई परन्तु उस के साथ ही अजीज का सिर भी चकरा गया।

कुछ समय बाद अपने को सम्भाल कर अजीज बोला—"कुर्बान मुहम्मदखां, भाई मुझे मुआफ करना। मै आपको एक तकलीफ देने के लिए हाजिर हुआ हूं...।"

तौशोज के खान का नाम कुर्बान मुहम्मदखां था। जुनैद उस के कबीले का नाम था। इतने बड़े खान को नाम लेकर पुकारना और फिर घर-बार के हाल पूछे बिना स्वयं ही मतलब की बात शुरू कर देना तुर्कमानी रिवाज से उचित बात नहीं थी। जुनैदखां विस्मय ने अपने मेहमान के मुख की ओर देखता रह गया और बोला—"अजीजखां, तुम अचानक आ

पहुंचे और बात भी कुछ अजीब ढंग से कर रहे हो; खरियत तो है ?"

"मालिक खान ! इस समय मैं खान की स्थिति में नहीं हूं बल्कि अपना सर्वस्व लेकर भागते डाकुओं के पीछे तुम्हारी सहायता मांगने आया हूं । यह डाकू आज सुबह या दोपहर आप के इलाके में आये हैं । मैं सब से पहले इन डाकुओं को खोजने की प्रार्थना करना चाहता हूं ।"

"तुम्हारा क्या नुकसान हुआ ? निजी नुकसान या तुम्हारे इलाके का ?"

"मेरा निजी नुकसान भी और मेरे इलाके का भी ।"

"खैर, अगर वह डाकू मेरे इलाके की सीमा में है तो कल सुबह तुम्हारे बिस्तर से उठते ही तुम्हारा माल तुम्हारी नजरों के सामने मिलेगा ।"

"हजार शुक्र है मालिक !" अजीज ने चारी चमन की हुलिया और अपनी बन्दूकों की संख्या जुनैद को बता दी । जुनैद ने तुरन्त अपने आदमियों को हुक्म दिया कि सभी गांवों में पड़ताल की जाय और चारी चमन और उस के साथियों और उन लोगों को शरण देने वाले लोगों की मुश्कें बांध कर फौरन पेश किया जाय ।

जुनैद ने मन ही मन सोचा, क्या अजीजखां इतनी सी बात के लिये अकेला उस के पास दौड़ा आया है ! जरूर मुसीबत में फंसा है । अजीज को पहले विश्राम करने का अवसर देने के तकल्लुफ की परवाह न कर उन ने मेहमान को सम्बोधन किया—"अजीजखां, हम तुम दूर-दूर रहते हैं तो क्या, मन तो हमारा मिला हुआ है । जब कभी कोई यात्री उस ओर से आता है, मैं सदा तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछ लेता हूं । तुम्हारे बढ़ते इकबाल की बात सुन मुझे सदा बहुत प्रसन्नता होती है । आज क्या बात है ? क्या बहुत थके हुए हो ? तुम सुस्त और मुर्झाये से जान पड़ते हो । मैं यह नहीं पूछ रहा कि तुम्हारी यात्रा का प्रयोजन क्या है; सिर्फ सोच रहा हूं कि मैंने सदा तुम्हारी बढ़ती शक्ति की बातें सुनी थीं परन्तु तुम उदास दिखाई दे रहे हो !"

अजीज जानता था कि जुनैद बहुत चतुर आदमी है । उस के स्थिति

भांप लेने से अजीज को कुछ आश्चर्य नहीं हुआ। जुनैद से कुछ छिपाने का यत्न करना भी मूर्खता थी। अजीज चाय पीते-पीते धीमे-धीमे कहने लगा—"मालिक खान, मुझ तुम्हारी नसीहत याद है—अगर दुश्मन का हमले का इरादा जान पड़े तो उस पर ही वार करो! मैंने तेजेन में सोवियत के मौका पाने से पहले ही अमीरों का गल्ला लेकर गरीब लोगों में बांट दिया था लेकिन सब से बड़े मामले में ही मैं इस नियम से चूक गया और इसीलिये मार भी खा गया···।" अजीज ने तेजेन में लाल फौज के छापे और अपने हथियार खो बैठने की घटना सुना दी।

अजीज की बात खतम होते ही जुनैद पूछ बैठा—"अजीजखां, तुम नहीं जानते मैं खीवा में क्यों नहीं रहता। वहां इसफन्दियारखां का आलीशान महल मेरे पास है। क्यों मैंने अपना घर यहां तख्त जैसी मामूली जगह में, तौशेज के वीरान इलाके में बनाया है?" अजीज कुछ न समझ सका; जुनैद कहीं रहे उस की बला से! वह अजीज से यह प्रश्न क्यों पूछ रहा था? "मालिक खान, मैं कुछ जवाब नहीं दे सकता। शायद यह बात है कि आप जुनैद के खान हैं।"

जुनैद मुस्करा दिया और बोला—"ठीक है, तुम नहीं समझ सकते! सुनो, अगर मैं खीवा जाकर इसफन्दियारखां के महल में रहूं तो लोग मुझे खान के बजाय शाह समझने लगेंगे लेकिन असलियत क्या होगी! मैं बुलबुल की तरह पिंजरे में कैद हो जाऊंगा। खीवा शहर किले की चारदीवारी से घिरा है और राह है केवल नदी के पुल पर से। किले के चारों ओर इसफन्दियारखां के पुराने सहायक जमे हुये हैं। वे लोग मुझ से जलते हैं। अभी तो उन की हिम्मत मेरा विरोध करने की नहीं परन्तु मुझे कमजोर पायें तो झट चढ़ बैठें। यहां कोई आस-पास मुझे आंख दिखाने की हिम्मत करने वाला नहीं है। यहां मुझे अगर खुरासान या खीवा में बगावत की खबर मिले तो सूरज डूबने से पहले मैं उन लोगों का नामोनिशान मिटा दे सकता हूं। तुम वहां तेजेन शहर में घिरे बैठे हो, वहां तुम किस पर हुकूमत करोगे! जार के अफसरों पर? एक तो

वह रेलवे लाइन तुम्हारी छाती पर वार साधे बैठी रहती है। तुम उन लोगों के खिलाफ उंगली भी उठा दो तो वे सब ओर से घेर कर तुम्हारा सिर कुचल दें। मान लो मैं तुम्हें पांच हजार घुड़सवार दे दूं। तुम जाकर तेजेन को फूंक डालो ! कल क्या होगा ? रेल के रास्ते तेजेन में दोनों तरफ से दुश्मन की फौजें आ घिरेंगी। तुम तुर्कमान सिपाही हो, रेतीले मैदान में जन्मे-पले ! शहर के घमासान में तुम्हारा क्या काम ! तुम अगर तेजेन के अफसरों को खत्म करना चाहो, तेजेन को लूटना चाहो तो एक रात में वहां काम कर फिर अपनी जगह लौट कर चैन करो। ऐसी हालत में तुम्हारे दुश्मन सदा परेशान रहेंगे और तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। तुम तेजेन पर कब्जा भी कर लो तो क्या ? इस से पूरा तुर्कमानिस्तान थोड़े ही एक हो जायेगा। अलबत्ता अगर तुम दुश्मन की पहुंच से दूर रहोगे, उस से मार न खा सकोगे तो लोग तुम पर भरोसा कर सकेंगे। मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता के लिये तैयार रहूंगा। तुम भरोसा करते हो अश्काबाद के उन धूर्त शहरियों, निमाजबेग और ओराज सरदार का ! यहां भी उन के दूत रोज ही आते रहते हैं। मैं उन की बातें सुन कर चुप रह जाता हूं। मुझे उन पर कोई भरोसा नहीं। यह लोग हम पर सवारी गांठ कर अपना काम बनाना चाहते हैं। होशियारी यह है कि हम लोग इन पर सवारी गांठें। उन की सुने जाओ, अपनी कहो मत…!"

अब तक अजीज अपने आप को बहुत होशियार समझता था और उस का ख्याल था कि वह अपनी सल्तनत जमा लेने के योग्य हो गया है। जुनैद की बातें सुन कर उस की आंखें खुलीं और समझ में आया कि इस चतुर आदमी के सामने वह केवल तुतलाता बच्चा ही है।

उन दोनों की बातचीत बहुत देर तक चलती रही। इसी बीच में एक खूब लहीम-शहीम आदमी, दोनों कन्धों से कमर तक पेटियां कसे भीतर आया। उस की कमर से एक पिस्तौल और कंधे से राइफल लटक रही थी। अजीज ने सोचा, यह आदमी जरूर किसी बड़े कबीले का

सरदार और जुनद की फौज का कप्तान है। इस आदमी ने भीतर आकर दोनों खानों को सलाम किया और जुनैद को सम्बोधन कर बोला—"मालिक, डाकू लोग एक गांव में ठहरे हुए हैं और गांव का चौधरी मालिक की हुक्मउदूली कर रहा है। वह डाकुओं को पकड़ने नहीं देता। हमारे सिपाहियों के हथियार उस ने छीन लिये हैं और उन्हें धमका कर लौटा दिया है—'जाओ, जुनैदखां से कह दो हम उस के गुलाम नहीं हैं! अपने गांव के हम खुद मालिक हैं।' मालिक की इजाजत हो तो इन लोगों के होश ठीक कर दिये जायें!"

यह समाचार सुन कर जुनैद के चेहरे पर कुछ परिवर्तन न आया। उस का रोम भी न फड़का। केवल उस की चमकीली पैनी आंखें जरा और सिकुड़ गईं। "दो सौ सवार ले जाओ।" जुनैद ने धीमे से कहा, "गांव के सब मर्दों के सिर उतार दो। उन के खेमे जला दो और औरतों को कैद करके ले आओ। यह काम करके सुबह की नमाज के वक्त मुझे खबर देना।"

"मालिक का हुक्म पूरा किया जायगा।" कप्तान ने सलाम किया और कमरे से बाहर चला गया। जुनैद फिर बेपरवाही से बातचीत करने लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो!

क्या जुल्म है! अजीज मन ही मन सोच रहा था...सैकड़ों आदमियों का कत्ल, सैकड़ों खेमे लूट कर फूंक देना, सैकड़ों औरतों को कैद कर लेना; सिर्फ एक मामूली गुस्ताखी के लिये! लेकिन यही सही तरीका है। एक गांव के साथ यह बरताव होगा तो हजारों दूसरे गांव अपने आप सीधे बने रहेंगे। सल्तनत ऐसे ही चल सकती है।

उन दिनों खुरासान के इलाके के सरदार कलामअली और गौस मुहम्मद, जुनैद के खिलाफ बगावत करने के लिये सिपाही और हथियार बटोर रहे थे और कहते फिरते थे—'जुनैद के माथे पर कौन चांद-सितारे लगे हैं! जैसा वह वैसे हम! हम लोगों को वह कुछ समझता ही नहीं, कभी हमारी बात नहीं पूछता; जैसे हम लोग डोर-डंगर हों कि हांक

दिया लाठी से ! हमारे ही बूते पर तो सल्तनत चला रहा है । हम खुद ही क्यों न अपने सुल्तान बनें !'

जुनैद का वह जालिम हुक्म इन्हीं लोगों को ठीक करने के लिये था । इस के बाद वह अजीज से और आन्तरिकता से बातचीत करने लगा । अब्दुलकरीमखां की चर्चा चली । अजीज ने पूछा—"मालिक खान, आपकी राय में अब्दुलकरीमखां असल में कौन था ?"

जुनैद ने बताया कि वह उस के यहां भी आया था और अपने आप को अफगानिस्तान के अमीर का दूत ही बताता था । बातचीत में उस की चतुरता और उस की राजनैतिक जानकारी से जुनैद को सन्देह था कि वह आदमी अफगानिस्तान से बहुत बड़ी किसी सल्तनत का आदमी है और उस का मतलब भी उस की बातों से कुछ और अधिक बड़ा और व्यापक था ।

"मेरा ख्याल है उस ने अपना नाम बदला हुआ है और वह मुसलमान नहीं है । अगर कल वह ब्रिटिश अफसर की वर्दी पहन कर यहां आ खड़ा हो तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा । अब्दुलकरीम हमारी बला से कोई भी हो ! अपने मतलब की बात यह है कि अपने मालिक के हुक्म से मुल्क-मुल्क घूम रहा है । हम लोगों की बीसियों बोलियां जानता है । पूरब के रंग-ढंग समझता है । वह हमारे दुश्मन रूसी बोलशेविकों के खिलाफ सब मुसलमानों को इकट्ठा कर रहा है । यह हमारे लिये अच्छा मौका होगा अपना कदम जमा लेने का ।"

"मालिक खान, आप का क्या ख्याल है ? अब्दुलकरीम की चाल चल जाये और उस के मालिकों का कदम यहां आ जाये तो हम लोगों का फायदा रहेगा ? हमारा क्या बनेगा ?"

"हिन्दुस्तान में भी अंग्रेज सरकार ने खानों की गद्दी नहीं छीनी । अंग्रेज चाहता है रियाया को काबू में रखना । मेरा ख्याल है कि वह हमारी मदद करेगा लेकिन अपना खिराज (राज कर) लेगा । वह अपनी चाल चल रहे हैं, हमें अपनी चलना है । हम अपनी गर्दन उन के हाथ में

थोड़े ही दे देंगे।"

दोनों खान बहुत देर तक बैठे आपस में रियाया को दबा कर अपना आतंक कायम रखने के दांव-पेंच की बात करते रहे। दोनों ही जानते थे कि एक के गिरने से दूसरा भी कमजोर पड़ जायेगा इसलिये वे परस्पर ईमानदारी से एक-दूसरे की सहायता करना चाहते थे। बातचीत करते समय जुनैद रेशम के छोटे-छोटे चिन्दियों जैसे छ: ऊंगली लम्बे, चार उंगली चौड़े रूमालों से खेलता जा रहा था। अजीज इन टुकड़ों को ध्यान से देख रहा था। टुकड़ों पर दस, सौ और पांच सौ के अंक पड़े हुए थे। अजीज निरक्षर था परन्तु जार की सरकार के नोटों पर ऐसे अंक देख-देख कर इन्हें पहचान गया था।

"मालिक खान, यह क्या है ?" आखिर वह पूछ बैठा।

"रूमाल !" जुनैद मुस्करा दिया।

अजीज ने टुकड़ों को उठाकर देखा, वे खूब मजबूत रेशम से बने हुए थे।

"नही मालिक, निरे रूमाल तो यह नहीं जान पड़ते।"

"तो फिर क्या हैं ?"

"मैं समझा नहीं परन्तु इन पर मोहरें लगी हैं। यह नोटों जैसे जान पड़ते हैं।"

"नोट जान पड़ते हैं ?"

"जान तो पड़ते हैं।"

जुनैद ने अपने यहां के देसी रेशमी कपड़े के नोट चला दिये थे। यह नोट मजबूत भी थे और सुन्दर भी। उसे अपने इन नोटों पर अभिमान था। जुनैद को इन नोटों से खेलते देख अजीज मन ही मन सोच रहा था—इसने रेशम के नोट चलाये हैं, बड़ा खुश है। मैं कालीनों के नोट चलाऊंगा !

मुर्गी का पुलाव आया और फिर तौशेज के सर्दे आये। खा-पीकर अजीज की आंखें झपकने लगीं। वह तीन दिन से बिल्कुल सोया न था।

वह हुक्के के हल्के-हल्के कश खींचता हुआ जम्हाइयां लेने लगा। ज्यों ही जुनैद सलाम कर जाने के लिये उठा, अजीज नरम गद्दे पर पसर गया। एक बार उसे चारी चमन और अपनी खोई हुई राइफलों की याद आई और वह खुर्राटे भरने लगा।

चारी चमन दोपहर के समय ओकूज गांव में पहुंच गया था। वहां उसने अपने ऊंटों का बोझ उतार दिया। ओकूज तुर्कमानों में बहुत पुराना और मशहूर कबीला था। सांझ होने पर गांव के ओकूज और ममूद लोग चारी चमन के चारों ओर घिर आये और राइफलों को जांच कर उन की कीमतें पूछने लगे।

चारी चमन ने उत्तर दिया—"अरे भाई, मैं भी तो ममूद हूं। मैं यहां सौदागरी करके मुनाफा कमाने थोड़े ही आया हूं! अपने यहां के बुजुर्गों का हुक्म है कि जार की गद्दी गिरने का फायदा हो। अपने लोगों के हाथ में हथियार आयें। कीमत का क्या सवाल है, मुझे तो लागत भर दे दो।"

चारी चमन जिस घर में ठहरा था, उस के मालिक को एक राइफल भेंट कर उसने राइफल का दाम जान लिया था। घर का मालिक भी उस की सहायता के लिये तैयार हो गया था। राइफलों का सौदा खूब सरगर्मी से हो रहा था। उसी समय सवारों के उस ओर आने की टापें सुनाई दीं। ओकूज और ममूद लोग कुछ समझ न सके परन्तु चारी चमन आशंका से कांपने लगा। उस ने दूसरे लोगों से पूछा—"यह कौन लोग आ रहे हैं भाइयों?"

घर का मालिक अपने मेहमान की घबराहट भांप गया। वह खुद भी घबराया कि यह असमय कौन लोग इस तरह सरपट घोड़े दौड़ाये चले आ रहे हैं? अपना भय छिपाकर उसने चारी चमन को ढाढ़स बंधाया—

"तुम मेरे मेहमान हो, तुम्हें क्या फिक्र! जुनैदखां का इकबाल कायम रहे। यहां तुम्हें कोई आंख उठा कर देख भी नहीं सकता। जब

खान को मालूम होगा कि तुम इतनी राइफलें और कारतूस लेकर आये हो, वह तुम्हें दस्तरखान पर बैठायेगा और तोहफा देकर बिदाई देगा।"

इतने में घुड़सवारों का दल आ पहुंचा। इन लोगों को घेर कर दल के सरदार ने पूछा—"चारी चमन कौन है ?"

घर के मालिक की बात से चारी चमन ने सोचा—यह जुनैद के आदमी हैं। खबर पाकर मुझे लिवा ले जाने के लिये आये हैं। वह आगे बढ़ कर बोला—"मेरा नाम है चारी चमन !"

सवारों ने कुछ जवाब न दे चमन की मुश्कें जकड़ना शुरू कर दिया। सब लोग हैरान थे। घर का मालिक घबराकर बोला—"अरे ममूदो, आकूजो ! खड़े क्या देख रहे ! मेरा दम रहते मेरे मेहमान को कौन छू सकता है !"

उसकी बात पूरी न हो पाई थी कि सवारों ने उसे पकड़ कर उस की भी मुश्कें बांध दीं और सवारों के सरदार ने दूसरे लोगों को चेतावनी दी—"खबरदार, अगर कोई अपनी जगह से बाल भर भी हिला तो मैं पूरे गांव को आग लगा दूंगा।"

चांद चढ़ आया था। उसी प्रकाश में सवारों ने सब राइफलें और और कारतूस ऊंटों पर लाद दिये। मालिक को भेंट में दी गई राइफल भी ले गई। मुश्कें बंधे चारी चमन और घर के मालिक को भी साथ ले लिया गया। इस के बाद सवार लोग गांव के लोगों को कत्ल करने और गांव को लूटने के काम में लग गये।

सुबह की नमाज के समय जुनैद ने अपने हाथ पसार कर खुदा का शुक्र किया कि तेरे करम से मेरा हुक्म पूरा हुआ। अजीज ने भी अपना माल मिल जाने के संतोष में भक्ति और श्रद्धा से अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर कर खुदा की मेहरबानी और इंसाफ के लिये शुक्रिया अदा किया।

चारी चमन अजीज के सामने खड़ा कांप रहा था जैसे चूहा विवशता में बिल्ली के सामने खड़ा हो।

"तुम कितनी राइफलें लाये थे ?"

"मालिक, दो सौ अठारह।"

"कारतूस कितने थे?"

"बा···बारह हजार।"

"तुम्हें राइफलें और कारतूस किस ने दिये थे?"

"कुलीखा ने।"

"तुमने कितनी बेची हैं अभी तक?"

"एक भी नहीं।"

अपना माल वापस मिल जाने से अजीजखां बहुत संतुष्ट था। उस ने जुनद से सिफारिश की कि चारी चमन के सिवा दूसरे लोगों को रिहा कर दिया जाये।

अजीज जुनैदखां के साथ आंगन में आया तो वहां का दृश्य देख कर सिहर उठा। सैकड़ों बच्चे और स्त्रियां नंगे-उघाड़े बैठे रो रहे थे। इस भीड़ में एक भी मर्द न था। दस बरस से अधिक उम्र का कोई लड़का भी नहीं था। इससे भी भयानक चीज थी पेड़ों पर लटके हुये गांव के बड़े-बूढ़ों के सिर। इन सिरों की दाढ़ियां हवा में लहरा रही थीं और यह पथराई हुई आंखों से सामने के दृश्य को देख रहे थे। हवा के झोंकों से यह सिर डोल जाते तो जान पड़ता कि अपने ऊपर हुये अत्याचार के लिये जुनदखां के राज को कोस रहे हैं।

अजीज कांप उठा परन्तु साथ ही अपने मन को उसने समझाया—यही मेरी भूल थी। मुझे कुलीखां और दूसरे लोगों के परिवार का ऐसा ही प्रबंध करना चाहिये था।

अजीज चार-पांच दिन जुनैद का मेहमान रहा। उस की मार्फत उस ने कुछ राइफलें बेच डालीं और फिर तेजेन की ओर लौट चला। तेजेन से दस मीलें उत्तर-पच्छिम की ओर हट कर अगलान में उस ने अपना डेरा जमाया और सिपाही जुटाने लगा।

सोवियत से भयभीत जागीरदार लोग, आल्ती सोपी, अन्ना कुर्बान, यारमुश काजी और करीमुल्ला वगैरा फिर उस के आसपास आ घिरे।

ईशान और अखून लोग उस के यहां आने-जाने लगे। अलनजर बे की मृत्यु के बाद मुहम्मदवली निस्सहाय हो गया था; वह भी अजीज के यहां आ गया।

अजीज अब अधिक दुस्साहस से काम ले रहा था। उस ने अपने सिपाहियों को घोड़े इकट्ठे करने का हुक्म दिया। उस का हुक्म था— "जहां भी अच्छा जानवर देखो, पकड़ लो या जब्त कर लो!" गरीब-अमीर का भेदभाव न रख वह जो आवश्यक समझता, सब से छीन लेता। अगलान की उस की छावनी में घोड़ों की संख्या रोज बढ़ती जा रही थी।

अगलान एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा था। नीचे दूर-दूर तक खेत चले गये थे। दो बड़े मकानों के समीप दो खेमे लगाकर अजीज ने अपने लिये जगह बना ली थी। यहां उस का बड़ा भाई भी साथ रहता था। तीसरा खेमा उस ने अपने पिता, चपैंक सरदार के लिये लगवा दिया। इन मकानों और खेमों के चारों ओर उस के सिपाहियों के खेमे लगे थे जिनके सामने सैकड़ों रासी घोड़े हिनहिनाकर धरती खोदते रहते। उस ने जुनैदखां की सफलता और आतंक के उदाहरण से अपना मार्ग निश्चय किया। लूट-मार, खासकर जार के पुराने अफसरों को लूटना, जिन्होंने किसी समय उस का विरोध किया था या जिन से किसी समय विरोध की आशंका हो सकती थी, और लूट-मार उस के दैनिक काम हो गये। आस-पास की जनता उस के नाम से थर्राने लगी।

२०

तेजेन में अजीज की प्रभुता मिट चुकी थी। नगर सोवियत के कब्जे में आ गया था। अजीज का तन्दूर (रोटियों का सबसे बड़ा कारखाना) और कई दूसरे कारखाने और खत्तियां, जिन्हें अजीज ने हथिया लिया था, सोवियत के हाथ में आ गये थे। सोवियत ने दूसरे कारखाने और किराये के सब मकानों को भी अपने कब्जे में ले लिया था। आस-पास के गांवों से आकर किसान तेजेन में घिरने लगे। पड़ोस के दो-तीन गांवों में सोवियतों (पंचायतों) के चुनाव भी हो गये थे। ऐसे अवसरों पर कुलीखां खूब प्रचार करता कि सोवियत की सब सफलताओं का सेहरा उसी के सिर है। इस तरह वह अपने कदम मजबूत करता जा रहा था। चर्नीशोव यह सब देखकर भी चुप था। कुलीखां के मामले को लेकर झगड़ा करना वह अभी उचित न समझता था। वह प्रतीक्षा में था कि कुलीखां को रंगे हाथों पकड़ पाये परन्तु अशीर का ख्याल दूसरा था। घाव से बहुत खूनबह जाने के कारण वह बहुत निर्बल तो हो गया था परन्तु कोई अंग-भंग न हुआ था। शीघ्र ही स्वस्थ होकर सेना में लौट आया। यहां आकर उसे कुलीखां की बहुत सी करतूतों का पता चला। चर्नीशोव के अनेक झंझटों में फंसा रहने के कारण यह बातें उस तक पहुंच ही न पाती थीं। मावेद ने अशीर को बताया कि अजीज की फौज से छीने गये सब हथियार कुलीखां ने चारी चमन नाम के एक आदमी के हाथ तौशेज भेज दिये हैं। "मैंने कुलीखां से पूछा कि हमारे हथियार कहां भेजे जा रहे हैं तो उस ने झुंझला कर उत्तर दिया—'और कहां

जायेंगे ! अश्काबाद भेज रहा हूं ।' लेकिन मैंने अपनी आंखों से देखा कि चारी चमन का काफिला माल स्टेशन पर न उतार कर रेल की लाइन पार कर तेजी से तौशेज की ओर बढ़ गया थ । कुलीखां मनमानी कर रहा है, कोई बोले तो कैसे ! कुलीखां कुचल कर रख देगा···!"

अशीर ने चुपचाप तौशेज की राह के गांवों में पूछताछ की और सेना के खलासियों और दूसरे लोगों से भी भेद ले लिया। मामला चर्नीशोव के सामने पेश करने से पहले वह कुलीखां से मिला और अजीज की सेना से छीने हथियारों के विषय में पूछा ।

"तुम्हें इन बातों से क्या मतलब !" कुलीखां ने उत्तर में भवें चढ़ाकर अशीर को डांट दिया ।

"मुझे इस बात से बहुत मतलब है ।" अशीर ने भी उसी लहजे में जवाब दिया । कुलीखां को आशा न थी कि कोई व्यक्ति उस से ऐसा प्रश्न पूछने का साहस कर सकता था । अशीर को वह समझता ही क्या था ! बल्कि वह उस से चिढ़ता भी था । अशीर का व्यवहार देख कर अपना क्रोध में बश कर मुस्करा कर बात बनाई—"अश्काबाद से जो सिपाही छापे में सहायता देने के लिये आये थे, वे लोग उन हथियारों को साथ ही ले गये ।"

"ठीक बात कहो ! मुझे उड़ाओ नहीं ।" अशीर बोला ।

अपनी स्थिति के विचार से अशीर की बात सह जाना कुलीखां को असह्य अपमान जान पड़ा । "जबान सम्भाल कर बोलो," उस ने अशीर को धमकाया, "कम्पनी के कमाण्डर से इस तरह बात की जाती है ! तुम्हें मुझ से जवाब तलब करने का क्या हक है !"

"तुम यह बताओ चारी चमन को किस ने भेजा है ?"

"किस ने कहां भेजा है ?"

"भूल गये ! तौशेज !"

"मैंने क्यों भेजा है ?"

"राइफलें बेचने के लिये !"

पल भर के लिये कुलीखां चकरा गया, फिर संभल कर बोला—"मैंने तो इस बारे में कोई खबर नहीं सुनी।"

"तुमने नहीं सुनी परन्तु मुझे पूरी खबर मिल गई है।"

"हूं...तो फिर फौज का कमाण्डर तुम्हीं को होना चाहिये।"

"वह बात बाद में देखी जायगी। तुम मुझे पहले हमारी मजदूर-किसान सरकार के हथियारों का हिसाब दो।"

"मैंने तुम से कहा है कि अपनी स्थिति और अधिकार के अनुसार ही बात करो।"

अशीर फिर झुंझलाया—"तुम मुझे हथियारों का हिसाब दो।"

"तुम्हें हिसाब की जरूरत क्या है? क्या अरतैक की दोस्ती में अजीज को भेद देना चाहते हो! मैं जानता हूं तुम अजीज की तरफ हमारे यहां जासूसी कर रहे हो।"

"पहले तुम तो हिसाब दो! मेरी जासूसी की पड़ताल फिर करना।"

कुलीखां आगबबूला हो गया। चिल्ला उठा—"कोई है!...इस आदमी को गिरफ्तार कर लो!"

अशीर ने अपनी राइफल सम्भाली। उसी समय अतादयाली भीतर आ गया और मजाक में बोला—"अरे भाई क्या हो रहा है! हम तो समझते थे अब तेजेन में शान्ति हो गई है। यहां तो घर में ही जंग हो रहा है। अशीर, क्या कर रहे हो! अभी बिस्तर से उठे हो, फिर बीमार पड़ना चाहते हो! चेहरे पर जरा खून तो आ लेने दो। कुलीखां को तभी समझेंगे। आओ, चलें एक प्याली चाय पिलायें तुम्हें। तुम तो गुस्से में कांप रहे हो।"

अशीर कमजोरी के कारण सचमुच गुस्से में कांप रहा था। अतादयाली उसे बांह से थाम कर ले गया। अतादयाली हंसी-मजाक की बातें कर रहा था परन्तु अशीर के दिमाग में कुलीखां की बेईमानी की बातें ही घुट रही थीं। उस का मन बहक जाने के बजाय क्रोध बढ़ता

जा रहा था। वह अपने आप को रोक न सका और उठ कर चर्नीशोव की खोज में चल पड़ा।

अशीर कुछ दूर बाजार में जाकर एक गली में घूमा ही था कि उसे सामने से कुलीखां, जेल का अफसर और दो सिपाही आते हुये दिखाई दिये। कुलीखां ने आंख से अशीर की ओर इशारा किया और अफसर के इशारे से सिपाहियों ने अशीर के दोनों हाथ पकड़ लिये। अशीर हैरान था। अफसर ने उसे कहा—"तुम गिरफ्तार हो!"

अशीर ने अपने हाथ छुड़ाकर कंधे से लटकी बन्दूक लेनी चाही पर उस के हाथों में हथकड़ी डाल दी गई। उसे तुरन्त जेल भेज दिया गया और एक छोटी अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया। कुलीखां ने जेल के अफसर को चेतावनी दी—"इस आदमी की गिरफ्तारी और इस के यहां होने की खबर किसी को न हो!"

चर्नीशोव अपने दफ्तर में बैठा ताशकन्द की सोवियत के नाम एक पत्र लिख रहा था। अश्काबाद के अनुभव से वह बहुत हतोत्साह और चिन्तित था। वह जानता था, उस समय भी यदि तिशेंको बीच में न पड़ता तो उसे कुछ भी सहायता न मिलती। अश्काबाद पूरे तुर्कमानिया के इलाके का केन्द्र था और वहां की सोवियत में अधिकांश बोर्ज़ुआ लोग भरे हुये थे। उसे भय था कि यदि फुन्तीकोव और दुखोव जैसे दगाबाजों के हाथ में व्यवस्था की बागडोर रही तो क्रान्ति का परिणाम जाने क्या होगा! चर्नीशोव अपने पत्र में इन सब आशंकाओं को स्पष्ट कर लिख रहा था कि तुरन्त ही किसी योग्य और विश्वासपात्र व्यक्ति को अश्काबाद भेज कर स्थिति जाननी चाहिये।

जब चर्नीशोव इस जरूरी पत्र में उलझा हुआ था, कोई आदमी बार-बार उस के कमरे का बन्द दरवाजा खटखटा रहा था। आखिर चर्नीशोव चिढ़ कर उठा और दरवाजा खोल दिया। मावेद को बाहर खड़े देख उस का चेहरा खिल उठा। चर्नीशोव कई दिन से मावेद की खोज में था। वह जानना चाहता था कि अजीज के हथियार रखा लेने की घटना

का प्रभाव जनता पर क्या पड़ा है । इस बात के लिये साधारण लोगों के बीच रहने वाले मावेद से अधिक उपयुक्त आदमी कौन हो सकता था ! सोवियत की बदौलत ही मावेद अलनजर बे के पालतू पशु की स्थिति से निकल कर आत्मनिर्भर मनुष्य बन गया था । मावेद और अशीर जैसे तुर्कमानी नौजवान ही इस प्रदेश में सोवियत व्यवस्था के प्रमुख राष्ट्रीय सैनिक थे ।

"आओ, भीतर आओ मावेद ।" चर्नीशोव ने उसे बुला लिया । मावेद चुपचाप हतोत्साह सा एक कुर्सी पर बैठ गया । चर्नीशोव ने उस के चेहरे पर चिन्ता और उदासी की झलक देख कर पूछा—"क्यों मावेद, क्या बात है ? तबियत तो ठीक है...!"

"तबीयत क्या ठीक होगी !"

"क्यों, बात क्या है ?"

"बात क्या होगी, अब हमारा तो कोई साथी रहा नहीं ।"

"मैं समझा नहीं ।"

"तेजेन में हमारे गांव का एक आदमी था अरतैक, वह दुश्मन के साथ चला गया । दूसरा अशीर था, वह भी गया ।"

"अशीर कहां गया ?"

"कहां जायेगा । जहां तुम ने भेज दिया !"

"मैंने भेज दिया...कहां ?"

"जेल में और कहां ! तुम ने नहीं तो किस ने भेजा ?"

"क्या कह रहे हो ? अशीर जेल में !"

"और नहीं तो क्या, जेल में तो पड़ा है बेचारा ।"

"किस ने कहा तुम से ? कहां से खबर मिली ?"

"लोग तो कहते हैं," मावेद झिझकते हुये बोला, "तुम्हारे ही हुक्म से अशीर जेल भेजा गया है । तुम पूछते हो खबर कहां से मिली ! उसे काल कोठरी में बन्द रखा गया है । जेल वालों को कुलीखां ने हुक्म दिया है कि अशीर सहात की कोई खबर अगर किसी को मिली तो

उन की खैर नहीं। खुद जेल के ही सिपाहियों से मैंने सुना है।"

चर्नीशोव सिर लटका कर चुपचाप सोचने लगा—कुलीखां क्या कर रहा है...पुराने बदले ले रहा है या जिन आदमियों से उसे भय है उन्हें चून-चुन कर समाप्त कर रहा है! मावेद की आंखों में आंखें डाल उस ने पूछा—"मावेद मुझे तुम पूरी बात बताओ। मामला क्या है? तुम बात छिपा रहे हो; तुम्हें क्या मुझ पर भरोसा नहीं? क्या सोवियत के सिपाही आपस में विश्वास नहीं कर सकते!"

"नहीं, और मुझे कुछ नहीं मालूम।" मावेद ने आंखें झुका लीं।

चर्नीशोव मावेद का हाथ अपने हाथों में ले बोला—"मावेद, अगर तुम लोग मेरा विश्वास नहीं करोगे, बातें छिपाओगे तो मैं क्या कर सकता हूं। यह मेरा नुकसान नहीं, सोवियत का नुकसान होगा, तुम्हारा अपना नुकसान होगा।"

मावेद ने झिझकते-झिझकते दरवाजे की ओर बार-बार देखते हुये धीमे स्वर में अजीज के यहां से ली गई राइफलों के चारी चमन के हाथ तौशेज भेजे जाने, उसकी और अशीर की बात, अशीर और कुलीखां का झगड़ा और अतादयाली के जाकर बीच-बचाव करने की कहानी चर्नीशोव को सुना दी। उस ने बताया—"सभी लोग कुलीखां से बहुत डरते हैं। उस के विरुद्ध बात कहने की हिम्मत किसी में नहीं। मुझ से भी वह जला हुआ है। यदि उसे सन्देह हो गया कि मैंने तुम्हें यह बातें बतायी हैं तो किसी न किसी बहाने वह मुझे भी खत्म कर डालेगा।"

"तुम डरो नहीं।" चर्नीशोव ने मावेद को आश्वासन दिया, "मुझे इस बात का कुछ पता ही न था। अशीर को मैं अभी छुड़वाता हूं। कुलीखां से मैं खुद ही समझूंगा।"

साहस पाकर मावेद ने उत्तर दिया—"भैया, लड़कर मरने से मैं नहीं डरता। अशीर और तुम साथ हो तो मैं पूरी फौज का मुकाबला कर सकता हूं परन्तु कुलीखा तो चपके मे कत्ल करवा देता है। इस का कोई क्या उपाय करे?"

चर्नीशोव हाथ की मुट्ठी मेज पर मारकर बोला—"तुम डरो मत, यहां इन दगाबाजों को लाल सेना से चुन-चुन कर निकालना होगा। तुम लोगों की सहायता से में सब कुछ करूंगा। तुम अभी दो लाल सिपाही लेकर जेल जाओ और अफसर को मेरा हुक्म देकर अशीर को छुड़ा लाओ।"

उसी दिन सांझ को चर्नीशोव ने सोवियत की एक बैठक जरूरी काम के लिये बुलाई गई। कमरा तम्बाकू के धुयें के बादलों से भर रहा था। पहले चर्नीशोव ने तेजेन और तुर्कमानिया की राजनैतिक स्थिति का संक्षिप्त विवरण सुनाया—मध्य एशिया में कहां-कहां सोवियत को विजय और सफलता मिल रही है और जनता की सोवियत सरकार के सामने क्या-क्या कठिनाइयां आ रही हैं। जार के पुराने अफसर, क्रांतिकारी समाजवादी नामधारी लोग, मेंशेविक और दूसरे क्रान्ति-विरोधी कैसे-कैसे अड़ंगे जनता की सरकार की राह में लगा रहे हैं और कैसे लोग मध्य एशिया और तुर्कमानिया को शेष समाजवादी रूस से पृथक कर देना चाहते हैं। उस ने सीवनारकोम प्रजातंत्र की तार स्तालिन के नाम पढ़कर सुनाई। यह तार थी—

"तुर्कमानी प्रजातंत्र अकाल से तड़प रहा है। काकेशस और साइ-बेरिया के मार्ग शत्रु ने रोक लिये हैं। समारा की राह तुरन्त अन्न और सैनिक सहायता भेजी जाय। विलम्ब का परिणाम भयानक होगा।"

दूसरी तार में भी अकाल, महामारी और बेकारी में सहायता के लिये तुरन्त अन्न और एक करोड़ रूबल भेज कर सहायता के लिये अनुरोध किया गया था।

चर्नीशोव का अभिप्राय स्थिति बताकर जनता को भयभीत करना नहीं था। "यदि पूंजीपति और जार के पिट्ठू आशा करते हों कि ऐसी कठिनाइयां हमारे मार्ग में डाल कर वे हमें पराजित कर देंगे तो यह उन की भूल है," चर्नीशोव ने समझाया। "यह लोग हमारी क्रान्तिवादी व्यवस्था का सम्बन्ध मास्को और पेत्रोग्राद से काट कर हमें निर्बल बना

देना चाहते हैं परन्तु इन्हें सफलता नहीं मिल सकती। हम लोग अकेले नहीं हैं। समाजवादी सोवियत रूस हमारे साथ है। हमारी क्रान्ति के नेताओं ने हमें भुला नहीं दिया है। जो तारें मैंने पढ़ कर सुनाई हैं, हमारे नेताओं के विशेष निर्देशों से इन तारों में किए गए अनुरोध पूरे किये जा चुके हैं। हमारे क्रान्तिकारी नेता सम्पूर्ण मजदूर-किसान समाज के समान हितों और अधिकारों में विश्वास रखते हैं। मध्य एशिया की जनता को वे लोग जार सरकार की तरह अपने आधीन तुच्छ जातियां समझ कर हमारी उपेक्षा नहीं करते। हम भी जानते हैं कि हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व समाजवादी रूस के सहयोग से ही बच सकता है इसलिए तुर्कमानिया की जनता पूंजीवादी और जारशाही के क्रान्ति विरोधी प्रयत्नों का मुकाबला जी-जान से करेगी और उन पर विजय पाकर ही विश्राम लेगी।"

इसके बाद चर्नीशोव ने तेजेन की स्थिति की चर्चा की—"तेजेन और उस के पड़ोस के गांवों के लिये सहायता रूस से भेजी जा चुकी है और शीघ्र ही वह पहुंच भी जायगी परन्तु रूस की सहायता पर ही निर्भर करना मूर्खता होगा। अपनी कठिनाइयों को दूर करने के उपाय हमें स्वयं सोचने होंगे और आवश्यक साधनों को भी जहां तक सम्भव हो स्वयं ही जुटाना होगा।" इसी प्रसंग में उस तेजेन की लाल फौज की चर्चा की—"साथियो, हमारी लाल फौज ने बहुत आड़े समय में हमारी सहायता की है और भविष्य में भी हमें इसी का भरोसा है परन्तु हम लोगों ने अपनी लाल फौज की भीतरी व्यवस्था पर काफी ध्यान नहीं दिया है। हमें अपनी सेना में दंगा और बेईमानी की गुंजाइश नहीं रहने देनी चाहिए। यह खेद की बात है कि हमारी इस सेना में कुछ ऐसे आदमी भी हैं जो इस सेना के लिए कलंक हैं और जो जनता में हमारे प्रति घृणा पैदा कर हमें निर्बल बना रहे हैं। लाल सेना के कमाण्डर केलुईखां की बात आप को याद है। उस ने मनेचियाख गांव में डकैती की थी। उस पर मुकदमा चला कर हमने सेना से बरखास्त कर दिया

है। हमें आशा थी कि केलूईखां का उदाहरण देख कर इस तरह के दूसरे लोग स्वयं सुधर जायेंगे परन्तु लोग इस से भी अधिक घृणित कामों में लगे हुये हैं।" चर्नीशोव पल भर के लिये चुप रहा, फिर बोला तो उस का स्वर पहले से ऊंचा और कठोर था—"मैं आप लोगों के सामने सोवियत के एक बड़े मेम्बर, हमारी सेना के कमाण्डर कुलीखां से जवाब चाहता हूं।"

कुलीखां फौरन उठ खड़ा हुआ और मूछों पर हाथ फेर कर बोला—"मुझ से तुम क्या जवाब चाहते हो ?"

चर्नीशोव ने कुलीखां की ओर घूम कर प्रश्न किया—"तुम जवाब दो कि अशीर सहात कहां है ?"

कुलीखां ने भरोसे का सांस लिया। उसे भय था कि चर्नीशोव राइफलों की चोरी की ही बात कहेगा परन्तु केवल अशीर के बारे में प्रश्न सुनकर उसे संतोष हुआ कि वह बात इसे मालूम नहीं हुई। कुलीखां ने निधड़क उत्तर दिया—"अशीर सहात अजीज का गुप्तचर है। वह हमारी सेना में बगावत फैला रहा है। मैंने उसे गिरफ्तार करवा दिया है। उस के मामले की जांच की जानी चाहिए।"

"हूं," चर्नीशोव ने पूछा, "जो आदमी तुम्हारी करतूतों का भण्डाफोड़ करे वह दुश्मन का गुप्तचर है ! तुम अब भी जार की केन्द्रीय पुलिस के हथकंडे खेल रहे हो !"

यह बात सुन कुलीखां घबराया परन्तु अपना भय छिपा कर बोला—"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा। तुम साफ-साफ बात कहो।"

"चारी चमन कौन है ?"

कुलीखां सन्न रह गया। चर्नीशोव ने अपना प्रश्न और कड़े स्वर में दोहराया—"मैं पूछता हूं, चारी चमन कौन है ?"

"मैं क्या जानूं चारी चमन कौन है !" कुछ भयभीत स्वर में कुलीखां ने उत्तर दिया, "क्या मैं दुनिया भर के लोगों को जानता हूं ! क्या उड़ा रहे हो तुम ?"

"मैं उड़ा रहा हूं या तुम उड़ रहे हो !" मेज पर हाथ पटक चर्नीशोव गरज उठा—"सोवियत तुमसे जवाब मांगती है कि अजीज के यहां से ली गई दो सौ अठारह राइफलें और बारह हजार कारतूस कहां हैं ?"

कुलीखां का चेहरा फक हो गया परन्तु उस ने बात बनाकर उत्तर दिया—"चर्नीशोव, तुम अशीर जैसे गद्दारों की बातों में आकर मुझ पर कलंक लगा रहे हो ! अगर अजीज और उस की फौज अपने हथियार साथ ले गई तो इस में मेरा क्या दोप ? थोड़े बहुत जो हथियार मिले थे, वे अशीर ने चुरा लिये हैं···।"

"सब लोग जानते हैं कि हमारी सेना ने अजीज की राइफलें छीन लीं थीं। तुम्हें उन का हिसाब देना होगा। जुनैदखां को तुम ने राइफलें कहां से लेकर भेजी हैं ?"

सब लोग विस्मय से कुलीखां की ओर देख रहे थे कि वह क्या जवाब देता है। सोवियत में सभी तरह के लोग घुस आये थे। सोवियत की बैठक अचानक बुलाई जाने से कुलीखां को सन्देह हो गया था और वह अपनी सहायता के लिये अपने साथी खोजा मुराद और दरोगा बाबाखां आदि कई आदमियों को लिवा लाया था। अपने साथियों की ओर देख कर कुलीखां ने साहस किया और बोला—

"यदि सोवियत चाहती है कि क्रांति-विरोधी लोगों को हथियारों की चोरी का मौका न मिले तो मुझे हक होना चाहिये कि मैं जरूरत के मुताबिक अपने विश्वासी सिपाही भरती कर सकूं ताकि पड़ोस के गांवों पर कड़ी नजर रखी जा सके···।"

"तुम हमारे सवालों का जवाब दो, बातें न बनाओ !" चर्नीशोव ने टोका।

"तुम्हारा यह क्या तरीका है ?" उत्तेजित स्वर में कुलीखां ने उत्तर दिया, "तुम जार के अफसरों और कर्नल वेलानोविच की तरह हम तुर्कमान लोगों पर आतंक बैठाना चाहते हो !"

"बको मत," चर्नीशोव क्रोध में उछल पड़ा। "जार की नीति पर हम

चल रहे हैं या तुम ! उल्टे चोर कोतवाल को डांटें !"

"तुम कौन हो मुझे चुप कराने वाले ! तुम मेरी जबान नहीं पकड़ सकते !"

सभा में शोर मच गया। कई लोग एक साथ बोलने लगे। चर्नीशोव हैरान था कि कुलीखां की इन करतूतों के बावजूद लोग उस का समर्थन कर रहे थे। खोजा मुराद उठ कर बोला—

"भाइयो, यह क्या जुल्म हो रहा है ! कुलीखां जैसे भले इज्जतदार आदमी पर तोहमत लगाई जा रही है कि वह हथियारों की चोरी करता है ! अगर शरीफ लोगों की इज्जत पर ऐसे हाथ डाला जायगा तो हम लोग कैसे जिन्दा रह सकेंगे !

"इन बातों पर कोई एतबार कर सकता है ! आप लोग तो कहेंगे कि रात में सूरज निकला है और हमें वह भी मान लेना पड़ेगा। कुलीखां पर चोरी लगाना कितना बड़ा जुल्म है। उस ने तो कभी एक कारतूस भी किसी को नहीं दिया। बेचारा सोवियत की सहायता में अपनी जान गलाये दे रहा है। ऐसे आदमी की वफादारी पर कलंक लगाना कितना बड़ा जुल्म है ! बात यह है कि रूसी लोग हर बात में हम तुर्कमान लोगों का अपमान करना चाहते हैं।"

बाबाखां एक ओर खड़ा था। वहीं से हाथ उठाकर बोला—"यह आप लोग क्या जुल्म कर रहे हैं ! कुलीखां जसे ईमानदार और वफादार आदमी की यों बेइज्जती की जा रही है। शहर और गांवों में सोवियत की जो कुछ इज्जत है, कुलीखां की बदौलत है। अगर कुलीखां सोवियत में नहीं रहा तो सोवियत को कोई पूछेगा भी नहीं। कुलीखां सोवियत में न रहे तो दारोगा लोग तो सोवियत की परवाह न कर अपनी खनातें बना बैठें !"

सभा में अपना साथ देने वाले लोग न देख चर्नीशोव झिझका परन्तु उस ने फिर साहस किया और इस सवाल पर वोट लेने का निश्चय किया। उस ने प्रस्ताव रखा—

"कुलीखां ने अपने अधिकार का दुरुपयोग कर सोवियत सेना के हथियारों की चोरी की है। उस ने सोवियत के वफादार सिपाहियों पर अत्याचार किया है और वह क्रांति-विरोधी तथा सोवियत विरोधी कामों में भाग ले रहा है। इसलिये प्रस्ताव किया जाता है कि कुलीखां को सेनापति के पद से हटा कर उस के अपराध पर सैनिक न्यायालय में विचार किया जाय।"

चर्नीशोव ने सामने बैठे लोगों की ओर देख कर उन का मत पूछा। बहुत कम लोगों ने प्रस्ताव के समर्थन में अपने हाथ खड़े किये। कुछ आदमियों ने हाथ उठाये ही नहीं। अधिकांश ने उस के विरुद्ध हाथ उठाये।

अब चर्नीशोव समझा कि सोवियत की भीतरी स्थिति वास्तव में क्या है। बहुत से तुर्कमानी लोग जिन्हें चर्नीशोव सोवियत का विरोधी नहीं समझता था, इस समय बाबाखां की रूसियों के तुर्कमान लोगों का अपमान करने की बात से भड़क कर कुलीखां के ही पक्ष में राय दे रहे थे।

इस परेशानी में चर्नीशोव को याद आया कि अरतैक ने बार-बार चेतावनी दी थी कि कुलीखां कभी विश्वासयोग्य नहीं हो सकता। अरतैक की ही बात ठीक थी। आज अरतैक सोवियत में होता तो ऐसी अवस्था में उस पर भरोसा किया जा सकता था परन्तु वह तो कुलीखां के कारण ही शत्रु के दल में जा मिला और अपने ही जैसे किसानों पर गोली चलाने लगा। अरतैक की ईमानदारी किस काम की जब कि उस में समझदारी न हो। उस रात अजीज की सेना और लाल सेना में लड़ाई के बाद तो अरतैक को अपनी भूल समझ आ गई होगी परन्तु अब अपनी भूल मान कर सोवियत के पक्ष में उसे संकोच अनुभव रहा होगा…।

चर्नीशोव ने अरतैक की ओर से ध्यान हटाकर वर्तमान समस्या को सुलझाने का यत्न किया। जब लोग कुलीखां के जाल में फंस उस की दगाबाजी का समर्थन करने के लिये तैयार हैं तो वह क्या करे!

चर्नीशोव ने सोवियत की बैठक समाप्त कर दी और तुरन्त तारघर जा कर अश्काबाद से तार का सम्बंध कराया। उस ने अश्काबाद के प्रतिनिधि से अनुरोध किया कि तेजेन में सोवियत का चुनाव नये सिरे से कराने और क्रांति के न्यायालय में कुलीखां के अपराध पर विचार करने की आज्ञा दी जाये। उस ने कहा कि इस के बिना तेजेन की स्थिति वश में न आ सकेगी और यदि अश्काबाद की सोवियत उस के अनुरोध को अस्वीकार करेगी तो वह अपनी प्रार्थना ताशकन्द में तुर्कमानी प्रदेश की केन्द्रीय सोवियत के सामने रखेगा। उसे उत्तर मिला कि कुलीखां को तुरन्त अश्काबाद बुला कर मामले की पड़ताल की जायेगी।

अगले दिन सुबह ही कुलीखां सोवियत के दफ्तर में आकर चर्नीशोव से मिला और बोला—"मुझे अश्काबाद में सैनिक विभाग के कमिस्सार ने बुलाया है। मैं आज ही वहां जा रहा हूं। जान पड़ता है मेरे प्रति तुम्हारे मन में सन्देह जम गया है। ऐसी अवस्था में मैं सोवियत का काम कैसे चला सकूंगा। यदि तुम्हारा सन्देह मेरे प्रति दूर नहीं हो सकता तो तुम मेरी जगह किसी दूसरे व्यक्ति को कमाण्डर नियत कर लो।"

चर्नीशोव को अश्काबाद की प्रान्तीय सोवियत पर बहुत भरोसा नहीं था। उसे खूब याद था कि अजीज की सेना के हथियार रखवाने के लिये जब वह सहायता मांगने अश्काबाद गया था तो उस पर क्या बीती थी। जब तक अश्काबाद की सोवियत में फुन्तीकोव और दुखोव जैसे आदमी मौजूद हैं, वहां से किसी प्रकार की सहायता की आशा करना व्यर्थ है। अश्काबाद सोवियत से विशेष आशा न होने पर भी चर्नीशोव ने नियमानुकूल कार्रवाई करना उचित जान कर जाब्ते के तौर पर वहां फोन कर दिया था। इस के अतिरिक्त उस ने कुलीखां के विरुद्ध अपराधों पूरा विवरण, अजीज के यहां से राईफलें और कारतूस मिलने के प्रमाण और अशीर तथा मावेद के दस्तखती बयान अश्काबाद भेज दिये। यह सब कर लेने पर भी वह अपने विरुद्ध निर्णय होने की सम्भावना के लिये तैय्यार था।

चर्नीशोव की आशंका ठीक ही प्रमाणित हुई। कुछ ही दिन बाद कुलीखां अश्काबाद से निर्दोष साबित हो तेजेन की लाल सेना के कमाण्डर के पद पर स्थायी रूप से नियत होकर लौट आया। कुलीखां के चेहरे पर विजय और प्रसन्नता की चमक छाई हुई थी। चर्नीशोव के प्रति उस ने निरादर और धृष्टता न दिखाई। इस का कारण चाहे तो अश्काबाद में सहायकों और समर्थकों का परामर्श रहा हो, चाहे यह कि इतने दिनों में वह चर्नीशोव की दृढ़ता और लगन को खूब भांप चुका था।

२१

जार के पिट्ठुओं और पूंजीपतियों को सहायता देकर विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों ने कोकन्द में एक स्वतन्त्र शासन कायम कर दिया था। कोकन्द का यह क्रान्ति-विरोधी और तथा-कथित स्वतन्त्र शासन, समाजवादी सोवियत पर निरंतर आक्रमण कर रहा था। उन्नीस सौ अठारह के फरवरी मास में सोवियत सेना ने इस स्वतंत्र शासन की सेना को हरा कर पीछे भगा दिया था। सोवियत के शत्रु हार कर भी चुप न हुये थे। वे स्थान-स्थान पर सोवियत शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। सत्रह जून को इन लोगों ने अश्काबाद में भी विद्रोह कर दिया था जिसे मजदूरों की स्वयंसेवक सेना दबा दिया।

ग्यारह जुलाई को क्रान्तिकारी समाजवादियों, मेंशेविकों और राष्ट्रीयता का नारा लगाने वाले तुर्कमानी जागीदारों और और पूंजीपतियों ने एक बार फिर सोवियत शासन को तोड़ गिराने के लिये सम्मिलित प्रयत्न किया। ग्यारह जुलाई के दिन इन लोगों ने अश्काबाद और किजाइल अर्वात में अपनी सरकार बन जाने की घोषणा कर दी। इस प्रदेश में सोवियत की ओर से नियत प्रतिनिधि फ्रोलोव को मार डाला गया और मजदूरों की स्वयंसेवक बोल्शेविक सेना को भी कत्ल कर दिया गया। अर्वात की सोवियत के मेम्बरों गुबकिन, बाबाकिन, बुदनिकोव और कास्को को गोली से उड़ा दिया गया। तीन-चार दिन बाद ही सोवियत के बोल्शेविक मेम्बरों बात्मानोव, झितिनकोव और लाल सेना के कमाण्डरों को भी बिना किसी प्रकार के अपराध आरोपण या जांच-पड़ताल के अनाऊ ग्यारस

स्टेशनों के पास गोली मार दी गई। अश्काबाद और उस के आस-पास के सब प्रदेश क्रान्ति-विरोधी जारशाही सेनाओं के हाथ, जो कि अब ब्रिटिश साम्राज्यशाही सत्ता के हुक्म पर सोवियत शक्ति से लड़ रही थीं, पड़ गये। जार की सेना के इस सैनिक शासन का प्रधान क्रान्तिकारी समाजवादी दल के नेता फुन्तिकोव को बनाया गया परन्तु वास्तव में वह ब्रिटिश मेजर जनरल मैलिन्सन के इशारों पर चल रहा था। मैलिन्सन मध्य एशिया में सोवियत के विरुद्ध बगावत करा कर ब्रिटिश सत्ता जमाने के आयोजन के प्रधान अफसर की स्थिति में काम कर रहा था।

जुलाई के अन्त तक कुछ फौजों को आगे कर और वास्तव में अपनी सेनाओं के बल पर ब्रिटिश सेनाओं ने पूरे रूसी तुर्किस्तान को घेर लिया। काशगर में जमे हुये ब्रिटिश काउन्सल सर मैककार्टेन ने फर्गना के अमीर को हथियार और हिन्दुस्तानी सिपाहियों की सेना सहायता के लिये देकर दक्षिण-पूर्व के शहरों, खानों और तेल के कुओं पर अपना कब्जा जमा लिया। मैककार्टेन ने सेमिरेचेंस्क की कज्जाक ग्रामीण आबादी को भी हथियारों की सहायता दे कर आल्माअता में सोवियत विरोधी सरकार स्थापित करने के लिये भड़काया। पूर्व में अतायान दुतोव विद्रोह कर बैठा और उसने मास्को-ताशकंद रेलवे लाइन उखाड़ डाली। बुखारा-खीवा के डकैत खान जुनैदखां ने और कास्पियन समुद्र में मौजूद ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने उत्तर-पच्छिम से ताशकन्द की सीमा को घेर लिया। तुर्कमानिया के प्रजातन्त्र में सभी जगह ब्रिटिश गुप्तचरों के जाल फैले हुये थे। अपने कारनामों का वर्णन करते हुये मेजर जनरल मैलिन्सन ने उस समय एक पत्र में लिखा था···'इस समय हमारे एक हजार गुप्तचर फैले हैं। बोल्शेविक सरकार के अनेक महत्वपूर्ण पद हमारे गुप्तचरों के हाथ में हैं और सभी खास जगहों पर हमारी सेना की टुकड़ियां भी मौजूद हैं। मध्य एशिया भर में ऐसी कोई रेलगाड़ी नहीं चलती जिस पर हमारे गुप्तचर मौजूद न रहते हों और कोई रेलवे स्टेशन ऐसा नहीं जहां हमारे दो-तीन आदमी समय पर काम आने के लिये मौजूद न रहते हों।'

मेजर जनरल मैलिन्सन जुलाई के आरम्भ में ही मशद में पहुंच गया था। रूस और ईरान की सीमा पर ब्रिटिश सेनायें जमा हो चुकी थीं। बारह अगस्त के दिन ब्रिटिश फौजें रूसी सीमा में अश्काबाद की ओर लगभग सत्तर मील भीतर धंस गईं। ताशकन्द से जार की सेना भी अश्काबाद की ओर बढ़ती चली आ रही थी।

तेजेन की सोवियत को समाचार मिला कि जार की समर्थक क्रान्ति-विरोधी सेना मारी और जार्दजोव पर आक्रमण करने के लिये बढ़ रही है और एक-दो दिन में तेजेन पहुंच जायगी। मारी और जार्दजोव से तेजेन में सहायता पहुंच सकने की कोई सम्भावना न थी। तेजेन की लाल सेना की छोटी सी टुकड़ी अजीज का सामना तो सरलता से कर सकती थी परन्तु इस बड़ी जारशाही सेना का सामना इस टुकड़ी से करना केवल मजाक ही था। यह भी निश्चित था कि अवसर देख कर उसी रात या अगले दिन सुबह तेजेन पर छापा पड़ने वाला था।

इस परिस्थिति में चर्नीशोव ने तेजेन की सोवियत सरकार को ताशकन्द की ओर पीछे मारी में हटा लेना उचित समझा। उस ने अपना प्रस्ताव तेजेन की सोवियत के सम्मुख रखा। कुलीखां ने इस प्रस्ताव का जोरों से विरोध किया और चर्नीशोव के विरुद्ध गद्दारी के अनेक आरोप भी लगाये। कुलीखां ने कहा—

"हम तो जानते ही थे कि तुम यहां केवल मेहमान बनकर मौज मारने के लिये आये हुये हो। जब तक कोई भय न था, तुम बड़े तीसमार खां बने रहे और मुझ पर लांछन लगाते रहे। मुसीबत आई है तो तुम बिस्तर लपेट कर जान बचाने की फिक्र में भागने की तैयारी कर रहे हो कि मुसीबत का सामना हम करें। कांटे तुम बो जाओ और उन्हें समेटने का काम हमारे सिर रहे! हम तेजेन को नहीं छोड़ेंगे। हमारे शरीर में जब तक खून की एक भी बूंद रहेगी, हम जार की फौज को अपनी तलवारों पर रोकेंगे। हम तुम्हें तेजेन के साथ हरगिज गद्दारी न करने देंगे···।"

कुलीखां की इस चालबाजी का मतलब चर्नीशोव खूब समझता था।

वह समझ गया कि कुलीखां जब अश्काबाद गया था, तभी वहां के क्रान्ति-विरोधी दल के साथ यह षड़यन्त्र रच आया था। फुन्तिकोव और दुखोव ने कुलीखां को इसी अवसर के लिये तेजेन में बैठाया हुआ था। वह भांप गया कि कुलीखां उसे संगठित रूप से पीछे हट कर लड़ने से रोकना चाहता है और जार की सेना के तेजेन में आते ही वह दगाबाजी कर उन से जा मिलेगा···चर्नीशोव ने निश्चय किया कि सोवियत के भविष्य के भाग्य निर्माण का समय आ गया है और इस समय उसे दृढ़ता से काम लेना होगा। वह शांत बना रहा और बोला—

"कुलीखां, तुम सदा से सोवियत के साथ दगा करते आये हो ! आज भी तुम वही बात कर रहे हो। यह बात नहीं की तुम भोले हो और स्थिति को समझ नहीं सकते। तुम सब कुछ समझते हो और चाहते हो सोवियत को जाल में फंसा कर समाप्त कर देना। मैं तेजेन में मेहमान बनकर मौज मारने नहीं आया हूं। तेजन की भूमि के प्रत्येक ढेले के लिये मैं जान दे दूंगा। समाजवादी प्रजातन्त्र सोवियत की सम्पूर्ण भूमि का प्रत्येक भाग हमारा अपना घर है। मैं इस भूमि के प्रत्येक व्यक्ति की जान को मूल्यवान समझता हूं। मैं झुंझला कर इस देश के लोगों को मौत की भट्ठी में झोंक देने के लिये तैयार नहीं हूं। हम शत्रु से हार मान कर पीछे नही हट रहे हैं। हम शत्रु पर अधिक बल से हमला करने के लिये उचित जगह मोर्चा बना रहे हैं। मैं यह समझता हूं कि किसान-मजदूर सरकार को सफल बनाने के लिये और सोवियत प्रजातन्त्र के शत्रुओं को समाप्त करने के लिये तेजेन की सोवियत के सदस्यों के जीवित रहने की आवश्यकता है। हम लोग तुम्हारे षड़यन्त्र को खूब समझते हैं। हम जानते हैं कि जार की सेना के तेजेन में कदम रखते ही तुम उन से जा मिलोगे और सोवियत के वफादार लोगों चर्नीशोव, अशीर, मावेद वगैरह को जार की सेना के हाथ में देकर तुम उन से इनाम मांगोगे···।"

कुलीखां ने बीच में टोकने का यत्न किया परन्तु चर्नीशोव अपनी

आवाज और ऊंची कर बोलता गया—"कुलीखां याद रखो, सोवियत सरकार जनता की सरकार है और रूसी जनता के साथ उन सब देशों की जनता की सरकार है जो अपनी मुक्ति के लिये जनवादी क्रान्ति के मार्ग पर चल रही हैं। जनता की सोवियत सरकार को न तो बरबाद हो चुके जार की सेना और न मूर्खों को अपने स्वार्थ का साधन बनाने वाली साम्राज्यशाही परास्त कर सकती है। किसानों और मजदूरों की हमारी सरकार आज कठिनाई में अवश्य है परन्तु हम लोग निरुत्साह और भयभीत नहीं है। हमें पूरा विश्वास है कि इस भूमि पर सोवियत का झण्डा—ईमानदारी से मेहनत कर पैदावार करने वालों का झण्डा लहरायेगा, हमारी विजय होगी। इस समय की परिस्थितियों मे विजय को निश्चित बनाने के लिये यदि आज हमें कुछ पीछे हट कर शत्रु पर वार करना पड़ता है तो यह न तो हमारे लिये अपमान का कारण और न हमारी हार है। आज हम चार कदम पीछे हटते हैं तो कल सोलह कदम आगे बढ़ेंगे। इस समय हमारी जिम्मेवारी है कि हम यहां सोवियत की शक्ति को नष्ट न होने देकर आगामी आक्रमण के लिये उस की रक्षा करें। इस समय हमारे सामने एक ही रास्ता है कि हम अपनी सोवियत को मारी ले जाकर वहां संयुक्त मोर्चा बनायें। तेजेन की लाल सेना का प्रधान सेनापति मैं हूं और मेरा फैसला है कि हमें तुरन्त यह काम करना होगा। इस समय उपस्थित संकट से रक्षा के काम को समुचित रूप से चलाने के लिये मैं सब अधिकार अपने हाथ में ले रहा हूं। मेरी पहली आज्ञा है कि तेजेन की सम्पूर्ण लाल सेना मारी जाने के लिये तुरन्त रेल पर सवार हो जाय। दूसरी आज्ञा है कि सोवियत की रक्षा करने वाले सभी नागरिक भी इस सेना के साथ जायें और आवश्यकता पड़ने पर इन सब लोगों को सिपाहियों का काम करना होगा।"

चर्नोशोव के व्यवहार से कुलीखां घबरा गया। उसे ऐसी स्थिति की आशंका नहीं थी। उसे भरोसा था कि तेजेन की सैनिक शक्ति स्वयं उस के

हाथ में थी परन्तु चर्नीशोव ने सेना की कमान अपने हाथ में ले ली। अब क्या होगा···कुलीखां ने सोचा, इस समय वह क्या कर सकता है। सेना में उस के भरोसे के सिपाहियों की संख्या कम ही थी। उस का साथ देने वाले लोग भी सोवियत की इस बैठक में मौजूद न थे। चर्नीशोव का साथ देने वाले अशीर और मावेद सामने ही बैठे थे। इन लोगों से हाथापाई करना व्यर्थ था। रेल छूट जाने का बहाना करके पीछे रह जाने का कोई अवसर न था और कोई लाभ भी न था। जार की फौज उस की कद्र तभी करती जब वह अपने साथ सेना लेकर उन के पक्ष में चला जाता। यदि वे उसे अकेले पकड़ पायेंगे तो बिना कुछ पूछताछ किये उसे सोवियत में महत्वपूर्ण पद पर काम करने के अपराध में तुरन्त गोली से उड़ा देंगे।

निराशा की एक गहरी सांस लेकर वह बोला—"चर्नीशोव, अफसोस है कि मेरे विचार से सहमत न होने के कारण ही तुम मुझ पर विश्वासघात के षड़यंत्र का आरोप लगा रहे हो। तुम जानते हो मैं सिपाही आदमी हूं। मैं कहता हूं—लड़ो या मरो! दुश्मन के सामने से भागना मुझे अच्छा नहीं लगता परन्तु यदि तुम सोवियत का हित इसी बात में समझते हो तो मैं तुम्हारा हुक्म मानने के लिये तैयार हूं।"

"तुम्हें यही करना भी चाहिये," मुस्कराकर चर्नीशोव ने कहा। "अब मेरी आज्ञा है कि तुम अपने हथियार इन सिपाहियों को सौंप दो। तुम इस समय गिरफ्तारी में हो। अशीर और मावेद, तुम लोग इस कैदी को ले जाकर पहरे में रखो। यदि कैदी भागने की कोशिश करे या हाथापाई करे, उसे गोली मार दो।"

कुलीखां का चेहरा कागज की तरह सफेद पड़ गया। उस ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला परन्तु चर्नीशोव ने हाथ उठा कर उसे रोक दिया—"बस!"

अशीर और मावेद ने कुलीखां के हथियार उतार लिये। कुलीखां ने चुपचाप सिर झुका लिया और वैसे ही उन लोगों के साथ चलता गया।

जब अशीर कुलीखां को कोठड़ी में बन्द कर लौटा, चर्नीशोव उसे अपने दफ्तर में ले गया और दरवाजा बन्द कर बोला—"अशीर, मैं तुम्हें एक काम सौंप रहा हूं। हम लोग मारी जा रहे हैं। मुझे विश्वास है मारी की सोवियत सेना के साथ मिल कर हम दुश्मन को जरूर पीट देंगे और प्राय: एक सप्ताह के भीतर तेजेन लौट आयेंगे। यहां आकर हमें अश्काबाद पर भी हमला करना होगा। तुम्हें यहां पीछे रहना होगा। तुम आस-पास के गांवों में जाकर किसानों को समझाओ कि वास्तविक स्थिति क्या है। जारशाही की सेना का साथ देने से उन का नाश होगा। तुम किसानों को संगठित करके सोवियत सेना की सहायता के लिये तैयारी करो।"

"लेकिन अजीज यह सब करने देगा?"

"अजीज हो या और कोई हो! यह काम तो करना ही होगा। मेरा ख्याल है, अजीज जार की सेना के साथ मिल कर हम लोगों का पीछा करने आयेगा लेकिन तुम्हें अपना काम करना है। यह काम सबसे जरूरी है और इस में सबसे अधिक खतरा भी है। दुश्मन के सामने डट कर, बन्दूक से उस का सामना करना कहीं अधिक आसान है। यह याद रखो कि किसी भी हालत में तुम दुश्मन के हाथ नहीं पड़ोगे। अगर तुम्हें सहायता की आवश्यकता है तो तुम मावेद को भी साथ रख सकते हो।"

"नहीं, मावेद को तुम अपने साथ रखो। तुम्हें एक भरोसे के आदमी की आवश्यकता होगी। मैं किसी और को ढूंढ़ लूंगा।"

"अगर कहीं अरतैक से मुलाकात हो तो उसे समझाने की कोशिश करना। मेरा मन कहता है कि वह अब भी सोवियत का मित्र है। उसे भले-बुरे की परख है।"

२२

अरतैक का मन अपने घर में रम गया था। ऐना ही उस का संसार थी। उस से परे की वह बात ही न सोचता था। उस साल खूब वर्षा हुई। जहां तक नजर जाती, भूमि पर लहराती हरी घास कालीन बिछा दिखाई देता था। तेजेन्का नदी भी जल की गर्वीली धारा से गरज रही थी। तेजेन की भूमि पर उस का पुराना जोबन उमड़ आया और अरतैक की नसों में उस के किसान पूर्वजों का रक्त उमगने लगा। उस ने मुराद से बीज के लिये आवश्यक अनाज उधार लिया और अपने चाचा के साथ मिल कर सोवियत व्यवस्था से नयी मिली जमीन जोत कर बीज डाल दिया। मुख्य नहर से एक नाली खोद कर वह अपने खेतों की सिंचाई करने लगा।

एक दिन अरतैक खेतों से थका तीसरे पहर घर लौट कर चाय पी रहा था। चाय के गरम घूंट गले से उतर उस की कल्पना और स्मृति को सचेत करने लगे। उसे अपने बचपन के खेल याद आने लगे। बचपन के साथी अशीर की याद आने लगी। वह सोच रहा था--अशीर जाने कहां होगा ?

उसी समय एक चमत्कार हुआ--अशीर उस के सामने आ खड़ा हुआ। अरतैक पुरानी मित्रता के आवेग में अशीर को गले लगा लेने के लिये झपटा परन्तु अशीर से झगड़े और अपने अपमान की बात याद आ जाने से उस का मन बुझ सा गया। दोनों मित्रों ने सलाम-दुआ की और बातचीत भी कर रहे थे परन्तु जैसे कुछ कतरा कर !

अरतैक की मां नूरजहां को इन दोनों मित्रों के झगड़े की कोई खबर न थी परन्तु उन का परस्पर खिंचाव उस ने भी अनुभव किया और मन ही मन चिन्ता कर रही थी—हाय, इन दोनों के बीच में यह बेगानापन कैसे आ गया ! क्या बात है ? छोटी बहन शाकिरा भी हैरान थी कि क्या सचमुच यह अशीर है ! अशीर होता तो दोनों ऐसे बेगानेपन से मिलते ! ऐना बड़ी चतुर थी परन्तु इस स्थिति का कारण वह भी न भांप पाई। अरतैक ऐना से कोई बात छिपाता न था परन्तु अशीर से झगड़े की चर्चा उस ने ऐना से न की थी । सोचा, बेचारी का मन दुखाने से क्या लाभ ! और इस झगड़े में वह भूल अपनी ही समझता था ।

अशीर का घाव ठीक हो जाने और अशीर के उस से घर मिलने आने के कारण अरतैक को बहुत संतोष हुआ, पर आत्माभिमान के कारण वह अपनी भूल मान लेने के लिये तैयार न था ।

उस झगड़े की बात अशीर भी न भूला था। यह झगड़ा यों ही मामूली छीना-झपट की बात तो थी नहीं, अपने-अपने विश्वास और सिद्धान्त की बात थी। इसी झगड़े के परिणाम स्वरूप वे एक-दूसरे पर गोली चलाकर आपस में खून बहाने के लिये तैयार थे। झगड़े के बावजूद भी अशीर यह नहीं भूल सका था कि उस के घायल हो कर गिर जाने पर अरतैक ने ही उस के प्राण बचाये थे। इस कृतज्ञता को वह कैसे भुला देता !

एक-दूसरे के कुशल-क्षेम की बात हो चुकने के बाद अशीर ने तेजेन की अवस्था, जार की सेना के आक्रमण तथा सेना का मारी की ओर हट जाना और अरतैक से मिलने के लिये चर्नीशोव के आग्रह की बात भी कह सुनाई और पूछा—"इस स्थिति में तुम्हारा क्या विचार है, क्या करना चाहते हो ?"

अरतैक ने भी अश्काबाद में सोवियत के विरुद्ध विद्रोह का समाचार सुना था परन्तु वास्तविक स्थिति उसे मालूम न थी। उसे कुछ उत्तर न दे सिर झुकाये सोचते देख कर अशीर ने फिर सम्बोधन किया—"क्या सोच

रहे हो ? क्या विचार है तुम्हारा ? चर्नीशोव को मैं क्या उत्तर दूं ?"

"चर्नीशोव से कहना मैं अपनी भूल मानता हूं," अरतैक ने सहसा सिर उठा कर उत्तर दिया। "मेरे कसूर की मुआफी नहीं है···।" यह शब्द कहते समय अरतैक का कलेजा कट कर रह गया। अरतैक स्वाभिमानी आदमी था। अपना अपराध स्वीकार करने की अपेक्षा दुश्मन की गोली सीने पर सह लेना उसके लिये अधिक आसान था परन्तु जब मित्र के सामने उस ने दिल खोल दिया तो कुछ भी न छिपाया।

"अशीर मुझ से गलती हो गई," अरतैक बोला। "इतना कह देना ही काफी नहीं। जब तक हम यह न समझें कि गलती क्या थी, कैसे हुई, तब तक गलती से बचा नहीं जा सकता। पिछले विद्रोह में मैंने अजीज के साथ हथियार उठाये थे। उस में भी मैंने कोई फायदा उठाने की बात नहीं सोची थी। मैं जागीरदारों और जार के अफसरों के विरुद्ध अपने किसान भाइयों की मुक्ति के लिये लड़ रहा था। चर्नीशोव मुझ से नाराज है। मैं चर्नीशोव को अपना बड़ा भाई मानता हूं। मैं मानता हूं कि वह निस्वार्थी है, वह जनता की भलाई के लिये जान दे रहा है परन्तु उस ने जार के पुराने बेईमान आदमियों का, कुलीखां जैसे बदमाशों का भरोसा किया। मैं कुलीखां जैसे आदमियों का विश्वास कभी नहीं कर सकता। तुम्हीं बताओ, कुलीखां और बाबाखां हम लोगों का पेट काट कर जागीरदारों और जार के अफसरों का पेट भरते रहे हैं कि नहीं ? अजीज चाहे जैसा रहा हो, कम से कम उन ने लोगों की भलाई की बातों का ऐलान किया, जागीरदारों की जायदादें ले कर गरीबों को रोटी तो दी ! मैंने उस का साथ दिया तो क्या बुरा किया···!"

"अरतैक, जब मैं रूस से लौटा था तो मैंने तुम से कहा नहीं था···।" अशीर ने टोका।

"मुझे कह लेने दो, टोको मत ! उस समय तुम्हीं क्या जानते थे ? जो कुछ मैं जानता था, वही तुम भी जानते थे।"

"नहीं, यह बात नहीं है। अरतैक, मैं रूस के संगठित मजदूरों में

रह कर आया था। मुझे वहां काफी देखने-सुनने का मौका मिला था।"

"मान लिया तुम मां के पेट से ही इन्कलाबी पैदा हुये थे परन्तु मेरी भी बात सुन लो। मैंने अलनजर बे के दांत तोड़े, बाबाखां को धूल चटाई। गांव के किसानों को सिर ऊंचा करके चलने का मौका दिया। मैं अजीज की नौकरी में था तो मैंने क्या बुरा किया ! लेकिन अजीज ने रंग बदल लिया। वह खुद ही सुल्तान बन बैठा। उसने किसानों के गले से जागीरदारों का जुआ तो हटाया परन्तु उन के कंधे पर स्वयं सवारी गांठ ली। मैं तो उस की नेकी में विश्वास कर उस का साथ दे रहा था; वह धोखा दे गया तो मैं क्या करूं ! बताओ ये मेरी भूल थी ?"

"यह तो साफ है।"

"नहीं, अभी तुम नहीं समझे। सुनो, मैंने जो कुछ देखा उस पर ही विश्वास कर लिया। वह नहीं सोचा कि भीतरी बात क्या है। मैं कुलीखां की दगाबाजी से डरता रहा, यह नहीं सोचा कि जनता को साथ लेकर ही ऐसे दुष्टों को कुचला जा सकता है। मेरी भूल थी कि मैंने यह नहीं सोचा कि अजीज का स्वार्थ तो जनता के हित के विरुद्ध है। जो जनता पर शासन करना चाहता है, वह जनता को आजादी कैसे दे सकेगा ! उस का साथ दे कर मैंने सोवियत के शत्रु की शक्ति बढ़ाई थी। सोवियत की राह में रोड़े अटकाये थे। अब मैं समझ रहा हूं परन्तु क्या फायदा ! अब तो बात हाथ से निकल गई।"

"हाथ से कुछ नहीं निकल गया। चर्नीशोव अब भी तुम्हें बुला रहा है। उसे तुम्हारी ईमानदारी पर भरोसा है।"

"इतनी ही बात नहीं," खिन्न स्वर में अरतैक बोला। "चर्नीशोव ने मुझे तभी समझाया था कि अजीज का साथ देकर मैं सोवियत का विरोधी बन जाऊंगा। उसका कहना ठीक था। उस समय मैंने उस की बात नहीं मानी, परिणाम क्या हुआ ! जब अजीज की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारा गया, मैंने सोवियत सिपाहियों पर गोली चलाई। मान लिया कि मैं आत्मरक्षा के लिये ही गोली चला रहा था परन्तु मेरा गोली

से तुम, माबेद या लिशोंको, कोई भी मर सकता था। मुझे चाहिये था कि ऐसी अवस्था में राइफल नीचे डाल कर खड़ा हो जाता। हो सकता था मैं गोली खाकर मर जाता परन्तु जो लोग जनता के लिये, सही काम के लिये लड़ रहे हैं उन्हें मारने से तो स्वयं मर जाना भला था। तुम कहते हो चर्नीशोव मुझे अब भी बुला रहा है, मुझे मुआफ कर देने के लिये तैयार है परन्तु मैं अपने अपराध को स्वयं जानता हूं। मैं जनता के सम्मुख अपराधी हूं। उस समय मेरे दिमाग में कुलीखां के लिये घृणा और भय घुसा हुआ था। चर्नी ने कहा था राज जनता का है, कुलीखां का नहीं परन्तु मुझे भरोसा न हुआ। अब उसकी ही बात ठीक निकली। यह भी मेरी गलती थी। तुम लोग मुझे माफ करने के लिये तैयार हो परन्तु मैं अपराध का बदला चुकाऊंगा। मैं पहले अजीज के यहां ही जाऊंगा। मेरी तरह भूल करने वाले और बीसियों लोग वहां हैं। मैं उन सब को समेट कर तुम्हारे यहां आऊंगा या अपने अपराध के दण्ड में वहां जान दे दूंगा।"

अरतैक दिल भर आने से चुप हो गया। अशीर भी चुप रहा। वह जानता था, अरतैक को समझाने का कुछ लाभ नहीं। वह जिद्दी आदमी है। उस के मन में जो समा गया, वही करेगा। अरतैक यदि अपने अपराध का बदला चुकना चाहता है तो वह उसे क्यों रोके! उसे अपना मन हलका करने का मौका देना ही ठीक है।

अशीर उठ खड़ा हुआ और विदाई के लिये अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया। अरतैक की आंखें अशीर से मिलीं। इन आंखों की सफाई ने अरतैक के मन का संकोच और मैल धो दिया। दोनों मित्रों ने बहुत दिन बाद मन के पूरे उच्छ्वास से हाथ मिलाया। अशीर का हाथ थामे हुये अरतैक ने कहा—"चर्नी से कहना मैं आऊंगा, अपने अपराध का बदला चुकाऊंगा। मुझे भूल न जाना।

उन दिनों किसी भी आदमी के लिये राजनैतिक संघर्ष से निष्पक्ष रहना सम्भव न रहा था—या तो क्रांति के पक्ष में होता या क्रांति के

विरोध में। उसी सांझ, कई घुड़सवारों से घिरा किजिलखां अरतैक की छोलदारी के सामने आ पहुंचा। जीन से उतरे बिना, अरतैक को सलाम कर किजिलखां बोला—

"अरतैक, अजीजखां ने तुम्हें सलाम कहा है। वह मुद्दत से तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। तुम आये नहीं। भाई, अगर निमंत्रण की जरूरत थी तो मैं निमंत्रण लेकर आ गया हूं। अब उठो, जल्दी आ जाओ!"

अजीजखां के साथियों में किजिलखां बहादुर और ईमानदार आदमी था। अरतैक उसका भरोसा और आदर करता था। "यहां कैसे आये किजिलखां?" अरतैक ने प्रश्न किया, "क्या देहात में गड़रियों को बटोरने आये हो?"

"क्या अजीजखां गड़रियों को खोजता फिरता है!"

"तुम समझते हो मैं यहां दाता लोगों की प्रतीक्षा में बैठा हूं!"

"क्या बात करते हो अरतैक, क्यों बिगड़ रहे हो?"

"अजीजखां के यहां पुलाव सही पर यहां क्या तुम्हारे लिये सूखी रोटी का टुकड़ा भी नहीं है!"

"अरतैक, तुम भी कहां से कहां बात उड़ा ले जाते हो!" किजिलखां ने घूम कर सवारों को हुक्म दिया, "घोड़े एक तरफ बांध दो!"

अरतैक ने चाय से सिपाहियों की खातिर की और बोला—"किजिलखां भाई, मैं चलने के लिये तो तैयार हूं परन्तु मेरे पास घोड़ा नहीं। अलनजर के तबेले में अजीजखां की फौज के लायक एक बढ़िया घोड़ा बंधा है। वही घोड़ा मंगवा लो। अलनजर की रूह जन्नत में दुआ देगी।"

अलनजर के यहां से मालकोश आ गया। आधे घंटे के बाद अरतैक चलने के लिये तैयार हुआ तो ऐना की आंखों में आंसू आ गये। अरतैक ने कहा—"वाह यह क्या! तुम्हारे जैसी समझदार औरत की यह हरकत!"

ऐना मुस्करा दी। उस की आंखों में छलकी बूंदें ऐसे चमक उठीं जैसे पंखड़ियों पर पड़ी ओस की बूंदें सुबह की किरणों में झलमला उठती हैं।

२३

अगलान पहुंच कर अरतैक ने देखा—अजीज ने तीन सौ से अधिक घुड़सवार जुटा लिये थे। अजीज अपने विचार में अपने सब विरोधियों को समाप्त कर चुका था। उस की खून की प्यासी आंखें और भी खूनी हो गई थीं। उसके सिपाही भी लूट-मार के अवसर के लिये उतावले हो रहे थे। वह लोग खूब खा-पी कर मुटा रहे थे और बेकार बैठे बात-बात पर आपस में झगड़ बैठते और एक-दूसरे का गला काटने के लिये झपटते रहते थे।

अजीज ने अरतैक का स्वागत आत्मीयता से किया। बातचीत विशेष न हो पाई। अजीज अपनी तैयारियों में बहुत व्यस्त था। मदीर ईशान ने उसे अश्कावाद में सोवियत के विरुद्ध बगावत हो जाने और तुर्कमान राष्ट्रीय कमेटी के जार की सेना के साथ मिल जाने के फैसले की सूचना भेज दी थी। अजीज इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय कर कर चुका था। सिपाही आपस में तेजेन और काहका रेल स्टेशन पर छापा मार कब्जा कर लेने की बातें कर रहे थे लेकिन अजीज जाने किस ख्याल से टालता जा रहा था। अरतैक अजीज के वहां नित्य ही अंगरेज अफसरों को आते-जाते देख विस्मित था।

अजीज के यहां आने से पहले अरतैक ने बहुत धीरज से काम लेने का निश्चय किया था। उसने यहां आते ही अनुभव किया कि उसे धीरज की बहुत कठिन परीक्षा देनी होगी। अजीज के खेमे में रहना ही उसे असह्य जान पड़ रहा था। जिस पर नित्य ही ऐसी घटनायें होतीं कि

विरोध में उस का खून खौल उठता। इस के अतिरिक्त उसे अपनी कमान के सिपाहियों का ख्याल भी था। यह सिपाही उसे बहुत मानते थे, उस पर भरोसा कर जीने-मरने के लिये तैयार थे। अरतैक ने अजीज के पुराने सहायक केलखां से भी घनिष्टता जमा ली थी। केलखां भी अजीज के अत्याचारों और नादिरशाही से उकता चुका था। उन लोगों ने आपस में निश्चय कर लिया था कि यदि दोनों में से किसी पर संकट आया तो परस्पर सहायता करेंगे।

उनके इस आपसी निश्चय की परीक्षा का दिन भी जल्दी ही आ गया। एक जागीरदार ने अजीज के यहां आकर शिकायत की कि रात में आकर किसी ने उस के खेतों में से आधी फसल काट ली है। जागीरदार को अपने गांव के एक नौजवान पर सन्देह था। अजीज ने घुड़सवार भेजकर नौजवान को पकड़ मंगवाया।

नौजवान ने गिड़गिड़ाकर दुहाई दी कि उस ने यह काम नहीं किया। उसे इस घटना के बारे में कुछ पता भी न था।

"हम अभी तुम्हें सब बताये देते हैं!" अजीज ने नौजवान को उत्तर दिया। अजीज के इशारे पर दो सिपाही आगे बढ़ आये। उन लोगों ने फुर्ती से नौजवान के सब कपड़े उतार डाले। उसे धरती पर पट लिटा कर एक सिपाही उस की पिंडलियों पर और दूसरा कंधों पर बैठ गया। दुबले-पतले नौजवान की एक-एक पसली धूप में दिखाई पड़ रही थी। अजीज ने फिर इशारा किया। दो और सिपाही चमड़े की बटी हुई रस्सियों के कोड़े लेकर आये और नौजवान के दोनों ओर खड़े होकर उस की पीठ पर कोड़े बरसाने लगे। कुछ ही पल में नौजवान की पीठ लाल होकर नीली पड़ गई। वह अपनी पूरी ताकत से चीख रहा था—"हाय मैं मर गया! मैंने चोरी नहीं की!"

अपनी छोलदारी में बैठे अरतैक ने यह दर्दनाक चीखें सुनी। उस से रहा न गया। वह इस दृश्य के चारों ओर घिरी भीड़ की ओर चला आया। भीड़ में धंस कर उस ने सिपाहियों के हाथ से कोड़े छीन लिये।

नौजवान को दबा कर बैठे सिपाहियों को परे धकेल दिया। नौजवान की पीठ से मांस के लोथड़े उठ आये थे और खून बह रहा था। उस की बांह थाम अरतैक ने उसे पांव पर खड़ा कर दिया।

अजीज की ओर देख वह बोला—"ऐसा अन्याय क्यों करा रहे हो!" अजीज की आंखों में खून उतर आया। झुंझला कर उस ने कहा—"तुम कौन हो मेरे हुक्म में दखल देने वाले!" सिपाहियों को उस ने हुक्म दिया—"इसे पकड़ कर गुस्ताखी के लिये अभी कोड़े लगाओ!"

सिपाही अरतैक की ओर बढ़े तो उस ने रिवाल्वर निकाल लिया—"जो आगे आयेगा, उस का सिर उड़ा दूंगा।"

इतने में केलखां और अजीज की कम्पनी के सिपाही आगे बढ़ आये। अजीज क्रोध में आपे से बाहर हो स्वयं ही अरतैक की ओर झपटा। अरतैक ने रिवाल्वर उस की ओर साधा। यह देख कर अजीज ठिठक गया और उस ने पुकारा—"केलखां!"

"हुक्म मालिक!" केलखां ने जवाब दिया।

"मेरा हुक्म है, अरतैक को गोली मार दो!"

"मालिक कितने आदमियों को तुम गोली मार चुके हो! अब हम लोगों को गोली मारने की बारी आ गई?" केलखां ने प्रश्न किया।

"हूं, तुम भी उस का साथ दे रहे हो?"

"मालिक, मैं इन्साफ का साथ दे रहा हूं। मेरे खयाल में अरतैक भी इन्साफ की बात कर रहा है।" केलखां ने उत्तर दिया।

अजीजखां इधर-उधर देख कर किजिलखां को ढूंढ़ा। उसे याद आया कि किजिलखां को उस ने किसी काम से छावनी से दूर भेजा हुआ है। बेबस होकर उस का हाथ अपनी कमर में बंधे रिवाल्वर की ओर गया। उसी समय भीड़ में शोर मच गया।

अरतैक की टुकड़ी के सिपाही चिल्ला रहे थे—"अरतैक, हुक्म दो, हम अभी इन लोगों को गोली मार दें!"

"जालिम तबाह हो!"

"अरतैक हमारा खान है !"

यारमुश काजी अजीज को आस्तीन से थाम एक ओर ले गया और समझाया—"क्या बेवकूफ लोगों को मुंह लगा रहे हो ! तुम इन लोगों को रहने दो । होश आयेगा तो अपन आप तुम से माफी मांगेंगे ।" अजीज अभी शान्त भी न हो पाया था कि एक अर्दली ने आकर खबर दी—"अश्काबाद से सरकारी आदमी आये हैं ।"

अजीज ने इन मेहमानों को ले जाकर बैठाने के लिये हुक्म दिया और अपना मन शान्त करने के लिये एकान्त में जा लेटा । वह सोच रहा था—जिन लोगों को अपने हाथों बनाया, वही लोग आज मुझे मुंह चिढ़ा रहे हैं ! यह सब क्या हो रहा है···अरतैक की यह हिम्मत कि मेरे हुक्म का विरोध करे ! खैर, अरतक बेसमझ है तो इस केलखां को मुझ से क्या शिकायत है ? यह आदमी टुकड़ों के लिये भटक रहा था, दूसरे लोगों का बोझ ढो रहा था । मैंने इसे आदमी बना दिया । सौ घुड़सवारों का सरदार बना दिया । आज यह मुझे आंखें दिखा रहा है ! यह मेरी बेवकूफी है कि मैंने इन लोगों को इतना मुंह लगा लिया । अरतैक को तो मैं आज ही रात खत्म करवा दूं परन्तु उस के साथ के सौ घुड़सवार उसी से मिल गये हैं । यह लोग बिगड़ खड़े होंगे । यह लोग घोड़े और हथियार लेकर मेरे ही दुश्मन बन जायेंगे । क्या है मेरी किस्मत ! केलखां का भी क्या विश्वास ? वह अगर छोड़ कर चल दे तो मैं निहत्था रह जाऊंगा । जुनैदखां में क्या बात है ? वह कैसे अपने दुश्मनों को पल भर में कुचल डालता है ! ···नहीं, अभी अरतैक से झगड़ा करने का वक्त नहीं है । उसे चुपके से खतम करना होगा । अभी उसे बुलाकर समझा-बुझाकर शान्त किया जाय···।

यह निश्चय कर वह अश्काबाद से आये राजदूतों से मिलने के लिये गया । इन लोगों ने अजीजखां को निमाजबेग और ओराज सरदार की ओर से उस की वीरता और सफलता के लिये बधाई देकर एक पत्र निमाजबेग की ओर से और दूसरा जारशाही सेना के कमाण्डर की ओर

से दिया। इन पत्रों मे सोवियत के विरुद्ध विद्रोह में अजीज के सहयोग पर प्रसन्नता प्रकट करके उस से अपना सहायक बन जाने का अनुरोध किया गया था। उसे विश्वास दिलाया गया था कि आवश्यकता पड़ने पर हथियार, धन और योग्य अफसर भेज कर उस के सिपाहियों को युद्ध शिक्षा देने में सहायता दी जायगी और उसे तेजेन का स्वतंत्र खान स्वीकार कर लिया जायेगा। उस के प्रबंध में किसी प्रकार का दखल न दिया जायगा।

पत्र लाने वाले राजदूतों ने अजीज की खूब प्रशंसा कर उसे फुसलाया। इस पत्र से अजीज की बरसों की महत्वाकांक्षा पूर्ण हो रही थी। उसने तुरंत ही एक संधिपत्र पर अपनी शर्तें देकर दस्तखत कर दिये। उसकी मांगें थीं—उसे आवश्यकतानुसार हथियार और धन सहायता के लिये दिये जायेंगे और उस के राज-प्रबंध में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप न किया जायगा।

अजीज इस संधिपत्र पर हस्ताक्षर कर ही चुका था कि उसे बुखारा के अमीर के राजदूत तोगसा बे के आने का समाचार मिला। तोगसा बे अपने साथ अजीज के लिये अमीर की भेजी हुई भेंट लेकर आया था। पचास मन हरी चाय, बहुत कीमती पोशाकें और सूर्य के रूप में बना एक सोने का बड़ा पदक उस ने अजीज के सामने पेश किये। तोगसा बे को बोलशेविकों के डर से मारी का चक्कर काट कर आना पड़ा था। बुखारा का राजदूत स्वयं भी सुनहरी जरी के चोगे पर खूब बड़ी पगड़ी बांध कर अजीज के सामने पेश हुआ। बे का चेहरा अनार के फूल की तरह लाल हो रहा था। अपनी भारी तोंद को जैसे-तैसे सम्भाल कर अजीज के सामने कमर तक झुक सलाम कर उस ने कहा—

"ऐ वालिये दीनोदुनिया, अमीरुलअमीर, अफजलुलअकबर, आलिमुल आलमीन, खानेखाना, नूरुलइस्लाम! शहनशाहे बुखारा जहांपनाह की खिदमत में अपने दोस्ताना सलाम अरसाल फर्माते हैं।"

"अमीर पर खुदा की बरक्कत हो!" अजीजखां ने तोगसा बे के

लम्बे सम्भाषण का संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"पाक बुखारा के बारा मुफ्ती और शेख-उल-इस्लाम खानेखाना की सेहत के लिये दुआ देते हैं और खुदावन्द से इल्तजा करते हैं कि जहांपनाह का इकबाल दोबाला हो। खुदा का हजार शुक्र है मुझे अमीरे तेजेन की मुनव्वर हस्ती का नियाज पाने में कामयाबी हुई…।"

अजीजखां तोगसा बे के मुंह से झड़ते दुर्बोध शब्दों को आंखें झपकता हुआ सुन रहा था। बे ने फिर एक बार झुक कर सलाम किया और अजीज ने फिर यत्न से उचित शब्द याद कर अपना जवाब दोहराया— "शहनशाहे बुखारा पर खुदावन्द का करम हो!"

तोगसा बे ने बुखारा के अमीर भेजे हुये उपहार अजीज के सामने रख कर सोने का दमकता हुआ सूरज अपने हाथों से अजीज के सीने पर टांक दिया। अजीज का चेहरा खुशी से चमक उठा।

"अमीरे बुखारा ने जो इज्जत मुझे बख्शी है, उसके लिये मै उन का शुक्रिया कैसे अदा करूं! खुदा उन का इकबाल दोबाला करे।" अजीज ने फिर कहा।

इस कठिन काम को सफलतापूर्वक कर पाने के संतोष से तोगसा बे का सीना फूल उठा। वह फिर बोला—"जहांपनाह खानेखाना अमीरे-तेजेन ने इस्लाम की जो खिदमत की है, उस के लिये शहनशाह बुखारा हुजूर की खिदमत अपना शुक्रिया और एहतराम फर्मा कर पैगाम देते हैं कि अगर हुजूर को कभी किसी किस्म की मदद की जरूरत हो तो ऐसी खिदमत का मौका शहनशाह बुखारा अपने लिगे खुशकिस्मती खयाल करेंगे। शहर तेजेन बुखारा से अगरचे दूर है लेकिन अमीरे-बुखारा का दिल खानेखाना की याद से हमेशा पुर रहता है। शहनशाह बुखारा को उम्मीद है कि जमीन पर अमन कायम हो तो हुजूर के बुखारा तशरीफ लाने का मौका आयेगा और अमीरे बुखारा को खानेखाना के इस्तकबाल का खुशगवार मौका हासिल होगा।"

"बशर्ते जिन्दगी में अमीरे बुखारा की खिदमत में हाजिर होने की

कोशिश करूंगा।" अजीज ने उत्तर दिया।

तोगसा बे को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि अजीजखां उस की बात समझ रहा है या नहीं। वह उसे अपनी विद्वता से प्रभावित कर देना चाहता था। उस ने अरबी-फारसी के दुर्बोध शब्दों की बौछार में बताया कि बुखारा के अमीर वर्तमान राजनैतिक स्थिति का लाभ उठा कर, इस्लाम की रक्षा के लिये अपने राज्य का विस्तार दूर तक कर लेना चाहते हैं और अजीजखां को तुर्कमानिया में अपना सूबेदार नियत करना चाहते हैं।

उस राजनितिक गड़बड़ी में अजीजखां अपने आप को सहसा ईरान के शाह की बराबरी का बादशाह समझने लगा था। दो बरस पहले उसे कोई पहचानता नहीं था और अब कई राज्यों के राजदूत उसे अपना सहायक बनाने के लिये उस के यहां पहुंच उस की खुशामद कर सभी प्रकार की सहायता देने के वायदे कर रहे थे। अजीज सोच रहा था—मेंशेविकों और क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी से मैं नये ढंग की बन्दूकें और तोपें ले लूं और फिर बुखारा जाऊं। बुखारा में पहले अमीर के सामने सिर झुका कर सलाम करने से मेरा क्या बिगड़ जायेगा? तोगसा बे समझेगा मुझे फंसा लिया। कौन फंसता है, यह बाद में पता लगेगा। बाद में मैं फौजें बढ़ाकर अश्काबाद के मेंशेविकों को उन के ही हथियारों से कुचल डालूंगा। सारे तुकमानिया की रियाया मेरे सामने सिर झुकायेगी···।

अश्काबाद और बुखारा के राजदूतों से बात खत्म कर अजीज ने अपने सलाहकारों से मशविरा किया और फिर तेजेन की प्रजा के नाम फर्मान लिखवाया—

"हमारे मौलवियों का फतवा है कि इस्लाम से मुनकिर हो जाने वाले काफिरों के खिलाफ जिहाद करना सब मुसलमानों का फर्ज है। शरियत के हुक्म से हम जिहाद के लिये कमरबस्ता हैं। तेजेन की रियाया के नाम हमारा फर्मान है कि इलाके के तमाम दारोगाओं और मुंशियों को हुक्म

है कि बीस जुलाई के दिन सुबह के वक्त सब गांवों से हर पांच घरों के पीछे एक आदमी तेजन शहर में पहुंच जाये। जो हाकिम इस हुक्म की पाबन्दी में कोताही करेगा, सख्त सजा का मुस्तहिक होगा। जो रियाया इस हुक्म से एतराज करेगी, वह गद्दार करार देकर बोल्शेविक समझी जायेगी और मौत की सजा की मुस्तहिक होगी।"

फर्मान को मुस्तैदी से पूरा करने के लिये अजीज ने गांव-गांव अपने सवारों के दस्ते भेजे कि बस्तियों से जरूरी सिपाही पकड़ लिये जायें और बस्तियों के सब घोड़े भी कब्जे में ले लिये जायें।

यह सब कर चुकने के बाद उस ने अरतैक को बुलवाया। अरतैक भी मन ही मन पछता रहा था कि उस ने जल्दबाजी में अवसर से पहले अजीज से झगड़ा कर लिया। इस भूल से उस का पहले से सोचा हुआ ढंग सरंजाम बिगड़ जायेगा। अजीज उस पर सन्देह कर चाहे जो कर बैठे। अभी उसे कुछ दिन और सीने पर पत्थर रख प्रतीक्षा करनी चाहिये थी। अब सावधानी के लिये उस ने जीन-साज कस कर अपने घोड़े मालकौश को तैयार कर लिया। अपनी टुकड़ी के सिपाहियों को आशंका से अपने चारों ओर मंडराते देख उन से स्पष्ट बातचीत कर लेना ही उचित समझा।

"जवानों," अपने सिपाहियों को उस ने सम्बोधन किया—"बहुत दिन से हम लोगों का साथ है। हम लोगों ने एक साथ खतरे झेले हैं। हम लोग भाई-भाई हैं। आप लोगों से बिदा होते मुझे बहुत दुख हो रहा है परन्तु मेरे लिये अब यहां रहना ठीक नहीं। भाईयो, मेरा कहा-सुना मुआफ करना।"

सिपाही सिर झुकाये चुप रह गये। अरतैक का दिल भर आया—"दोस्तो, यह दुनिया आनी-जानी है। आजकल का समय भी ऐसा है कि आदमी सुबह तख्त पर बैठा है तो शाम को सूली पर चढ़ जाये। तुम्हें छोड़ कर जाते नहीं बनता पर बात ही ऐसी आ पड़ी है कि मैं अगर यहां बना रहूं तो मेरी जान पर और तुम्हारी जान पर भी मुसीबत पड़ेगी।

मैं चला जाऊं तो शायद अजीजखां तुम्हें मुआफ कर दें। खैर, जिन्दगी रही तो फिर कहीं मिलेंगे !"

एक सिपाही ने गर्दन उठा कर प्रश्न किया—"तुम कहां जाओगे?"

"क्या कह सकता हूं कहा जाऊंगा !" अरतैक ने गहरी सांस ली—"अपने गांव लौट जाऊं या फिर जैसा मौका हो...।"

"हमें अजीजखां से क्या लेना है ! कहो तो अजीजखां से दो-दो हाथ कर के देखें !" सिपाही ने धीमे से कहा।

"नहीं, बात नहीं बनेगी।" अरतैक ने समझाया—"अजीज की ताकत हम लोगों से बहुत ज्यादा है।"

"तो हम लोगों को भी साथ ले चलो।"

अरतैक चुपचाप सोचने लगा, क्या करे ? अपने साथ के घुड़सवारों को साथ लेकर लाल सेना में जा मिलने के उद्देश्य से ही वह अजीज के यहां आया था परन्तु इस काम के लिये अभी अवसर उपयुक्त न था। सोवियत सेना इस समय बहुत दूर थी और केवल एक सौ घुड़सवार लेकर अजीज और जारशाही सेना का सामना करना केवल अपने सिपाहियों को कटवा डालना होता। सोवियत सेना के समीप आये बिना और उन से सम्बन्ध स्थापित हुये बिना उन से जा मिलने का यत्न करना मूर्खता ही थी। अभी प्रतीक्षा करना आवश्यक था परन्तु उस के सिपाही बेचैन हो रहे थे।

"भाइयो," उस ने साथी सिपाहियों को समझाया—"इस बात के लिये अभी ठीक अवसर नहीं है। अगर मैं अकेला जाऊं तो किसी तरह छिप कर भाग भी सकता हूं परन्तु एक सौ सवारों का छिप कर भाग जाना कैसे सम्भव हो सकता है। अभी हम लोगों का यहां बना रहना ही ठीक है परन्तु आप लोग वायदा कीजिये कि यदि अजीज ने मुझे यहां रहने न दिया तो मेरा इशारा पाते ही आप सब लोग मेरे साथ चले आयेंगे।" मन में उस ने निश्चय किया कि अपना अवसर आने तक जैसे-तैसे अजीज से सुलह बना कर रखनी होगी। इसलिये जब केलखां अजीज

का सन्देश लेकर आया, अरतैक चुपचाप उस के साथ चल दिया।

अजीज ने अपने दोनों सेनापतियों से बात करते समय उस घटना का कोई जिक्र न किया। इस समय वह ऊंची और जिम्मेदार स्थिति से बात कर रहा था। "किजिलखां तो अभी लौटा नहीं," वह बोला, "हो सकता है, आज सांझ तक आ जाये। साथियो, अभी तक तो हम लोग तेजेन के इलाके में अपने कदम जमाने में ही लगे रहे लेकिन अब हमे अपने कदम आगे बढ़ाने होंगे। इस समय हमारे सामने बहुत गम्भीर स्थिति आ गई है। कल, नहीं तो परसों हमें बोल्शेविकों पर धावा बोलना होगा इसलिये तुम लोगों को बहुत ख्याल से पूरी तैयारी करनी होगी। हर बात को खूब ब्योरे से ध्यान देकर देख लेना चाहिये। एक-एक घोड़े के जीन, लगाम और नाल तक जांच लेने चाहिये।"

अरतैक और केलखां दोनों चुप रहे। "तुम लोगों का ख्याल है?" अजीज ने पूछा। अरतैक से कुछ कहते न बन पड़ा। झूठी बात बनाना और खुशामद करना उसे आता न था। अपने साथी को चुप देख केलखां बोला—"खान, तुम हमारे मालिक हो! हम तुम्हारी तावेदारी में हैं लेकिन तुम हमारा कुछ ख्याल नहीं करते!"

"ठीक है भैया केलखां।" अजीज ने उत्तर दिया—"कभी परेशानी में आदमी आपे से बाहर हो जाता है; जैसे आज हो गया।"

"खान, तुम अपने दरबारियों से राय लेकर सब बातें तय करते हो। हमें इस में क्या शिकायत! लेकिन हमें तो यह भी मालूम नहीं होता कि आज हमें क्या काम करना है। अगर हमें पता रहे कि हमें फलां काम के लिये तैयार रहना है तो हमें जो कुछ सुविधा होगी, उस में तुम्हारा ही फायदा अधिक होगा। खून तो हमी को ही बहाना पड़ता है। हम भी आखिर आदमी हैं। हमें यही मालूम हो कि अपना खून किस बात के लिये बहा रहे हैं!"

"केलखां, जो बात हो गई, उस के लिये मुझे भी दुख है पर अब उसे याद करने से क्या फायदा! ऐसी बातें बार-बार नही हुआ करतीं।"

अजीज ने अरतैक को सम्बोधन किया—"अरतैक, तुम जानते हो, मेरा मिजाज जरा गरम है। वह बात आई-गई। मैंने तो अभी कहा कि मुझे खुद उस बात का दुख है। पिछली बातें छोड़ कर अब कल के लिये सोचना चाहिये; ज्यादा से ज्यादा परसों। मान लो, हम लोगों को अपने घोड़े और सिपाही लेकर रेलगाड़ी पर चढ़ाना है। बताओ उस के लिये क्या-क्या तैयारी जरूरी हैं ?"

अरतक ने गहरी सांस खींच कर उत्तर दिया—"अजीजखां, मेरे लिये यही अच्छा है कि अपनी तलवार तुम्हें लौटा दूं।"

"अरतैक, यह तुम्हारी ज्यादती है। उसी बात के पीछे पड़े हो। आदमी से और तो क्या, नमाज में भी गलती हो सकती है; अब काम करो। सवाल सिर्फ तेजिन का ही नहीं···।"

"जैसे तुम आदमियों के साथ जुल्म करते रहे हो, ऐसे ही तुम पूरे मुल्क के साथ करोगे !" अरतैक बोल उठा।

"···जब तक हम लोग पूरे तुर्कमानिया को आजाद नहीं कर लेते, हम लोग हथियार नहीं डाल सकते।" अजीज बोला जैसे उस ने अरतैक की बात समझी ही नहीं।

हमें आजाद होना है तो सब से पहले तुम्हारे ही गले में फंदा डाल कर पेड़ से लटकाना पड़ेगा···मन ही मन अरतैक सोच रहा था। केलखां ने बात सम्भाली—"हम लोगों में कोई आदमी ऐसा नहीं जो वक्त पर हथियार डाल कर दगा दे जाये लेकिन सभी लोगों पर उन के सामर्थ्य भर ही बोझ डालना चाहिये।"

अरतैक और अजीज की आंखें पल भर को मिल गईं। अजीज का भाव अरतैक के मन में था—मैं तुम्हारे फंदों को खूब जानता हूं ! तुम्हारे जाल में अब नहीं फंसने का। मैं भी अपने मौके की तलाश में हूं।

२४

तुर्कमानिया पर भयंकर दुर्दिन छा रहे थे ।

अश्काबाद में मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों और सफेद (जारशाही) सेना ने मिल कर सोवियत के विरुद्ध बगावत कर शासन अपने हाथ में ले लिया था और रेलवे लाइन के साथ-साथ, पूर्व-पश्चिम में आतंक फैलाना शुरू किया था। जगह-जगह तारें दे कर हुक्म दिया जाता कि सोवियत व्यवस्था को तुरन्त समाप्त कर दिया जाये ! जगह-जगह रेलवे लाइनें उखाड़ दी गईं, जगह-जगह शस्त्रागार लूट लिये गये। शीघ्र ही क्रास्नोवोदस्क पर भी इन का कब्जा हो गया। सोवियत से सहानुभूति रखने वाले लोगों को सामूहिक रूप से गिरफ्तार कर कत्ल किया जाने लगा। जारशाही सेना के अफसर बोलशेविकों और उन से सहानुभूति रखने वाले मजदूरों से बर्बरतापूर्ण बदले ले रहे थे। जेलखाने ठसाठस भर गये। जो लोग इस आतंक से जंगलों और पहाड़ों की ओर भाग रहे थे, उन्हें भी पकड़ कर कत्ल कर दिया गया।

इन अत्याचारों, लूटपाट और काली कारतूतों में भाग लेने के लिये शहरों के गुण्डे, चोर, उचक्के और देहात के डाकू क्रान्तिकारी समाजवादी दल और जारशाही सेना के साथ आ मिले। अंग्रेज कूटनीज्ञितों की संरक्षता में जारशाही सेना के अफसरों ने आठ सौ आदमियों की एक स्थानीय स्वयंसेवक सेना बनाई जिस में जागीरदारों, व्यापारियों के लड़के, उन के निजी नौकर और कुछ भोले-भाले किसान भी मिला लिये गये थे। इस स्वयंसेवक सेना में से लगभग तीन सौ आदमियों को मारी की

ओर भेज दिया गया। इक्कीस जुलाई तक प्राय: सम्पूर्ण तुर्कमानिया जारशाही सेना के हाथों आ गया। केवल कुश्क का किला उन के हाथ न आ पाया। इस किले की रक्षा देशभक्त जनरल वोस्नोसाबलिन की कमान में मजदूरों की एक सेना कर रही थी। इसी सेना की एक टुकड़ी चार्दीजोव से आने वाले रास्तों पर डटी जारशाही सेना को रोके हुये थी।

तुर्किस्तान के बोल्शेविकों ने सब अत्याचार और संकट सह कर भी जारशाही और अंग्रेजी सेना के सामने सिर नहीं झुकाया था। अश्काबाद के शासन की बागडोर जारशाही के हाथ में जाने की खबर पाते ही तुर्किस्तान की केन्द्रीय सोवियत और जनता की प्रतिनिधि सभा ने श्रम-कमिस्सार पोल्तोरातस्की की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मण्डल तुर्क-मानिया भेज दिया था। पोल्तोरातस्की का प्रतिनिधि मण्डल रास्ते के सभी शहरों में ठहर-ठहर कर आगे बढ़ रहा था। वह सभी स्थानों में सार्वजनिक सभायें करके राजनीतिक स्थिति सम्भालता और जनता की भावना समझने का यत्न करता था। स्थानीय सोवियतों के प्रतिनिधि भी इन के साथ सम्मिलित होते जा रहे थे। कगान में जारशाही के समर्थकों ने उसे सभा नहीं करने दी और मण्डल को गिरफ्तार करने की कोशिश की थी। प्रतिनिधि मण्डल बड़ी कठिनाई से बच पाया था।

इस पर भी पोल्तोरातस्की डरा नहीं। वह पुराना और अनुभवी क्रान्तिकारी था। वह उन्नीस सौ पांच से प्रजातंत्रवादी दल का मेम्बर था और बाकू के मजदूर आंदोलन में भाग ले चुका था। वह मजदूर परिवार की संतान था। वह बचपन से प्रेस में कम्पोजीटर करके अपना निर्वाह करता आया था। उसी समय बुखारा के मजदूरों ने अखिल रूसी कांग्रेस के लिये उसे अपना प्रतिनिधि चुना था। इस के बाद वह बोल्शेविक पार्टी का मेम्बर बन गया था। ताशकंद में वह लाल सेना के सिपाही की स्थिति में मोर्चे पर क्रांतिविरोधी जारशाही सेना से जम कर लड़ चुका था। वह 'राष्ट्रीय आर्थिक आयोजन समिति' का सदस्य भी था और क्रान्ति के पश्चात तुर्किस्तान के पहले समाजवादी पत्र 'सोवियत

तुर्किस्तान' का संस्थापक और सम्पादक भी था। सोवियत के प्रतिनिधि मण्डल का प्रधान बनने के बाद भी वह शत्रु से घिरे नगरों में निधड़क चला जाता था। पोल्तोरातस्की को पूरा विश्वास था कि वह अमर उद्देश्य और जनता की अजेय शक्ति का प्रतिनिधि है।

चार्दीजोव में क्रान्तिकारी मजदूरों की बहुत बड़ी भीड़ ने पोल्तोरातस्की का स्वागत किया और क्रान्ति की विजय के लिये आमरण युद्ध की प्रतिज्ञा की। मारी की सोवियत के अधिकांश सदस्य विश्वास के योग्य नहीं थे। उन की सहानुभूति जारशाही के प्रति थी। पोल्तोरातस्की को मिलने आने वाले लोगों में चर्नीशोव भी था। मारी पहुंच कर चर्नीशोव ने स्थानीय राजनैतिक स्थिति को समझने का यत्न किया। यहां उसे अश्काबाद से आया हुआ तिर्शेंको भी सहायता के लिये मिल गया। तिर्शेंको इस इलाके की कठिन स्थिति और शहर की संदिग्ध स्थिति से पहले ही परिचित हो चुका था।

तिर्शेंको ने चर्नीशोव से करगेज ईशान का परिचय कराया। करगेज की दाढ़ी घनी और काली थी, आंखें तीखी और चमकदार। करगेज ईशान मारी की सोवियत का सदस्य था। मजदूरों और किसानों को उस पर बहुत विश्वास था। करगेज कठिनाई के समय सोवियत सिपाहियों को लगातार राशन पहुंचा रहा था। चर्नीशोव को भी यह आदमी विश्वासपात्र और समझदार जान पड़ा। उसने सोचा, यह आदमी स्थानीय जनता से सोवियत का सम्बंध बनाये रखने में सहायक हो सकेगा।

चर्नीशोव ने करगेज ईशान का परिचय पोल्तोरातस्की से करा दिया। पोल्तोरास्तस्की को भी करगेज ईशान भरोसे का आदमी जंचा और उसे भी प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित कर लिया गया।

चर्नीशोव और दूसरे विश्वासपात्र साथियों से बातचीत करने के बाद पोल्तोरातस्की को मालूम हुआ कि मारी की अवस्था अनुमान से कहीं अधिक चिन्ताजनक थी। जनता को बहकाने वाले लोग शहर के चारों ओर घिर आये थे और जगह-जगह सोवियत के विरुद्ध खुला प्रचार हो

रहा था। चर्नीशोव ने सोवियत सेना के लिये गांवों से कुछ घोड़े इकट्ठे किये थे। गांव वालों ने बहकावे में आकर इन घोड़ों को इधर-उधर कर छिपा लिया। लाल सेना सफेद सेना के आक्रमण का सामना करने की तैयारी में लगी हुई थी। शहर में अभी हुई गड़बड़ी की ओर ध्यान देने का किसी को अवसर न था। रेलवे में काम करने वाले मजदूर साथियों ने खबर भेजी थी कि अश्काबाद से फौजों से भरी गाड़ियां चली आ रही थीं। चर्नीशोव का अनुमान था—कम से कम छः सौ सफेद सिपाही मारी पर आक्रमण करने के लिये आ रहे थे।

ताशकन्द से चलते समय पोल्तोरातस्की को आशा थी कि सोवियत विरोधी बगावत रक्तपात के बिना ही वश की जा सकेगी परन्तु अब उसे दूसरी स्थिति दिखाई दे रही थी। उसने मारी में एक सार्वजनिक सभा कर जनता को समझाने का यत्न किया। इस सभा का प्रभाव भी अच्छा हुआ परन्तु जारशाही के छः सौ सिपाहियों से मोर्चा ले सकने की सामर्थ्य सोवियत सेना में न थी। पूरी तैयारी के लिये समय भी न था। सफेद सेना उसी सांझ पहुंचने वाली थी।

पोल्तोरातस्की ने प्रतिनिधि मण्डल के सब लोगों को चर्नीशोव के साथ मारी से छब्बीस मील दूर बैरमअली की मजदूर बस्ती में भेज दिय। स्वयं लाल सेना की एक छोटी टुकड़ी ले उसने चार्दीजोव जाकर जारशाही सेना की राह रोके रहने का निश्चय किया। चर्नीशोव उसे अकेला छोड़ कर जाने के लिये तैयार न था। पोल्तोरातस्की ने उसे समझाया कि वह ताशकन्द से सोवियत सेना को बुला आया है। यदि निश्चित कार्यक्रम ठीक से निभ गया तो आशंका की कोई बात नहीं और यदि हालत खराव होगी तो वह स्वयं ही बैरमअली पहुंच जायगा। यह खबर मिल चुकी थी कि ताशकन्द से आने वाली सेना कगान तक पहुंच चुकी है।

पोल्तोरातस्की ने तयारी का अवसर पाने के लिये और जारशाही सेना को राह में अटकाने के लिये अश्काबाद में टेलीफोन कर फुन्तिकोव

से समझौते की राह निकालने की बातचीत शुरू की। पोल्तोरातस्की ने पहला प्रश्न फुन्तिकोव से पूछा—"अश्काबाद में क्या हालत है ?" फुन्तिकोव ने टालने के लिये उत्तर दिया—"तुम अश्काबाद आ जाओ। यहां की हालत भी मालूम हो जायगी और बात-चीत भी ठीक ढंग से हो सकेगी।" पोल्तोरातस्की को इस जाल में फंसना स्वीकार न था। वह तारघर से लौट रहा था तो उस समय दफ्तर की घड़ी रात के तीन बजा रही। काले आकाश में उज्वल तारे टिमटिमा रहे थे। दिन की गरमी के बाद शीतल बयार में स्टेशन पर शन्टिंग करते इंजनों की सीटियां और फुफकारों के सिवा और कोई शब्द न सुनाई दे रहा था।

पोल्तोरातस्की तुर्किस्तानी जनता के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान से टेलीफोन पर बात करने के लिये स्टेशन पर पहुंचा। प्रधान से फोन मिलाने में देर हो रही थी इसलिये पोल्तोरातस्की तिशेंको के साथ स्टेशन के प्लेटफार्म पर टहल रहा था। सहसा पूर्व की ओर लाल सेना के मोर्चे से गोली चलने का शब्द सुनाई दिया। फायरिंग की आवाज बढ़ती जा रही थी। तिशेंको चौंकते देख पोल्तोरातस्की ने कहा—"यह शहर की गड़बड़ी ही है और कुछ नहीं।" परंतु जब गोली चलना बहुत देर तक न रुका तो उस ने तिशेंको से कहा—"साथी, मेरा खयाल है तुम जा कर देखो बात क्या है ?"

"मैं तुम्हें अकेले छोड़ जाऊं !"

"यहां एक हुआ या दो, कोई खास फरक नहीं पड़ेगा। यह शोर बन्द होना चाहिये नहीं तो सारा शहर बौखला जायगा।" पोल्तोरातस्की ने आग्रह किया।

तिशेंको झिझक रहा था, क्या करे ? पोल्तोरातस्की ने उस के कंधे पर हाथ रख कर कहा—"साथी, अब झिझकने का समय नहीं। जैसे भी हो इस स्थिति को सम्भालना है। इस काम की जिम्मेवारी पार्टी ने हमें दी है। यहां हम दोनों रहें या एक, क्या अन्तर पड़ेगा ! मुझे तुम अकेले नहीं छोड़ना चाहते परन्तु वहां इतने आदमी खतरे में हैं। वहां की

स्थिति सम्भाल कर तुम तारघर में आना। मैं वहां मिलूंगा।"

ताशकन्द से टेलीफोन मिलने में प्रायः एक घण्टे का समय लग गया। पोल्तोरातस्की ने जन-सभा के प्रधान को मारी की स्थिति समझाई। प्रधान ने आश्वासन दिया कि पहले भेजे गये सिपाहियों के अतिरिक्त वह एक और टुकड़ी तुरन्त मारी की ओर भेज रहा है।

पोल्तोरातस्की बहुत थक गया था। कुछ मिनिट विश्राम कर लेने के लिये वह एक ओर बैठ गया। उसी समय जारशाही के सैनिकों की फौलादी गाड़ी स्टेशन पर आ पहुंची। एक बन्दूक चलने की आवाज से स्टेशन गूंज उठा। पोल्तोरातस्की तुरंत उठ स्टेशन के बाहर खड़े अपने घोड़े की ओर चला परन्तु जारशाही सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और उस के हथियार छीन लिये।

पौ फट रही थी। शहर भर में जगह-जगह गोलियां दग रही थीं। स्टेशन का प्लेटफार्म जारशाहियों से भर गया था। तिशेंको अभी तक लौटा न था।

तिशेंको ने अपने सिपाहियों के पास पहुंच कर देखा कि जारशाही सेना की हरावल से उन की मुठभेड़ हो गई है। उस ने हथियारों और गोली-बारूद का गोदाम और आवश्यक कागजात तुरंत पीछे भेज देने की आज्ञा दी और अपने सिपाहियों को धीमे-धीमे बैरमअली की ओर हट जाने के लिये कह दिया। उसे तारघर पहुंचने की जल्दी थी। सोचा, दो सिपाही साथ ले ले। फिर खयाल आया, यों भी मुझे कौन पहचानता है! यहां आदमियों की जरूरत ज्यादा है।

लौटते समय तिशेंको जिधर से भी बचकर निकलना चाहता, जारशाही सिपाही सामने पड़ जाते। वह समझ गया, पोल्तोरातस्की के पास पहुंच पाना कठिन होगा। वह अर्याक बाग की चारदीवारी की आड़ में होकर आगे बढ़ रहा था। तारघर के पास पहुंच कर देखा कि वहां जारशाही सिपाहियों का कब्जा हो चुका था। आड़ में ही ठिठक कर वह सोच रहा था—क्या…! उसी समय उसे किसी की आवाज सुनाई दी—"यह

किस का घोड़ा है ?"

"एक बोल्शेविक इस पर सवार था। वह ताशकन्द का कमिस्सार निकला।" उत्तर दिया।

"कमिस्सार कहां है ?"

"क्या मालूम ! जेल भेज दिया गया कि गोली ही मार दी हो।"

तिशेंको के शरीर से पसीना छूट गया। क्या करे ! बैरमअली लौट जाय ? परन्तु पोल्तोरातस्की को खोकर वह चर्नीशोव और दूसरे साथियों को क्या मुंह दिखायेगा ! अपनी जान बचा लेना ही कौन बहादुरी है···यों ही लौट जाने में कौन बोल्शेविकपन है पर करूं क्या ! कैसे मालूम हो कि पोल्तोरातस्की कहां है ?

अचानक याद आया जेल का सुपरिन्टेन्डेन्ट उस का पुराना परिचित है। अश्काबाद में दोनों साथ-साथ जेल में सिपाही थे। सुपरिण्टेण्डेण्ट पुराने ढंग का सीधा आदमी था, राजनीति और किसी पार्टी-वार्टी से बेमतलब। तिशेंको ने सोचा दांव चलाया जाय, शायद सीधा ही पड़ जाय। दिन भर वह छिपा रहा। रात पड़ने पर अपनी राइफल एक जगह छिपा कर वह निधड़क जेल के दफ्तर में पहुंचा। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे पहचाना तो विस्मित देखता रह गया। उसे खूब मालूम था तिशेंको लाल सेना का कमिस्सार है। जारशाही सेना का कब्जा हो जाने पर वह कैसे वहां आ पहुंचा !

तिशेंको सुपरिण्टेण्डेण्ट की घबराहट भांप कर स्वयं ही बोला—"मैं तुम पर भरोसा करके आया हूं। इस समय तुम्हीं मुझे बचा सकते हो !"

"क्यों क्या बात है ?···मैं क्या कर सकता हूं ?"

"मैं लाल सेना से भाग कर आया हूं। अगर सफेद सेना में सीधे चला जाऊं तो वे लोग गोली मार देंगे या मुझे फिर मोर्चे पर भेज देंगे। मैं इस लड़ाई में अपनी जान नहीं देना चाहता। पुरानी दोस्ती का ख्याल कर मुझे यहां कोई काम दे दो। यहां का काम मैं सब समझता हूं।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट सन्देह से उस की ओर देखता रहा। तिशेंको फिर

बोला—"मैं अपनी राइफल और रिवाल्वर यहां पास ही छिपा आया हूं। तुम्हें जरूरत हो तो ला दूं। मुझे उन का क्या करना है! तुम चाहो तो बेच लेना। हथियार आज कल चौगुनी कीमत पर बिक रहे हैं।"

सुपरिन्टेण्डेंट ने कुछ पल आंखें झपक कर उत्तर दिया—"अच्छा, सोचूंगा। दो-चार दिन में बताऊंगा।"

"मैं जाऊं कहां ?" तिशेंको अधीरता से बोला, "तुम सब बात जानते हो। कहां जाऊं ? मुझे कोई काम दे दो, मेहतर का, भिश्ती का; जान बचे किसी तरह !"

सुपरिन्टेण्डेंट कुछ देर सिर खुजाता सोचता रहा और फिर बोला—"भीतर के चक्कर में पहरेदार की जगह दे सकता हूं।" उंगली उठाकर चेतावनी दी—"देखो, कोई शरारत या धोखा न करना !" स्वर धीमा कर उस ने समझाया—"भीतर के चक्कर में कमिस्सार पोल्तोरातस्की बन्द है। अगर कहीं वह निकल भागा तो मेरा और तुम्हारा, दोनों का सिर काट लिया जायगा।" आधे घंटे बाद तिशेंको जेल के सिपाही की रिवाल्वर लगी पेटी कमर पर कस कर जेल के भीतर के चक्कर में जा पहुंचा।

पोल्तोरातस्की एक काल-कोठरी में चुपचाप अकेला बैठा था। उसे मालूम हो गया था कि उसे गोली मार देने का हुक्म हो चुका है। कुछ घंटों की ही बात थी। अपने बीते जीवन की बातें याद आ रही थीं—बचपन में धूप में खेलते समय उसके सुनहरे बाल खूब चमका करते थे।···कम्पोजीटर की नौकरी···मजदूरों का प्रतिनिधि बन वह पेत्रोग्राद कांग्रेस में गया। वहां लेनिन का व्याख्यान सुना और बोल्शेविक पार्टी में सम्मिलित हो गया। फिर ताशकन्द में बिताये दिन···। उसके मन में असंतोष था कि सोवियत के लिये संकट के समय में, जब एक भी आदमी का खो जाना सोवियत की शक्ति को धक्का पहुंचा रहा है, वह मर रहा है। उस का काम अपूर्ण ही रह गया है। सिर झुकाये बैठा वह इसी विचार में डूबा था। पल-पल बीत कर उसको मौत का समय समीप आता जा रहा था···।

पीठ पीछे कोठरी में झांकने के लिये दरवाजे में बने छेद के खुलने और मुंदने की आहट दो-तीन बार सुनाई दी । पोल्तोरातस्की ने उस ओर ध्यान देना व्यर्थ समझा । उसे जान पड़ा कोई फुसफुसा कर पुकार रहा है—"कामरेड कमिस्सार !"

पोल्तोरातस्की ने घूम कर देखा । छेद से झांकती हुयी आंखें उसे परिचित जान पड़ीं । वह उठकर दरवाजे पर आ गया । तिशेंको ने उसे सिपाही बन कर जेल में पहुंच जाने की बात बता कर कहा कि वह अवसर की प्रतीक्षा में है ।

पोल्तोरातस्की क्षण भर सोच कर बोला—'तुम ने व्यर्थ में अपने आप को फंसाया । यहां से बच के निकलने की कोई आशा नहीं । हो सके तो मुझे कागज-पेंसिल ला दो ।"

तिशेंको की जेब में कागज और पेंसिल का टुकड़ा था । वह उस ने पोल्तोरातस्की को दे दिया । दरवाजे का छेद मूंद कर तिशेंको आगे बढ़ा ही था कि उसे जेल दफ्तर में पहुंचने का हुक्म मिला ।

सुपरिन्टेण्डेंट घबराया हुआ था, बोला—"बड़ी आफत आई है । तुम्हें पहचान लिया गया है । हुक्म मिला है कि तुम्हारे पहरे से हटाकर पहरे में रखा जाये !"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था, अपनी जान तुम्हारे हाथों सौंप रहा हूं ।" तिशेंको ने धैर्य से कहा—"मैं और क्या कह सकता हूं । तुम जो समझो !"

"मैंने तो उन लोगों को समझाया कि पहचानने में भूल हो रही है, तुम तिशेंको नहीं हो । कमाण्डर ने हुक्म भेजा है कि तुम्हें कोठरी में बन्द कर दिया जाय और कल सुबह वह खुद आकर देखेगा । सुनो, तुम अश्काबाद चले जाओ...।"

"अश्काबाद ?"

"हां, मैं तुम्हें पास दे दूंगा । वहां जाकर तुम अपनी पुरानी जगह काम शुरू कर दो । किसी पर बात न आयेगी ।"

तिशेंको चाहता था जेल से जाने से पहले एक बार पोल्तोरातस्की से मिल ले। सुपरिन्टेण्डेंट ने तिशेंको को यात्रा का पास और जाकर नौकरी लेने के हुक्म की चिट्ठी दे दी। तिशेंको ने कहा—"अश्काबाद के लिये गाड़ी सुबह पौ फटते समय छूटती है। तब तक मुझे जेल में रहने दो।" उसी समय फोन की घण्टी बजी। फोन पर सफेद सेना के कमाण्डर ने हुक्म दिया कि पोल्तोरातस्की को तैयार रखा जाय। उसे गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी भेजी जा रही है।

तिशेंको तुरन्त अवसर पाकर पोल्तोरातस्की की कोठरी के दरवाजे पर पहुंचा। पोल्तोरातस्की ने एक पत्र लिख रखा था। वह पत्र तिशेंको को देकर उसने कहा—"मुझे जो कुछ कहना था, इस में लिख दिया है। यह पत्र साथियों तक पहुंचा दो।" तिशेंको के लिये कुछ उत्तर देने का समय न था। बाहर के बरामदे से सिपाहियों के मार्च करते हुये आने की आहट आ रही थी। गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी आ पहुंची थी। तिशेंको हट कर दूसरी ओर के बरामदे में चला गया।

पोल्तोरातस्की की कोठरी का ताला खोला जाने की आहट तिशेंको ने सुनी और पोल्तोरातस्की की ऊंची निर्भय आवाज सुनी—"तुम लोग अपनी मनुष्यता खो चुके हो। तुम लोगों को शिकारी कुत्तों की तरह काम में लाया जा रहा है। तुम लोग मुझे गोली मार सकते हो परन्तु इससे क्रांति की सफलता में बाधा नहीं पड़ सकती। मेरे खून की एक-एक बूंद से क्रांति के सैकड़ों बहादुर सिपाही पैदा होंगे!"

सिपाहियों के कोठरी से लौटते कदमों की आहट सुन तिशेंको से रहा न गया। वह भी लौट कर सिपाहियों की टुकड़ी के पीछे चलने लगा और एक हाथ से अपनी पेटी से लटके रिवाल्वर को खोलता जा रहा था। जेल के आंगन में पहुंचकर उस ने देखा कि पोल्तोरातस्की को बचा सकना सम्भव न था। आंगन सशस्त्र घुड़सवार सिपाहियों से भरा था। मैं अपनी जान चाहे दे दूं परन्तु कमिस्सार को बचा सकने की कोई सम्भावना नहीं—उस ने सोचा। अपनी सेना का एक आदमी और घटेगा

और फिर कमिस्सार का पत्र ! इस पत्र में अवश्य ही बहुत आवश्यक बातें होंगी। यह पत्र भी बीच में रह जायगा, शत्रु के हाथ पड़ जायगा।

उसी समय तिशेंको के समीप खड़ा सवार अपने घोड़े से उतर समीप के नल पर पानी पीने लगा। तिशेंको के दिमाग में बिजली सी कौंध गयी। वह लपक कर घोड़े की जीन पर जा बैठा और घोड़े को जोर से एड़ लगा कर जेल के खुले हुए फाटक की ओर घुमा दिया।

दूसरे सिपाही कुछ समझ पायें, इस से पहले ही तिशेंको फाटक से सौ गज परे निकल चुका था। उस के पीछे धड़ाधड़ गोलियां चलाई गयीं परन्तु घने अंधेरे में उसे कोई देख न पाया। पोल्तोरातस्की भी यह घटना देख रहा था। अपने सिपाही के करतब और अपना पत्र साथियों के हाथ में पहुंच जाने के विश्वास से वह सीना फुला कर दुश्मन की गोली का सामना करने के लिये तैयार हो गया।

बैरमअली बहुत छोटा सा कस्बा था। यहां लाल सेना को बहुत निराशा हुई। यहां लाल सेना की कोई टुकड़ी पहले से न थी। ताशकन्द से भेजी गई सेना भी अभी तक न आई थी। रात भर में गावों से किसान बटोर कर उन्हें हथियार चलाना सिखाकर सफेद सेना का सामना कैसे किया जा सकता था। सफेद सेना तेजी से बैरमअली की ओर बढ़ती आ रही थी। चर्नीशोव परेशान था, क्या करे ? मारी सफेद सेना ने ले लिया था। वहां की लाल सेना भी पीछे हट कर बैरमअली में आ गयी थी। इस सेना के लगभग आधे सिपाही बैरमअली में खेत रहे थे। तिशेंको और पोल्तोरातस्की का कुछ पता न था। एक बार उस के मन में आया कि किसी आदमी को, करगेज ईशान को ही मारी भेज कर उन दोनों की खोज कराये परन्तु खबर लेने जाने वाला इतनी जल्दी लौट कर न आ सकता था।

चर्नीशोव ने साथियों को बुला कर राय ली। तय हुआ कि बैरमअली छोड़ चार्दीजोव में मौजूद लाल सेना के साथ मिला जाये। दो ट्रेनें तैयार की गयीं। गाड़ियां चलने से पहले चर्नीशोव रेत के एक टीले पर चढ़

कर अन्तिम बार इस स्थान को देख रहा था। उस ने पहले पूरब की ओर और फिर पश्चिम की ओर आंखें दौड़ाई। पूर्व में सूर्य अभी ही सुल्तान संजर के किले के पीछे धरती से ऊपर उठा था। किरणें अभी स्टेशन की छत और रुई के कारखाने की चिमनी को छू रही थीं। चिमनी से धुआं नहीं निकल रहा था। कारखाने ने एक सीटी दी परन्तु वह बीच में ही रुक गई। मजदूर भी आते हुये दिखाई नहीं दिये बल्कि बहुत से लोग अपने बीबी-बच्चों और असबाब के साथ स्टेशन की ओर चले आ रहे थे।

यह रुई का कारखाना सोवियत ने अभी हाल में मजदूरों के सहयोग से बनाया था।···मजदूरों के पसीने से बना यह कारखाना क्या शोषकों के हाथ चला जायेगा ! जिस मजदूर वर्ग को हमने उत्पीड़न से मुक्त कर स्वतंत्र मनुष्य बनाया है, क्या वे फिर पूंजीपति शोषकों द्वारा कुचले जायेंगे ! ···नहीं, यह नहीं हो सकता। चर्नीशोव मन ही मन सोच रहा था। मारी की ओर से तोपों की गरज सुनाई दे रही थी। चर्नीशोव ने अनुमान किया यह सफेद सेना और ताशकन्द सेनाओं की मुठभेड़ हो रही है। अब चलने में अधिक विलम्ब करना उचित नहीं था। उस ने पहली ट्रेन छोड़ी जाने का हुक्म दे दिया। उसी समय उसे दूर से एक घुड़सवार मारी की ओर से आता दिखाई दिया। पहले तो उस ने समझा कि यह उस के खोजी सिपाहियों में से कोई होगा, जिन्हें उस ने सफेद सेना की खोज-खबर लेने भेजा था परन्तु सवार के समीप आ जाने पर उस ने देखा कि यह कोई और है। घोड़ा बहुत थका-टूटा, पसीने से तर और लड़खड़ाता-सा मालूम हो रहा था।

सवार समीप आकर घोड़े से कूद पड़ा। यह तिशेंको था। चर्नीशोव ने पूछा—"पोल्तोरातस्की कहां है ?"

तिशेंको कुछ उत्तर न दे सिर झुकाये खड़ा रह गया। बहुत से सशस्त्र मजदूर सिपाही चारों ओर से घिर आये थे और चिन्ता तथा उत्सुकता से तिशेंको के चेहरे की ओर देख उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे

थे। तिशेंको ने कुछ उत्तर न दे अपनी जेब से पत्र निकाल कर चर्नीशोव को थमा दिया। पत्र देते समय उस के हाथ कांप रहे थे। पत्र ले चर्नीशोव ने सब को सुनाने के लिये पढ़ना शुरू किया। उस का स्वर भी कांप रहा था—

"प्यारे सोवियत मजदूरों और सिपाही साथियो, सफेद सेना के अफसरों ने मुझे गोली मार देने का हुक्म दिया है। मैं कुछ ही और घंटों के लिये जीवित हूं। इस थोड़े से मूल्यवान समय में मैं अपना यह संदेश लिख कर आप को भेज रहा हूं।

"प्यारे साथियो, क्रान्ति-विरोधी लोग मेरी जान ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी मृत्यु से क्रान्ति की सफलता में बाधा नहीं पड़ेगी। मेरा स्थान मुझ से अधिक योग्यता और दृढ़ता से काम करने वाले साथी ले लेंगे और मेहनत करने वाली श्रेणी अपने बंधनों से मुक्त होकर मनुष्य समाज को विकास और स्वतंत्रता की ओर ले जायेगी।

"साथियो, आज मैं बिदाई ले रहा हूं। मैं स्वयं एक मजदूर हूं। मृत्यु के समय मुझे केवल यह चिंता है कि मेरी मृत्यु से आप लोग हतोत्साह और निराश न हों। मेहनत करने वाली श्रेणी की मुक्ति के संघर्ष में यदि किसी भी प्रकार की शिथिलता आयेगी तो यह न केवल तुर्किस्तान की मेहनत करने वाली श्रेणी के साथ विश्वासघात होगा बल्कि इस से सम्पूर्ण संसार की मेहनत करने वाली श्रेणी के भविष्य को धक्का लगेगा। आप की यह शिथिलता और उत्साह की कमी अक्टूबर की समाजवादी क्रांति में अपने प्राण निछावर करने वाले वीरों के प्रति विश्वासघात होगी।

"साथियो, मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि मौत कोई बहुत बड़ी बात नहीं, न मुझे उस के लिये दुख है। मुझे दुख है इस बात के लिये कि हमारे अपने कई साथी जारशाही के बचे हुये भूतों के भय और प्रभाव से स्वयं क्रान्ति-विरोधी मार्ग पर चल कर प्रजातंत्र और समाजवाद की सफलता की राह में अड़चनें डाल रहे हैं। यह लोग स्वयं अपनी

श्रेणी की कब्रें खोद रहे हैं। इन की यह कायरता और गद्दारी हमारी श्रेणी के उद्धार के लिये आत्म-बलिदान करने वाले वीरों की स्मृति के लिये कलंक बन रही है।

"साथियो, आज मेहनत करने वाली श्रेणी को फूट-फरेब और जालसाजी से वश में करने की कोशिश की जा रही है। हमारे शोषक सामंतशाही और पूंजीपति खुली लड़ाई में मेहनत करने वाली श्रेणी से परास्त होकर हमें धोखे और फरेब से वश में कर रहे हैं। आपको समझाया जाता है कि क्रान्ति-विरोधी शक्तियां सोवियत के विरुद्ध बगावत नहीं कर रहीं, वह केवल सोवियत के कुछ लोगों के 'अत्याचार' के विरुद्ध लड़ रही हैं। साथियो, इस धोखे को पहचानो। हमारी श्रेणी का राज व्यक्तियों का राज नहीं। यह श्रेणी का राज है। हमारे शासन को चलाने वाले हमारे प्रतिनिधि हैं। उनके अच्छे-बुरे काम की जांच हम स्वयं करेंगे। यदि शत्रु हमारी श्रेणी के किसी भी व्यक्ति पर हाथ उठाते हैं तो यह सम्पूर्ण श्रेणी पर हमला है। राष्ट्रीयता और आजादी के नाम पर इस सोवियत-विरोधी बगावत के नेता अजीजखां, बुखारा का अमीर, जार के पुराने अफसर और पूंजीपति लोग तथा इन के विदेशी सहायक हैं जो अपने शोषण के अधिकार को कायम रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारी शक्ति का सामना वे नहीं कर सकते, इसलिये वह हमारी श्रेणी में फूट डालकर हमें निर्बल करने की चाल चल रहे हैं। आप क्या इन लोगों से यह आशा कर सकते हैं कि यह लोग अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार कर आपका हित करने के लिये ही सब कुछ कर रहे हैं ?

"साथियो, जब तक तुम्हारे हाथ में शस्त्र हैं तुम दुर्जेय शक्ति हो ! सम्पूर्ण समाज का जीवन तुम्हारे हाथों में है। शहरों और गांवों की सब पैदावार, यातायात, बिजली, पानी, भोजन सब कुछ तुम्हारे हाथ में है; फिर तुम असमर्थ क्यों हो ! केवल इसलिये कि तुम अपनी सम्मिलित श्रेणी शक्ति को भूल जाते हो। साथियो, आज तुम अपनी मुक्ति के और अधिकार प्राप्त करने के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हो। इस के लिये

हमारी श्रेणी ने बहुत बड़ा मूल्य दिया है। आज कदम पीछे हटाना बड़ी भारी भूल होगी। इस भूल से हमने जो कुछ पाया है, सब कुछ खो बैठेंगे। अब हमारे पीछे दुश्मन और भी अधिक बलवान, चौकन्ने और तैयार हो जायेंगे और दुवारा आगे बढ़ने के लिये हमें पहले से चौगुनी कुर्बानी और कीमत अदा करनी पड़ेगी।

"साथियो, मेरा अन्तिम संदेश यही है कि अपनी सेना में से विश्वासघाती और क्रान्ति-विरोधियों को चुन-चुन कर निकाल दीजिये और अपनी मुक्ति के संग्राम में अपनी पूरी शक्ति से आगे बढ़िये। इस क्रान्ति की सफलता में यही आप के जीवन की सम्भावना है!

आपका साथी,

पी० पोल्तोरातस्की

"प्यारे साथियो, यही मेरा संदेश है। मुझे अपनी मृत्यु के लिये कोई खेद या दुःख नहीं। मुझे विश्वास और संतोष है कि मैं अपने और अपनी श्रेणी के जीवन के उद्देश्य को विश्वस्त और योग्य हाथों में सौंप रहा हूं।

आधी रात, जुलाई २१,१६१८ पी० पोल्तोरातस्की"

इस पत्र को सुन कर सिपाहियों ने दांत पीस लिये। उन की आंखों में आंसू छलक आये थे, उन्हें छिपाने के लिये वे इधर-उधर देखने का बहाना कर रहे थे।

पत्र समाप्त कर चर्नीशोव चुप रह गया। वह कुछ कह न सका। पोल्तोरातस्की के शब्द पढ़ दिये जाने के पश्चात कुछ कहने की आवश्यकता भी क्या थी! फिर भी दांतों से ओंठ काट कर वह बोला—

"हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि साथी पोल्तोरातस्की के संदेश को पूरा करेंगे।"

तुरन्त पोल्तोरातस्की के इस पत्र की सैकड़ों लिपियां लिखी गईं और स्टेशन, कारखानों और ट्रेनों में जगह-जगह चिपका दी गई।

चर्नीशोव ने करगेज ईशान को कुछ साथियों के साथ पीछे छोड़ दिया। उसे वही काम सौंपा गया जो तेजेन में अशीर को सौंपा गया था। पोल्तोरातस्की के पत्र की एक कापी करगेज को देकर चर्नीशोव ने कहा—"इस पत्र की जितनी अधिक लिपियां बन सकें, बनवा कर गांव-गांव बांट दी जायें! हमारी सब से बड़ी शक्ति हमारी श्रेणी-चेतना और अपनी श्रेणी की शक्ति को पहचानना ही है।"

२५

तेजेन पर कब्जा कर लेने के बाद जनता पर अपना आतंक जमाने के लिये अजीजखां ने क्रूरता के नये ढंग और तौर शुरू किये। उस ने अनाचार और अपराध को जड़ से खोद डालने की घोषणा कर दी। चोरों को चौक बाजार में खड़ा कर कोड़े लगा कर खाल उतार दी जाती। नशाखोरों को इस से भी विकराल दण्ड दिया गया।

होराज बक्शी की आयु बहुत अधिक हो चुकी थी। हाथ-पांव से भी रह गया था। उस की अफीम की आदत छोड़े न छूटी। अजीजखां ने उसे चौक के एक खम्भे से फांसी लगवा दी और बक्शी के सीने पर इश्तहार चिपका दिया गया—'यह अफीम खाने का दण्ड है।'

जनता अजीजखां के नाम से कांपने लगी। अजीज के लिये यही सब से अधिक संतोष की बात थी।

तेजेन स्टेशन से मारी की ओर सफेद सेना के सिपाहियों से भरी बीसियों ट्रेनें जा चुकी थीं। अब लगातार मालगाड़ियों के खुले ठेलों पर लम्बी-लम्बी सूड़ों वाली बड़ी-बड़ी तोपें उस ओर जा रही थीं। यह तोपें पल में हजारों आदमियों को भस्म कर देने के लिये क्रोध भरी अपनी सूंड़ें आकाश की ओर उठाये चली जा रही थीं।

अजीज ने अपने पुराने सिपाहियों और नये भरती किये सिपाहियों को पल्टनों और कम्पनियों में बांट कर संगठित कर लिया। प्रत्येक कम्पनी में सफेद सेना का एक-एक अफसर भी लगा दिया गया। शहर के व्यापारियों और अमीर घरानों के जवानों ने एक स्वयंसेवक सेना

अजीज की सहायता के लिये बना ली। जो कुछ या जैसा कपड़ा उन्हें मिला, बांट कर बन्दूकें भी दे दीं। कोई सिर्फ कोट पहने था तो कोई सिर्फ बनियान, कोई सलवार पहने था तो कोई निकर या पायजामा। इस नई सेना को भी अजीज ने ट्रेन पर सवार करा कर सफेद सेना के पीछे युद्ध के मोर्चे की ओर भेज दिया।

इस धावे में अरतैक भी अपनी कम्पनी के साथ भेजा गया। अरतैक निरंतर अवसर की प्रतीक्षा में था कि सोवियत सेना से सम्पर्क हो तो उन से जा मिले परन्तु सोवियत सेना की स्थिति के विषय में उसे कुछ भी मालूम न था।

सफेद सेना और अजीज की पचमेल सेनाओं की ट्रेनों का यह काफिला मारी के स्टेशन पर बहुत देर तक रुका रहा। अरतैक के लिये यह विलम्ब असह्य हो रहा था। रात के ग्यारह बजे थे। वह अपनी गाड़ी से उतर अंधेरे में प्लेटफार्म पर टहलने लगा। उस समय भी गाड़ियों के आपस में टकराने के शब्द, इंजन की सीटियों और सिपाहियों के हो-हल्ले से उस का मन और भी खिन्न हो रहा था। वह स्टेशन के सूने भाग की ओर निकल गया। टहलने से उसे कुछ भी शान्ति न मिली। अपरिचित कोलाहल और दुर्गंध से उस का सिर दर्द करने लगा। लेट जाने के विचार से वह अपनी गाड़ी की ओर लौटने को था कि अंधेरे में एक आदमी एक गाड़ी के नीचे से दुबक कर निकलता हुआ दिखाई दिया। जान पड़ता था कि आदमी या तो किसी दूसरे आदमी को खोज रहा है या अपनी गाड़ी भूल गया है। यह आदमी अरतैक की ओर ही आ रहा था। अंधेरे में भी उस का गोरा चेहरा गोल दाढ़ी से घिरा जान पड़ रहा था परन्तु पहचान पाना कठिन था। अरतैक को देख आदमी उसकी ओर बढ़ आया और सहमते हुये बोला—"भैया, यह क्या अजीजखां की फौज है?"

"हूं," अरतैक ने उत्तर दिया, "तुम्हें अजीजखां से क्या काम है?"

"नहीं, मुझे एक दूसरे आदमी से काम है। शायद तुम उसे जानते हो।"

"इस फौज में ऐसा कौन आदमी है जिसे मैं नहीं जानता ?"

"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हूं।"

अरतैक ने उस के चेहरे को घूर कर देखा और प्रश्न किया—"अरतैक बबाली से तुम्हें क्या मतलब है ?"

"उसे एक सन्देश देना है भैया।"

"मैं ही हूं अरतैक बबाली।"

अब इस व्यक्ति ने अरतैक की ओर सन्देह से देख प्रश्न किया— "तेजेन के रूसियों में कोई तुम्हारा परिचित था ?"

अरतैक को सब से पहले चर्नीशोव का ही नाम याद आया। उस ने उत्तर दिया —"चर्नीशोव को मैं खूब जानता हूं।"

अरतैक ने अपना हाथ इस आदमी के कंधे पर रख दिया। आदमी कुछ सहम कर चुप हो गया। अरतैक ने आश्वासन दिया—"घबराओ नहीं, भरोसा रखो, डरने की बात नहीं है। तुम्हारा नाम क्या है ?"

"करगेज ईशान !"

"चर्नीशोव से कहां मिले ?"

करगेज ने चारों ओर नजर फिराकर देखा कि आस-पास कोई सुनने वाला तो नहीं और अरतैक को मारी और बैरमअली की पूरी घटना सुना दी। उस ने यह भी बताया कि सोवियत के निर्णय से कुलीखां को जनता के हथियारों की चोरी करने के अपराध में गोली मार दी गई है।···चर्नीशोव तुम्हें बहुत याद करता है। तिशेंको और अशीर भी तुम्हें बहुत याद करते हैं कि अब तो तुम खूब समझ गये होगे कि जनता का शत्रु कौन है और मित्र कौन ! यदि तुम्हें जनता के हित का ख्याल है तो अब और देर किये बिना तुम्हें सोवियत की सहायता के लिये तुरंत कदम उठाना चाहिये···।

करगेज से बातचीत करते समय अरतैक को सन्देह हो रहा था पिछली गाड़ी से कोई आदमी उन्हें ताक रहा है। वह करगेज को बांह से थाम गहरे अंधेरे में ले गया परतु अरतैक के मन में खटका बना ही

रहा कि कोई उस का पीछा कर रहा है इसलिये बहुत धीमे स्वर में उस ने करगेज को समझाया—"मैं अवसर की प्रतीक्षा में हूं। यहां पल-पल काटना मुझे मुसीबत हो रहा है। अभी दिखाने को मैं अजीजखां की सेना के साथ हूं परन्तु मैं इस की ओर से लड़ूंगा नहीं। मौका पाते ही चर्नीशोव की सेना से जा मिलूंगा।" अरतैक ने बात समाप्त कर करगेज से अपनापन जताने के लिये हाथ मिला कर बिदा ली। करगेज समीप खड़ी गाड़ी के नीचे दुबक कर किसी ओर चला गया और अरतैक अपनी गाड़ी में जा बैठा।

करगेज कुछ कदम ही जा पाया था कि सफेद सेना के जासूसों ने उसे घेर कर गिरफ्तार कर लिया। करगेज की तलाशी लेने पर उस के पास पोल्तोरातस्की के पत्र की कई प्रतियां मिलीं। उस के कम्युनिस्टों का जासूस और प्रचारक होने में कोई सन्देह न रहा। सफेद सेना के लोगों ने अजीज को स्थानीय शासक मानकर करगेज को उसी के हाथों सौंप दिया। करगेज तुर्कमान था, तिस पर मौलवी भी। सफेद सेना के जारशाही अफसरों की चाल थी कि अजीजखां करगेज ईशान को सजा देगा तो तुर्कमान लोगों में परस्पर झगड़े का कारण बन जायगा। यह अफसर तुर्कमान लोगों की एकता फूटी आखों न देख पाते थे।

मारी के बे लोगों ने गवाही दी कि कुछ दिन पहले करगेज ईशान ने मारी के बाजार में सभा करके प्रजा को बोल्शेविकों का साथ देने के लिये उकसाया था। अजीजखां को और क्या चाहिये था! वह तो सदा मौके की खोज में रहता था कि कोई ऐसी बात कर पाये जिस की चर्चा दूर तक हो और लोगों पर उस का आतंक गहरा हो जाये।

करगेज को अजीज के सामने रात के एक बजे पेश किया गया। उस समय अजीज के साथ गाड़ी में यात्रा करने वाले उस के दरबारी और दूसरे सब अफसर सो रहे थे। अरतैक अजीज की गाड़ी से अगली गाड़ी में था। इस गाड़ी में भी लोग सो रहे थे। अजीज के साथ इस समय केवल मदीर ईशान था। दो सिपाहियों को अजीज ने बुलवा लिया।

अजीज ने करगेज से बड़ी सज्जनता से बातचीत की और बातचीत समाप्त हो जाने पर उस ने अपने नौकर पेलांग को हुक्म दिया—"जाओ, ईशान को कुत्तों से बचाकर पहुंचा आओ !"

पकड़े जाने के बाद करगेज बहुत भयभीत था परन्तु अजीज के व्यवहार से उसे बहुत कुछ भरोसा हो गया। कुत्तों से बचा कर पहुंचा आने के हुक्म से उसे फिर सन्देह हुआ। शहर में कोई खास कुत्ते न थे और गाड़ियों के आस-पास तो कोई कुत्ता दिखाई न दिया था। करगेज ने सोचा, शायद अजीज का संकेत मारी के बे लोगों से है या वह सफेद सेना के अफसरों को ही कुत्ता पुकारता है या मुझे ही कुत्ता कह रहा है !…सहमती हुई धीमी आवाज में उस ने अजीज से निवेदन किया—"मालिक की मेहरबानी है। क्या तकलीफ कीजियेगा, मैं खुद ही चला जाऊंगा।"

अजीज होंठ सिकोड़ मुस्कराकर बोला—"मौलाना, रात बहुत हो गई है। जमाना खराब है। किसी का क्या भरोसा ! यह लोग तुम्हें कुत्तों से बचाकर पहुंचा देंगे।"

कुत्तों से बचाने की बात करगेज ईशान को फिर खटकी। उस ने फिर अपनी बात दोहराई—"कोई जरूरत नहीं मालिक, कुत्तों का कोई डर नहीं है। आप परेशान न हों।"

"नहीं नहीं," अजीज ने आग्रह किया, "कुत्तों का डर सदा ही है और खास कर लड़ाई के समय ! बेपरवाही ठीक नहीं।" अपने नौकर की ओर देख कर अजीज बोला, "ले जाओ !"

"ले जाओ !' हुक्म सुन कर तो करगेज कांप उठा। उस के पांव पत्थर हो गये। उसे चलते न देख सिपाही उतावला हो बोल उठा—"चलो मौलाना, देर न करो।"

सिपाही की इस रुखाई से करगेज का दिल और भी बैठ गया। फिर भी उस ने साहस कर अजीज की ओर कातर दृष्टि से देख विनय की—"मालिक खान…!"

अजीजखां झुंझला उठा। उस ने अपने नौकर को धमकाया—"पेलांग !"

प्राय: अट्ठाइस वर्ष की आयु के एक कुरूप जवान ने आगे बढ़ करगेज ईशान को दोनों कंधों से थाम दरवाजे की ओर घुमा दिया। उस ने करगेज के कंधों को इतने जोर से दबोचा कि कंधे से सुन्न हो गये। इस पर भी करगेज के कदम आगे न बढ़े। वह फिर पीछे घूम कर अजीज से प्रार्थना करना चाहता था। इतने में उस की पीठ पर वन्दूक का एक कुन्दा जोर से पड़ा। उसके पांव उखड़ गये। घिसटता हुआ वह कमरे से बाहर चला गया।

इसके बाद करगेज ईशान का कुछ पता न चला।

अगली संध्या अजीज की सेना का काफिला बरखानी स्टेशन पर पहुंचा। वहां से चार्दीजोव एक पड़ाव आगे था। यहां सिपाहियों से भरी बड़ी-बड़ी बारह ट्रेनें पहले से खड़ी थीं। सिपाहियों और उन के घोड़ों को गाड़ियों से उतारा गया। स्टेशन के समीप फैले रेत के टीलों पर दूर-दूर तक सिपाही छा गये।

इतनी बड़ी सफेद सेना को देख अजीज मन ही मन सोच रहा था—यहां इतनी बड़ी सेना इकट्ठी करने का क्या मतलब है ? चार्दीजोव को तो मैं अपनी सेना से ही दिन भर में जीत सकता था।

पौ फटने से पहले ही सफेद सेना ने चार्दीजोव की ओर कूच कर दिया। अजीजखां भी मदीर ईशान और अपने जंट अफसरों के साथ घोड़ों पर सवार हो सेना के साथ चला। केवल सफेद सेना के पादरी, अजीजखां के साथ के मौलवी और फौजी रसोईये ही पीछे रह गये। एक साथ मिल कर खड़ी, सिपाहियों से खाली ट्रेनें शहद की मक्खियों के खाली छत्तों जैसी जान पड़ रही थीं।

दोपहर तक सफेद सेना आगे बढ़ती और अपने मार्ग में आये इलाकों पर कब्जा करती हुई डीपो तक पहुंच गई। इस समय लाल सेना की ओर से उन की कजान रेजिमेण्ट आगे आई और उन्होंने पीछे हटती

लाल सेना की ओर से पलट कर धावा बोल दिया। लाल सेना की सब कम्पनियां पीछे हटना छोड़ उलट कर हमला करने लगीं। सफेद सेना चारों ओर से सिमिट कर पीछे हटने लगी। अजीजखां की घुड़सवार सेना ने पीछे न हट कर पैंतरे बदले परन्तु उस की पैदल सेना को पीछे लौटना पड़ा।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये सफेद सेना के हमले का जोर घटा देने के लिये कई मोर्चे बदल चुका था। वह अपने सवारों को ले दक्खिन की ओर से शहर का चक्कर लगाता हुआ, आमू के रेलवे पुल की ओर बढ़ गया। उसे आशा थी वहां लाल सेना से सम्पर्क हो सकेगा लेकिन इस ओर भी सफेद सेना जमी हुई थी। अरतैक ने समझा कि शहर सफेद सेना के हाथों आ गया है और वह लौट पड़ा। अपने सवारों को लिये वह दलदल में रुका रहा। सूर्यास्त के समय अजीजखां की छावनी में लौटा। लौट कर उसे अपनी भूल मालूम हुई। सफेद सेना शहर पर कब्जा नहीं कर सकी थी बल्कि असफल हो कर आमू के पुल से पीछे हट रही थी। यदि वह उस समय इस सेना पर हमला कर देता तो इस सेना का पीछा करती लाल सेना इन्हें समाप्त कर देती और अरतैक लाल सेना से जा मिलता परन्तु अवसर हाथ से जा चुका था।

२६

चार्दीजोव के मोर्चे पर लाल सेना से मार खा कर सफेद सेना तेजी से पीछे हटती जा रही थी। अंग्रेज अफसरों ने सफेद सेना की सहायता के लिये बैरमअली में हिन्दुस्तानी फौज की एक मशीनगन कम्पनी भेजी थी। इस कम्पनी ने रात भर के लिये लाल सेना की राह रोक दी परन्तु दिन चढ़ते ही इन्हें भी पीछे हट जाना पड़ा। चार दिन तक कदम-कदम पर सफेद सेना को धकेलती लाल सेना लड़ती रही और उन्होंने मारी शहर पर कब्जा कर लिया। सफेद सेना और उसकी सहायक ब्रिटिश सेना बहुत नुकसान उठा कर पीछे हट गई।

सफेद सेना और ब्रिटिश हिन्दुस्तानी सेना के साथ-साथ अजीज भी अपनी सेना को लिये पीछे हट रहा था और मन ही मन पछता रहा था कि इन लोगों के साथ मैं किस झमेले में आ फंसा! उसे जुनैदखां की नसीहत याद आ रही थी कि हमारी शक्ति रेतीले मैदानों में ही है। रेलों के चक्कर में फंसे तो मारे जायेंगे। शहरों पर कब्जा करने के सैनिक ढंग से उसे क्या मतलब था? वह चाहता था जैसे-तैसे बच निकले और अलगान के अपने डकैती के किले में जा छिपे जहां से समय पर, राह चलते निस्सहाय काफिलों पर अपनी शक्ति बढ़ाता जाये परन्तु चारों ओर से घिर आई लाल सेना निकल भागने का अवसर ही न दे रही थी।

सफेद सेना तीन दिन तक लगातार पीछे हट कर तेजेन पहुंची तो यहां भी लाल सेना ने पीछा न छोड़ा और उन पर आ पड़ी। अभी पौ भी न फट पाई थी कि अंधियारे आकाश को चीर कर सुर्ख दहकती हुई

गोलियां चलने लगीं। तुरन्त ही गोला-बारी भी शुरू हो गई। अजीज ने अपनी सेना को तुरन्त पीछे हट जाने का हुक्म दिया।

अरतैक सोच रहा था कि अपने सौ सवारों को ले दक्खिन की ओर से रेलवे लाइन पार कर, शहर की ओर जा लाल सेना से मिल जाये। उसे भरोसा था कि अपने गांव और घर की इस भूमि में वह कदम-कदम धरती से परिचित है और यहां वह सुविधा से अपने साथियों से जा मिलेगा।

वह अपने सवारों के साथ रेलवे लाइन के पार पहुंचा ही था कि एक ट्रेन चली आती दिखायी दी। इस में सफेद सेना का काम करने वाले मजदूरों की कम्पनी थी। इस ट्रेन के पीछे-पीछे दूसरी ट्रेन आ रही थी। इस में ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज का मशीनगन का रिसाला था। अरतैक ने दांतों से होंठ काट कर मन ही मन सोचा—यह है इन साम्राज्यवादियों की चाल! खतरे में पहले रूसी सेना को भेजते हैं और उस के पीछे अपनी सेना को। वह भी हिन्दुस्तानी सेना! एक देश को गुलाम बना, उसे लड़ा कर दूसरे देशों पर कब्जा करना, यह है साम्राज्यवाद की चाल!

अरतैक प्रतीक्षा के सिवा और क्या करता! सूर्योदय के समय लाल सेना तेजेन शहर में घुस चुकी थी हालांकि शहर के उत्तर-पश्चिम की ओर झाड़ियों में अजीज की सेना का रिसाला लाल सेना से अब भी उलझ रहा था। अरतैक और उस के सवारों ने लड़ाई में कोई भाग न लिया। वे लोग घनी झाड़ियों के जंगल को चीरते हुये तेजेन की ओर बढ़ रहे थे। इन्हें देख कर और शत्रु समझ कर लाल सेना इन पर भी गोली बरसाने लगती इसलिये खुले मैदान की राह शहर की ओर आगे बढ़ना सम्भव न था।

अरतैक को शहर की ओर दूरी पर तिशेंको दिखाई दिया। अरतैक ने चिल्ला कर उसे नाम से पुकारा। बन्दूकों की गरज में अरतैक की पुकार तिशेंको तक न पहुंची। तिशेंको ने अपनी ओर बढ़ते शत्रु के

रिसाले को देख लिया था। उस से अपनी कम्पनी को झाड़ियों में दुबक कर इस ओर बढ़ने और शत्रु के रिसाले पर हमला करने का हुक्म दे दिया। अरतैक यह सब देख रहा था परन्तु वह रुका नहीं। उस ने सवारों को हुक्म दिया कि सरपट शहर की ओर बढ़ो। वह स्वयं सब से आगे हाथ उठाये तिशेंको को पुकारता चला जा रहा था।

तिशेंको ने अपने नाम की पुकार सुनी और अरतैक की आवाज पहचानी। अपने सिपाहियों को गोली रोकने का हुक्म दिया परन्तु इस से पहले ही चल चुकी एक गोली अरतैक के कंधे में जा धंसी। उस के हाथ से राइफल गिर गई और घोड़े की लगाम भी छूट गई। गिरने से बचने के लिये अरतैक ने दूसरे हाथ से घोड़े के अयाल थाम लिये। अरतैक का घोड़ा, मालिक के जख्मी हो जाने और गोलियों की बौछार से घबरा कर लौट पड़ा और अरतैक को लिये सरपट भागा जा रहा था। तिशेंको उस के पीछे-पीछे अरतैक को पुकारता दौड़ा आ रहा था। अरतैक उस की पुकार सुन न सका। वह अपने घोड़े को वश न कर सकता था। घोड़े की पीठ पर सम्भले रहना ही उस के लिये दूभर हो रहा था।

तेजेन में हार कर सफेद और ब्रिटिश सेना काहका स्टेशन की ओर पीछे हट रही थी। अश्काबाद की राह में सफेद सेना को कई सुरक्षित मोर्चे मिल गये। ईरान की ओर से नयी ब्रिटिश फौजें भी उन की सहायता के लिये आ मिलीं। यहां सफेद और ब्रिटिश सेना ने नये सिरे से पक्के मोर्चे जमा लिये। लड़ाई जम कर होने लगी।

अजीजखां तेजेन से ही अपनी सेना को ले अलगान भाग गया था। लाल सेना काहका में सफेद सेना के मुकाबिले में उलझी हुई थी। इस अवसर से लाभ उठा अजीज ने तेजेन और अलगान के बीच अपनी सेना का एक मोर्चा लगा दिया और अलगान में स्वतंत्र खान बन बैठा।

अजीज ने लाल सेना का मुकाबिला करने के नाम पर सफेद सेना से हथियार तो काफी हथिया लिये थे परन्तु रसद-राशन की उस के यहां

कमी थी। इस कठिनाई का भी उस ने तुरन्त उपाय किया। उसने इलाके के इमामों और मुल्लाओं को इकट्ठा कर उन्हें खिला-पिला कर, कुछ दबा-धमका कर फतवा ले लिया कि अजीजखां इलाके का मुस्लिम बादशाह है और उसे प्रजा से राजकर लेने का अधिकार है। शरियत के अनुसार राजा को प्रजा का दसवां भाग और पशुओं की पैदावार का चालीसवां भाग लेने का अधिकार होता है। शरियत से यह अधिकार पाकर अजीजखां के अफसरों और गुमाश्तों ने राजकर इकट्ठा करना शुरू किया। जब कर लेने का अधिकार हो गया तो दसवां भाग कितना है, यह निश्चय करना उन के अपने हाथ की बात हो गई। इस उपाय से अजीजखां, उस के दरबारियों और सेना का पेट मजे में पलने लगा।

अरतैक जख्मी हालत में जैसे-तैसे अपने गांव पहुंचा। उसे क्या आशा थी ऐसी हालत में अपने घर लौटेगा! भविष्य उस के सामने अस्पष्ट और अंधकारमय था। मानसिक चिन्ता के बावजूद ऐना का स्नेह, मां की ममता और नये उत्पन्न पुत्र के प्रति उस के आकर्षण ने अरतैक को सजीव करना शुरू किया। अब अरतैक समस्या को अपने परिवार और पुत्र के भविष्य की दृष्टि से देखने लगा—क्या यह लोग सदा ही साधनहीन, दूसरों की दया के हमोताज गुलाम बने रहेंगे? क्या इन्हें अपने जीवन की राह बनाने का, उस राह पर कदम उठाने का अधिकार, आत्मनिर्णय का अधिकार कभी प्राप्त न होगा; यह कभी मनुष्य न बनेंगे?

२७

पतझड़ आ गया। अरतैक का जख्म लगभग ठीक होकर उस का स्वास्थ्य भी बहुत कुछ सुधर गया था। अपने गांव में ही उस ने सुना कि लाल सेना चार बार काहका स्टेशन को लेने का प्रयत्न कर चुकी है परन्तु सफल नहीं हुई। उसे भरोसा हुआ, चार बार असफल होकर भी यदि लाल सेना डटी हुई है तो उस में सफलता पा लेने की शक्ति जरूर होगी।

अक्टूबर का महीना बीत रहा था। एक दिन एक आदमी अरतक के लिये अजीजखां का जरूरी सन्देश लेकर आया—'तुरन्त अलगान पहुंचो! अंग्रेजी सेना लाल सेना पर भारी हमला करने वाली है और अंग्रेजों ने हमें लाल सेना के पीछे भागने के रास्तों में दुशाक स्टेशन के पास रेलवे लाइन तोड़ने का काम सौंपा है।'

अरतैक का मन नहीं मान रहा था परन्तु फिर भी वह अजीजखां के बुलावे पर चला गया। अंग्रेजों से मिल कर तुर्कमान जनता की सोवियत के विरुद्ध अजीज की विश्वासघात की नीति से अरतैक का मन उस के प्रति घृणा और क्रोध से भर रहा था। अरतैक को विशेष क्रोध इसलिये था कि अजीज विदेशी साम्राज्यवादी शक्ति के हाथों बिक रहा था। उस ने यह भी सुना कि ब्रिटिश जनरल मैलिन्सन के हुक्म से काहका के अंग्रेज अफसर प्रायः नित्य ही हवाई जहाज पर चढ़ कर अलगान पहुंचा करते हैं।

अरतैक कुछ विलम्ब से पहुंचा। अजीजखां का रिसाला तकीर

स्टेशन पर पहुंच चुका था परन्तु स्टेशन पर मौजूद लाल सेना की फौलादी गाड़ी से मशीनगन की मार खाकर उसे पीछे लौट आना पड़ा। उसी समय अरतैक ने सुना कि दुशाक में लाल सेना पर हमला करने वाली अंग्रेजी फौज हार गई है और टुकड़ियों में तितर-बितर होकर काहका की ओर लौट रही है। इस समाचार से अरतैक को बहुत संतोष हुआ।

यह स्थिति देख अजीज ने अपनी सेना को तेजेन की ओर बढ़ जाने का हुक्म दिया। इस समय लाल सेना दुशाक में लड़ रही थी। तेजेन की रक्षा करने वाला कोई न था। अरतैक समझ गया अजीजखां को यह सलाह अंग्रेज अफसरों ने दी है ताकि लाल सेना का ध्यान तेजेन की ओर बंट जाये। तेजेन पर इस हमले में अजीज के साथ अलीयारखां भी साझीदार था। अलीयारखां जार की कज्जाक फौज का पुराना अफसर था। इस समय वह अंग्रेजों की सहायता से अपनी छोटी सी स्वतन्त्र सल्तनत बना लेने की फिक्र में अंग्रेजों के इशारे पर नाच रहा था।

अरतैक ने तेजेन की इस लूट में भाग न लेने का निश्चय कर लिया। उस का जख्म अभी पूरे तौर से ठीक नहीं हो पाया था इसलिये वह दर्द का कारण बता कर लेटा रहा और दिन चढ़े बहुत देर में अलगान से तेजेन की ओर चला।

अजीजखां और अलीयारखां के रिसाले रात रहते ही तेजेन पहुंच गये थे। उन का सामना करने वाला कोई नहीं था। बाजारों और गलियों में जा उन्होंने दुकानों और मकानों को लूटना शुरू किया। स्त्रियों और लड़कियों को घरों से खींच, गलियों और बाजारों में उन के साथ खुले-आम बलात्कार किये। जो मर्द, बूढ़े, जवान, बच्चे या औरतें सामने आये, सब को कत्ल कर दिया। कटे हुये मुंड या बिना मुंड के शरीर जगह-जगह खम्भों और वृक्षों पर लटका दिये गये। शहर के दफ्तरों, बड़ी-बड़ी दुकानों और रुई के करखाने में भी आग लगा दी गई।

केलखां की कम्पनी के सवार नदी किनारे एक ईसाई स्कूल में जा घुसे। स्कूल में एक तुर्कमान ईसाई पादरी था। इन लोगों को देख कर भी वह भागा नहीं, शान्त खड़ा रहा। केलखां के सिपाहियों ने उसे पकड़ कर उस के कपड़े फाड़ दिये। पादरी इस व्यवहार से कुछ मूढ़-सा हो गया। साहस कर उस ने मुंह खोला —

"भाइयो, क्या करते हो! मैं भी तो तुर्कमान हूं।"

"तुम गद्दार हो! गद्दारी की सजा कत्ल है।" उसे उत्तर मिला।

"मैं गद्दार नहीं हूं और न किसी का दुश्मन हूं।"

"हम दुश्मन पर रहम कर सकते हैं परन्तु गद्दार को मुआफ नहीं करेंगे!"

"भाइयो, मुझे खान अजीजखां के सामने ले चलो। अगर मैं कसूरवार हूं तो वह मुझे सजा देगा।"

"इस झमेले की जरूरत क्या?" उसे रूखा उत्तर मिला।

एक सिपाही ने अपनी राइफल उठा उस की छाती पर निशाना साधा। इतने में केलखां आ पहुंचा। यह दृश्य देख वह चिल्ला उठा— "अरे बेवकूफो, क्या कर रहे हो!" परन्तु सिपाही ने गोली दाग ही दी।

अरतैक दोपहर के समय तेजेन पहुंचा। सैकड़ों जले हुये मकान अभी सुलग रहे थे। आकाश धुयें से भरा था और चिरांध आ रही थी। बाजारों और गलियों में खून फैला हुआ था। जगह-जगह अंग-भंग मुर्दे पड़े थे और वृक्षों से लाशें झूल रही थीं। सिपाही छीनी हुई गायों को रस्सियों से थामे दो-दो, चार-चार शहरी नंगी औरतों के साथ हांके लिये जा रहे थे। अलीयारखां के सिपाहियों को शराब का एक गोदाम मिल गया था। वे मनमानी पीकर मतवाले हो रहे थे। अजीजखां के सिपाही अब भी लूट में लगे हुये थे। जिस घर में जो कुछ मिल जाता; जेवर, कपड़ा, कालीन, रजाई, तकिया सब घसीटे ला रहे थे।

अजीज का नौकर पेलांग रूसी ढंग का कोट पहने फिर रहा था। अरतैक का ध्यान उस ओर गया। वह कोट उसे पहचाना-सा जान पड़ा।

यह तो चर्नीशोव का कोट है ! क्या इन जालिमों ने उसे भी मार डाला ? क्रोध से अरतैक का सिर चकरा गया । उस का हाथ अपने रिवाल्वर की मूठ पर जा पहुंचा । वह पेलांग को गोली मार देने को ही था परन्तु उस ने अपने आप को सम्भाला । पेलांग के कोट पर हाथ रख उस ने पूछा—' बहुत बढ़िया कपड़ा है । कहां से लिया ?"

"पिछली रात की लूट में ।" पेलांग ने उत्तर दिया ।

"बड़े जोरदार आदमी हो यार । कोट वाले को मार डाला ? ऐसा बढ़िया कोट यों भला क्यों देनें लगा !" अरतैक ने पूछा ।

"पचासों मार डाले लेकिन यह कोट ऐसे ही मिल गया । कोट वाला घर में था नहीं ।"

"तो किसी दूसरे ने उसे खत्म किया होगा !"

"नहीं, घर में बस एक रूसी औरत थी । उस साली ने कोट पकड़ लिया और मुझ से लड़ने लगी । मकान स्टेशन के पास ही था । वहां कई लाल सिपाही थे । वे लोग खटका सुनते ही गोली चला दे रहे थे । मैं झटके से कोट छीन कर भाग आया ।"

अरतैक को संतोष हुआ कि चर्नीशोव और उस की स्त्री अभी जीवित हैं । ध्वंस हो चुके शहर को देख कर उस का मन भर आया । वह पीछे रह जाने के लिये पछताने लगा···समय पर आ जाता तो शायद चर्नीशोव, मात्रिद या अशीर में से कोई मिल जाता और वह उन के साथ मिल कर शहर को बचाने के लिये कुछ प्रयत्न कर सकता । अब जाने वे लोग कहां होंगे ! लाल सेना में वह कैसे पहुंचे ?

लाल सेना ने दुशाक से सफेद सेना और ब्रिटिश फौज को हरा कर भगा दिया परन्तु इन का पीछा न कर सकी । इस के कई कारण थे । दूसरे मोर्चों पर अभी तक सफेद सेना का जोर बना हुआ था । दुशाक में लाल सेना के रसद के गोदाम और लड़ाई के सामान में आग लग कर बहुत नुकसान हो गया था और यह भी भय था कि सफेद सेना का पीछा करने के लिये आगे बढ़ जाने पर पिछले मोर्चों से सम्बन्ध न टूट जाये ।

तेजेन पर अजीजखां और अलीयारखां के हमले से एक बात स्पष्ट हो गई कि ब्रिटिश सेना की सहायता से लाल सेना को परेशान करने वाले बड़े-बड़े डकैत दल चाहे अपने राज स्थापित करने में सफल न हो सकें परन्तु यह लोग जनता को परेशान और निराश कर रहे थे और लाल सेना को काफी नुकसान भी पहुंचा रहे थे। इसीलिये उचित यही था कि एक स्टेशन और पीछे, राविना में लौट कर आगे बढ़ने से पहले पीछे से आने वाले भय का प्रबंध कर लिया जाय !

दुशाक में लाल सेना से मार खाकर ब्रिटिश फौजों ने फिर आगे बढ़ने और सेना से टक्कर लेने का प्रयत्न न किया। सोवियत के हाथ जो शहर छीने गये थे, उन पर प्रकट में सफेद सेना का कब्जा रखा गया। अजीजखां भी इस अव्यवस्थित परिस्थिति में फायदा उठा रहा था। तेजेन में जो कुछ करतूत उस ने की थी, वही उस ने मारी में भी की। उस के विचार में अपनी सत्ता बढ़ाने और जमाने का यही उपाय था।

अजीज अपने रिसाले को ले मारी पहुंचा। इस नये कस्बे में आते ही वह बस्ती पर अपना आतंक बैठाने का नया उपाय सोचने लगा। मारी में तेजेन की लाल सेना का एक अफसर अतादयाली उस के हाथ पड़ गया था। अजीज को याद था कि अतादयाली ने तेजेन में उस की सेना पर छापा मार कर उस के हथियार छीनने में भाग लिया था। अजीजखां ने अतादयाली की मुश्कें बंधवा दीं। एक लम्बी रस्सी दयाली के कंधे में और दूसरी पांव में बांध कर दो घोड़ों की जीनों से बांध दिया गया। घोड़ों को चाबुक मार कर बाजारों में खूब दौड़ाया गया। दयाली का शरीर शहतीर की तरह बंधा जमीन पर रगड़ता-उछलता छिन्न-भिन्न हो गया। इस के बाद अजीज ने मारी के कस्बे में डोंडी पिटवा दी—

'होशियार, खबरदार ! फिर न कहना हमने सुना नहीं ! जो कोई आदमी किसी भी तरह बोल्शेविकों को सहायता देगा, उसे अतादयाली की तरह सजा दी जायेगी !'

अगले दिन उस ने दो और आदमियों को पकड़ मंगवाया। उन्हें भी

वही सजा दी गई। मारी की बस्ती अजीज के आतंक से कांपने लगी।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये अजीज की सेना के पीछे-पीछे आ रहा था। मारी के काण्ड का समाचार उसे रास्ते में ही मिल गया। क्रोध और घृणा से व्याकुल हो उस ने सोचा—जनता के इस खूंखार जल्लाद के साथ मेरा निवाह कैसे हो सकता है ! अब चाहे जो हो, मुझे इस के विरुद्ध आवाज उठानी ही पड़ेगी। इन्हीं विचारों में वह अजीज की छावनी की ओर चला जा रहा था।

अरतैक अभी अलगान की छावनी के भीतर जा नहीं पाया था कि बाहर ही उस की मुलाकात अजीजखां से हो गयी। अजीज, केलखां, किजिलखां और मदीर ईशान के साथ घोड़े पर सवार था। अरतैक अपने सवारों के साथ उस की ओर बढ़ता चला गया। दस कदम का अंतर बीच में रह जाने पर उस ने अपने सवारों को रुकने का हुक्म दिया और सलाम-दुआ किये बिना रूखे स्वर में अजीज को सम्बोधन किया—

"अजीजखां, कभी तुम ने सोचा है कि तुम क्या कर रहे हो !"

अजीज ने एक ही नजर में समझ लिया कि अरतैक इस समय क्रोध के कारण बिगड़ा हुआ है। उस ने भी रूखा उत्तर दिया—"मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं।"

"तुम्हारे यह जुल्म मैं नहीं सह सकता। अतादयाली के कत्ल के बाद मेरा सब्र खतम हो गया है।"

"तुम हो कौन मुझ से जवाब तलब करने वाले ?"

"मैं कौन हूं, यह तुम्हें मालूम हो जायेगा !"

"अतादयाली क्या तुम्हारा भाई लगता था ! जान पड़ता है तुम बोल्शेविकों से रिश्वत खाने लगे हो !"

"यह भी तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जायेगा !"

"हूं," अजीज ने आंखें नीची कर क्रोध में होंठ दबा लिये। उस का चेहरा सुर्ख हो गया। पल भर सोच उस ने अरतैक की ओर देख गहरी सांस लेकर कहा—"जब गधा बहुत मोटा हो जाता है तो मालिक पर ही

दुलत्ती झाड़ने लगता है।" उत्तेजना से रकाबों पर तन कर वह जीन से उठ गया। हाथ का हंटर घुमा कर उस ने अरतैक को हुक्म दिया—"मैं तुम्हें वर्खास्त करता हूं। मेरे हथियार लौटा दो!"

"मैं तुम्हारी नौकरी बहुत दिन पहले ही छोड़ चुका हूं। तुम अंग्रेजों के पालतू डाकू हो और तुर्कमानी लोगों को खाये जा रहे हो!"

"किजिलखां! केलखां!" अजीज ने क्रोध में पुकारा।

केलखां चुप रह गया। किजिलखां अपना घोड़ा अरतैक की ओर बढ़ा कर बोला—"अरतैक, लाओ भाई, हथियार मुझे दे दो।"

अरतैक ने अपना रिवाल्वर किजिलखां की ओर साध कर उत्तर दिया—"किजिलखां, तुम बीच में न पड़ो। अगर आगे बढ़ोगे तो मैं गोली मार दूंगा।"

किजिलखां रुक गया। मदीर ईशान का चेहरा भी फक हो गया था परन्तु बीच-बचाव करना अपना कर्तव्य समझ वह समझाने के ढंग से बोला—"भैया अरतैक, क्या कर रहे हो? कुछ ख्याल करो!"

अजीजखां को कमर में बंधे रिवाल्वर की ओर हाथ बढ़ाते देख अरतैक ने चेतावनी दी—"अजीजखां, जान प्यारी है तो हाथ उधर मत ले जाओ।"

अरतैक का एक सवार पीछे से बोल उठा—"अरतैकखां, क्यों बात बढ़ा रहे हो! गोली मारो!"

अजीजखां ने अरतैक के सौ सवारों की ओर नजर डाली। अब तक वह उन्हें भूला ही हुआ था। अपने आप को वश में कर बोला—"अरतैकखां, मैं जानता हूं तुम बहादुर आदमी हो। तुम ने दुश्मनों को नीचा दिखाया है। यह क्या आपस में झगड़ने का समय है! इन बातों को जाने दो! हमारे-तुम्हारे सम्बन्ध पुराने हैं...।"

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—अजीज और मदीर को अभी गोली मार कर लाल सेना की ओर भाग जाऊं परन्तु ख्याल आया, मेरे साथ सौ सवार भी तो हैं। इन्हें भी तो साथ ले जाना है। लाल सेना

का मोर्चा बहुत दूर है। अगर यहां घिर गये तो इन सवारों का क्या होगा ? वह सोचता रहा और फिर उस ने अजीजखां को उत्तर दिया—"हमारी-तुम्हारी नहीं निभ सकती । अब मैं तुम्हारे यहां नहीं रहूंगा । मैं जा रहा हूं लेकिन एक बात कहे देता हूं, अगर तुम मुझे रोकोगे या पीछा करोगे तो तुम भी बच नहीं सकोगे !"

वह अपने सवारों की ओर घूम गया—"भाइयो, जो मुझे मानता हो मेरे साथ आ जाये !"

सौ सवारों का पूरा दस्ता अरतैक की ओर बढ़ आया । अरतैक पीछे लौट पड़ा और उस के सवार उसे घेर कर उस के साथ मारी की ओर चल दिये । अजीज ने आपे से बाहर हो अपना रिवाल्वर निकाल लिया । उस का निशाना बहुत पक्का था । वह उड़ते हुये कौए को गिरा देता था परन्तु केलखां ने उसे रोका—"क्या करते हो ? देखते नहीं सवार हैं !···तुम्हारे जिस्म की धूल भी नहीं मिलेगी ।"

अजीज दांत पीसता हुआ अपनी छावनी की ओर लौट चला । वह सोच रहा—मेरी शक्ति क्या धूल बढ़ रही है !···यह आदमी मेरे मुंह पर थूक गया ! सौ घुड़वसवार हाथ से गये, दूसरों पर ही क्या भरोसा है··· इन से क्या लड़ूं !

अजीज से विदा हो अरतैक अपने सवारों के साथ सकारचग से पूर्व की ओर चला जा रहा था । कुर्बानकला के पास उसे ब्रिटिश फौज का एक हिन्दुस्तानी रिसाला मिला । इन लोगों ने उन्हें निमाजबेग का रिसाला समझ कर कुछ नहीं कहा ।

आगे बढ़ कर अनेकोवो में उन्हें निमाजबेग का रिसाला मिल गया । वह लोग लाल सेना की खोज-खबर लगाते फिर रहे थे । अरतैक ने उन्हें बताया कि वह भी अजीज की सेना की ओर से लाल सेना की स्थिति समझने के लिये इधर चक्कर लगा रहा है । यहां उसे पता चल गया कि सफेद सेना और लाल सेना में अनेकोवो से राविना तक मोर्चा लगा हुआ है । लाल सेना राविना में छावनी डाले पड़ी है । उस ने इन लोगों से

राविना की राह भी पूछ ली ।

अरतैक ने निश्चय किया लाल सेना की ओर रात के समय जाना ठीक न होगा । उस ने अपने सवारों को रेलवे लाइन से काफी दूर रेत के मैदानों में उगी ऊंची घास में विश्राम के लिये टिका दिया । पौ फटते ही उस ने एक सफेद झण्डा ऊंचा किया और सीधा राविना की ओर बढ़ चला । इस से पहले काहका में ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज सफेद झण्डा दिखाकर लाल सेना को धोखा दे चुकी थी इसलिये उन्होंने अरतैक को नजदीक नहीं आने दिया । लाल सेना की फौलादी ट्रेन से गोली चलने लगी । गोली की बौछार में अरतैक के रिसाले के घोड़े तितर-बितर होने लगे ।

अरतक पीछे हट गया । उस ने दक्खिन की ओर से राविना की ओर जाने का निश्चय किया और सफेद झण्डा उठाकर उस ओर बढ़ा परन्तु इस ओर से भी उस पर गोलियों की बौछार पड़ने लगी । राविना पहुंच कर लाल सेना में मिलने का कोई उपाय न देख वह निराश हो पंदीन के रेगिस्तान की ओर चल दिया ।

इस समय अलीयारखां भी अपना रिसाला लेकर पंदीन में आया हुआ था । बात यह थी कि अजीज और अलीयारखां ने तेजेन में जो अत्याचार किये. उन के कारण अश्काबाद तक का इलाका कांप उठा । 'मरता क्या न करता' की मिसाल; लोग मरने-मारने के लिये उठ खड़े हुये । जनता को अपने विरुद्ध भड़कता देख ब्रिटिश अफसरों और सफेद सेना को इस मामले में जांच-पड़ताल करनी पड़ी । अजीजखां और अलीयारखां से जवाब तलब किया गया । अजीज ने सब उत्तरदायित्व अलीयार पर डाल दिया । अलीयारखां को जांच-पड़ताल के लिए अश्काबाद की फौजी अदालत में पेश होने के लिये बुलाया गया । वह इस झंझट में न पड़ना चाहता था । वह तेजेन छोड़ पंदीन के मैदानों में आ गया कि आसानी से लूट-मार कर अपना निर्वाह कर लेगा ।

इस इलाके में अलीयारखां जब चाहता सिरयाक के गड़रियों की भेड़ें

पकड़वा लेता। उन के दूसरे ढोरों को भी वह अपनी ही सम्पत्ति समझता था। अलीयारखां गांव-गांव घूम रहा था। उजड़े और बरबाद गांवों को देख कर उस का रास्ता मालूम हो जाता था। वह जहां से गुजरता कत्ल और बलात्कार के चिन्ह छोड़ जाता। तेजेन से वह अपने लिये एक खूबसूरत औरत पकड़वा लाया था। कुछ दिन बाद उसे सन्देह हुआ कि वह औरत उस के किसी सिपाही से मिल गई है। इस औरत को उस ने अपने प्रेमी के साथ गढ़ा खुदवा कर जिन्दा ही गड़वा दिया। अलीयार की इस क्रूरता पर उस के सिपाहियों में सनसनी फैल गई। एक सरदार ने इस पर आपत्ति की। अलीयार ने इस सरदार को रात में कत्ल करवा दिया। इस के बाद किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ।

अरतैक खूब समझ चुका था कि सफेद सेना, रूस के मामले में दखल देने आई अंग्रेजी फौज, अजीजखां और अलीयारखां में कोई अन्तर न था। अलीयारखां इन सब से मूर्ख और बेहूदा था। अरतैक ने सोचा, पहले अलीयारखां से ही समझा जाय। अरतैक का रिसाला आस-पास की बस्तियों में लूट-मार न करता था इसलिये इलाके के गांवों के लोगों और चरवाहों को उस से सहानुभूति थी। वे उसे रसद पहुंचा देते और आवश्यकता होने पर राह भी बताते।

अरतैक ने अपने एक सिपाही के हाथ अलीयारखां के पास सन्देश भेजा—'या तो तुम आकर मुझ से मिलो या इस इलाके से बाहर चले जाओ!'

अलीयारखां ने इस सिपाही की मूंछें मुड़वा दीं और उस के घोड़े की दुम कटवा दी और बोला—"चले जाओ वापिस और अरतैक से कह दो, यह है मेरा जवाब!"

इस अपमान से अरतैक को बहुत क्रोध आया। दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही उस ने अपना रिसाला ले कर अलीयारखां का खेमा जा घेरा और नंगी तलवारों से हमला बोल दिया। अचानक हमला हो जाने के कारण अलीयारखां के सिपाहियों के सिर और शरीर के दूसरे अंग

कट-कट कर ठंडी रेत पर गिरने लगे। जिस सरदार को अलीयारखां ने कत्ल करवा दिया था, उस के साथी भी समय देख अलीयारखां के आदमियों पर टूट पड़े। थोड़ी ही देर में लड़ाई समाप्त हो गई। मैदान खून से तर हो कटे हुए अंगों से छितरा गया। बिना सवारी के घोड़े इधर-उधर भागते फिर रहे थे। अलीयारखां लगभग सौ जख्मी सिपाही लेकर भाग गया। अरतैक के चार आदमी खेत रहे परन्तु उसे चालीस सवार और मिल गये और बहुत से बढ़िया घोड़े भी मिले। इन्हें उस ने अपने सवारों में बांट दिया।

अरतैक फिर लाल सेना से मिलने का प्रयत्न करना चाहता था परन्तु बीच में दूसरी बाधा आ पड़ी। अलीयारखां के अत्याचारों से से पीड़ित हो इलाके के लोग रोते-पीटते ब्रिटिश फौज की छावनी में फरियाद करने पहुंचे थे। उस इलाके की सहानुभूति अपनी ओर करने के लिये अंग्रेजों ने अपने हिन्दुस्तानी रिसाले के अफसरों की एक कम्पनी अलीयारखां को पकड़ लाने के लिये भेज दी लेकिन अब अलीयारखां की जगह आ बैठा था अरतैक! इलाके के चरवाहों और गड़रियों ने आकर प्रसन्नता से अरतक को खबर दी कि हमारी-तुम्हारी सहायता के लिये और अलीयारखां से बदला लेने के लिये अंग्रेजी फौज आ रही है। अरतैक जानता था कि यह लोग उसे कैसी सहायता देंगे।

हिन्दुस्तानी रिसाला रेतीले मैदान की राह आने वाले था। अरतैक ने इस राह में अपने कुछ सवारों को एक मील तक रास्ते के दोनों ओर की झाड़ियों में छिपा दिया और अपने शेष सवारों को ले एक नीची जगह में जा दुबका। रिसाला आया तो छिपे हुए सवारों ने उसे चुपचाप आगे निकल जाने दिया। जब रिसाला स्वयं अरतैक के बिलकुल समीप पहुंच गया तो सहसा एक सौ राइफलों की गोलियों की बौछार इन पर आ पड़ी और सौ सवारों का दल नंगी तलवारें ले इन पर टूट पड़ा। अफसर लोग बौखला गये। सहसा पीछे लौटने में एक-दूसरे से टकरा कर घोड़ों से गिर पड़े। पीछे लौटे तो अरतैक के छिपे हुए सवार इन

पर टूट पड़े। आधे से अधिक हिन्दुस्तानी अफसर मारे गये, कुछ पकड़े गये। अरतैक को कई और घोड़े और बहुत सी, कई-कई गोली भरने वाली बढ़िया राइफलें मिल गईं।

अरतैक ने लाल सेना से सम्बन्ध जोड़ने की फिर कोशिश की। इस बार उस ने अपने रिसाले को राविना की ओर कुछ दूर ले जाकर दक्खिन-पश्चिम के जंगल में छिपा दिया और दो घुड़सवारों को सफेद झण्डा और अपना संदेश देकर लाल सेना की ओर भेजा। सवार दूर जा कर नजर से ओझल हो गये। दूसरी ओर से गोली चलने की कोई आहट नहीं आई। अरतैक इन सवारों के हाथ उत्तर आने की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहा था। सवारों को गये तीन घण्टे बीत गये परन्तु कोई उत्तर न आया। उसे चिन्ता होने लगी—क्या उन लोगों को मेरा विश्वास नहीं? शायद सवारों को गिरफ्तार कर लाल सेना हमारे चारों ओर घेरा डाल रही है। यदि हमें घेर कर उन लोगों ने गोली चलाई तो मैं क्या करूंगा? क्या गोली का जवाब गोली से दूं···क्या करूं? जवाब न मिले तो मैं क्या करूं?···यहां कब तक प्रतीक्षा करूं? पंदीन लौट जाऊं या तेजेन चला जाऊं!···नहीं अब लौट नहीं सकता। मुझे हर हालत में लाल सेना में जाना ही है। मैं चर्नीशोव और अशीर के सामने जाऊंगा। यदि उन लोगों को मेरा विश्वास नहीं तो वे मुझे गोली मार सकते हैं। मैं अब लौटूंगा नहीं।···एक घण्टे के करीब और बीत गया। कोई उत्तर नहीं आया। उस ने सोचा एक बार फिर सन्देश भेजूं? उस ने दो और सवारों को तैयार होने के लिये हुक्म दिया। सवारों ने रकाबों में पांव रखे ही थे कि सामने पांच सवार राविना की ओर से आते दिखाई दिये। अरतैक ने सांत्वना का दीर्घ श्वास लिया।

अरतैक राविना से अपनी ओर आते इन सवारों को लगातार दूरबीन से देख कर पहचानने का यत्न कर रहा था। वे अभी बहुत दूर थे। कभी दृष्टि से ओझल हो जाते और फिर पहले से कुछ स्पष्ट और नज-दीक दिखाई देने लगते। बीच की भूमि ऊंची-नीची होने के कारण गह-

राई में चले जाने पर वे दिखाई न पड़ते थे। कुछ देर बाद अरतैक ने अपने दोनों सवारों को पहचान लिया। बाकी तीन को वह पहचान न सका। उस की आंखें उत्सुकता के कारण थकी जा रही थीं। सवारों के कुछ और समीप आने पर वे कुछ पहचाने हुये जान पड़े। इन में से दो तो···

"अशीर! तिर्शेको!" अरतैक चिल्ला उठा और उन लोगों की ओर दौड़ पड़ा।

व्यग्र उत्सुकता में अरतैक की आंखें धोखा खा गई थीं। इन सवारों में न अशीर था और न तिर्शेको; और न कोई उस का अपना आदमी। यह लाल सेना के पांच सवार थे जो अपने मोर्चे के आस-पास जांच-पड़ताल के लिये गश्त कर रहे थे लेकिन अशीर और तिर्शेको के नाम परिचय शब्द (पासवर्ड) का काम कर गये।

दो घण्टे बाद अरतैक लाल सेना के मुख्य दफ्तर में बैठा था। मावेद, अशीर और तिर्शेको उसे घेरे बैठे हुये थे। तिर्शेको इस कम्पनी का कमान अफसर था। वह कीचड़ में लथपथ कहीं से लौटा ही था और मुंह-हाथ धोता हुआ अरतैक से बातचीत कर रहा था—"तुम्हें चार्दीजोव जा कर हमारे कमाण्डर-इन-चीफ से मिलना होगा। वही तुम्हें किसी रेजीमेण्ट में नियुक्त करेगा।"

"कमाण्डर-इन-चीफ! मैं क्या जानूं कौन है कमाण्डर-इन-चीफ? और वह मुझे क्या जाने?"

"घबराओ नहीं। तुम्हारे साथ आदमी जायेंगे और फिर कमाण्डर-इन-चीफ को भी तुम शायद पहचान लो, उस का नाम है—चर्नीशोव!··· क्यों पहचान लोगे?"

अरतैक का चेहरा खिल उठा।

चर्नीशोव और अरतैक आमू नदी के किनारे टहलते हुये बातचीत कर रहे थे। उन्होंने आपस में युद्ध की स्थिति, ब्रिटिश सेना की दखल देने की नीति, सफेद सेना की शक्ति और लाल सेना के पीछे के मोर्चे,

सभी विषयों पर बातचीत की। अरतैक आमू नदी के विस्तृत प्रवाह की ओर विस्मय से देख रहा था। अब तक उस ने इस नदी की चर्चा ही सुनी थी, देखने का यह पहला ही अवसर था। दृष्टि की पहुंच तक मटियाले जल की लहरें बल खाती चली जा रही थीं। दोनों किनारों पर सधा हुआ, बहुत लम्बा फौलादी पुल तना हुआ था। उसी समय दूसरे किनारे से एक भारी मालगाड़ी प्रबल वेग से दौड़ती पुल के भीतर घुस गई। गाड़ी के बोझ और चाल का कुछ भी प्रभाव पुल पर न जान पड़ता था। पुल के नीचे चौड़े-चौड़े दृढ़ खम्भे स्वयं छोटे-मोटे मकानों की तरह थे। उसे याद आ रहे थे, अपने गांव के आस-पास की नहरों पर बने हुये बांसों और रस्सी के छोटे-छोटे पुल, जो एक आदमी या एक गधे के गुजरने के बोझ से ही लचक-लचक जाते थे। वह सोच रहा था—धन्य है तू, इस पुल को बनाने वाले।

तेजेन्का नदी की ही भांति आमू से भी कई नहरें निकली हुई थीं परन्तु यह नहरें स्वयं तेजेन्का नदी से भी बड़ी और चौड़ी थीं। इन नहरों में पाल उड़ाती नावें आ-जा रही थीं। आमू में बड़े-बड़े स्टीमर सैंकड़ों आदमी और हजारों मन बोझ उठाये दौड़ रहे थे। किनारों पर मछलीमार डोंगे लंगर डाले खड़े थे। इन पर से बड़ी-बड़ी मछलियां उतारी जा रही थीं। मटियाले जल में हवा के थपेड़ों से बौखलाई लहरें एक-दूसरे पर चढ़ जाना चाहती थीं और उनकी भिड़न्त से सफेद फेन उठ रहा था। लहरें आती और अपना फेन किनारों पर छोड़ जातीं। दूसरी लहर आकर इस फेन को समेट ले जाती। अरतैक जल के इस विस्तार को देख विमूढ़ सा हो बोल उठा—

"भैया चर्नीशोव, पानी है यहां! इस से तो पृथ्वी और आकाश सभी भर जायें और यह खत्म न हो! कहां से आता है इतना पानी और कहां समाता होगा?"

"क्यों," चर्नीशोव ने उत्तर दिया, "यह कोई छोटी-मोटी नदी तो है नहीं। अफगानिस्तान क्या, हिन्दुस्तान की सीमा तक का चक्कर लगाती

है। इस के जल से कर्की का इलाका पलता है फिर यह दैनू, दानिता, खीवा और तौशेज की भूमियों को सींचती है। तब कहीं जाकर अराल के समुद्र में गिरती है।"

"समुद्र में दिन और रात बरसों से इतना पानी गिर रहा है और उस का पेट नहीं भरा। तभी लोग कहते हैं, समुद्र का पेट कभी नहीं भरता।"

"नहीं भरता तभी ठीक है। यदि समुद्र अघा कर यह पानी लौटाना शुरू कर दे तो पृथ्वी पर खड़े होने की जगह न रहे।"

अरतैक चुप था परन्तु उस की कल्पना में तेजेन के इलाके के अपने गांवों की सूखी धरती घूम रही थी जो जल के बिना बरसों दरारों से फटा करती है। वहां कोपेतदाग की छोटी पहाड़ी से निकलने वाले सोते के जल की नालियों पर चुल्लू-चुल्लू भर जल के लिये झगड़े होते रहते हैं और हर साल इन झगड़ों में कई खून हो जाते हैं। पंदीन के रेतीले मैदानों में जल के बिना सैकड़ों पशु प्यासे मर जाते हैं। पानी के बिना कितने काफिले अपनी लम्बी यात्राओं में प्यासे मर जाते हैं···और यहां आमू नदी का विस्तृत जल पर्याप्त स्थान न पाने के कारण क्रोध में गरज रहा है, लहरें आपस में भिड़ रही हैं और जाकर समुद्र में स्थान ढूंढ़ रही हैं। यदि समुद्र में गिर कर व्यर्थ होने वाला आमू का यह जल, अखाल और तेजेन की ओर बहे तो क्या हानि है! यदि ऐसा हो सके तो तेजेन की उपजाऊ धरती धूप में सूख कर जल के बिना चटकेगी नहीं। हमारी धरती अघा कर फूलों से मुस्करा उठेगी। हमारे किसान भूख-प्यास से न तड़पेंगे।

अरतैक ने सुना था कि आमू नदी की बड़ी महिमा है। उस के जल से अनेक रोगों का नाश हो जाता है। उस में अपार शक्ति है। शायद इस विश्वास से या किसी दूसरे भाव से आमू को सम्बोधन कर वह बोल उठा—"हे सुन्दर और समृद्ध नदी, तू इतनी कठोर और निर्दय क्यों है? हमारे प्यासे सूखे गांवों की ओर भी एक नजर डाल!"

यह सुन कर चर्नीशोव मुस्करा दिया। अरतैक को यह भला न लगा। "तुम्हें हंसी क्यों आ रही है ?" उस ने पूछा।

"क्या नदी के कान हैं जो तुम्हारी बात सुनेगी !"

"क्यों नहीं, यह लहरें इस के कान नहीं तो क्या है ! यह गरज रही है तो सुन नहीं सकेगी ?"

"मान लिया परन्तु यदि भूमि को जोते-बोये बिना उस से अन्न मांगो तो मिलेगा ?"

अरतैक चुप रह गया।

चर्नीशोव बोला—"आमू का जल तुर्कमानिस्तान पहुंचाने के लिये हमें बांध बांधने होंगे और नहरें खोदनी होंगी।"

"यह कौन कर पायेगा ? किस में है इतना सामर्थ्य ?"

"सोवियत में जनता की सम्मिलित शक्ति में है यह सामर्थ्य ! और सोवियत यह काम करेगी।"

"तुम्हारी यह बात भी उतनी ही भोलेपन की है जितनी कि मेरी थी।"

"खेतों से फसल पाने के लिये तुम्हें मेहनत करनी पड़ती है या नहीं !"

"खेत में पानी आये तभी तो श्रम करके फसल पाई जा सकती है।"

"ठीक है। जैसे फसल के लिये श्रम की आवश्यकता है, वैसे ही खेतों में पानी पहुंचाने के लिये भी श्रम की आवश्यकता है। यह काम अकेले आदमी के बस का नहीं परन्तु यदि हम लोग इस के लिये संगठित रूप से श्रम करें तो देश के कोने-कोने में जल पहुंच सकता है।"

"अगर मेरे श्रम से तेजेन में पानी पहुंच सके, मैं उम्र भर नहर खोदने के लिये तैयार हूं।"

"तुम्हारी तरह जी-जान से परिश्रम करने के लिये तैयार करोड़ों आदमी हमारे देश में हैं। उन के श्रम से हम सभी कुछ कर सकते हैं। यदि यह विदेशी यहां आकर दखल न दें और हमारे देश की जनता का

श्रम चूसने वाले, हमारे देश के जमींदार और पूंजीपति हमारी जनता को अपनी भलाई के लिये संगठित होकर काम करने दें तो हम सब कुछ कर सकते हैं। जो लोग हमारी जनता का श्रम हथिया कर शासन का अधिकार भोगते आये हैं और गुलछर्रे उड़ाते आये हैं, वे हमारी राह में रोड़े अटका रहे हैं। पहले उन के हाथ से मुक्ति पाना आवश्यक है।"

अरतैक चुपचाप आमू के जल की ओर दृष्टि लगाये खड़ा रह गया। चर्नीशोव ने उसे पुकारा—"अब लौटोगे नहीं ?"

अरतैक आमू के जल की ओर से अपनी प्यासी आंखें न हटा पा रहा था; जैसे बच्चों के लिये मिठाई की ओर से दृष्टि हटाना कठिन हो जाता है। जब लौटना ही पड़ा तो भविष्य में उस जल को पाने की आशा में उस ने उस जल को स्पर्श कर उस से अपना मुंह धो अपने को शांत करने का प्रयत्न किया।

२८

कई दिन, सप्ताह और मास बीत गये। दुशाक में लाल सेना से मार खाने के बाद ब्रिटिश सेना ने फिर आगे बढ़ने का साहस न किया। सन् उन्नीस सौ उन्नीस के मार्च महीने के अन्त में एक रात यह ब्रिटिश सेना अपनी जगह डेनकिन की सेना को छोड़ चुपचाप खिसक गई। यह लोग अपनी याद के रूप में पीछे अपनी केवल एक पल्टन क्रास्नोवोदस्क में छोड़ गये। यों तो तुर्किस्तान भर में इन के दलालों का जाल बिछा था, जो जनता में भ्रम फैला कर सोवियत के विरुद्ध असंतोष फैला रहे थे। वह लोग सोवियत के कार्यक्रम को विदेशियों के बल पर बरबाद करने की और सोवियत को हटाने की चेष्टा कर रहे थे। सफेद सेना को विदेशियों की सहायता से सोवियत को हटाने की चेष्टा करते देख तुर्कमान जनता समझने लगी थी कि न तो यह विदेशी हमारे हित-चिन्तक हो सकते हैं और न इन विदेशियों के नौकर सफेद सेना वाले ही। तिस पर लाल सेना से मुठभेड़ में ब्रिटिश फौजों को जान-माल का नुकसान भी बहुत उठाना पड़ रहा था। अंग्रेजों ने तुर्कमानिस्तान में भी अपनी पुरानी साम्राज्यवादी चाल चलने का ही निश्चय किया और सोचा, सोवियत के विरुद्ध अपने बन्दूक सफेद सेना के कंधों पर रख कर ही चलाई जाये। ब्रिटेन को अपनी इस चाल में भी सफलता न मिली। कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के सैनिक नेतृत्व में लाल सेना, रूसी और तुर्कमानी जनता ने शीघ्र ही ब्रिटेन की कठपुतलियों—इन सफ़ेद सेनाओं को भी मैदान से भगा दिया।

जुलाई, सन् उन्नीस में कास्पियन सागर की लाल सेना के अफसरों ने अपनी सरकार को रिपोर्टें भेजीं—

"कास्पियन पर की हमारी बहादुर सेना दुरूह अड़चनों को पार कर काहाक पहुंच गई है। इस सेना के एक भाग ने भागते हुये शत्रु के पिछले भाग पर हमला बोल उसे मुख्य सेना से काट कर तितर-बितर कर दिया…।

"काहाक में हमारी सेना ने सफेद सेना की सब रसद और युद्ध का सामान छीन लिया है…।

"सफेद सेना को हमने पूरी तरह परास्त कर धूल में मिला दिया है। उस के कुछ दल तितर-बितर हालत में भाग कर समीप के पहाड़ों और रेगिस्तान में जा छिपे हैं। हम उन का पीछा कर, चुन-चुन कर उन्हें समाप्त कर रहे हैं।"

क्रास्नोवोदस्क में अभी ब्रिटिश फौज की एक पल्टन शेष थी परन्तु क्रास्नोवोदस्क कास्पियन के तट पर सैंकड़ों मील दूर है। मार्ग में रेगिस्तान और उजाड़ पहाड़ फैले हुये हैं। इन सब अड़चनों को लांघ कर शत्रु पर धावा बोलना आसान काम न था। सफेद सेना हार कर भागते समय जितना भी बन पड़ता, नुकसान कर जाती। शहरों और गोदामों को जला देती, पुलों और बांधों को तोड़ जाती। इस पर भी लाल सेना ने उन का पीछा न छोड़ा।

इस ऐतिहासिक युद्ध में भाग लेने वाली लाल सेना की कम्पनियों के सब से योग्य और बहादुर कमाण्डरों में अरतैक बवाली का भी नाम था। अरतैक की रेजीमेण्ट का कमिस्सार तिशेंको था। अशीर और मावेद उस के मुख्य सहायकों में थे। इस सेना ने सफेद सेना को एक के बाद एक पराजय देकर अपनी तुर्कमान मातृभूमि को स्वतंत्र करके ही चैन की सांस ली।

लाल सेना की इस पल्टन का मोर्चा कजान्दिक में रेलवे लाइन के समीप लगा हुआ था। मोर्चे के चारों ओर की धरती दूर-दूर तक तोपों

के गोलों से खुदे गढ़ों और लड़ाई के मोर्चों के लिये खोदी गई टेढ़ी-मेढ़ी खन्दकों से ऊबड़-खाबड़ हो रही थीं। लाइन पर एक छिन्न-भिन्न फौलादी ट्रेन खड़ी हुई थी और परखचे उड़ी हुई गाड़ियां लाइन के चारों ओर बिखरी हुई थीं। जहां-तहां लड़ाई के टूटे हुये हथियार बिखरे हुये थे। तोपों के पहिये और जले हुये कुन्दों वाली राइफलें सब ओर नजर आती रहतीं। सम्पूर्ण प्रदेश लड़ाई की आग से झुलसा हुआ जान पड़ता था परन्तु इस मोर्चे पर डटी हुई सेना के लोग इस प्रकार की परिस्थितियों और वातावरण के प्रति अभ्यस्त हो चुके थे। उन की वर्दियां तार-तार हो रही थीं और पहाड़ों से आती बर्फानी हवा उन के शरीर को छेदे दे रही थी। रात में पूरी नींद सोना उन के लिये दूभर था परन्तु इस पर भी सिपाही खिन्न और हताश न थे। रात पड़ने पर कहीं कोई आदमी इकतारा या दुतारा बजाने लगता और दूसरे सिपाही गोल बांध कर उस के चारों ओर नाचने लगते। कहीं बहुत से सिपाही टोलियां बना गीत छेड़ देते। भय और कठिनाइयों की उन्हें कोई चिन्ता न थी क्योंकि यह लोग अपने मानवीय अधिकारों के लिये, मनुष्य बनने के लिये, स्वयं अपनी इच्छा से अपने शोषकों से लड़ रहे थे।

एक दिन सुबह लाल सेना के इस मोर्चे का मुख्य सेनापति अपने सहायक और सलाहकार अफसरों और अर्दलियों को लिये स्टेशन के तारघर से बाहर निकला और उस ने खबर दी कि क्रांति की युद्ध-समिति का सदस्य, एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति कामरेड कुइबशेव इस मोर्चे के निरीक्षण के लिये आ रहा है। छावनी में खबर पहुंचते ही दृश्य एकदम बदल गया। सिपाही अपनी फटी-पुरानी वर्दियां को झाड़-पोंछ कर पहनने लगे। बूटों, पेटियों और बटनों पर पालिश होने लगी। घोड़ों के जीन साफ होने लगे और रकाबें ठीक से बांधी जाने लगीं। पल्टन के डाक्टर दौड़-दौड़ कर सफाई देखने और बावर्चीखाने का इन्तजाम ठीक कराने लगे।

खबर पाकर सब कम्पनियों के कमाण्डर भी हजामत बना, वर्दी

ठीक कर एक साथ इकट्ठे पर आ पहुंचे ।

सेनाध्यक्ष स्टेशन पर खड़ा अपने सलाहकारों से बात कर रहा था । उस के चेहरे पर गहरी चिन्ता और उलझन दिखाई दे रही थी । बातचीत करते समय वह बार-बार अश्काबाद से आने वाली लाइन की ओर देख रहा था । सब ओर स्तब्ध उत्सुकता का आतंक छा रहा था ।

अरतैक और तिशेंको एक साथ खड़े थे । तिशेंको पर भी परिस्थिति का प्रभाव पड़ रहा था । शरीर के तनाव से उस के रोंगटे खड़े हो रहे थे ।

अरतैक ने उस की ओर देख मुस्करा कर पूछा—"तिशेंको, क्या बहुत जाड़ा मालूम हो रहा है ?"

"हां देखो तो हवा कितनी सर्द है !...कपड़ों को छेदे दे रही है !"

"कपड़े तो मेरे भी तुम्हारे जैसे ही है ।"

"अरे भाई घबराने की तो बात ही है ।" तिशेंको ने स्वीकार किया । "यह आदमी तुर्किस्तान की क्रान्तिकारी युद्ध-समिति का सदस्य है, तुर्किस्तान की केन्द्रीय पार्टी की कार्यकारिणी का मेम्बर है; जानते भी हो !"

"मैं जानता हूं कामरेड कुइबशेव दौरे पर आ रहा है परन्तु वह यहां खामुखा नुकताचीनी करने और हमें फटकार बताने तो नहीं आ रहा ।"

"यह तो ठीक है । यह हमारा उत्साह बढाने आ रहा है । वह हमें जल्दी से जल्दी लड़ाई जीतने के उपाय बतायेगा । फिर भी भाई एक बड़े आदमी का कुछ रोब होता ही है । दुश्मन की गोली का सामना कर लेना और बात है । यह उत्तरदायित्व की बात है ।"

अरतैक तिशेंको की परेशानी पर मुस्कराता रहा परन्तु जब स्पेशल ट्रेन सनसनाती हुई स्टेशन पर आ पहुंची तो वह स्वयं भी स्तब्ध-सा रह गया । मोर्चे का सेनाध्यक्ष चर्नीशोव स्थानीय अफसरों के साथ कुइबशेव की गाड़ी की ओर गया । स्पेशल ट्रेन में साथ चलने वाले सिग्नेलर तुरन्त गाड़ी से उतरे और उन्होंने स्टेशन के टेलीफोन से तारें लेकर कुइबशेव की गाड़ी में टेलीफोन लगा दिया । अरतैक भी कौतूहल से उस गाड़ी की

खिड़कियों की ओर देख रहा था। खिड़की में से उसे एक दुबला-पतला आदमी फौजी कोट पहने दिखाई दिया। उस का माथा ऊंचा और चौड़ा था, सिर पर बाल बहुत कम थे। यह आदमी खिड़की में से चुपचाप पहाड़ियों की ओर देख रहा था। अरतैक ने कुइबशेव को पहचान लिया। फौजी अखबार में वह उस का चित्र कई बार देख चुका था।

कुछ देर बाद चर्नीशोव इस गाड़ी से बाहर निकला। उस का चेहरा प्रसन्न और उत्साहित था। अरतैक और तिशेंको को देख वह उन की पल्टन के बारे में पूछ-ताछ करने लगा।

मौका देख अरतैक ने मुस्करा पूछा—"साथी कमाण्डर-इन-चीफ, यह कामरेड कुइबशेव क्या हम जैसे लोगों से भी बात कर लेता है ?"

चर्नीशोव ने भी मुस्करा दिया—"तुम से बात करेगा तो अपने आप ही देख लेना।"

"मुझ से बात करेगा ?" अरतैक ने विस्मय से पूछा।

"हां।"

अरतैक चुप रह गया। फिर सोच कर गम्भीर स्वर में बोला—"साथी कमाण्डर-इन-चीफ, अगर मेरे काम से तुम संतुष्ट नहीं हो या मुझ पर तुम्हें कुछ संदेह है तो तुम स्वयं ही साफ-साफ बात कर सकते थे।"

"तुम्हारी बात मैं नहीं समझा।" अब चर्नीशोव के चेहरे पर विस्मय दिखाई दे रहा था, "क्या कह रहे हो तुम !"

"तुम जानते हो मैं अजीजखां के साथ था। मैंने सफेद सेना में भी काम किया है। मैंने इन बातों को कभी छिपाया भी नहीं।" अरतैक का चेहरा लाल हो गया—"अब यह बातें मुझे कामरेड कुइबशेव के भी सामने स्वीकार करनी पड़ेंगी। यह अपमान मैं न सह सकूंगा।"

चर्नीशोव के माथे पर बल पड़ गये—"अरतैक बबाली, क्या कूढ़-मगज आदमी हो तुम ! खबरदार अगर तुमने इन बेहूदा बातों को दोहराया ! मैं किसी भी आदमी के मुंह से ऐसी बात सुनने के लिये तैयार नहीं हूं। कामरेड कमिस्सार," चर्नीशोव ने तिशेंको की ओर देखा—"सेना

के सिपाहियों को तुम क्या राजनैतिक शिक्षा दे रहे हो ! इतने बड़े जिम्मेदार अफसरों के मन से भी तुम व्यर्थ और मिथ्या भावनायें अब तक दूर नहीं कर सके ।"

तिशेंको ने फौजी सैल्यूट कर उत्तर दिया—"मुझे अपनी भूल के लिये अफसोस है, कमाण्डर-इन-चीफ।"

अरतैक हैरान रह गया कि बात ने यह क्या रूप ले लिया ! वह फिर बोला—"कामरेड कमाण्डर-इन-चीफ, मैं कुछ कहना चाहता हूं ।"

"क्या कहना चाहते हो ?"

"इस मामले में कमिस्सार तिशेंको का कोई दोष नहीं ।"

"यह कमिस्सार का ही दोष है ।" दृढ़ता से चर्नीशोव बोला । "कमिस्सार का कर्तव्य है कि लाल सेना के सिपाहियों और अफसरों को उचित राजनैतिक शिक्षा दे कर उन के व्यर्थ सन्देह को दूर करे । कमिस्सार तिशेंको, मैं तुम्हें इस उपेक्षा के प्रति चेतावनी दे रहा हूं, याद रहे !"

"आप की बात ठीक है, कमाण्डर-इन-चीफ।" तिशेंको ने फिर सैल्यूट कर स्वीकार किया ।

अरतैक मूढ़ सा रह गया । अपनी परेशानी में वह यह भी न देख सका कि चर्नीशोव ने आंख से तिशेंको को क्या इशारा किया और तिशेंको ने इशारे में क्या उत्तर दिया ।

"अच्छा भाई," चर्नीशोव का स्वर फिर कोमल हो गया—"तुम लोग अपनी पलटन में लौट कर तैयार रहो । हो सकता है, कामरेड कुइबशेव तुम लोगों से बातचीत करने वहीं आयें ।"

अरतैक खिन्न मन से लौट पड़ा । रास्ते में वह तिशेंको से बोला—"भाई तिशेंको, जो कजरौटे को छुयेगा, उस के हाथ काले होंगे । माफ करना, मेरे कारण आज तुम्हें भी इतना सुनना पड़ा । इन के लिये मुझे अफसोस है परन्तु इस में मेरा क्या बस था !"

"अरतैक, अभी पांच मिनट नहीं हुये कि हम दोनों पर डांट पड़ी

है।" तिशेंको ने उत्तर दिया—"तुम फिर वैसे ही बातें कर रहे हो। कमाण्डर-इन-चीफ की बात बिलकुल ठीक है। तुम्हारे माथे पर तो कोई मोहर लगी नहीं। मनुष्य अपनी समझ और विश्वास के अनुसार काम करता है। तुम्हें अजीज पर विश्वास था इसलिये तुम उस का साथ दे रहे थे। बात समझ आ जाने पर तुम ने उस का साथ छोड़ दिया। कौन नहीं जानता कि पूरे एक बरस से तुम जान हथेली पर लिये सोवियत और जनता की रक्षा के लिये लड़ रहे हो! इस पर भी तुम समझो कि तुम पर शत्रु का साथ देने का दाग लगा हुआ है तो क्या इलाज! अजीज के साथ कुछ दिन रहने का तो तुम्हारे मन पर इतना प्रभाव है परन्तु सोवियत के पक्ष में रहने की बात ही भूल जाते हो! आखिर यह क्या बात है?"

"कोढ़ का भी कोई इलाज होता है!" आह भर कर अरतैक ने कहा।

"मरने पर तो शरीर के साथ कोढ़ भी खत्म हो जाता है।" तिशेंको ने समझाया। "सोवियत के लिये तुम ने कितनी बार मौत का सामना किया। क्या कोढ़ अभी तक घुला नहीं! अजीज के साथ का कोढ़ तो तभी दूर हो गया था जब तुम उसे लात मार आये थे। अब तो तुम पूर्ण स्वस्थ सोवियत सैनिक हो। उस बात की चर्चा अब न करना, याद रहे!"

"अच्छा भाई, अब नहीं करूंगा।"

कुइबशेव बहुत देर तक गाड़ी में ही बैठा स्थानीय मोर्चे के सम्बन्ध में रिपोर्ट सुन कर पूछ-ताछ करता रहा। अपने मन को समझाने के लिये अरतैक को काफी समय मिल गया। वह सोचता रहा—कुईबशेव यह प्रश्न करेगा तो मैं यह उत्तर दूंगा, वह बात पूछेगा तो ऐसा उत्तर दूंगा परन्तु जब उस ने कमाण्डर को अपनी पल्टन की ओर आते देखा तो सब कुछ भूल गया।

कुइबशेव जब बिलकुल समीप आ गया तो अरतैक ने अपने घोड़े की काबों पर तन कर अपनी पल्टन को सलामी देने का हुक्म दिया—

"पल्टन सावधान !"

कुइबशेव ने पल्टन के सवारों को एक सिरे से दूसरे तक पैनी नजर से देखा। अरतैक ने उस के सामने आकर फौजी सलाम किया और अटेंशन खड़ा रहा।

कुइबशेव ने हुक्म दिया—"स्टैण्ड एट ईज" और हाथ बढ़ा कर अरतैक से मिलाया। कुइबशेव बहुत देर तक अरतैक और तिशेंको को उन के नाम से सम्बोधन कर मुस्करा-मुस्करा कर उन से बात करता रहा। वह बात-बात में मजाक कर देता और उस की बातों से दूसरे लोग भी मुस्करा देते।

कुइबशेव के चले जाने पर भी अरतैक उस की आंखों की गम्भीरता और बात करने के सरल ढंग को याद कर सोचता रहा—यह है असल फौलादी आदमी, जो किसी भी परिस्थिति से घबरा नहीं सकता। ऐसे व्यक्ति का नेतृत्व मिले तो मेरे जैसे देहाती किसान भी काम लायक सिपाही बन सकते है।

कुइबशेव के शब्द उसे याद आ रहे थे—'…कामरेड कमाण्डर, सोवियत सरकार जानती है कि आप की सेना दुर्गम और बीहड़ रास्तों पर जान की बाजी लगा कर लड़ती हुई एक हजार मील से अधिक सफर तय कर चुकी है। क्रास्नोवोदस्क पहुंचने के लिये अभी आप लोगों को सैकड़ों मील रेगिस्तान पार करना होगा। रास्ते में कई और विकट मोर्चे पड़ सकते हैं। आप का क्या ख्याल है, आप के सवार थक नहीं गये होंगे ?'

अरतैक ने उत्तर देने का यत्न किया—"क्रान्ति…क्रान्ति युद्ध, युद्ध कमेटी के मेम्बर…!"

कुइबशेव बोल उठा—"अरे भाई, वह इतना बड़ा नाम रहने दो न ! मेरा नाम कुइबशेव है। मेरा नाम ले कर बात करो।"

"कामरेड कुइबशेव, हमारे यहां कहावत है—'तलवार मियान में पड़ी रहे तो जंग खा जाती है।' हमारे सवार तो खाली बैठे रहने से ही घबराते हैं। हम लोग तो किसान हैं। किसान तो तभी आराम करता है जब

फसल बटोर कर घर ले आता है।" अरतैक ने उत्तर दिया।

"अच्छा !" कुइबशेव जोर से हंस कर बोला—"तो आप सफेद सेना को अपनी फसल समझते हैं; खूब !"

"नहीं नहीं, हमारे यहां एक दूसरी कहावत भी है—'बैरी, रोग, सांप, चिन्गारी, कबहूं छोटे न गनै बिचारी।"

"हूं, तो आप इन सफेद सांपों को कुचले बिना आराम न करेंगे !"

"कभी नहीं !"

"इस कूच में आप मुझे साथ ले चल सकते हैं ?" मुस्कराकर कुइबशेव ने पूछा।

"क्या कीजियेगा अपना समय नष्ट करके ! कूच में मुसीबत भी रहती है। आप क्यों यह सब झेलें ?"

"मैं स्वयं देखना चाहता हूं, हमारी लाल सेना और उस की तुर्कमानी पल्टन के रिसाले कैसी वीरता से शत्रु को पछाड़ते हैं।"

कुइबशेव ने यह बात तुर्कमानी पल्टन का दिल रखने के लिये ही नहीं कही थी। वह अरतैक के सवारों के साथ कूच में शामिल हो गया। सैनिकों में सनसनी फैल गई—"कामरेड कुइबशेव पल्टन के साथ कूच कर रहा है !" और उन के हौंसले दूने-चौगने हो गये।

अक्चा कुइमा स्टेशन पर लाल सेना ने सफेद सेना पर सामने और बाईं बगल से एक साथ चोट की। सफेद सेना सामना किये बिना ही भाग निकली और पेरेवाल से भी आगे भागती चली गई।

अक्चा कुइमा और पेरेवाल के बीच में कुइबशेव तार के खम्भों पर मीलों के नम्बर देखता जा रहा था। दो सौ सात नम्बर के खम्भे के पास वह रेलवे लाइन से बीस कदम परे हट अपने घोड़े से उतर गया और सिर से टोपी उतार कर हाथ में ले ली। वहां रेत पर कोई भी चिन्ह दिखाई न दे रहे थे परन्तु उस के साथ चलने वाले दूसरे अफसरों ने भी वैसा ही किया। गले में आंसू भर आने के कारण भर्राये हुये स्वर में कुइबशेव बोला—"कम्युनिस्ट पार्टी, उस के नेता लेनिन, स्तालिन और

लाल सेना की ओर से हम लोग कामरेड शामयान और उस के साथी छब्बीस कमिस्सारों के प्रति—जो दगाबाज ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा इस स्थान पर गोली मार कर दफना दिये गये थे—आदर प्रकट करते हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक देश और जनता के शत्रुओं को समाप्त नहीं कर देंगे और बाकू को शोषकों के पंजे से स्वतंत्र कर अपने वीर साथियों की इस समाधि पर स्वतंत्र मानवता का हंसिये-हथौड़े का लाल झण्डा न फहरा देंगे, आराम न करेंगे।"

वीरों के इस स्मृति-स्थान को पूरी पल्टन ने सलामी दी और बाकू को स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा कर आगे बढ़ी।

लाल सेना के अदिन में पहुंचने की घटना अरतैक कैसे भूल सकता था। शत्रु पर लाल रिसाले के हमला करने का समय निश्चित हो चुका था। लाल पैदल फौज की स्थिति जानने और उन्हें इस हमले की सूचना देने के लिये अरतैक ने सवार भेज दिये थे। हमले का समय बिलकुल समीप आ रहा था परन्तु पैदल सेना को सूचना देने गये सवार अभी तक न लौटे थे। अरतैक बहुत चिन्तित था। चारों ओर खूब घना कोहरा छाया हुआ था। कुइबशेव का अनुमान था कि सूचना देने गये सवार कोहरे में राह भूल गये हैं। पैदल सेना हमला करने के लिये अपने स्थान पर तैयार खड़ी सूचना और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही थी। कुछ सवारों और अरतैक को साथ ले कुइबशेव ने स्वयं ही उस ओर जाने का निश्चय किया।

कुइबशेव के पल्टन के साथ होने पर अरतैक बिलकुल निर्भय रहता और उस का हौसला बढ़ा रहता परन्तु कुइबशेव की उचित रक्षा के उत्तरदायित्व का बोझ भी कम न था। इस गहरे धुन्ध में, जब चार हाथ परे की चीज भी दिखाई न देती थी और साथ केवल बीस ही सवार थे, पार्टी की युद्ध-समिति के एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति को साथ ले जाना अरतैक को निरापद मालूम न हो रहा था। उस ने कुइबशेव से पीछे रहने के लिये अनुरोध किया परन्तु कुइबशेव ने निरपेक्ष शान्ति से उत्तर

दिया—"तुम परवाह मत करो, मेरे साथ आओ!" अरतैक चुप रह गया।

कुइबशेव आगे-आगे चल रहा था और शीघ्र ही उस ने पैदल सेना की जगह का पता लगा लिया। कोहरा भी कुछ झीना होने लगा था। सफेद सेना के मोर्चे और उन की फौलादी ट्रेन का इधर आना-जाना भी सूझ पड़ने लगा था। कुइबशेव ने हमला बोलने का स्थान और मार्ग निश्चित किया और पैदल सेना को सब कुछ समझा देने के लिये एक सवार उस ओर भेज दिया।

सफेद सेना की खोजी पार्टी ने अपने अफसरों को सूचना दे दी थी कि लाल सेना चार मील के अन्तर पर पहुंच चुकी है। सफेद सेना के अफसरों को इस बात पर विश्वास ही न हुआ। उन्हें सन्देह हुआ कि खोजी पार्टी का नेता शरारत कर हमारी सेना को डराना चाहता है। इन अफसरों ने आज्ञा दी कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाय। इस अफसर के गिरफ्तार किये जाने से पहले ही सफेद सेना पर लाल तोपखाने के गोले आ पड़े और लाल सेना ने हमला बोल दिया।

बहुत घमासान लड़ाई हुई। कुइबशेव पूरे मोर्चे पर बिजली की तरह नाचता फिर रहा था। वह कभी रिसाले के पीछे दिखाई देता और कभी पैदल सेना के साथ। जहां भी वह अपनी सेना का हमला धीमा होता देखता, तुरंत स्वयं पहुंच जाता। अरतैक भी कुइबशेव की ढाल बना, उस के शरीर पर आते वार को अपने ऊपर लेने के लिये आतुर, उस के साथ बना रहा।

सफेद सेना ने सूर्य छिपे तक सामना किया परन्तु अंधेरा होते-होते उन के पांव उखड़ गये। लाल सेना ने हजारों सफेद सैनिकों को कैद कर लिया और लड़ाई का भी बहुत सामान उन के हाथ लगा।

अगले दिन सूर्योदय के समय क्रास्नोवोदस्क लाल सेना की आंखों के सामने झलमला रहा था और लाल सेना अपने लक्ष पर टूट पड़ने के लिये तैयार खड़ी थी।

क्रास्नोवोदस्क के दायें-बायें दोनों ओर पहाड़ हैं। पीछे की ओर कास्पियन समुद्र राह रोके है। लाल सेना शहर पर केवल सामने से ही हमला कर सकती थी और इस रास्ते में एक जबरदस्त किला मौजूद था। शहर के चारों ओर मोर्चे बने थे और लम्बे कांटे लगी तारों के घेरे बने हुये थे। मोर्चों पर दूर और नजदीक मार करने वाली तोपें कतारों में जड़ी हुई थीं। शहर के पीछे समुद्र में पन्द्रह जंगी जहाज बड़ी-बड़ी तोपें लिये तैयार खड़े थे। सफेद सेना की सब से बहादुर 'शेर दिल', 'चीता दल,' 'खूंखार दल' आदि पल्टनें और एक ब्रिटिश पल्टन भी क्रास्नोवोदस्क में डटी हुई थी। सफेद सेना के सब से बड़े सेनापति डेनिकिन तथा मातहत जनरलों को विश्वास था कि क्रास्नोवोदस्क का किला अजेय है।

लाल सेना ने अपना हमला छः फरवरी, उन्नीस सौ बीस की रात में आरम्भ किया। आधी रात के समय राइफलों के फायर की पहली बौछार हुई और कुछ ही देर में भारी-भारी तोपों के फायरों से पहाड़ गूंजने लगे।

सुबह होते ही बरफ पड़ने लगी। घाटी की हवा जले बारूद की चिरांध से भारी हो गई। आकाश बादलों से पटा हुआ था।

लाल सेना छोटी-छोटी पहाड़ियों और कोहरे की आड़ लेकर तेजी से आगे बढ़ रही थी। सफेद सेना दोनों ओर की पहाड़ियों पर जमी हुई थी। नीचे लाल सेना की गतिविधि उन्हें स्पष्ट दिखाई न दे रही थी पर वे ओलों की तरह दनादन गोली-गोला बरसा रहे थे। लाल सेना इस मार पर भी न रुकी और उन्होंने सफेद सेना का पहला मोर्चा छीन ही लिया। उजाला हो जाने के कारण सफेद सेना के लिये लाल सेना पर निशाना लेना और आसान हो गया। गोला-गोली मूसलाधार बरसने लगे। समुद्र में खड़े पन्द्रह जहाज भी शहर के पीछे से लगातार गोले बरसा रहे थे। अब लाल सेना के लिये और आगे बढ़ना सम्भव न रहा।

लाल सेना का एक छोटा तोपखाना चट्टानों की आड़ ले एक पहाड़ी पर चढ़ गया और उस ने जहाजों पर निशाना बांध गोले बरसाने शुरू

कर दिये। एक जहाज में आग लग गई। काजल से काले धुयें के गुबार आकाश की ओर उठने लगे। जहाज के गोला गोदाम में आग पहुंचने पर गोले फट-फट कर आस-पास के जहाजों पर और शहर में भी गिरने लगे। शत्रु के मोर्चों में गड़बड़ी और घबराहट फैल गई। अवसर देख लाल सेना की पैदल पल्टन ने शहर पर हल्ला बोल दिया।

अरतैक ने अपने रिसाले को सफेद सेना एक बड़े मोर्चे पर हमला करने का हुक्म दिया। सवार हाथों में नंगी तलवारें लिये बाजों के झुण्ड की तरह झपट पड़े। अरतैक रिसाले के बीचों-बीच स्वयं हमले का नेतृत्व कर रहा था। एक जहाज ने इस रिसाले पर छर्रे भरे हुये गोले बरसाने शुरू किये। एक गोला अरतैक के बिलकुल सामने आकर फटा। गोले के धक्के से अरतैक का घोड़ा पीछे की ओर धसक गया परन्तु अरतैक ने उसे सम्भाल कर एड़ लगाई और फिर आगे बढ़ाया। दूसरा गोला फटा और लोहे का एक बड़ा टुकड़ा घोड़े के सीने में धंस गया। घोड़ा गिर पड़ा और अरतैक भी दूर जा पड़ा।

तिशेंको समीप ही था। वह तुरन्त अपने घोड़े से कूद पड़ा और अरतैक की बांह में बांह दे उसे खड़ा करने की कोशिश करने लगा। वह बार-बार अरतैक का नाम लेकर पुकार रहा था परन्तु अरतैक सुन नहीं रहा था। उस का चेहरा पीला पड़ गया था।

"अरतैक उठो, देखो हमने मोर्चा ले लिया।" तिशेंको ऊंचे स्वर में चिल्लाया।

"हूं"...करके अरतैक ने आंखें खोलने की चेष्टा की। उस की आंखें पथराई हुई थीं, वह कुछ देख न पाया। उस की गर्दन फिर झुक गई।

इतने में 'हुर्रा हुर्रा' लाल सेना का गगन-भेदी विजय का नारा गूंज उठा। अरतैक की आंखे खुल गई परन्तु अब भी वह पथराई हुई थीं।

"तिशेंको तुम हो ?" अरतैक ने बहुत धीमे स्वर में पूछा।

"हां अरतैक मैं हूं, हम जीत गये!" उत्साह से ऊंचे स्वर में तिशेंको ने उत्तर दिया। अरतैक अपनी गर्दन न उठा सका। तिशेंको उसे अपनी

बांहों में सम्भाले था। अरतैक के सवार तीर की तेजी से झपटते हुये उस के समीप से निकल आगे बढ़ रहे थे। चारों ओर शत्रुओं की लाशें पड़ी थीं। अरतैक के चेहरे पर जीवन की हल्की छाया झलक आई थी। उस की आंखें आधी खुल गई थीं।

दोपहर बीत गई। हल्की हवा ने बादलों को तितर-बितर कर दिया। वर्षा से भीगे-भीगे सूर्य की किरणें शहर पर फैलने लगीं। किरणों में चमचमाते समुद्र की सतह पर सफेद सेना के भागते हुये जहाज बहुत दूरी पर धब्बे जैसे दिखाई दे रहे थे। इन जहाजों से बरसे आखिरी गोलों में से एक गोला स्टेशन के समीप बने पैट्रोल के गोदाम पर पड़ गया था। गोदाम में आग लग गई थी और काजल का एक विस्तार धरती से आकाश तक फैल रहा था। इस काले पर्दे पर शोषित की विजय का लाल झण्डा नवजीवन के दीपक की शिखा की तरह झलमल कर रहा था।

तिशेंको की बाहों में सम्भला हुआ जख्मी अरतैक अधमुंदी आंखों से आशा की इस लाल प्रकाश-शिखा को देख रहा था। इस प्रकाश से उस की कल्पना में कास्पियन समुद्र से लेकर आमू नदी और तेजेन तक का प्रदेश जगमगा उठा। उस के बीते सम्पूर्ण जीवन के दृश्य प्रकाशित हो उठे—अपनी जनता के लिये स्वतंत्रता से जी सकने के अधिकार के संघर्ष का मार्ग उद्भाषित हो उठा। जीवन की भूलों और पश्चाताप की छाया, विश्वस्त मित्रों के साथ मिल कर जीवन की स्वतंत्रता के लिये लड़ कर सफलता पाने के प्रकाश में मिट गई।